वार्षिक-रिपोर्ट
1982-83

वार्षिक रिपोर्ट

1982-83



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

दिसंबर 1983
अग्रहायण 1905

P.D. 1T-PD

प्रकाशन विभाग में, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा मयूर प्रेस, 27-डी. एल. एफ. इंडस्ट्रियल एरिया, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-110015 में मुद्रित।

कृतज्ञता-ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा तथा संस्कृति की राज्य मंत्री और शिक्षा के उपमंत्री द्वारा परिषद् के कार्यों में गहरी रुचि लेने के लिए उनके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् उन सभी विशेषज्ञों के प्रति आभारी है जो इसकी विभिन्न समितियों में रहकर अपना बहुमूल्य समय इसके कार्यों के लिए देते रहे हैं और अन्य कई प्रकार से परिषद् की सहायता करते रहे हैं। परिषद् उन सभी संगठनों और संस्थाओं, विशेष रूप से राज्य-शिक्षा-विभागों और राज्य शिक्षा संस्थानों तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों के प्रति भी कृतज्ञ है, जिन्होंने इसके कार्यकलापों को चलाए रखने में सहयोग दिया है। परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ़, यू० एन० डी० पी० और ब्रिटिश काउंसिल का भी सधन्यवाद आभार स्वीकार करती है, जिन्होंने इसे सहायता प्रदान की है।

विषय-सूची

1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : भूमिका एवं संरचना

भूमिका और कार्य-व्यापार

भारत में स्कूल स्तर की शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के निमित्त, शैक्षणिक आवश्यकताओं की आपूर्ति कराने के लिए, भारत सरकार ने शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्ग-दर्शन ब्यूरो (1954), राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा संस्थान (1955), राष्ट्रीय दृश्य-श्रव्य शिक्षा संस्थान (1959), माध्यमिक शिक्षा प्रसार कार्यक्रम निदेशालय (1959) आदि जैसे जो अनेक विशेषीकृत संस्थान बना रखे थे, उनको मिला करके 1 सितम्बर 1961 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन० सी० ई० आर० टी०) की स्थापना की गई थी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के अधीन पंजीकृत एक स्वायत्त संगठन है। यह शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के शैक्षिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। स्कूल स्तर की शिक्षा में अपनी नीतियों एवं अपने कार्यक्रमों को बनाने और लागू करने के लिए शिक्षा मंत्रालय एन० सी० ई० आर० टी० की विशेषज्ञ सेवाओं का लाभ उठाती है। परिषद् का वित्त पोषण पूर्णतः सरकार करती है। संस्था की विवरणिका के अनुसार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के उद्देश्य हैं—शिक्षा, विशेषकर स्कूल स्तर की शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय को अपनी नीतियों और प्रमुख कार्यक्रमों को लागू करने की दिशा में सलाह तथा सहायता प्रदान करना।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रम और गतिविधियाँ चलाती है :

(क) स्कूल स्तर की शिक्षा के सभी क्षेत्रों में **अनुसंधान** करती है, अथवा करवाने के लिए सहायता देती है, उसे बढ़ावा देती है और उनमें समन्वय करती है।

(ख) सेवा-पूर्व और सेवाकालीन **प्रशिक्षण**, विशेषकर उच्च स्तर के प्रशिक्षण आयोजित करती है।

(ग) शैक्षिक पुनर्रचना में लगे हुए संस्थानों, संगठनों, और माध्यमों के लिए **विस्तार सेवाओं** का आयोजन करती है।

(घ) सुधरी हुई शैक्षिक विधियों, अभ्यासों और **अभिनव परिवर्तनों** को विकसित करती है और उन पर प्रयोग करती है।

(ङ) शैक्षिक जानकारी को एकत्र करती है, उन्हें सम्पादित करती है और फिर उन्हें **प्रचारित-प्रसारित** करती है।

(च) स्कूल-शिक्षा के **गुणात्मक सुधार** के लिए बने कार्यक्रमों को विकसित करने अथवा लागू करने में राज्यों एवं राज्य-स्तर के संस्थानों, संगठनों और माध्यमों को सहायता करती है।

(छ) यूनेस्को, यूनिसेफ़ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य देशों के राष्ट्रीय स्तर के शैक्षिक संस्थानों को **सहयोग** प्रदान करती है।

(ज) अन्य देशों के शैक्षिक कर्मियों को प्रशिक्षण एवं अध्ययन की सुविधाएँ प्रदान करती है।

(झ) अध्यापक-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् के शैक्षणिक सचिवालय के रूप में कार्य करती है।

अनुसंधान

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में, राष्ट्रीय परिषद् के प्रयास रहे हैं कि ऐसे कार्यक्रम और कार्यकलाप शुरू किए जाएँ और उन्हें बढ़ावा दिया जाए जो अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शैक्षिक प्रणाली में अपेक्षित परिवर्तन लाने वाले हों। ऐसे कार्यक्रम शिक्षा प्रणाली के लिए प्रासंगिक होते हैं और भारत में शैक्षिक शोध के क्षेत्र में नेतृत्व की व्यवस्था प्रदान करते हैं।

रा० शै० अ० और प्र० प० अनुसंधान के लिए बाहर की संस्थाओं को वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है। वरिष्ठ और कनिष्ठ फ़ेलोशिप प्रदान कर यह अनुसंधान को बढ़ावा देती है ताकि शैक्षिक समस्याएँ ढूढ़ी जा सकें और निपुण अनुसंधान कर्मियों का दल बनाया जा सके। व्यक्तिगत रूप से शोध करने वालों, स्कूल शिक्षकों, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कर्मचारियों और शैक्षिक अनुसंधान की संस्थाओं को वित्तीय सहायता और शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती है। पीएच० डी० के अच्छे प्रबन्धों को प्रकाशित करवाने के लिए परिषद् वित्तीय सहायता भी देती है।

शैक्षिक सुविधाओं और आवश्यकताओं से सम्बद्ध आधार सामग्री उपलब्ध कराने के लिए समय-समय पर रा० शै० अ० और प्र० प० शैक्षिक सर्वेक्षण भी कराती है। आधार सामग्री के प्रक्रियन और भंडारण के लिए परिषद् के पास कम्प्यूटर टर्मिनल है।

विकास

शिक्षा में विकासात्मक गतिविधियाँ परिषद् के कार्य का प्रमुख भाग हैं। परिषद् स्कूल-शिक्षा की परिवर्तनशील पद्धति की जरूरतों के अनुरूप पाठ्यक्रमों के विकास और पाठ्य-पुस्तकों, शिक्षक संदर्शिकाओं, छात्रों की अभ्यास-पुस्तिकाओं एवं पूरक पठन-पाठन सामग्री के निर्माण का कार्य हाथ में लेती है। यह कार्य सदा चलता रहता है। रा० शै० अ० और प्र० प० उत्कृष्ट शिक्षण-सामग्री, शिक्षण-साधनों, विज्ञान किटों, प्रयोगशाला उपकरणों, शैक्षिक फिल्मों, वीडियो कैसेटों, रेडियो आलेखों आदि का निर्माण करती है और शिक्षण तथा मूल्यांकन की सुधरी हुई पद्धतियों पर कार्य करती है।

रा० शै० अ० और प्र० प० अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोगात्मक कार्यक्रमों को भी हाथ में लेती है ताकि शैक्षिक विकास के लिए अभिनव मार्ग कौशल को अपनाने के निमित्त पर्याप्त अनुभव उपलब्ध हो जाए। शिक्षा के व्यावसायीकरण वाले कार्यक्रम के अंश के रूप में लाए जाने वाले कोर्सों के लिए पाठ्यक्रमों के विकास तथा शिक्षण-सामग्री के निर्माण एवं व्यावसायिक सर्वेक्षणों के संचालन में परिषद् राज्यों की सहायता करती है।

प्रशिक्षण

अध्यापकों को सतत रूप में सहायता मिलती रहे, इस उद्देश्य से सारे देश में स्थापित किए गए प्रसार सेवा विभागों और केन्द्रों के साथ रा० शै० अ० और प्र० प० गहन रूप से कार्य करती है। कक्षा में होने वाली पढ़ाई को सुधारने की दृष्टि से परिषद् के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और क्षेत्र कार्यालय प्रसार एवं अभिनव परिवर्तनों वाले कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

भारत के स्कूलों की पढ़ाई एवं व्यवस्था को सुधारते रहने के विचार से परिषद् महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन करने में पहल करती रहती है। शैक्षिक संस्थाओं के प्रिंसिपलों, अध्यक्षों, परामर्शकों, कैरियर मास्टरों, अध्यापक-शिक्षकों, निरीक्षकों, अधीक्षकों, आदि के लिए परिषद् तरह तरह के पाठ्यक्रम, कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ और सम्मेलन करती रहती है।

प्रसार कार्यक्रम इन बातों से सम्बद्ध होते हैं—आंतरिक सुधार परियोजनाएँ, अच्छी स्कूल व्यवस्था, अभिनव परिवर्तनों को प्रोत्साहन, प्रमुख कार्मिकों के लिए राष्ट्रीय परिचर्चाएँ, राज्यों के अधिकारियों के लिए राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन और राष्ट्रीय सामग्रियों की प्रदर्शनियाँ। इस प्रकार के प्रसार के कार्यकलापों के अंतर्गत सभी 22 राज्य और 9 केन्द्र शासित प्रदेश आ जाते हैं।

प्रकाशन एवं विकीर्णन

रा० शै० अ० और प्र० प० कक्षा I से XII तक के लिए पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है। देश में स्कूल-शिक्षा के स्तर को सुधारने की दिशा में अपने समग्र प्रयास के एक अंश के रूप में यह अन्य प्रकार की अमुद्रित सामग्री का निर्माण भी करती है। राष्ट्रीय परिषद् की पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास-पुस्तिकाएं और अध्यापक-संदर्शिकाएँ अपने किस्म की आदर्श-पुस्तकें होती हैं। परिषद् के विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे शोध और विकास के कार्यों के फलस्वरूप ही इन पुस्तकों का आविर्भाव होता है। हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में प्रकाशित परिषद् की पाठ्यपुस्तकें और सम्बद्ध सामग्री देश के विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के अधिसंख्य स्कूलों में इस्तेमाल होती हैं। सभी राज्यों को यह सुविधा दी गई है कि वे इन पाठ्यपुस्तकों को चाहे ज्यों का त्यों लगा लें या अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से इन्हें अपने लिए अनुकूलित कर लें।

शैक्षिक जानकारी के विकीर्णन के लिए परिषद् चार पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है। 'प्राइमरी शिक्षक' और 'प्राइमरी टीचर' प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए सार्थक और प्रासंगिक सामग्री प्रकाशित करती है। इस सामग्री को सीधे कक्षा में इस्तेमाल किया जा सकता है। विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के वास्ते 'स्कूल

साइंस' खुले मंच के रूप में सामने आती है । 'जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन' एक ऐसा मंच प्रदान करती है जिस पर सामयिक रूप से प्रचलित शैक्षिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करके शिक्षा में मौलिक विवेचना को बढ़ावा दिया जा सके। 'इंडियन एजुकेशनल रिव्यू' के माध्यम से एक ऐसे मंच का निर्माण किया गया है जहाँ शैक्षिक अनुसंधान और नव परिवर्तन के क्षेत्र में किए जाने वाले अनुभवों का आदान-प्रदान होता है । 'एन० सी० ई० आर० टी० न्यूज लेटर' परिषद् की मुख पत्रिका है जो हर महीने प्रकाशित होती है । सभी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अपनी-अपनी पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं ।

मूल्यांकन एवं आदान-प्रदान कार्यक्रम

पाठ्यपुस्तकों और सम्बद्ध सामग्री का निरंतर मूल्यांकन किया जाता है । मूल्यांकन के लिए निकष, उपकरण और तरीके बनाए जा चुके हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से मार्गदर्शी रेखाएँ और प्रणालियाँ निश्चित की जा चुकी हैं। जिन स्कूलों में ये पाठ्यपुस्तकें चलती हैं वहाँ से अनुभव जन्य सुझाव मिलते रहते हैं जिनसे पाठ्यपुस्तकों का संशोधन-परिवर्धन होता रहता है ।

हर साल राष्ट्रीय परिषद् 550 प्रतिभा-छात्रवृत्तियाँ देने के लिए (इनमें से 50 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए होती हैं), कक्षा X, XI व XII में पढ़ने वाले छात्रों की भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत सभी भाषाओं में परीक्षाएँ लेती है। छात्रवृत्ति पाने वाले छात्र विज्ञान, गणित, अथवा सामाजिक विज्ञान में पीएच० डी० तक की पढ़ाई या अभि-यांत्रिकी अथवा चिकित्साशास्त्र की व्यावसायिक पढ़ाई कर सकते हैं।

शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए किए जा रहे प्रयासों के निमित्त राष्ट्रीय परिषद् को यूनेस्को, यूनिसेफ़, यू. एन. डी. पी. और यू. एन. एफ. पी. ए. जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सहायता मिलती रहती है। इन संस्थाओं द्वारा माँगे जाने पर, परिषद् अपने शैक्षणिक कर्मचारियों को अंतर्राष्ट्रीय सभाओं, परिचर्चाओं, कार्यगोष्ठियों और सम्मेलनों में भाग लेने के लिए भेजती है । इसी प्रकार विदेशियों के लिए भारत में प्रशिक्षण की व्यवस्था भी परिषद् करती है।

शैक्षिक नवाचार और विकास के एशियाई केन्द्र के लिए राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में भी परिषद् कार्य करती है। स्कूल-शिक्षा के लिए विभिन्न देशों के साथ भारत सरकार जो द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के समझौते करती है उनके कार्यान्वियन के लिए भी परिषद् मुख्य माध्यम के रूप में कार्य करती है । परिषद् अन्य देशों के साथ शैक्षिक सामग्री का विनिमय करती है ।

संरचना और प्रशासन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की नीति निर्धारण की निकाय सामान्य निकाय (जनरल बॉडी) है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मंत्री हैं और सभी राज्यों व संघ क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री उसके सदस्य हैं। इसके अलावा उसके अन्य सदस्य हैं— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति (हर क्षेत्र से एक एक), कार्यकारी समिति के सभी सदस्य (जो ऊपर नही गिनाए गए हैं), और भारत सरकार द्वारा समय समय पर नामजद अन्य व्यक्ति जिनकी संख्या बारह से अधिक नहीं होगी और जिनमें से कम से कम चार को स्कूल शिक्षक होना चाहिए।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की मुख्य शासी निकाय परिषद् की **कार्यकारी समिति** है। कार्यकारी समिति में निम्नलिखित आते हैं—परिषद् के अध्यक्ष (पदेन) के रूप मे केंद्रीय शिक्षा मंत्री, शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री (पदेन उप-अध्यक्ष), शिक्षा मंत्रालय के उप मंत्री, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूल-शिक्षा में गहरी रुचि लेने के लिए विख्यात चार शिक्षा-शास्त्री (जिनमें से दो को स्कूल-शिक्षक होना चाहिए), परिषद् के सह निदेशक, परिषद् की संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के स्तर के होने चाहिए), शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि, और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा)।

कार्यकारी समिति निम्नलिखित स्थायी समितियों की सहायता से अपने कार्य करती है—

—कार्यक्रम सलाहकार समिति

—वित्त समिति

—स्थापना समिति

—भवन और निर्माण समिति

—शैक्षिक अनुसधान और नवाचार समिति

—क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की प्रबंध समितियाँ

परिषद् के मुख्यालय में आते हैं— (1) परिषद् का सचिवालय, और (2) लेखा शाखा। राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० परिषद् के मुख्य कार्यकारी हैं—निदेशक, सह निदेशक

और सचिव जिनकी नियुक्ति भारत सरकार करती है। वर्ष के दौरान इन पदों पर नीचे लिखे अधिकारी बने रहे : डा० शिवकुमार मित्र — निदेशक (18 अगस्त 1982 तक)। डा० त्रिलोकनाथ धर—सह निदेशक (19 अगस्त 1982 से कार्यकारी निदेशक)। श्री विनोद कुमार पंडित, आइ. ए. एस.—सचिव। परिषद् के अधीन हैं—(क) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, (ख) चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, (ग) सोलह क्षेत्रीय एकक।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

नई दिल्ली के **राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान** में निम्नलिखित घटक हैं जो अपने अपने विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, प्रसार, मूल्यांकन और विकीर्णन के कार्य करते हैं—

1. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
2. सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
3. अध्यापक-शिक्षा विभाग
4. शिक्षण साधन विभाग
5. मापन एवं मूल्यांकन विभाग
6. प्रकाशन विभाग
7. वर्कशॉप विभाग
8. पुस्तकालय तथा प्रलेखन एकक
9. शैक्षिक मनोविज्ञान एकक
10. शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन एकक
11. नियोजन, समन्वय एवं मूल्यांकन एकक
12. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक
13. जनसंख्या-शिक्षा एकक
14. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शिक्षा एकक
15. सर्वेक्षण और आधार-सामग्री प्रक्रिया एकक
16. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एकक
17. शिक्षा का व्यावसायीकरण एकक
18. शिशु अध्ययन एकक

19. स्त्री-शिक्षा एकक

20. पत्रिका प्रकोष्ठ

21. प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम प्रकोष्ठ

22. समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियाँ प्रकोष्ठ

23. प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ

24. पाठ्यक्रम वर्ग

25. अनौपचारिक शिक्षा वर्ग

26. प्रसार एकक

नई दिल्ली में सन् 1973 ई० में शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना की गई थी ताकि शिक्षा के प्रसार के लिए संचार माध्यमों के इस्तेमाल के वास्ते क्षमताओं का विकास किया जा सके। शैक्षिक फिल्मों के निर्माण, रेडियो कार्यक्रमों के विकास और सम्बद्ध शैक्षिक सामग्री के उत्पादन जैसे क्षेत्रों में यह केंद्र अनुसंधान और विकास के कार्य करता है। शैक्षिक दूरदर्शन और स्कूल के प्रसारण-कार्यक्रमों में प्रशिक्षण के आयोजन भी यह केंद्र करता है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और क्षेत्र एकक

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय नीचे लिखे स्थानों पर हैं—

—अजमेर —भोपाल

—भुवनेश्वर —मैसूर

इन महाविद्यालयों में निम्नलिखित कोर्सों की व्यवस्था है—

—बी. ए. (आनर्स) बी. एड.

—बी. एससी. (आनर्स)/(पास) बी. एड.

—बी. एड. आर्ट्स (एलीमेंटरी/सेकंडरी एजुकेशन)

—बी. एड. साइंस (एलीमेंटरी/सेकंडरी एजुकेशन)

—बी. एड. (एग्रीकल्चर/कामर्स/सोशल साइंस)

—बी. एड. (इंग्लिश/हिन्दी/उर्दू)

—बी. एड. (समर स्कूल-कम-कारेस्पांडेंस कोर्स)

—एम. एड. (एलीमेंटरी/सेकंडरी एजुकेशन)

—एम. एससी. एड. (फ़िजिक्स/कैमिस्ट्री/मैथेमेटिक्स)

—पीएच. डी. (एजुकेशन)

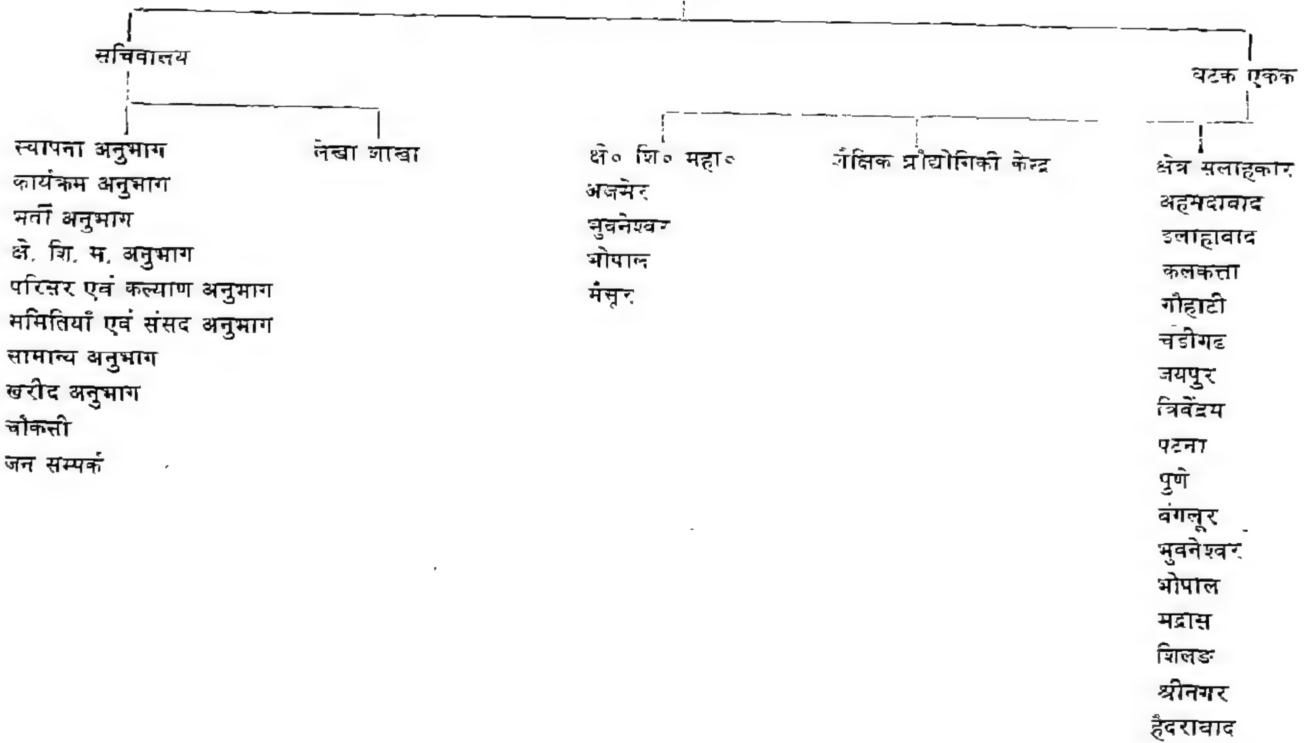
अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में केवल चार वर्षीय बी. एससी. बी. एड. कोर्स की व्यवस्था है जबकि भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मे लाइफ़ साइंसेज में एम. एससी. एड. का प्रबंध है और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में फ़िजिक्स, कैमिस्ट्री और मैथेमेटिक्स में एम. एससी. एड. का प्रबंध है। चारों क्षे. शि. म. में पीएच. डी. और एक वर्षीय बी. एड. तथा एम. एड. कोर्सों की व्यवस्था है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय आवासीय संस्थान हैं और इनमें प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और अन्य सुविधाओं की अच्छी व्यवस्था है। इन महाविद्यालयों में बहुद्देशीय प्रदर्शन स्कूल भी हैं जहाँ नई विकसित शिक्षण पद्धतियों को व्यावहारिक तौर पर कक्षा स्थितियों में जाँचा जाता है।

निम्नलिखित स्थानों पर सोलह क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना की गई है ताकि राज्य शिक्षा प्राधिकरणों एवं स्कूल शिक्षा के लिए काम कर रहे राज्य स्तर के शैक्षिक संस्थानों के साथ प्रभावी सम्पर्क बनाया जा सके—

1. अहमदाबाद
2. इलाहाबाद
3. कलकत्ता
4. गौहाटी
5. चंडीगढ़
6. जयपुर
7. त्रिवेंद्रम
8. पटना
9. पुणे
10. बंगलूर
11. भुवनेश्वर
12. भोपाल
13. मद्रास
14. शिलङ
15. श्रीनगर
16. हैदराबाद

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की संरचना
रा० शै० अ० और प्र० प०



राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

(शैक्षणिक)

—विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
—सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
—अध्यापक शिक्षा विभाग
—शैक्षिक मनोविज्ञान एकक
—मापन एवं मूल्यांकन विभाग

(सेवा/उत्पादन)

—शिक्षण साधन विभाग
—प्रकाशन विभाग
—वर्कशॉप विभाग

(एकक/प्रकोष्ठ, वर्ग)

—राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक
—नियोजन, समन्वय एवं मूल्यांकन एकक
—पुस्तकालय तथा प्रलेखन एकक
—शिक्षा का व्यावसायीकरण एकक
—प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ
—पत्रिका प्रकोष्ठ
—प्रसार एकक
—समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियाँ प्रकोष्ठ
—पाठ्यक्रम वर्ग
—अनौपचारिक शिक्षा वर्ग
—शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन एकक
—जनसंख्या शिक्षा एकक
—अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शिक्षा एकक
—समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एकक
—शिशु अध्ययन एकक
—स्त्री शिक्षा एकक
—प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम प्रकोष्ठ
—सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया एकक
—समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियाँ प्रकोष्ठ

2

वर्ष के उल्लेखनीय कार्य

सन् 1961 में स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने अपने जीवन के बीस वर्ष पूरे कर लिए और स्कूल-शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण एवं प्रसार के अपने तीसरे दशक में प्रवेश किया। ये कार्यकलाप शैक्षिक विकास से सम्बद्ध राज्य शिक्षा विभागों, राज्य स्तर के संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य संगठनों के सहयोग से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय एवं क्षेत्रीय एकक कर रहे हैं। वर्ष के दौरान परिषद् ने स्कूल प्रणाली को प्रत्यक्ष लाभ पहुँचाने वाले अनेक कार्यक्रमों में अपने को लगाए रखा। वर्ष की कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियों को यहाँ संक्षिप्त रूप में दिया जा रहा है।

पाठ्यक्रम विकास

स्कूल पाठ्यक्रम के क्षेत्र के रूप में सामुदायिक कार्य की योजना के बारे में विस्तृत रूपरेखा बनाने के उद्देश्य से एक समिति बनाई गई। समिति की कई बैठकें हुई। आशा है कि समिति एक व्यापक आलेख तैयार कर लेगी जिसे सामुदायिक सेवा की पुस्तिका के रूप में छापा जाएगा।

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी

कक्षा IX-X की उर्दू भाषा की पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यचर्याएँ तैयार करने का काम रा० शै० अ० और प्र० प० ने पहली बार हाथ में लिया। इस उद्देश्य से एक उर्दू समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष प्रोफेसर गोपीचंद नारंग हैं। समिति में पाँच अन्य सदस्य भी हैं।

परिवेश शिक्षा

इस क्षेत्र में जो कार्यक्रम हुए उनमें ये शामिल हैं—प्रभावपूर्ण तरीके से परिवेश के माध्यम से विज्ञान पढ़ाने के लिए स्थिति-निर्धारण की कार्यगोष्ठियाँ; 'परिवेश प्रबंध संगठन' पर एक परिसंवाद; परिवेशीय अध्ययन पर एक पाठ्यपुस्तक का निर्माण; और परिवेशीय शिक्षा पर प्रदर्श-सामग्री।

मूल्यों का स्थिति-निर्धारण

छात्रों और शिक्षकों में वांछित मूल्यों को जगाने के लिए अपेक्षित सामग्री के विकास की दृष्टि से शिक्षा में मूल्यों के स्थिति निर्धारण में विज्ञान की भूमिका पर एक परियोजना शुरू की गई। इसके लिए एक समिति बनाई गई है जो विज्ञान और मूल्यों के आपसी संबंधों का पता लगाएगी तथा शिशुओं में मूल्यों के विकास के लिए विज्ञान शिक्षा को निमित्त बनाने के उपाय ढूंढ़ेगी।

विज्ञान एवं गणित

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और ब्रिटिश काउंसिल के मध्य हुए एक समझौते के अंतर्गत, रा० शै० अ० और प्र० प० दो परियोजनाएँ शुरू कर रही है—(i) अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना, एवं (ii) अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना। इन परियोजनाओं के अंतर्गत यूनाइटेड किंगडम में उच्च प्रशिक्षण के लिए विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों के सेकंडरी स्कूल शिक्षकों एवं अध्यापक-शिक्षकों के लिए विज्ञान की 18 और गणित की 23 छात्रवृत्तियाँ उपलब्ध कराई जाएँगी।

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

कलकत्ता में 10 से 16 नवम्बर 1982 के बीच बारहवीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस वर्ष की प्रदर्शनी का विषय था- "विज्ञान एवं सामुदायिक विकास"। इस प्रदर्शनी में चार सौ से भी अधिक स्कूली बच्चों और शिक्षकों ने हिस्सा लिया और 160 प्रदर्श दिखाए गए। प्रदर्शनी का जोर इलेक्ट्रोनिक्स, सैटेलाइट, विज्ञान प्रदर्श, अंतरिक्ष की खोज आदि पर था।

विज्ञान क्लब किट

रा० शै० अ० और प्र० प० ने एक विज्ञान क्लब किट बनाया है जिसमें औजारों, उपकरणों, प्राथमिक सहायता आदि की पचास चीजें हैं। इस किट को बनाने का उद्देश्य यह है कि इसकी चीजों की मदद से बच्चे एवं अध्यापक नुमाइश के लिए विज्ञान-प्रदर्श बना सकें। विज्ञान क्लब किट तेरह राज्यों को भेंट कर दिए गए। औजारों वाले किट के इस्तेमाल के लिए राज्यों के प्रमुख कार्मिकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से एक कार्यगोष्ठी भी की गई।

लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा

'लड़कियों में शैक्षिक पिछड़ापन' की शोध परियोजना, जिसे यूनिसेफ़-पोषण मिला हुआ है, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा प्रदेशों में इस वर्ष भी चलती रही। यह 1981 से चल रही है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि लड़कियों में नामांकन और पढ़ाई छोड़ देने की दर क्या है, छह से चौदह वर्ष की लड़कियों में दाखिला न लेने और पढ़ाई छोड़ देने के कारण क्या हैं और इन बुराइयों का उपचार क्या है। आठों राज्यों के कुल 27 जिले परियोजना के अंतर्गत आते हैं।

पाठ्यपुस्तक-मूल्यांकन

पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सन् 1981 में शुरू किया था जबकि राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से इतिहास और भाषाओं की स्कूली पाठ्यपुस्तकों को मूल्यांकित किया गया था। मूल्यांकन की मार्गदर्शी रेखाएँ और उपकरण बना लिए गए हैं। कार्यक्रम को लागू करने की विधि ढूँढ़ ली गई है। इस कार्यक्रम को हाथ में लेने के लिए राज्य सरकारों ने अपने अपने राज्यों में संस्थाएँ ढूँढ़ ली हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की अंग्रेजी, इतिहास, संस्कृत और हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का काम भी हाथ में लिया गया है।

यूनिसेफ़ की परियोजनाएं

यूनिसेफ़ की परियोजनाएँ राज्य शिक्षा विभागों और राज्य स्तर के संस्थानों के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही हैं। इन परियोजनाओं के लक्ष्य हैं—स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या का विकेन्द्रीकृत प्रतिपादन; उन्हीं विषयों पर अनुदेशीय सामग्री का निर्माण जो समाज से सम्बद्ध हैं; अनौपचारिक परिवेश में स्कूल न जाने वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शिक्षकों में कुशलताओं का विकास; सामुदायिक विकास के लिए स्कूल को केन्द्रीय संस्थान के रूप में तैयार करने वाले उपायों का कार्यान्वयन।

पाठ्यक्रम नवीकरण

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण यूनिसेफ़ की उन परियोजनाओं मे से है जिन्हें देश के तीस राज्यों एवं संघ क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर परिषद् इस परियोजना पर नजर रखती है और राज्यों/संघ क्षेत्रों को मार्गदर्शन प्रदान करती है। भाषाओं, परिवेश अध्ययनों, स्वास्थ्य शिक्षा, गणित, सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्षेत्र में नीचे लिखे राज्यों में कार्यक्रम किए गए—महाराष्ट्र (7 से 22 जून 1982); गुजरात एवं गोआ (25 से 30 जून 1982); हरियाणा (2 से 7 जुलाई 1982); राजस्थान (12 से 17 जुलाई 1982); पंजाब (19 से 25 जुलाई 1982) और बिहार (26 से 31 जुलाई 1982)।

पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा

यूनिसेफ़-पोषित परियोजना "पोषण, स्वास्थ्य-शिक्षा एवं परिवेशीय स्वच्छता" को प्रारम्भ में केवल पंजाब, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात और पश्चिम बंगाल में ही शुरू किया गया था। किंतु इस वर्ष सात और राज्यों ने भी इसे अपना लिया है। ये राज्य हैं—असम, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, और हरियाणा।

प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा

शिशुओं को सँभालने के लिए जिस ज्ञान, समझ, कौशल और अभिवृत्ति की जरूरत होती है; उसमें पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक शिक्षकों को निपुण बनाने के लिए, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों के वास्ते एक-एक महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम किए गए जिनमें उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, बिहार, महाराष्ट्र और राजस्थान के अध्यापक-शिक्षक सम्मिलित हुए।

प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का प्रबोधन एवं मूल्यांकन

भारत में प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की परियोजना का प्रबोधन एवं मूल्यांकन करने के लिए उपकरणों की खोज कर ली गई और उन्हें आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और गुजरात

जाँचा-परखा गया। अब प्रयोग के तौर पर इनकी उड़ीसा, जम्मू एवं काश्मीर तथा राजस्थान में भी जाँच की जाएगी। ये उपकरण औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों किस्म की शिक्षा प्रणालियों के लिए हैं।

अनुसूचित जातियों की शिक्षा

अनुसूचित जातियां एवं अनुसूचित जनजातियों के लिए पाठ्यक्रम-निर्माण की उप-समिति की एक बैठक दिल्ली में जून 1982 में की गई। पश्चिम बंगाल के संथाल बच्चों के लिए अनुदेशीय-सामग्री के निर्माण के निमित्त कार्यकारी दल की एक बैठक नई दिल्ली में 1 से 10 सितम्बर 1982 तक की गई। उड़ीसा की साओरा जनजाति के बच्चों की कक्षा II की प्राइमर को अंतिम रूप देने के लिए एक और बैठक नई दिल्ली में 6 से 10 सितम्बर 1982 तक हुई।

प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीकरण/ अनौपचारिक शिक्षा

आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, जम्मू एवं काश्मीर, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा के पिछड़े राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा के प्रभारी अधि-कारियों का एक सम्मेलन दिल्ली में 5 से 7 अगस्त तक हुआ। इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वियन की क्या स्थिति है। इसमें विभिन्न राज्यों को उलझाने वाली समस्याओं पर भी विस्तार से विचार किया गया।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में लगे हुए आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, गुजरात, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और लक्षद्वीप राज्यों के मुख्य कार्मिकों को भाषणों, परि-चर्चाओं और स० उ० का० के कार्यकलापों के माध्यम से अनुकूलित किया गया।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु और दिल्ली प्रदेशों के प्रिंसिपलों और मुख्य कार्मिकों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण में अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित किए गए। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गोआ, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में व्यावसायिक विषयों पर अल्प-कालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम किए गए। व्यावसायिक विषयों में शिल्पविज्ञान, वाणिज्य, कृषि और पैरामेडिकल विषयों को लिया गया था।

अध्यापक शिक्षा

रा० शै० अ० और प्र० प० सभी स्तरों पर अध्यापक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्याओं के संशोधन-परिवर्धन के कार्य में लगी हुई है। इसके लिए वह विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों

से घनिष्ठ सम्पर्क बनाए हुए है। बी० एड० की पाठ्यचर्या को संशोधित करने में औरंगाबाद, नागपुर और बम्बई के विश्वविद्यालयों की मदद की गई। एशियाई और पैसिफिक क्षेत्रों के अध्यापक-प्रशिक्षण में लगे हुए अध्यापकों एवं शैक्षणिक कार्मिकों तथा विशेषज्ञों के लिए दिल्ली में 5 से 14 अप्रैल 1982 तक एक यूनेस्को क्षेत्रीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में ग्यारह देशों के प्रतिनिधि आए।

सतत शिक्षा के केन्द्र

विभिन्न राज्यों में सदा चलती रहने वाली शिक्षा के केन्द्र विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में बनाए गए हैं। इन केन्द्रों को चलाने में परिषद् सम्बद्ध राज्य सरकारों को सहयोग देती आ रही है। अभी तक 97 केन्द्र स्थापित किए जा चुके हैं। इन केन्द्रों द्वारा शिक्षकों के लिए चलाए जाने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का खर्च रा० शै० अ० और प्र० प० तथा राज्य सरकार के बीच बराबर-बराबर बँट जाता है।

अपंग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा

अपंग बच्चों को शिक्षित करने में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए, चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में सुविधाओं की व्यवस्था करने का निर्णय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने किया है। छह महीनों की अवधि वाला एक कोर्स भी बनाया गया है जिसमें महाविद्यालय के कुछ शिक्षक प्रशिक्षित होकर अध्यापक-शिक्षक बनेंगे और अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। हर महाविद्यालय अलग अलग क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्रदान करेगा।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय सेवापूर्व कोर्स, सेवाकालीन प्रशिक्षण, प्रसार, पत्राचार कोर्स और कुछ अन्य विशेष कार्यक्रम नियमित रूप से चलाते हैं। अध्यापक-शिक्षा के अभिनव परिवर्तन वाले और एकीकृत कोर्सों के कार्यक्रम इन महाविद्यालयों में रखे जाते हैं। जिन विश्वविद्यालयों के साथ इनकी संलग्नता रहती है, वे ही इन्हें डिग्रियाँ देते हैं। ये महाविद्यालय आवासीय हैं और इनमें पढ़ने वाले छात्रों के पचास प्रतिशत को योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति दी जाती है।

शैक्षिक मनोविज्ञान

बच्चे को समझने और आवश्यकता-आधृत शिक्षा प्रदान करने के विचार से मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के इस्तेमाल के लिए मुख्य कार्मिकों को प्रशिक्षित करने का काम रा० शै० अ० और प्र० प० ने हाथ में लिया था। अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रति कोर्स पन्द्रह शिक्षक के हिसाब से आठ दिनों वाले प्रोक्टिकम कोर्सों की योजना बनाई गई। स्कूल-

व्यवस्था में व्यवहार-सुधार तकनीक के इस्तेमाल के लिए अनेक मुख्य कार्मिकों को आठ से दस दिनों वाले प्रैक्टिकल कोर्सों में प्रशिक्षित भी किया गया। अध्यापक-शिक्षकों के लिए अधिगम के सम्पन्नता-कोर्स भी चलाए गए। परिषद् के राष्ट्रीय परीक्षण विकास घर के संग्रह में और भी अधिक मानकीकृत परीक्षण बढ़ाए गए।

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के इक्कीसवें डिप्लोमा कोर्स में तैंतीस प्रशिक्षार्थी थे। इनमें से तीन प्रतिनियुक्त किए गए थे और शेष तीस नौ राज्यों के गैर सरकारी प्रशिक्षार्थी थे। सात प्रशिक्षार्थी अनुसूचित जातियों के थे। इनको मिला कर कुल पच्चीस प्रशिक्षार्थियों को 250 रु० प्रति माह के हिसाब से वजीफ़ा दिया गया।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

वर्ष के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० ने शैक्षिक दूरदर्शन के पचास आदर्श कार्यक्रम बनाए। ये कार्यक्रम बीस-बीस मिनट के हैं और ये आंध्र प्रदेश तथा उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के लिए बने हैं। मूल रूप से इन कार्यक्रमों को **इनसैट** द्वारा दिखाया जाना था। ये कार्यक्रम ग्राउंड स्टेशनों को दे दिए गए हैं। इन कार्यक्रमों से हर राज्य के छह-छह सौ गाँव लाभान्वित हुए।

शिक्षण-साधन

इनसैट के लिए फिल्म स्क्रिप्टें और वीडियो कार्यक्रम बनाने के निमित्त 11 से 13 मई 1982 तक एक कार्यगोष्ठी की गई। इसमें विज्ञान शिक्षकों, वैज्ञानिकों, बाल साहित्य के लेखकों और मीडिया विशेषज्ञों ने भाग लिया जिनकी संख्या 15 थी।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी को जनसंख्या समस्या से अवगत कराना है ताकि बड़े होने पर यह पीढ़ी अधिक जिम्मेवार बन सके। इस विषय को एक स्कूली पाठ्य विषय बनाए बगैर ही परियोजना इसे स्कूलों में ले आना चाहती है। इसके कार्यान्वयन के लिए यूनेस्को तकनीकी मार्गदर्शन दे रही है।

परीक्षा सुधार

परिषद् मध्य प्रदेश, उड़ीसा, सिक्किम और तमिलनाडु राज्यों तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को उनके परीक्षा सुधार कार्यक्रमों में मदद करती आ रही है। निकष-संदर्भित परीक्षण, प्राथमिक स्कूलों में मूल्यांकन, मूल्यांकन के पठन और व्यावहारिक परीक्षा जैसे

विषयों पर पुस्तकें बनाई गईं। इतिहास और भूगोल की परीक्षण इकाइयाँ छप चुकी हैं। 'ओपेन बुक इक्जामिनेशंस' के अध्ययन को पूरा किया जा चुका है।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

हर साल राष्ट्रीय परिषद् 550 छात्रवृत्तियाँ देती है जिनमें 50 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए होती हैं। इसके लिए परिषद् भारतीय संविधान में स्वीकृत सभी भाषाओं में परीक्षाएँ लेती है। ये परीक्षाएँ हर वर्ष मई में आयोजित की जाती हैं। इन परीक्षाओं में कक्षा दस, ग्यारह और बारह के छात्र बैठ सकते हैं। छात्रवृत्ति-विजेता छात्र विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञानों में किसी भी विषय में पीएच० डी० तक की पढ़ाई छात्रवृत्ति के आधार पर कर सकते हैं या इंजीनियरिंग और डाक्टरी की पढ़ाई में जा सकते हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की परीक्षाओं में कक्षा X में 46,365, कक्षा XI में 8,988 और कक्षा XII में 27,967 छात्र 439 केन्द्रों में बैठे।

सर्वेक्षण और आधार-सामग्री प्रक्रिया

चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की मुख्य रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। इसमें 1978-79 के स्कूलों की अलग अलग कक्षाओं में भर्ती हुए छात्रों की संख्या, शिक्षकों की संख्या और वर्तमान शैक्षिक सुविधाओं की जानकारी दी गई है। कुल रिपोर्ट 982 पृष्ठों की है।

यू० एस० ए० आई० डी० के सुझाव पर प्राथमिक स्तर पर प्रवेशार्थियों की संख्या पर 'दुपहर के भोजन के कार्यक्रम' के प्रभाव का अध्ययन शुरू किया गया है। जिन तेरह राज्यों में 'दुपहर का भोजन-कार्यक्रम' चल रहा है, उनका अध्ययन किया जाएगा। चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के आधार पर जिला शिक्षा योजनाओं के विकास को शुरू किया गया है।

अनुसंधान और अभिनव परिवर्तन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न अधिकारियों ने अपनी कई अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी कर नई परियोजनाओं पर काम शुरू कर दिया है। शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) ने भी अनेक शोध परियोजनाओं को पोषण देना जारी रखा। इस वर्ष के दौरान अठारह शोध परियोजनाएँ पूरी हुईं। पीएच० डी० के नौ प्रबंध प्रकाशित किए गए।

प्रसार कार्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अहमदाबाद, इलाहाबाद, कलकत्ता, गौहाटी, चंडीगढ़, जयपुर, त्रिवेंद्रम, पटना, पुणे, बंगलूर, भुवनेश्वर, भोपाल, मद्रास,

शिलङ, श्रीनगर और हैदराबाद स्थित सोलह क्षेत्रीय एककों ने शिक्षकों को कक्षा शिक्षण के सुधार में निरंतर सहायता दी ताकि संस्थाओं का वातावरण सुधर सके। प्रसार कार्यक्रमों में ये सम्मिलित हैं—गहन प्रायोगिक परियोजनाएँ, अच्छा स्कूल व्यवहार, अभिनव परिवर्तनों के लिए प्रोत्साहन, सामग्रियों की प्रदर्शनी आदि।

राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

राष्ट्रीय एकीकरण की भावना जगाने के निमित्त स्कूली बच्चों और शिक्षकों के लिए बारह राष्ट्रीय एकता शिविर लगाए गए। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण विकास यह रहा कि शिक्षकों के लिए जो शिविर लगाए गए उनमें सामुदायिक गायन में उन्हें प्रशिक्षित किया गया। इससे यह होगा कि इस विधि से प्रशिक्षित होकर वे शिक्षक अपने अपने स्कूलों में सामुदायिक गायन को बढ़ावा देंगे और इस प्रकार यह जन आंदोलन बन सकेगा। रा० शै० अ० और प्र० प० ने सभी भाषाओं में राष्ट्रीय एकीकरण वाले गाने टेप कर कैसेट बनाए हैं। इन शिविरों में भाग लेने वाले शिक्षकों को ये कैसेट दिए जाते हैं ताकि एकीकरण के उद्देश्य को बल मिल सके।

अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क

वर्ष के दौरान परिषद् के अनेक अधिकारियों को यूनेस्को के कार्यकलापों में हिस्सा लेने के लिए विदेश भेजा गया। इसी प्रकार विदेशी अतिथि भी यहाँ बड़ी संख्या में आए। एपीड के सहयोगी केन्द्र के रूप में काम करना परिषद् ने जारी रखा और द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान प्रदान के कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

शैक्षिक पत्र-पत्रिकाएँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने आगे लिखे पत्रों का प्रकाशन किया—

(i) 'इंडियन एजुकेशनल रिव्यू' (त्रैमासिक), (ii) 'जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन' (द्विमासिक); (iii) 'प्राइमरी शिक्षक' (त्रैमासिक); (iv) 'प्राइमरी टीचर' (त्रैमासिक); (v) 'स्कूल साइंस' (त्रैमासिक)। एक नए हिन्दी पत्र का प्रकाशन शुरू किया जा रहा है जिसका नाम है 'भारतीय आधुनिक शिक्षा'।

शैक्षिक पत्रकारिता पर राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 28-29 जनवरी 1983 को एक राष्ट्रीय सम्मेलन शैक्षिक पत्रकारिता विषय पर किया गया जिसमें देश के विभिन्न भागों से 24 व्यक्ति आए और विभिन्न विषयों पर उन्होंने अपने अपने प्रबंध पढ़े।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान कुल 181 प्रकाशन किए गए जिनका ब्यौरा इस प्रकार है—प्रथम संस्करण वाली नई पाठ्यपुस्तकें (6); पाठ्यपुस्तकों के पुनर्मुद्रण (117); अन्य संस्थाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें (19); अनुसंधान ग्रंथ (24) और पत्र-पत्रिकाएँ (15)।

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम (केप) के अंतर्गत यूनिसेफ़ से सहायता लेकर चलने वाली शोध परियोजनाओं को हाथ में लेने के उद्देश्य हैं : (i) केप के अधीन बने अधिगम उपाख्यानों की क्षमता को निश्चित करना; (ii) सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए विकासात्मक माध्यमों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण प्रणालियों की जाँच और केप अध्ययन केन्द्रों में प्रयुक्त शिक्षण प्रणालियों के साथ उनकी सुसंगति; (iii) ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में प्राथमिक स्कूल शिक्षकों से विकासात्मक माध्यमों द्वारा की जाने वाली अपेक्षाओं का अध्ययन; और (iv) नौ से चौदह वर्ष के बच्चों की पठन योग्यता पर टाइपोग्राफी के विभिन्न कारकों के प्रभाव का अध्ययन।

रा० शै० अ० और प्र० प० के पुनर्गठन के लिए टास्क फोर्स

इस वर्ष जो विशेष बातें हुई उनमें एक प्रमुख बात है राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् पर भारत सरकार द्वारा टास्क फोर्स की संरचना। यह टास्क फोर्स पब्लिक एकाउंट्स कमेटी की अड़तालीसवीं रिपोर्ट की सिफ़ारिश पर बनाया गया है। इस सिफ़ारिश को लागू करने के विचार से भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने नीचे लिखी बातों के अनुसार एक टास्क फोर्स बनाए जाने का निर्णय लिया—

(i) परिषद् की नियमावली में दिए गए दीर्घ अथवा लघु काल वाले उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में परिषद् द्वारा किए गए कार्यों का समीक्षात्मक मूल्यांकन।

(ii) पहले बनाई गई समितियों द्वारा की गई सिफ़ारिशों की, खास कर जिनका जिक्र पब्लिक एकाउंट्स कमेटी ने किया है, इस दृष्टि से समीक्षा करना कि परिषद् के भविष्य के लिए वे कितनी प्रासंगिक अथवा महत्वपूर्ण हैं।

(iii) स्कूल शिक्षा के भावी विकास के क्षेत्र में उठने वाली चुनौतियों का सामना कर पाने की सामर्थ्य परिषद् में आ सके, इस दृष्टि से परिषद् के लिए एक संगठनात्मक संरचना का सुझाव।

(iv) ऊपर गिनाई गई बातों के प्रकाश में, परिषद् के लिए प्रबंधन और निर्णय लेने के क्षेत्र में संरचना और प्रक्रियाओं के बारे में सुझाव।

टास्क फोर्स इस प्रकार गठित होगा—

(i) डा० (श्रीमती) माधुरी शाह (अध्यक्ष)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

(ii) डा० वी० जी० कुलकर्णी (सदस्य)
परियोजना निदेशक
टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ़ फंडामेंटल
रिसर्च, होमी भाभा सेंटर फॉर
साइंस एजुकेशन
बम्बई

(iii) प्रोफ़ेसर सत्य भूषण (सदस्य)
उप कुलपति
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू तवी

(iv) श्री० पी० के० उमाशंकर (सदस्य)
शिक्षा आयुक्त
केरल सरकार
त्रिवेंद्रम

(v) डा० शिवकुमार मित्र (सदस्य)
निदेशक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

(vi) श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन (सदस्य)
वित्त सलाहकार
शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय
नई दिल्ली

(vii) संयुक्त सचिव (स्कूल) (सचिव)
शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)
नई दिल्ली

3

प्रारम्भिक शैशवकाल की शिक्षा

स्कूल-पूर्व की शिक्षा के क्षेत्र में रा० शै० अ० और प्र० प० देशी उपक्रमों, शिक्षण सामग्रियों के निर्माण, कार्मिकों के प्रशिक्षण, चल रही गतिविधियों के मूल्यांकन और खिलौनों, चित्रों, पुस्तकों, श्रव्य टेपों आदि के निर्माण के कार्यक्रम करती है। यूनिसेफ़ की सहायता से बनाई गई शिशु माध्यम प्रयोगशाला में रा० शै० अ० और प्र० प० तीन से आठ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए शैक्षिक उपयोगिता वाले कम खर्च के, अनौपचारिक तथा प्रभावी माध्यमों की खोज करती है। इस कार्यक्रम का मुख्य पक्ष है अध्यापक-शिक्षकों, स्कूल-पूर्व के शिक्षकों और पर्यवेक्षकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

यह परियोजना उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, बिहार, महाराष्ट्र और राजस्थान राज्यों में लागू की गई है।

अध्यापक-शिक्षकों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 15 अप्रैल से 14 मई 1982 की अवधि में उड़ीसा और महाराष्ट्र के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रारम्भिक शैशव काल की शिक्षा में एक महीने का प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। इसका उद्देश्य था शिशु और उसके विकास में शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य था शिशु विकास की अधुनातन प्रवृत्तियों से प्रतिभागियों को परिचित कराना और उनका उपयोग प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा में करना। इस कार्यक्रम में नाटक, कठपुतली खेल, चित्रकला जैसे रचनात्मक व्यावहारिक कार्यकलापों को मुख्य महत्व दिया गया। सम्बद्ध सामग्रियों के निर्माण के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया गया। परिचर्चाओं, विशेष भाषणों और बालभवन, गुडिया घर तथा संकटग्रस्त (एस० ओ० एस०) गाँव की यात्राओं द्वारा इस कोर्स को सुसम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में उड़ीसा के आठ और महाराष्ट्र के पन्द्रह प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 14 जून से 13 जुलाई 1982 तक राजस्थान *के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रारम्भिक शैशव काल की शिक्षा में एक महीने का प्रशिक्षण* कार्यक्रम किया गया। इसमें कुल 27 व्यक्तियों ने भाग लिया—26 राजस्थान से आए थे और एक पंजाब से। इन प्रतिभागियों को प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा की प्रणालियों और शैलियों से अवगत कराया गया। ये प्रतिभागी आगे चलकर 65 पूर्व-प्राथमिक केन्द्रों के पूर्व-प्राथमिक अध्यापकों को प्रशिक्षित करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में ही बिहार और महाराष्ट्र के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रारम्भिक शैशव काल की शिक्षा में एक महीने का एक अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम 14 जुलाई 1982 को शुरू किया गया जिसमें 42 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

इसी प्रकार का एक अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम गांधीग्राम में 1 जुलाई से 30 जुलाई 1982 तक गांधीग्राम ट्रस्ट द्वारा तमिलनाडु के अध्यापक-शिक्षकों के लिए किया गया जिसमें 19 व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस कोर्स में प्रारम्भिक शैशव काल की शिक्षा की प्रणालियों एवं विधियों पर सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्ष से विचार विमर्श एवं कार्यकलाप किए गए।

इसी प्रकार का एक और कार्यक्रम कोयम्बतूर के श्री अविनाशलिंगम गृह-विज्ञान महाविद्यालय में 19 जुलाई से 18 अगस्त 1982 तक कर्नाटक राज्य के लिए किया गया।

शिशु-माध्यम में स्थिति-निर्धारण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर मे 1 मार्च से 6 मार्च 1983 तक शिशु-माध्यम का एक स्थिति-निर्धारण कार्यक्रम राज्य स्तर के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए किया गया। यह कार्यक्रम एक शृंखला की पहली कड़ी है। यह उड़ीसा, महाराष्ट्र और राजस्थान राज्यों के लिए किया गया जो प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा की परियोजना में शामिल हो गए हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह है कि शिशु-माध्यमों के विभिन्न पक्षों में केन्द्रीय स्तर पर अनुकूलित हुए प्रतिभागी आगे चलकर अपने-अपने राज्यों के अध्यापक-शिक्षकों और अध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर सकेंगे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राज्यों से प्रार्थना की गई थी कि निम्नलिखित क्षेत्रों में से हरेक के लिए एक-एक विशेषज्ञ इस कार्यक्रम में भेजें—प्रारम्भिक शैशवकाल की शिक्षा, शिशु विकास, बाल साहित्य, बाल चित्रावली, श्रव्य टेपों का उत्पादन एवं फोटोग्राफी।

इसी प्रकार का एक अन्य अनुकूलन कार्यक्रम तमिलनाडु और बिहार राज्यों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 28 जून से 3 जुलाई 1982 तक किया गया। हर राज्य ने छह-छह व्यक्तियों का दल इसके लिए भेजा।

इसी प्रकार कर्नाटक के छह संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के एक दल को शिशु-माध्यमों में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में 20 से 24 सितम्बर 1982 तक अनुकूलित किया गया।

कम खर्च वाली खेल सामग्री पर जनजातीय और सुदूर के क्षेत्रों के शिक्षकों का प्रशिक्षण

पश्चिम बंगाल के सुदूर स्थित क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए कलकत्ता में 20 से 29 जनवरी 1983 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया।

अरुणाचल प्रदेश के विवेकानन्द केन्द्र के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अरुणाचल प्रदेश के जयरामपुर में 19 से 23 अप्रैल 1982 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया।

शिशुओं के लिए श्रव्य कार्यक्रमों के आलेख लेखन की कार्यगोष्ठी

शिशुओं के लिए श्रव्य कार्यक्रमों के आलेख-लेखन की एक कार्यगोष्ठी 31 अगस्त से 9 सितम्बर 1982 तक की गई। इसमें तीन से छह वर्ष के शिशुओं के लिए हिन्दी में श्रव्य कार्यक्रमों के आलेख लिखे गए। कार्यगोष्ठी में उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान से आए

17 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इन प्रतिभागियों में शिशु साहित्य के लेखक और पूर्व प्राथमिक तथा प्राथमिक स्कूलों के शिशुओं के लिए श्रव्य कार्यक्रमों के प्रस्तोता थे।

कुल मिलाकर 21 आलेख तैयार किए गए जो कीड़ों-मकोड़ों, पानी के रूप, दूध और उससे बनी चीजें, बाजे, रोशनी, रोटी की कहानी, बच्चे के निरीक्षण, आवाज की पहचान, जंगली जानवर, मौसम जैसे विषयों से सम्बद्ध थे। इन आलेखों पर आधारित श्रव्य कार्यक्रम तैयार किए जाएँगे।

प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा के अध्यापक-शिक्षकों के लिए शिक्षण-सामग्री

अध्यापक-शिक्षकों के लिए शिक्षण-सामग्री तैयार करने के निमित्त एक कार्यगोष्ठी 29 नवम्बर से 4 दिसम्बर 1982 तक की गई। इसमें दस पांडुलिपियों पर विचार-विमर्श हुआ। गोष्ठी में दस लेखक और चार संसाधन सम्पन्न व्यक्ति, जिनमें तीन अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से आए थे, सम्मिलित हुए। पांडुलिपियों पर सुझाव दिए गए और लेखकों को संशोधित पांडुलिपि प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

सम्मेलन

स्कूल-पूर्व के शिशुओं के लिए श्रव्य कार्यक्रमों पर प्रस्तोताओं और शिक्षकों के वास्ते एक सम्मेलन राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 18 अक्तूबर 1982 को किया गया। इसका उद्देश्य था सन् 1981 में हुए सम्मेलन की सिफ़ारिशों की समीक्षा करना और तदनुसार बाद में किए गए कामों के बारे में विचार-विमर्श करना तथा साथ ही स्कूल-पूर्व के शिशुओं के लिए श्रव्य कार्यक्रमों की योजना, विकास और प्रस्तुतीकरण पर भी विचार-विमर्श करना था। इस सम्मेलन में पाँच प्रबंध पढ़े गए।

बाल साहित्य के विषयों पर 8 से 10 अप्रैल 1982 तक एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य प्रयोजन स्कूल-पूर्व के शिशुओं की योग्यता और रुचियों के परिप्रेक्ष्य में उनके लिए साहित्य सृजन की आवश्यकता पर बल डालना था। स्कूल-पूर्व के शिशुओं के लिए साहित्य निर्माण से सम्बद्ध लेखकों, चित्रकारों और प्रकाशकों में संवाद की स्थिति पैदा करना इस सम्मेलन का उद्देश्य था। देश के विभिन्न भागों से आए 18 व्यक्तियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

शिशु-माध्यम प्रयोगशाला की सामग्रियों का मूल्यांकन—एक अध्ययन

यह अध्ययन बस्तर जिले के जनजातीय क्षेत्रों में 20 मई 1982 को शुरू किया गया। इसका उद्देश्य था शिशु-माध्यम प्रयोगशाला की सामग्रियों का मूल्यांकन करना। नमूने के

लिए बारह आंगनबाड़ियों के 144 बच्चे लिए गए। ये बच्चे टोकापाल की आई० सी० डी० एस० परियोजना की आंगनबाड़ियों के थे। इन्हें दो वर्गों में बाँटा गया—प्रायोगिक और नियंत्रण। परीक्षण विभिन्न बोधात्मक और भाषा कार्यों पर किया गया। उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, तंदुरुस्ती, स्वच्छता आदि के बारे में भी जानकारी एकत्र की गई।

शिशु-माध्यम प्रयोगशाला की विभिन्न सामग्रियों के इस्तेमाल में अनुकूलित करने के लिए टोकापाल की प्रयोगात्मक वर्ग की छह आंगनबाड़ियों में काम करने वालों के वास्ते ग्यारह दिनों की एक कार्यगोष्ठी की गई। विभिन्न कार्यकलापों को करने का अभ्यास करवाया गया। कुछ दिनों बाद बस्तर जिले में नमूने के इन्हीं बच्चों पर परीक्षण किया गया। इस परियोजना का दूसरा भाग दिल्ली के खानपुर ब्लॉक की बालबाड़ी के बच्चों पर आयोजित किया गया।

2½ से 13 वर्ष के भारतीय बच्चों का बोधात्मक विकास

यह पीजेटीयन नमूने पर (i) नैमित्तिक चिंतन, (ii) रक्षण, (iii) संबंध, (iv) देश काल, गति और चाल, तथा (v) सेंसरी मोटर स्ट्रक्चर का एक विकासात्मक अध्ययन है। *यह अध्ययन कार्य इस उद्देश्य से हाथ में लिया गया है कि बोधात्मक विकास के सिद्धांत को* भारत में विकसित किया जाए। परियोजना पर कार्य अक्तूबर 1978 में ही शुरू कर दिया *गया था। चार वय समूहों के बच्चों अर्थात् 2,5,8 और 11 वर्ष के बच्चे को अध्ययन के लिए* चुना गया। अध्ययन अनुदैर्ध्य पद्धति से किया गया है। आधार सामग्री को सारणीबद्ध किया जा चुका है और उनका विश्लेषण हो रहा है। आँकड़ों का संकलन किया जा रहा है। काम की रिपोर्ट लिखी जा रही है।

शिक्षा में कला-आस्वादन

वंचित वर्ग के बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें कला का आस्वादन कराना इस परियोजना का उद्देश्य है। इसके लिए नई दिल्ली के बाल भारती स्कूल को समन्वय केन्द्र के रूप में लिया गया था। निजामुद्दीन के गूंगे-बहरों के स्कूल के बच्चों और अंध विद्यालय के अंधे बच्चों तथा भाटी गाँव के बच्चों को कला-आस्वादन के अनुभव कराए गए। परियोजना में शिक्षकों को भी शामिल किया जाना है और बच्चों द्वारा किए गए कामों की एक प्रदर्शनी लगाई जानी है।

शिशु-माध्यम प्रयोगशाला के कार्यकलाप

(क) **'शैक्षिक खेल सामग्री'** परियोजना का उद्देश्य यह दिखाना है कि स्थानीय रूप से उपलब्ध खिलौनों और अन्य सस्ते सामानों से किस प्रकार लिखना-पढ़ना सिखाना प्रभावी हो सकता है। परियोजना के चार पहलू हैं—

—राज्यों में उपलब्ध खिलौनों और खेल-सामग्री का व्यवस्थित सर्वेक्षण करवाना ।

—इन खिलौनों की शैक्षिक सम्भावनाओं का पता लगाना और उनको शैक्षिक माध्यम के तौर पर प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक-पुस्तिकाएँ बनवाना ।

—इन खिलौनों को सुधारने के लिए तरीके सुझाना ।

—स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री द्वारा नए खिलौने बनवाना ।

इस परियोजना पर एक कार्यगोष्ठी इलाहाबाद के नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में 3 से 5 मार्च 1983 तक हुई । उत्तर प्रदेश के शिक्षकों के लिए जो पुस्तिका तैयार की गई थी उसी का 'फीड बैक' प्राप्त करने के लिए यह कार्यगोष्ठी मुख्य रूप से लगी रही ।

आंध्र प्रदेश के शिक्षकों के लिए खेल सामग्री पर एक पुस्तिका छप चुकी है । आंध्र प्रदेश में उपलब्ध पारम्परिक और कम खर्च वाली खेल सामग्री के संक्षिप्त विवरण के अलावा इस पुस्तिका में ऐसे कार्यकलाप बताए गए हैं जिन्हें खेल सामग्री की मदद से कक्षा में किया जा सकता है और उनकी शैक्षिक सम्भावनाओं को देखा जा सकता है ।

(ख) मुद्रित ग्राफ़िक सामग्री के अंतर्गत दस मेमोरी कार्डों के आर्ट वर्क बनाने का काम पूरा किया जा चुका है । इसका उद्देश्य बच्चों में निरीक्षण और स्मृति को सुकर बनाना है । बातचीत के चार चार्टों के चित्र बनाए जा चुके हैं । इसका उद्देश्य शिशुओं में मौखिक अभिव्यक्ति को सरल बनाना है ।

बच्चों के लिए दो बोर्ड खेल छापे जा चुके हैं । पहला 'भाषा की उड़ान' है जो भाषा सिखाने के लिए है । दूसरा 'पौष्टिक' है जो संतुलित आहार के बारे में है । बोर्ड पासे वाले दोनों खेल रंगीन चित्रों से सुसज्जित हैं ।

(ग) श्रव्य कार्यक्रमों—के अंतर्गत आकाशवाणी द्वारा शिशुओं के लिए प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों का अनुश्रवण और मूल्यांकन तथा तीन से आठ वर्ष तक के शिशुओं के लिए कार्यक्रमों के आदर्श रूप तैयार करना है । कलकत्ता दूरदर्शन से दिखाए जाने वाले बच्चों के कार्यक्रम के अनुश्रवण की परियोजना के अनुश्रवकों के लिए 12 अक्तूबर 1982 से तीन दिनों का एक अनुकूलन कार्यक्रम कलकत्ता के दूरदर्शन केन्द्र में शुरू किया गया । इस कार्यक्रम में परियोजना के अवैतनिक निदेशक के साथ छह अनुश्रवक और एक अधीक्षक सम्मिलित हुए । अनुकूलन का एक अन्य कार्यक्रम इलाहाबाद के राज्य शिक्षा संस्थान में 20 और 21 अगस्त 1982 को रेडियो अनुश्रवण पर तीन नाभिकाओं (शहरी गंदी बस्ती, शहरी और देहाती वर्ग) के लिए किया गया । कार्यक्रम को सुधारने और लोकप्रिय बनाने के सुझाव दिए गए ।

पंजाबी और मराठी में पन्द्रह-पन्द्रह मिनट वाले दो-दो श्रव्य कार्यक्रम तैयार हैं। हरेक में एक कहानी, एक खेल और मुक्त बातचीत है।

(घ) **प्रोजेक्टेड साधनों का कार्यक्रम**—'चाय की कहानी' नामक एक 'स्लाइड-कम-टेप' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। इसमें 45 स्लाइडें और एक श्रव्य टेप हिन्दी में है। इसमें एक गाने की सहायता से समझाया गया है कि चाय कैसे बनती है और उसमें क्या-क्या चीजें पड़ती हैं।

(ङ) **स्लाइड टेप कार्यक्रम**—'सैंड प्ले' नामक स्लाइड टेप कार्यक्रम का छायाचित्र वाला भाग पूरा कर लिया गया है। आई० सी० डी० एस० की इस परियोजना को शिशु अध्ययन एकक के कर्मचारियों ने परामर्श सेवाएँ दीं।

पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक स्कूल-शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय और राज्य-स्तर की खिलौना बनाने की प्रतियोगिता

प्रतियोगिता दो स्तरों पर होती है। पहले राज्य स्तर पर फिर राष्ट्रीय स्तर पर। राज्य स्तर पर प्रतियोगिताओं की व्यवस्था रा० शै० अ० और प्र० प० के क्षेत्र सलाहकारों ने अपने अपने राज्यों में की। हर राज्य में खिलौनों की जाँच तीन निर्णायकों की एक समिति ने की और पुरस्कार घोषित किए। तीन दिनों का एक कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर किया गया जिसमें हर राज्य या संघ क्षेत्र से एक एक प्रतियोगी के हिसाब से कुल 17 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में रा० शै० अ० और प्र० प० के शिशु अध्ययन एकक द्वारा बनाई गई मार्गदर्शी रेखाओं के आधार पर प्रतियोगियों ने वहीं बैठकर खिलौने बनाए। तीन निर्णायकों की एक समिति ने प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा की

इस अवसर पर राज्य स्तर के पुरस्कृत खिलौने और राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कृत खिलौने प्रदर्शित किए गए।

4

प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीकरण

प्रारम्भिक शिक्षा को सभी लोगों तक पहुँचाने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० विविध प्रकार के कार्य करती है जिनमें शोध, विकास, प्रशिक्षण और प्रसार के कार्यक्रम शामिल हैं। इसके लिए ऐसे कार्यकलाप हाथ में लिए जाते हैं जिनसे औपचारिक शिक्षा तक सभी की पहुँच हो। इसके साथ ही उन लोगों के लिए जो बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं, अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था को बढ़ावा दिया जाता है। औपचारिक शिक्षा के लिए पाठ्य-क्रम नवीकरण के कार्यकलाप हाथ में लिए जाते हैं और अनौपचारिक शिक्षा के लिए उपयुक्त अनुदेशीय-कार्यक्रमों तथा शिक्षा-सामग्री का निर्माण किया जाता है।

राज्य शिक्षा विभागों तथा राज्य स्तर के राज्य शिक्षा संस्थानों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों जैसे प्रशिक्षण संस्थानों के सहयोग से प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को बढ़ावा देने वाली नीचे लिखी विशिष्ट परियोजनाएँ यूनिसेफ़ की सहायता से चलती रहीं—

(i) प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम ।

(ii) प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण ।

(iii) समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियाँ ।

(iv) पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं परिवेश-स्वच्छता ।

(v) प्रारम्भिक शैशवकालीन शिक्षा/शिशु माध्यम प्रयोगशाला ।

ऊपर गिनाई गई परियोजनाओं में से शुरू की तीन के कार्यकलापों के बारे में इस अध्याय में लिखा जा रहा है । शेष दो के बारे में यथास्थान लिखा गया है ।

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम

"प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम" (केप) की परियोजना अब तक स्कूल-शिक्षा से वंचित अधिसंख्य बच्चों की न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने और अंशकालिक अनौपचारिक शिक्षा में 9 से 14 वर्ष के स्कूल न जाने वाले बच्चों के नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त करने के भारत सरकार के प्रयत्न का एक भाग रही है । परियोजना के अंतर्गत स्थानीय रूप से प्रासंगिक अधिगम-सामग्री (अधिगम उपाख्यान) पर्याप्त संख्या और किस्मों में बनाई जा रही है। प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों (टी० टी० आई०) के पाठ्क्रमों अथवा प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के लिए अंतः सेवा प्रशिक्षण कोर्सों में एक प्रशिक्षण-उत्पादन विधि को लाकर अधिगम उपाख्यान बनाए जा रहे हैं। प्रक्रियन और संशोधन के उपरांत अधिगम उपाख्यानों को परियोजना में हिस्सा लेने वाले राज्यों व संघ क्षेत्रों के प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों (टी० टी० आई०) अथवा अंतः सेवा अध्यापक-प्रशिक्षण केन्द्रों (आई० टी० टी० सी०) के साथ संलग्न करने के निमित्त स्थापित किए गए प्रायोगिक अधिगम केन्द्रों में प्रयुक्त किया जाएगा । इसके बाद राज्यों व संघ क्षेत्रों में मूल्यांकन केन्द्रों एवं प्रत्यायन सेवाओं की स्थापना की जाएगी ताकि इन अधिगम केन्द्रों में जाने वाले बच्चे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए सनद या श्रेय पा सकें ।

परियोजना के उद्देश्य

परियोजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :

(i) शिक्षा में अनौपचारिक उपागम का विकास और शिक्षित बच्चों की संख्या में वृद्धि, विशेष रूप से उन बच्चों की जो समाज के सुविधा-वंचित समूहों के हैं, औपचारिक शिक्षण के विकल्प के रूप में आयोजित अनौपचारिक शिक्षा क्रिया कलापों में भाग लेना, और (ii) ऐसे नम्य, कार्य आधारित, समस्या केन्द्रित एवं विकेंद्रित पाठ्य-विवरण और अधिगम सामग्री का निर्माण करना जो कि 9 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के विभिन्न समूहों के बच्चों की परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप हों और जो न केवल अनौपचारिक शिक्षा के लिए बल्कि औपचारिक शिक्षा के लिए भी उपयोगी हो।

परियोजना के कार्यान्वयन का परिगणन

परियोजना से संबंधित मूल क्रिया कलापों का कार्यान्वयन तीन प्रमुख चरणों में किया जा रहा है। पहले चरण में, पर्याप्त मात्रा और विविधता में अधिगम उपाख्यानों के विकास, निर्माण, प्रकाशन से संबंधित सभी क्रिया कलाप शामिल हैं। दूसरे चरण में वे सब क्रिया कलाप हैं जो अनौपचारिक अधिगम केंद्रों की स्थापना और उनके कार्यों से संबंधित हैं। परियोजना के तीसरे चरण में वे क्रिया कलाप हैं जो मूल्यांकन केंद्रों और प्रत्यायन सेवाओं की स्थापना से संबंधित हैं।

अरुणाचल प्रदेश और पांडिचेरी के संघ राज्य क्षेत्रों को छोड़कर समस्त राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए समझौता किया है। लेकिन परियोजना में भाग ले रहे सभी राज्यों व संघ क्षेत्रों की गतिविधियाँ एक जैसी नहीं हैं क्योंकि सभी जगहों पर इनके शुरू करने की तारीख अलग अलग है। कुछ राज्यों व संघ क्षेत्रों में इन्हें 1979 में शुरू किया गया तो कुछ में 1980 में और कुछ में 1981 में और कुछेक में तो 1982 में। त्रिपुरा राज्य और दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र में परियोजना के क्रिया कलाप अभी प्रारंभ नहीं किए गए हैं।

किए गए मुख्य कार्य कलाप

उन समस्त राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में परियोजना के प्रथम चरण से संबंधित कार्यों में प्रगति हो रही है जिन्होंने इसे कार्यान्वित किया है। वर्ष 1982-83 के दौरान परियोजना के अधीन किए गए मुख्य क्रिया कलापों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

—अधिगमउपाख्यानों के निर्माण की कार्यप्रणाली पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों/ अंतः-सेवा अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

—अधिगम उपाख्यानों के प्रक्रमण की कार्यप्रणाली पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों/अंत:-सेवा अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

—विभिन्न विषयों और क्षेत्रों से सम्बद्ध कुशलताओं को अधिगम उपाख्यानों में एकीकृत करने की प्रणाली पर एवं कम पठन योग्यता वाले या उस से पूर्णत: विहीन शिक्षार्थियों के लिए अधिगम-सामग्री के निर्माण की प्रणाली पर अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए स्थिति-निर्धारण कोर्स

—'प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम' की परियोजना के नियोजन और प्रबंधन पक्षों पर जिला और ब्लॉक स्तर के शिक्षा अधिकारियों के लिए स्थिति-निर्धारण कोर्स

—अधिगम उपाख्यानों के लिए चित्र निर्माण की प्रणाली पर कला शिक्षकों/कलाकारों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

—प्रक्रमण के लिए अधिगम उपाख्यानों के प्रारूपों की काट-छाँट

—अधिगम उपाख्यानों के प्रारूपों का प्रक्रमण

—अधिगम उपाख्यानों का उत्पादन/प्रकाशन

लक्ष्य की उपलब्धि

देश के 30 राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्/ डी० एस० ई० आर० टी०/एस० आई० ई० आर० टी० और 980 प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान/अंत:-सेवा अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र कैप परियोजना के कार्यान्वियन में लगे हुए हैं। अधिगम उपाख्यानों के निर्माण एवं प्रक्रमण की प्रणाली में लगभग 40 क्षेत्रीय विकेन्द्रीकृत संसाधन केन्द्रों के सदस्यों को 1982-83 के दौरान प्रशिक्षित किया गया। अधिगम उपाख्यानों के निर्माण की प्रणाली में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के 473 अध्यापक-शिक्षकों तथा 806 सेवा-रत शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। अधिगम उपाख्यानों के प्रक्रमण की प्रणाली में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों/अंत:-सेवा अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के 1165 अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। विभिन्न विषयों या क्षेत्रों से सम्बद्ध कुशलताओं को अधिगम उपाख्यानों में एकीकृत करने की प्रणाली पर एवं कम पठन योग्यता वाले अथवा उससे पूर्णत: विहीन शिक्षार्थियों के लिए अधिगम-सामग्री के निर्माण की प्रणाली पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों/अंत:-सेवा अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के 581 अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। 'प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम' की परियोजना के नियोजन और प्रबंधन पक्षों पर जिला और प्रखंड स्तर के 504 शिक्षा अधिकारियों को अनुकूलित किया गया। अधिगम उपाख्यानों के लिए चित्र-निर्माण की प्रणाली पर 223 कला शिक्षकों/

कलाकारों को प्रशिक्षित किया गया। अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक प्रशिक्षार्थियों/अध्यापक-शिक्षकों तथा सेवा-रत अध्यापकों द्वारा बनाए गए अधिगम उपाख्यानों के प्रारूपों की काट-छाँट के लिए 38 कार्यगोष्ठियाँ की गईं। इस प्रक्रिया में अ० प्र० सं० के 575 अध्यापक-शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। प्रकाशन के लिए चुने गए अधिगम उपाख्यानों को सुधारने के लिए अ० प्र० सं०/अं० से० अ० प्र० के० के 1092 अध्यापक-शिक्षकों को सम्मिलित करते हुए 56 कार्यगोष्ठियाँ भी इसी काल में की गईं। अ० प्र० सं० के अध्यापक प्रशिक्षार्थियों/अध्यापक-शिक्षकों और सेवा-रत शिक्षकों द्वारा बनाए गए लगभग 400 माडलों को प्रकाशन के लिए तैयार कर लिया गया है। आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, बिहार और मध्य प्रदेश के राज्यों ने 119 अधिगम उपाख्यानों को कैप्सूल के रूप में प्रकाशित कर दिया है।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण

'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण' की परियोजना पाठ्यक्रम नवीकरण कार्यक्रम से सम्बद्ध विभिन्न माध्यमों को अपनाकर निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने में लगी हुई है—

—अभिनव परिवर्तन वाले ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण जो विभिन्न वर्गों से आने वाले बच्चों, खास कर असुविधाग्रस्त क्षेत्रों के बच्चों की जरूरतों के अनुकूल हो।

—बच्चे की जीवन-शैली और आगे उपलब्ध होने वाले सामाजिक-आर्थिक अवसरों के साथ पाठ्यक्रम को गुणात्मक रीति से समायोजित करना।

—परियोजना के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के प्रयोगात्मक शैक्षिक कार्यक्रमों में परीक्षित अभिनव परिवर्तन वाले विचारों को प्रारम्भिक स्कूल पाठ्यक्रम में क्रमिक रूप से मिलाना ताकि वर्तमान प्राथमिक शिक्षा की सार्थकता में वृद्धि हो।

सन् 1979-80 में शुरू की गई इस परियोजना की प्रसार अवस्था में सम्मिलित होने वाले 20 राज्यों और 8 संघ क्षेत्रों को मार्ग निर्देशन देने और राष्ट्रीय स्तर पर परियोजना की देखरेख करने का काम परिषद् के प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ के जिम्मे है। राज्य स्तर पर राज्य शि० सं०/राज्य शै० अ० और प्र० प० अपने राज्य प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठों के माध्यम से परियोजना के कार्यान्वियन का काम देखते हैं। परियोजना के प्रभावी कार्यान्वियन एवं परियोजना-स्कूलों में शैक्षणिक कार्यों के अधीक्षण के लिए राज्य शि० सं०/राज्य शै० अ० और प्र० प० की सहायता के निमित्त 180 से भी अधिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को चुना गया है। परियोजना में 2,469 प्राथमिक स्कूल

शामिल हैं जिनमें चार लाख से अधिक बच्चे पढ़ते हैं। इन स्कूलों में लगभग 11,000 शिक्षक काम कर रहे हैं।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य हैं-—

—अभिनव परिवर्तन वाली पाठ्यक्रम-योजना का निर्माण

—प्राथमिक कक्षाओं के लिए विस्तृत पाठ्यचर्याओं का निर्माण

—प्रासंगिक एवं आवश्यकता-आधृत शिक्षण-सामग्री (पाठ्यपुस्तकें, शिक्षक-संदर्शिकाएँ आदि) का निर्माण एवं परियोजना स्कूलों में उसकी जाँच पड़ताल

—अभिनव परिवर्तन वाले पढ़ाने-पढ़ने के प्रासंगिक तरीकों की खोज

—छात्रों के विकास के मूल्यांकन के लिए समुचित तरीकों की खोज

शिक्षण-सामग्री

परियोजना में सम्मिलित हुए राज्य और संघ क्षेत्र शिक्षण-सामग्री का निर्माण कई चरणों में कर रहे हैं। विभिन्न कक्षाओं की शिक्षण-सामग्री के निर्माण और परियोजना-स्कूलों में उसकी जाँच पड़ताल का काम अलग अलग अवस्थाओं में चल रहा है।

वर्ष के दौरान प्रतिभागी राज्यों/संघ क्षेत्रों ने अपनी अपनी भाषाओं में कुल 296 शिक्षण सामग्रियाँ बनाईं।

परियोजना के कर्मचारियों का अनुकूलन

प्रा० शि० पा० न० परियोजना के विभिन्न पक्षों में राज्य प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठों एवं अ० प्र० संस्थानों के कर्मचारियों के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० ने 25 अनुकूलन कार्यक्रम किए। इन कार्यक्रमों में 275 व्यक्ति सम्मिलित हुए। परियोजना स्कूलों के अध्यापकों एवं अधीक्षण कर्मचारियों के लिए प्रतिभागी राज्यों एवं संघ क्षेत्रों ने 424 अनुकूलन कार्यक्रम किए। इन कार्यक्रमों में लगभग 11,800 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

राज्यों को मार्ग-निर्देशन

अनुकूलन कार्यक्रमों के अलावा रा० शै० अ० और प्र० प० के प्रा० पा० वि० प्र० ने राज्यों को कई प्रकार से सहायता प्रदान की। नागालैंड, हरियाणा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों, मेघालय, मध्य प्रदेश, हिमालय प्रदेश और राजस्थान के राज्य प्राथमिक पाठ्य-

क्रम विकास प्रकोष्ठों को शिक्षण सामग्री के निर्माण तथा मूल्यांकन में मार्गदर्शन दिया गया। त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों तथा गोआ को अल्पकालिक परामर्श सेवाएँ प्रदान की गईं।

परियोजना के समन्वयकों के लिए राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन

प्रा० शि० पा० न० परियोजना के समन्वयकों का एक सम्मेलन नई दिल्ली के रा० शि० सं० परिसर में 3 से 10 नवम्बर 1982 तक हुआ। इस सम्मेलन में परियोजना की प्रगति की समीक्षा की गई और 1983 के लिए राज्यों एवं संघ क्षेत्रों की योजनाओं को अंतिम रूप दिया गया। इसके अलावा समन्वयकों ने परियोजना के सुचारु कार्यान्वियन के लिए अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

राज्यों/संघ क्षेत्रों में पाठ्यक्रम नवीकरण कार्यक्रम की मूल संरचना

हर राज्य में प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत पाठ्यक्रम के निर्माण की प्रक्रिया राज्य प्रा० पा० वि० प्र० के सदस्यों, अ० प्र० सं० और परियोजना स्कूलों के कर्मचारियों, विषय विशेषज्ञों एवं विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं आदि के विषय-विशेषज्ञों एवं लेखकों का संयुक्त अथवा सहयोगी प्रयास होती है। इस प्रकार, प्रा० शि० पा० न० परियोजना के कार्यान्वियन ने हर राज्य अथवा संघ क्षेत्र में पाठ्यक्रम विकास के लिए एक मूल संरचना खड़ी कर दी है।

प्रा० शि० पा० न० परियोजना के कार्यान्वियन द्वारा ही यह सम्भव हो सका है कि सिक्किम, नागालैंड, मेघालय, जैसे राज्यों और अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों, पांडिचेरी, चंडीगढ़ और लक्षद्वीप जैसे संघ क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए उनकी अपनी पाठ्यचर्याएँ और शिक्षण-सामग्री विकसित होती जा रही है। आशा की जाती है कि प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के कार्यक्रम को बल देने में बच्चों के लिए प्रासंगिक और आवश्यकता-आधृत पाठ्यक्रमों के निर्माण का विशेष हाथ होगा।

राज्य शिक्षा प्रणाली में वृहत्तर रूप से पाठ्यक्रमों को लाने की वर्तमान स्थिति

प्रतिभागी राज्यों और संघ क्षेत्रों ने नए पाठ्यक्रमों के विकास का एक चरण-बद्ध कार्यक्रम बनाया है। प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बनाई जा रही शिक्षण-

सामग्री की जाँच परख परियोजना-स्कूलों में की जा रही है। इस प्रकार प्राप्त अनुभवों के आधार पर शिक्षण सामग्री का संशोधन परिवर्धन किया जा रहा है। इसी के साथ-साथ राज्य शिक्षा प्रणाली में नए पाठ्यक्रमों को वृहत्तर रूप से लाने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं।

राज्यों और संघ क्षेत्रों के शिक्षा विभागों को यह सलाह दी गई है कि वे प्रा० शि० पा० न० परियोजना के कार्यों को घनिष्ठता से देखते और अपनाते चलें ताकि राज्य शिक्षा प्रणाली में प्रा० शि० पा० न० परियोजना द्वारा बनाए जा रहे पाठ्यक्रमों को वृहत्तर रूप से लाया जा सके। सिक्किम, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, नागालैंड, उड़ीसा, और राजस्थान के राज्यों और अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों तथा मिजोराम के संघ क्षेत्रों ने अपनी शिक्षा प्रणाली में प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बनी शिक्षण सामग्री को वृहत्तर रूप से लाने के लिए ठोस कदम उठा लिए हैं। इन ठोस कदमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

—**हिमाचल प्रदेश** सरकार ने फैसला किया है कि 1983 से प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण किया जाएगा। इस फैसले के अनुसार चलने के लिए बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन ने निर्णय किया है कि प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के सोलन स्थित राज्य शिक्षा संस्थान द्वारा बनाई गई शिक्षण-सामग्री को 1983-84 के शैक्षणिक सत्र से लगा लिया जाएगा। राज्य में स्कूलों के इस्तेमाल के लिए पाठ्यपुस्तकें छाप ली गई हैं।

—**महाराष्ट्र** ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बनी 'मिनिमम लर्निंग कांटीनूम' सामग्री को अपना लिया है ताकि प्राथमिक कक्षाओं के लिए विविध विषयों की पाठ्यचर्याएँ उस पर आधारित कर बनाई जा सकें। पूरे राज्य के लिए कक्षा I से IV तक का पाठ्यक्रम संशोधित कर लिया गया है और पाठ्यक्रम के प्रारूप को राज्य सरकार की स्वीकृति के लिए भेजा गया है। परियोजना के प्रथम चरण के दौरान कक्षा I और II के लिए बनी परिवेश अध्ययन की शिक्षक संदर्शिका को वृहत्तर उपयोग के लिए राज्य शिक्षा विभाग ने अपना लिया है।

—**नागालैंड** के शिक्षा विभाग ने यह निर्णय किया है कि प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बनाई जा रही शिक्षण सामग्री को राज्य के सभी प्राथमिक स्कूलों में इस्तेमाल के लिए लगा लिया जाए।

—**उड़ीसा** के बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन ने प्रा० शि० पा० न० परियोजना के प्रथम चरण के दौरान कक्षा I और II के लिए बनी शिक्षक संदर्शिका को राज्य के सभी प्राथमिक स्कूलों में वृहत्तर उपयोग के लिए अपना लिया है। प्रा० शि०

पा० न० परियोजना के प्रसार चरण के दौरान बने पाठ्यक्रम के ढाँचे को भी यत्किंचित संशोधन के बाद राज्य के सभी प्राथमिक स्कूलों में ले आया गया है।

—**राजस्थान** के शिक्षा विभाग ने फैसला किया है कि प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत उदयपुर स्थित राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री और पाठ्यचर्या को वृहत्तर इस्तेमाल के लिए अपना लिया जाए या लगा लिया जाए। इस उद्देश्य से एक समीक्षा समिति बना ली गई है। राज्य के प्राथमिक स्कूलों की जरूरतों के अनुकूल प्रा० शि० पा० न० परियोजना की शिक्षण-सामग्री को समीक्षित और संशोधित करने का काम इस समिति के जिम्मे होगा।

—**सिक्किम** के शिक्षा विभाग ने प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल प्राथमिक कक्षाओं के लिए अपनी खुद की शिक्षण-सामग्री बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। राज्य सरकार ने तय किया है कि प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बन रही शिक्षण-सामग्री को राज्य के सभी प्राथमिक स्कूलों में 1983 से इस्तेमाल किया जाए।

—**तमिलनाडु** राज्य के शिक्षा विभाग ने प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा बनाई गई कक्षा I और II की गणित की पाठ्यपुस्तकों को वृहत्तर उपयोग के लिए लगा लिया है।

—**अंडमान और निकोबार द्वीप समूह** का शिक्षा विभाग अपने स्कूलों में पड़ोसी राज्यों की शिक्षण-सामग्री का इस्तेमाल करता है। प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल शिक्षण-सामग्री के निर्माण के लिए एक चरणबद्ध कार्यक्रम बना लिया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत बनी शिक्षण-सामग्री को सभी प्राथमिक स्कूलों में 1983 से लगा लिया जाएगा।

—**मिजोरम** में प्रा० शि० पा० न० परियोजना के अंतर्गत बनी निम्नलिखित शिक्षण-सामग्री को संघ क्षेत्र के सभी प्राथमिक स्कूलों में इस्तेमाल के लिए मिजोरम बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन द्वारा अपना लिया गया है—

(i) कक्षा I से V तक के लिए मिज़ो भाषा में भाषा की पाठ्यपुस्तकें।

(ii) कक्षा III से V तक के लिए परिवेश अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) की पाठ्यपुस्तकें।

अनुसंधान

वर्ष 1982-83 के दौरान प्रा० पा० वि० प्र० ने विवरणात्मक अनुसंधान अध्ययनों की एक श्रृंखला शुरू की। ये अध्ययन तीन प्रकार के हैं : स्टेटस स्टडीज, केस स्टडीज और हिस्टारिकल स्टडीज़।

स्टेटस स्टडीज़ के छह अध्ययन इस प्रकार हैं—

—भारत में प्रा० शि० पा० न० परियोजना के स्कूलों की स्थापना, पैटर्न और कार्य प्रणाली का परिचय।

—परियोजना स्कूलों में भौतिक सुविधाएँ।

—परियोजना स्कूलों में उपलब्ध उपकरणों, पठन एवं खेल सामग्री की किस्म।

—परियोजना स्कूलों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य और कला-कार्यकलाप के विशेष संदर्भ में पाठ्यक्रमीय और पाठ्येतर गतिविधियाँ।

—परियोजना स्कूलों के छात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि।

—परियोजना स्कूलों के अध्यापकों का स्तर।

इनके अलावा 13 राज्यों व 2 संघ क्षेत्रों में चुने हुए परियोजना स्कूलों के 30 अध्ययन केस स्टडीज़ के तौर पर भी किए जा रहे हैं ताकि स्कूलों पर परियोजना के प्रभाव को समझा जा सके। भारत में प्राथमिक-पाठ्यक्रम-विकास (1882-1982) का ऐतिहासिक अध्ययन भी किया जा रहा है। ये सभी अध्ययन सुचारु रूप से चल रहे हैं।

"स्वातंत्र्योत्तर भारत की विभिन्न शैक्षिक विचारधाराओं का अध्ययन (1947-1980)"

यह अध्ययन निम्नलिखित चार शैक्षिक विचारधाराओं के बारे में है—

(i) हिंदू योग साधना की विचारधारा
(ii) मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा
(iii) गांधीवादी शैक्षिक दर्शन
(iv) मार्क्सवादी विचारधारा

नीचे लिखी दो विचारधाराओं के साहित्य का अध्ययन पूरा किया जा चुका है—

(i) हिन्दू योग साधना की विचारधारा
(ii) मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा

'गांधीवादी शैक्षिक दर्शन' के साहित्य का अध्ययन अभी चल रहा है। संभवतया मई 1983 तक यह पूरा हो जाएगा।

"प्राथमिक स्तर की विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की बोधगम्यता का अध्ययन"

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य यह देखना था कि (क) किसी कक्षा विशेष की पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा उस कक्षा के बच्चों के लिए बोधगम्य है अथवा नहीं; (ख) बच्चे की मौखिक और लिखित भाषाओं का पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा से क्या सम्बन्ध है।

यह अध्ययन राजस्थान राज्य की कक्षा III की पाठ्यपुस्तकों पर किया गया। क्लोज, एम० सी० क्यू० और बोधगम्यता के परीक्षण तैयार किए गए और उन्हें मानकीकृत किया गया। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की कक्षा III के बच्चों की मौखिक और लिखित भाषाओं के नमूने इकट्ठे किए गए। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बराबर बराबर बच्चों पर परीक्षण किए गए। साथ ही यह भी ध्यान रखा गया कि लड़कों और लड़कियों की संख्या भी बराबर रहे। 500 बच्चों के नमूने अंतिम तौर पर लिए गए। अध्ययन की रिपोर्ट बन चुकी है।

देखा गया कि बच्चों की भाषा और पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा में उल्लेखनीय अंतर है। इस अध्ययन से पाठ्यपुस्तक-लेखकों को बच्चों की भाषा और पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा के बीच की खाई को पाटने में मदद मिलेगी।

"प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की बोधगम्यता को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन"

यह अध्ययन ऊपर गिनाए गए अध्ययन का ही विस्तार है। इस अध्ययन का उद्देश्य है पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की बोधगम्यता पर प्रभाव डालने वाली मेधा (मौखिक और अमौखिक) और सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

तीनों विषय-क्षेत्रों की भाषा की बोधगम्यता मापने के लिए परीक्षण तैयार किए गए और उन्हें मानकीकृत किया गया। राजस्थान के कक्षा III के 400 नमूने के बच्चों पर बोधगम्यता परीक्षण, मेधा परीक्षण और सामाजिक-आर्थिक-स्थिति-मानक को प्रयुक्त कर आँकड़ों को एकत्र किया जा चुका है। प्रक्रमण का कार्य किया जा रहा है। सम्भवतया अध्ययन की रिपोर्ट 1983 के अंत तक तैयार हो जाएगी।

"बाल-साहित्य : निर्माण और मूल्यांकन" नामक पुस्तक का प्रकाशन

बच्चों को किस प्रकार का साहित्य दिया जाए कि जिसे पढ़कर वे बेहतर नागरिक बन सकें ? इस सवाल से जूझने का काम परिषद् की उपरोक्त पुस्तक करती है। यह पुस्तक उन लेखों का संग्रह है जो रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में पढ़े गए थे। बाल-साहित्य के निर्माण और मूल्यांकन के लिए सिद्धांतों और तरीकों को समझने की कोशिश इन लेखों में की गई है। इन लेखों के लेखकों में बाल-पत्रिकाओं के सुविज्ञ सम्पादक, भारत की विभिन्न भाषाओं के जाने माने लेखक और प्रतिष्ठित शिक्षाविद शामिल हैं।

"शोध माध्यम से पाठ्यपुस्तकों को सुधारना"

मिमियोग्राफ़ की गई यह पुस्तिका बताती है कि भारतीय स्कूल व्यवस्था में पाठ्य-पुस्तकों का क्या स्थान है और पाठ्यपुस्तकें किन कमियों से भरी हुई हैं। राज्य पाठ्यपुस्तक बोर्डों/निगमों/ब्यूरो; रा० शै० अ० और प्र० प० तथा प्राइवेट प्रकाशकों द्वारा बहुत बड़ी संख्या में हर साल पाठ्यपुस्तकें बनाई जाती हैं और छापकर ग्राहकों को बेची जाती हैं। इस काम में रा० शै० अ० और प्र० प० को छोड़कर और किसी भी संस्था मे प्रकाशन के पहले किसी प्रकार के शोध की व्यवस्था नहीं है। देश में पढ़ने पढ़ाने के मुख्य उपकरण के रूप में प्रयुक्त होने वाली पाठ्यपुस्तकों को सुधारने के निमित्त शोध की आवश्यकता पर यह पुस्तिका बल देती है। पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण, चित्रांकन, अभ्यास निर्माण, राष्ट्रीय एकीकरण, सृजनात्मक अधिगम आदि के क्षेत्रों में शोध की समस्याएँ पहचानी जानी चाहिए। पुस्तिका में पाठ्यपुस्तकों के सुधार के लिए विभिन्न विषयों की कुछ शोध समस्याओं को बताया भी गया है।

समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक कार्य कलाप

परियोजना के उद्देश्य

यूनिसेफ़ की सहायता से परिषद् द्वारा क्रियान्वित की जा रही 'समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक क्रिया कलाप' परियोजना का विशिष्ट उद्देश्य उन विशाल समूहों की न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के संभाव्य साधनों के रूप में शैक्षिक क्रिया-कलापों के नवीन रूपों को विकसित और परीक्षित करना है, जो कि वर्तमान में अंशतः या पूर्णतः किसी भी प्रकार की शिक्षा से वंचित हैं। यह उपागम इस बात पर आधारित है कि बच्चों की शिक्षा को सार्थक बनाने के लिए यह जरूरी है कि उनके सामाजिक-आर्थिक पर्या-वरण में धीरे-धीरे परिवर्तन और संशोधन करते रहना चाहिए। इसको सफल बनाने के लिए

शिक्षा और समुदाय की प्रेरणा जरूरी है, जिसका आशय यह है कि प्रभावी और कुशल तरीकों से न केवल स्कूल-पूर्व और स्कूल से बाहर के बच्चों की ही बल्कि बीच ही मे स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों और माताओं की शैक्षिक आवश्यकताओं को भी पूरा किया जाए।

इससे संबंधित एक उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या स्कूलों और समुदाय के बीच विभाजन को दूर करके ऐसा करना संभव है कि स्कूल, समुदाय को इस प्रकार सहायता प्रदान करें कि वे समुदाय के अन्य क्षेत्रकों में सामाजिक परिवर्तन के प्रेरणा स्रोत बन जाएँ।

इसलिए परियोजना में अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों के आयोजन की इस प्रकार कल्पना की गई है जिससे कि 0-3 आयु वर्ग और माताओं की, 3-6, 6-14 और 15-35 आयु वर्ग की और प्रौढ़ों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस परियोजना की चुनौती का सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न विभागों और कल्याण एजेंसियों के कार्यक्रमों के जरिये चुने हुए समुदायों को पहले से ही उपलब्ध कराए गए संसाधनों का प्रभावी उपयोग किया जाए।

यह परियोजना भारत सरकार की अनौपचारिक शिक्षा के व्यापक कार्यक्रम के अनु-रूप है। परियोजना के अंतर्गत विकसित किए गए कार्यक्रम और क्रिया कलाप, लोगों की स्वैच्छिक सहभागिता के जरिये उनके 'जीवन और रहन-सहन' को सुधारने के व्यापक उद्देश्य को पूरा करते हैं और 'न्यूनतम अधिगम आवश्यकताओं के पैकेज कार्यक्रम' को पूरा करने के लिए अपेक्षित क्षमताएँ प्रदान करते हैं।

परियोजना का एक महत्वपूर्ण आयाम विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए समुदाय के सदस्यों के अपेक्षित ज्ञान और कौशलों को विकसित करना है। विकासात्मक क्रियाकलाप समुदायों के शिक्षा कार्यक्रमों से जुड़े हुए हैं। परियोजना बड़े प्रभावी तरीके से प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्राथमिकता वाले कार्यक्रम को पोषित करती है। विभिन्न आयु वर्ग, विशेषरूप से 6-14 और 15-34 आयु वर्ग के लिए अनौपचारिक शिक्षा-नीति और सामग्री के मॉडलों को संबंधित राज्य और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा अपनाया/रूपांतरित किया जा सकता है।

यह परियोजना शिक्षा के लिए समुदाय के सदस्यों की सकारात्मक अभिवृत्तियों का विकास सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। जिन बच्चों ने या तो बीच में ही स्कूल छोड़ दिया है या जो कभी भी स्कूल नहीं गए हैं, उन्हें अनौपचारिक शिक्षा के जरिये शिक्षा की मुख्य धारा में पुनः प्रवेश करने में सहायता उपलब्ध की जाती है। महिलाओं के शिक्षा

कार्यक्रमों में प्रसव-पूर्व और प्रसव के बाद की देखभाल, बच्चों की देखभाल तथा पोषण, कुछेक आर्थिक क्रिया कलाप, गृह प्रबंधन आदि को शामिल किया गया है। स्कूल-पूर्व के बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम स्कूली शिक्षा के लिए उपयुक्त अभिवृत्ति और रुचि का विकास करने में उनकी सहायता करते हैं। खेल के तरीके की शिक्षा प्रणाली और सर्जनात्मक क्रिया कलापों के जरिये स्कूल-पूर्व के बच्चों का सर्वतोमुखी विकास करने के लिए सावधानी बरती जाती है।

6-14 आयु वर्ग के बच्चो के लिए बने अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों ने यह लक्ष्य बना रखा है कि जिन बच्चों ने या तो पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ दिया है या जो कभी भी स्कूल नहीं गए हैं, उन्हें अंशकालिक शिक्षा प्रदान की जाए। बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे शास्त्रीय शिक्षा में ज्ञान एवं कौशल अर्जित करेंगे तथा उसके साथ ही समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में और अपने बाप दादे के धंधों में भी सुविज्ञता ला सकेंगे। यह शिक्षा बच्चों के चाहने पर उन्हें औपचारिक शिक्षा की धारा में भी प्रवेश दिला सकती है।

महिला और पुरुष—दोनों प्रकार के प्रौढ़ों के कार्यक्रमों का उद्देश्य पढ़ने और लिखने के ज्ञान और कौशलों को प्रदान करना और उनमें प्रकार्यात्मक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान का विकास करना है। इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण आयाम स्वास्थ्यप्रद रहन-सहन के विभिन्न पक्षों, कृषि संबंधी और गैर-कृषि संबंधी कौशलों के बारे में जानकारी देना तथा उनमें विभिन्न कल्याण एवं विकासात्मक कार्यक्रमों के प्रति उपयुक्त अभिवृत्तियों का विकास करना है। इस प्रकार यह परियोजना समुदाय कार्य के जरिये समाज के रूपांतरण के लिए अवसर प्रदान करती है।

विभिन्न लक्ष्य समूहों के लिए कार्यक्रमों तथा क्रिया कलापों की योजना को और विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री के विकास को शैक्षिक आवश्यकताओं और समुदायों के विस्तृत सर्वेक्षण के जरिये पहचाने गए स्थानीय पर्यावरण के आधार पर स्वीकार किया जाता है।

परियोजना का कार्यान्वयन

वर्ष 1976 में इस परियोजना को प्रयोगात्मक आधार पर 14 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में हाथ में लिया गया था। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक राज्य में दो-दो समुदाय केन्द्र खोले गए थे। ये केन्द्र निर्धन, ग्रामीण आदिवासी, पहाड़ी क्षेत्रों और शहरी गरीब क्षेत्रों में स्थित थे। परियोजना के परिणाम से उत्साहित होकर वर्ष 1981 में 14 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में समुदाय केन्द्रों की संख्या 2 से बढ़ाकर 4 या 5 कर दी गई और बाकी बचे राज्यों/संघ

राज्य क्षेत्रों में, प्रत्येक में दो समुदाय केन्द्र खोले गए, सिवा अरुणाचल प्रदेश के जिसने कार्य-क्रम में भाग नहीं लिया। अत्यधिक सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विभिन्नताएँ प्रदान करने तथा उनकी जरूरतों के अनुसार प्रत्येक समुदाय के लिए अनौपचारिक शिक्षा के उप-युक्त मॉडलों का विकास करने के लिए समुदाय केन्द्रों की संख्या को, इस प्रकार, 28 से बढ़ाकर 102 कर दिया गया है। इन केन्द्रों में से 98 दिसम्बर तक अस्तित्व में आ चुके थे। इनके अलावा तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, और उड़ीसा में 8 और केन्द्रों की स्थापना के लिए स्वीकृति मिल चुकी है। इन केन्द्रों के कार्मिकों का खर्च राज्य सरकारें उठाएँगी।

परियोजना में सम्मिलित विभिन्न लक्ष्य समूहों के लिए अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न पैटर्नों का विकास सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में किया जा रहा है। ये पैटर्न सर्वेक्षण के निष्कर्षों और स्थानीय दशाओं की माँगों पर आधारित हैं। समुदाय केन्द्रों में विकसित प्रणालियों और सामग्रियों को प्रतिपुष्ट आँकड़ों के आधार पर संशोधित किया जा रहा है।

परियोजना में भाग लेने वाले राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के परियोजना समन्वयकों और समुदाय कार्मिकों के लिए सन् 1982-83 के दौरान चार अभिविन्यास पाठ्यक्रम अब तक आयोजित किए जा चुके हैं जिनमें विभिन्न लक्ष्य समूहों के लिए कार्यक्रमों और क्रिया कलापों के विकास से संबंधित विभिन्न पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

इन कोर्सों में सामुदायिक कार्यकर्ताओं को बुलाया गया था ताकि वे केन्द्रों, विभिन्न आयुवर्गों के लिए कार्यक्रमों व कार्यकलापों, तथा केन्द्रों की कठिनाइयों की सही तस्वीर पेश कर सकें। अनेक केन्द्रों में समुदायों ने केन्द्रों के कार्यकलाप में रुचि लेना शुरू कर दिया है। कुछेक राज्यों में, केन्द्रों के लिए बनाई गई सामग्री को राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा कार्य-क्रमों में व्यापक उपयोग के लिए अपनाया जा रहा है।

परियोजना का प्रबोधन

राष्ट्रीय स्तर पर इस परियोजना का प्रबोधन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशि-क्षण परिषद् द्वारा किया जाता है। भाग लेने वाले राज्यों में राज्य स्तर पर राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के कार्यकर्ताओं द्वारा और ग्राम स्तर पर स्थानीय प्राथमिक स्कूलों के कार्मिकों द्वारा इसको कार्यान्वित किया जाता है। शिक्षकों, सामुदायिक कार्यकर्ताओं एवं सामुदायिक सदस्यों जैसे आधारिक कार्मिकों को समुदाय केन्द्रों में कार्यक्रमों व क्रियाकलापों की योजना बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए शामिल किया जाता है।

परियोजना का मूल्यांकन

परियोजना का एक आंतरिक मूल्यांकन सन् 1983 के अंत तक पूरा हो जाएगा। मूल्यांकन के उपकरण रा० शै० अ० और प्र० प० के स्तर पर बनाए गए हैं। राज्यों/संघ क्षेत्रों को अपनाने के लिए ये उपलब्ध कराए जा रहे हैं। परियोजना का एक बाह्य मूल्यांकन 1983 के दौरान प्रस्तावित है।

अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम परिषद् ने जुलाई 1976 में हाथ में लिया। इस क्षेत्र में मुख्य जोर इन कामों के लिए दिया जा रहा है—शोध करवाना, वैचारिक और शिक्षण सामग्री का निर्माण, सम्मेलन एवं अभिविन्यास के कार्यक्रम करवाना तथा अनौपचारिक शिक्षा के न्यूज़ लेटर द्वारा जानकारी का विकीर्णन करना। अपने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और क्षेत्र एककों के माध्यम से परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा के 228 प्रायोगिक केन्द्र भी स्थापित किए हैं। इन केन्द्रों की स्थापना क्रमशः की गई है। मूल रूप से ये केवल दो वर्षों के लिए बनाए गए थे। आगे चल कर इनका कार्यकाल मई 1982 तक के लिए बढ़ा दिया गया।

1982-83 के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० ने अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्रों में नीचे लिखे काम पूरे किए—

अनुसंधान

परिषद् ने 'हिन्दी शब्द भांडार का संकलन और भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण' नामक अनुसंधान परियोजना हाथ में ली। परियोजना की रिपोर्ट तैयार की गई और विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं को भेजी गई। यह अध्ययन बच्चों की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति की भाषा और पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा के शब्द भांडार से सम्बन्धित है। अध्ययन के उद्देश्य हैं—ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बच्चों की लिखित व मौखिक भाषा के शब्दों का, तथा हिन्दी भाषी राज्यों में कक्षा I से V तक के सभी पाठ्य विषयों की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्दावली का संग्रह करना और संरचना, व्याकरण तथा अर्थ की दृष्टि से संग्रहीत शब्दों का विश्लेषण करना। अध्ययन दो चरणों में किया गया (i) शब्दावली का संग्रह, (ii) शब्द भांडार का विश्लेषण।

बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और चंडीगढ़ के राज्यों/संघ क्षेत्रों के 22 जिलों में स्थित 96 स्कूलों के 1920 बालक बालिकाओं

की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति के शब्दों का संग्रह किया गया। संग्रहीत हुए शब्दों की संख्या 15,197 है। इस आधार-सामग्री को शब्दों की कुल संख्या, उनकी बारम्बारिता और प्रतिशतता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। सूची में 6,034 शब्द दस से अधिक बारम्बारिता वाले हैं और 9,163 शब्द दस से कम बारम्बारिता वाले है। छह सौ पृष्ठों की एक वृहद सूची साइक्लोस्टाइल की जा रही है जिसमें 12 प्रकार की बारम्बारिता वाले पन्द्रह हजार शब्द हैं। एक और वृहद सूची भी तैयार की जाएगी जिसमें 41 श्रेणीबद्ध सूचियाँ होंगी।

अनौपचारिक शिक्षा के परिषद् के प्रायोगिक केन्द्रों का सर्वेक्षण

दिसम्बर 1978 से मई 1982 तक की अवधि में रा० शै० अ० और प्र० प० ने अनौपचारिक शिक्षा के 228 प्रायोगिक केन्द्र विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के लिए बनाए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल न जाने वाले बच्चों को लिखाई-पढ़ाई और गिनती की जानकारी देना तथा स्वास्थ्य, स्वच्छता, व्यवसाय, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य व परिवेश-शिक्षा से परिचित कराना था। इन प्रायोगिक केन्द्रों ने क्या अनुभव प्राप्त किया इसके मूल्य-निर्धारण के लिए परिषद् ने कार्य शुरू किया। इस मूल्य-निर्धारण की रिपोर्ट से अनौपचारिक शिक्षा की संकल्पना व उसके उद्देश्यों, छात्रों में अभिप्रेरण, केन्द्रों के शिक्षकों तथा अधीक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षण सामग्री, शिक्षण कार्यक्रम, सामुदायिक सहयोग, विकासात्मक माध्यमों के सहयोग, हस्तशिल्प की शिक्षा आदि की जानकारी मिलती है।

अनौपचारिक शिक्षा की नीतियों और विभिन्न उपागमों की पहचान

यह परियोजना दो वर्षों के लिए है। इसे अप्रैल 1982 में शुरू किया गया था। यह केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों तक सीमित है। अनौपचारिक शिक्षा के विविध उपागमों एवं व्यावहारिक अभ्यासों की पहचान करना इसका लक्ष्य है। सम्बद्ध साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण किया जा चुका है। प्रश्नावलियाँ तैयार कर राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में भेजी गई थीं। प्राप्त हुई आधार-सामग्री का विश्लेषण किया जा चुका है। कुछ शिक्षकों और अधीक्षकों से साक्षात्कार भी किए गए। विशेषज्ञों की सलाह पर पाँच प्रश्नावलियाँ तैयार की गई हैं। इन प्रश्नावलियों द्वारा आधार-सामग्री एकत्र की जाएगी जिससे अंतिम रिपोर्ट तैयार हो सकेगी।

अनौपचारिक शिक्षा की शिक्षण-सामग्री का मूल्यांकन

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिए बनाई गई शिक्षण-सामग्री के मूल्यांकन के लिए उपकरण बनाना ही इस परियोजना का लक्ष्य है। यह अध्ययन केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों

तक ही सीमित है। विभिन्न राज्यों से प्रासंगिक सामग्री इकट्ठा की जा चुकी है और विश्लेषित भी हो चुकी है। उपकरण का प्रथम प्रारूप बन चुका है। अगले वित्तीय वर्ष तक इस परियोजना की रिपोर्ट उपलब्ध हो जाएगी।

कक्षा VI से VIII तक की अनौपचारिक शिक्षा

मिडिल स्कूल (कक्षा VI से VIII) तक की अनौपचारिक शिक्षा के निमित्त पाठ्य-चर्या एवं शिक्षण-सामग्री के निर्माण की यह परियोजना परिषद् ने नवम्बर 1982 से शुरू की है। औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की मिडिल स्कूल तक की शिक्षा की शिक्षण-सामग्री का विश्लेषण, एक केन्द्रिक पाठ्यचर्या की पहचान, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रवेश लेने वाले बच्चों की जरूरतों और जीवन-कौशलों की पहचान, मिडिल स्तर तक विकसित होने वाली कुशलताओं की पहचान, एकीकृत और विषय-केन्द्रित उपागमों की शिक्षण-सामग्री का निर्माण, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों के लिए पुस्तकों एवं मार्गदर्शी सामग्री का निर्माण इसके कार्यक्रम में शामिल है।

जनवरी, 1983 में एक कार्यगोष्ठी की गई जिसमें बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इन राज्यों की पाठ्यचर्याओं और शिक्षण सामग्री का विश्लेषण किया गया और स्कूल न जाने वाले बच्चों के केन्द्रिक घटकों एवं जीवन-संदर्भों की पहचान की गई। एकीकृत पाठों के निर्माण के लिए मार्गदर्शी रेखाएँ भी बनाई गई।

प्रशिक्षण

शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए नौ राज्यों के द्वितीय स्तर के कार्मिकों के लिए परिषद् ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 से 26 मार्च, 1983 तक चलाया। इन नौ राज्यों और पाँच स्वैच्छिक संस्थानों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य कार्य यह देखना था कि प्राथमिक स्तर पर प्राकृतिक विज्ञानों, सामाजिक विज्ञानों, गणित, भाषाओं और स० उ० कार्यों को पढ़ाने के लिए कौन सी विधियों और उपागमों का प्रयोग हो रहा है। कार्यक्रम के परिणामस्वरूप प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों के शिक्षण पर कई लेख तैयार हुए।

दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग की प्रार्थना पर निगम द्वारा स्थापित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 15 से 20 अक्तूबर, 1982 तक किया गया।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के शिक्षा विभाग के शिक्षा अधिकारियों के लिए 14 से 21 दिसम्बर 1982 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। इन्हीं के लिए मार्च, 1983 में भी एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया।

प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का प्रबोधन एवं मूल्यांकन

उपकरणों की जाँच-परख की पहल

यह परियोजना उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और गुजरात के एक-एक जिलों में फरवरी 1982 में शुरू की गई थी और सितम्बर 1982 में पूरी की गई। इन राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के विशिष्ट संदर्भ में प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रबोधन एवं मूल्यांकन के उपकरणों की जाँच-परख करना ही इस कार्यक्रम का लक्ष्य था। राज्य प्राधिकरणों की मदद से जो जिले इस काम के लिए चुने गए थे वे हैं—उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद, आंध्र प्रदेश में नालगोंडा और गुजरात में साबरकांठा।

इन जिलों में और इन जिलों के प्रखण्ड मुख्यालयों में रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान चरणबद्ध रीति से नियोजन-सह-प्रशिक्षण और अभिविन्यास के लिए समीक्षा-बैठकें हर महीने और हर महीने में चार बार की गई। अप्रैल से सितम्बर 1982 के दौरान इक्कीस बैठकें हुईं जिनमें 970 प्रशिक्षक/अधीक्षक/राज्य स्तर के कार्यकारी सम्मिलित हुए। इन बैठकों में प्रतिभागियों को उपकरणों की जाँच-परख के तरीकों से परिचित कराया गया। प्रशिक्षकों को प्रपत्र भरने में प्रशिक्षित किया गया। तीनों प्रतिभागी राज्यों के सम्बद्ध अधिकारियों-कार्मिकों के लिए नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में 21 से 23 सितम्बर 1982 तक एक बैठक हुई। जाँच-परख के अनुभवों के आधार पर उपकरणों की समीक्षा की गई और अपेक्षित रूप से उन्हें सुधारा गया।

प्रबोधन और मूल्यांकन के उपकरणों का व्यवहार

प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रबोधन एवं मूल्यांकन पर 3 से 6 नवम्बर, 1982 तक एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों/संघ क्षेत्रों के ग्यारह वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए। अधिकारियों ने अपने-अपने राज्य में औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत प्रारम्भिक शिक्षा की स्थिति पर रिपोर्टें पढ़ीं। प्रबोधन एवं मूल्यांकन के संशोधित संस्करण पर भी उन्होंने विचार-विमर्श किया। उत्तरवर्ती कार्य के रूप में, राज्य प्राधिकरणों के परामर्श से यह तय किया गया कि संशोधित संस्करण वाले उपकरणों को राजस्थान, जम्मू व कश्मीर तथा उड़ीसा के शैक्षिक रूप से पिछड़े राज्यों

में व्यवहार में लाया जाए। इन उपकरणों के व्यवहार के लिए राजस्थान के उदयपुर, जम्मू व कश्मीर के बादगाम और उड़ीसा के नयागढ़ जिलों को सम्बद्ध राज्य शिक्षा विभागों की सलाह पर चुना गया।

उदयपुर में परिषद् ने मार्च 1983 में तीन बैठकें आयोजित कीं। पहली राज्य स्तर पर नियोजन के बारे में थी और बाकी दोनों प्रखण्ड स्तर पर अभिविन्यास की थीं।

5

सुविधा-वंचित वर्गों की शिक्षा

समाज के सुविधा-वंचित वर्गों, खास कर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बच्चों की शिक्षा को प्रभावित करने वाली समस्याओं का पता लगाने की दृष्टि से रा० शै० अ० और प्र० प० अनुसंधान करती है। साथ ही परिषद् ऐसे छात्रों के इस्तेमाल के लिए पाठ्यक्रमों और शिक्षण सामग्री का निर्माण भी करती है, जनजातीय क्षेत्रों के लिए प्रमुख व्यक्तियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है और सुविधा-वंचित छात्रों के लिए पूरक पठन सामग्री उत्पादित करती है।

वर्ष के दौरान परिषद् ने अनुसंधान और विकास के कई कार्य-

क्रम हाथ में लिए। समस्या-क्षेत्रों की पहचान, पाठ्य सामग्री के निर्माण और प्रमुख व्यक्तियों के प्रशिक्षण के कामों में इन कार्यक्रमों से सहायता मिली है।

अनुसंधान

निम्नलिखित अध्ययनों को वर्ष के दौरान हाथ में लिया गया/पूरा किया गया :

(i) जनजातीय छात्रों के अनौपचारिक-शिक्षा-कार्यक्रम की विधियों, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन

अध्ययन की रिपोर्ट पूरी कर ली गई। इस अध्ययन को आंध्र प्रदेश, गुजरात, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश और राजस्थान में हाथ में लिया गया था।

(ii) नागालैंड की अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास में सामुदायिक प्रतिभागिता के स्वरूप एवं सीमा तथा उसकी प्रभावाग्विता का अध्ययन

नागालैंड के कोहिमा जिले के पन्द्रह स्कूलों और उनके आसपास रहने वाले जनजातीय समुदायों में इस वर्ष के दौरान परियोजना के लिए क्षेत्र कार्य किया गया। परिणामस्वरूप प्राप्त आधार-सामग्री को विश्लेषित और सारणीकृत किया गया। परियोजना की रिपोर्ट समाप्ति के निकट है।

पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री

जनजातीय बोलियों में पाठ्यपुस्तकों का निर्माण

विभिन्न राज्यों के प्राथमिक स्तर के जनजातीय बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकें बनाने का काम रा० शै० अ० और प्र० प० ने शुरू किया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत उड़ीसा के कोरापुत और गंजम जिलों की कक्षा I में पढ़ने वाले साओरा बच्चों की प्रवेशिका को अंतिम रूप दिया गया। इस प्रवेशिका की पांडुलिपि पिछले वर्ष लिखी गई थी। प्रवेशिका मुद्रित हो रही है। शीघ्र ही साओरा बच्चों में वह पहुँच जाएगी।

जनजातीय छात्रों के लिए पाठ्यक्रम का विश्लेषण और विकास

आंध्र प्रदेश के प्राथमिक स्तर के जनजातीय छात्रों के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम के विश्लेषण और एक समुचित-संशोधित पाठ्यक्रम के विकास का कार्यक्रम रा० शै० अ० और प्र० प० ने शुरू किया है।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिए शिक्षण-सामग्री का निर्माण

पश्चिम बंगाल के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के संताल बच्चों के लिए शिक्षण-सामग्री के निर्माण के निमित्त विशेषज्ञों के वर्किंग ग्रुप की एक बैठक परिषद् ने वर्ष के दौरान आयोजित की। यह बैठक 1 से 10 सितम्बर 1982 के दौरान नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में हुई जिसमें 11 विशेषज्ञ-लेखकों ने भाग लिया। शिक्षण-सामग्री का एक भाग तैयार किया गया।

जनजातीय क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण-पैकेज का निर्माण

जनजातीय क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों को एक प्रशिक्षण-पैकेज उपलब्ध कराना इस कार्यक्रम का लक्ष्य है। पैकेज में जनजातीय लोगों के जीवन और संस्कृति के विविध पक्षों को समाहित करने वाले विषय होंगे। साथ ही उनकी शैक्षिक समस्याओं के समाधान भी होंगे। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में पढ़ाते समय प्रयुक्त करने के लिए कुछ पाठों के नमूने भी शिक्षकों के लिए पैकेज में होंगे। विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को नमूने के पाठ तैयार करने के काम सौंपे गए।

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए पाठ्यक्रम-निर्माण की उप-समिति की एक बैठक नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में 11 जून 1982 को अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यपुस्तक-निर्माण आदि के निमित्त विधियाँ बनाने के वास्ते हुई।

प्रशिक्षण

जनजातीय क्षेत्रों के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कोर्स

नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में जनजातीय क्षेत्रों के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए कई अभिविन्यास कोर्सों का आयोजन किया गया। एक कोर्स 17 से 31 जनवरी 1983 तक उड़ीसा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, तमिलनाडु और अरुणाचल प्रदेश के 12 प्रतिभागियों के लिए हुआ। दूसरा कोर्स 14 से 28 फरवरी 1983 तक आँध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, मिजोरम और दादरा एवं नगर हवेली के दस प्रतिभागियों के लिए किया गया। इन कोर्सों का उद्देश्य जिला शिक्षा अधिकारियों को जनजातीय जीवन और संस्कृति तथा शैक्षिक विकास की आधुनातन प्रवृत्तियों में अभिविन्यस्त करना था।

जनजातीय क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रमुख कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कोर्स

वर्ष 1982-83 के दौरान जनजातीय क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रमुख कार्मिकों को अभिविन्यस्त करने के लिए दो कोर्स चलाए गए जिनका उद्देश्य था जनजातीय जीवन एवं संस्कृति, जनजातीय शिक्षा की समस्याओं, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के संगठन आदि से प्रमुख कार्मिकों को परिचित कराना। पहला कोर्स केरल, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के 18 प्रतिभागियों के लिए 15 से 21 सितम्बर 1982 तक आयोजित किया गया था और दूसरा उड़ीसा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के 22 प्रतिभागियों के लिए 15 से 21 मार्च 1983 तक।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में 22 से 28 मार्च 1983 तक जनजातीय क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कोर्स किया गया जिसका उद्देश्य था जनजातीय जीवन एवं संस्कृति तथा जन-जातीय शिक्षा की समस्याओं में अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षित करना। कोर्स में केरल, गुजरात, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और मेघालय से आए 8 व्यक्तियों ने भाग लिया।

अन्य कार्यकलाप

सुविधा-वंचित वर्गों के विशिष्ट संदर्भ में प्रथम स्तर की शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए वैकल्पिक संरचनाओं पर एक प्रबंध यूनेस्को के लिए तैयार किया गया। इस प्रबंध को एक बैठक में अंतिम रूप दिया गया जो 23 नवम्बर 1982 को रा० शै० अ० और प्र० प० में हुई। संशोधित प्रबंध को बैङ्कॉक स्थित यूनेस्को कार्यालय को भेजा गया।

अरुणाचल प्रदेश की शिक्षा-संरचना का अध्ययन करने के लिए एक अध्ययन दल अरुणाचल प्रदेश की यात्रा पर 1982-83 के दौरान गया।

(v) स्कूल पाठ्यचर्या के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों की स्वीकृति हेतु अनुमोदन करना ।

(vi) स्कूल पाठ्यचर्या पर रा० शै० अ० और प्र० प० के बाहर से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करना तथा उन पर निर्णय लेना ।

1982-83 के दौरान समिति की छठी, सातवी और आठवीं बैठकें हुई जिनमें 109 पुरानी तथा 1983-84 के लिए नई रा० शि० संस्थान के विभिन्न प्रभागों द्वारा प्रस्तावित परियोजनाओं के मूल्यांकन के अतिरिक्त उन विषयों पर भी विचार-विमर्श हुआ जिनके द्वारा रा० शि० स० के उन विभिन्न विभागों में ताल मेल स्थापित हो सकेगा जो एक जैसे क्षेत्रों में ही कार्य कर रहे हैं । इसके साथ ही प्रस्तावित परियोजनाओं के नियोजन तथा कार्यरूप देने के सही ढंग, समिति को अधिक कार्यशील बनाने के ढंग, स्कूल पाठ्यचर्या से सम्बद्ध कार्यक्रमों को छाँटने के लिए दिशा निर्देशन तथा प्राथमिकता निर्धारण और समिति की सिफारिशों पर आधारित उन्नति की ओर ध्यान देना, आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया ।

स्कूल पाठ्यचर्या का प्रभावी उपयोग

यह एक प्रायोगिक और विकासात्मक परियोजना है । इसे 1978 में इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर आरम्भ किया गया था कि इससे प्राथमिक स्कूलों के अध्यापक, शिक्षा के विकासात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्कूल पाठ्यचर्या का प्रभावी उपयोग कर सकेंगे जिससे बच्चे का एक छात्र, एक व्यक्ति, एक नागरिक और एक कार्मिक के रूप मे विकास हो सकेगा ।

इस परियोजना की विकासात्मक अवस्था (1981-82) के अन्तर्गत परियोजना में लगे व्यक्ति नीचे लिखे विषयों पर समुचित सामग्री बनाने में लगे रहे :

(i) प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का विकासात्मक उद्देश्य ।

(ii) शिशु का मनोविज्ञान, जिसकी ओर शिक्षक को प्राथमिक स्तर पर ध्यान देना चाहिए ।

(iii) सीखने-सिखाने के तरीके ।

(iv) शिक्षण कौशल ।

(v) वातावरण का उपयोग ।

(vi) पाठ्यचर्या की विषयवस्तु का विश्लेषण ।

(vii) पाठ्यचर्या की अ-पुस्तकीय विषय वस्तु ।

(viii) छात्र के विकास का मूल्यांकन ।

(ix) छात्र के सही विकास के लिए शिक्षक का व्यवहार ।

(x) शिक्षकों के कार्य-संपादन का निरीक्षण ।

1981-82 में आरम्भ की गई इस परियोजना की प्रायोगिक अवस्था 1982-83 में पूरी हो गई । प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण का कार्य समाप्तप्राय है । इसके पश्चात् परियोजना की प्रायोगिक अवस्था के निष्कर्षों को ध्यान मे रखते हुए आगे के कार्य का बढ़ाया जाना संभव हो सकेगा ।

विभिन्न राज्यों में स्कूल पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं को दिया गया महत्व

आठ राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों में छह से दस तक की कक्षाओं में स्कूल पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं को दिए गए महत्व को जानने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० ने एक अध्ययन किया । ये राज्य तथा केन्द्र शासित क्षेत्र हैं-- अंडमान निकोबार द्वीप समूह, असम, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मिज़ोरम, पंजाब, राजस्थान तथा तमिलनाडु । विषय के महत्व का इस दिशा में अध्ययन किया गया कि उसके लिए वार्षिक परीक्षा में अंकों के निर्धारण को ध्यान में रखते हुए स्कूल टाइम टेबिल में कितना समय दिया गया है ।

इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष हैं :

(i) शैक्षणिक विषयों के अध्यापन को अपेक्षाकृत अधिक समय दिया जाता है । उनके लिए अधिक अंक भी निर्धारित किए जाते है ।

(ii) शैक्षणिक विषयों के अन्तर्गत अनिवार्य विषयों को ऐच्छिक विषयों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है और उन्हीं के लिए अधिक अंक भी निर्धारित किए जाते हैं ।

(iii) विभिन्न राज्य समय अथवा अंक निर्धारण की दृष्टि से पाठ्यचर्या के विषय को अलग अलग महत्व देते हैं ।

(iv) परीक्षा की दृष्टि से मातृभाषा तथा अंग्रेजी को अन्य सभी विषयों की अपेक्षा अधिक महत्व मिलता है ।

(v) समय निर्धारण की दृष्टि से प्रारम्भिक कक्षाओं में, ऊँची कक्षाओं की अपेक्षा विज्ञान अध्यापन को कम समय दिया जाता है ।

(vi) परीक्षा में अंक निर्धारण और अध्यापन के लिए समय निर्धारण के दृष्टिकोण से विभिन्न विषयों में कोई ताल मेल नहीं है ।

(vii) विषय को जो प्राथमिकता समय निर्धारण की दृष्टि से दी जाती है, वही प्राथमिकता उस विषय को परीक्षा की दृष्टि से नहीं दी जाती ।

10+2 पद्धति की शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत पाठ्यचर्या का कार्यान्वयन

इस परियोजना का उद्देश्य निम्नलिखित तीन राज्यों तथा एक केन्द्र शासित क्षेत्र में पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन का अध्ययन करना है—तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली । इस अध्ययन से पाठ्यचर्या नियोजकों को वर्तमान पाठ्यचर्या के विकास के लिए आधार सामग्री प्राप्त होने की संभावना है । 1982-83 वर्ष के दौरान कुछ चुने हुए राज्यों से आँकड़े संचय करने के लिए विकसित उपकरणों द्वारा आँकड़े एकत्र किए गए । चार राज्यों के कुछ चुने हुए स्कूलों में तात्कालिक अध्ययन किया गया । इस समय इन आँकड़ों को सारिणीबद्ध कर उनका विश्लेषण किया जा रहा है ।

सेकंडरी स्तर पर पाठ्यचर्या का भार

'सेकंडरी स्तर पर पाठ्यचर्या के भार की तुलना' नामक परियोजना इस वर्ष पूरी कर ली गई । यह परियोजना तीन राज्यों —केरल, महाराष्ट्र और हरियाणा तथा केन्द्र शासित राज्य दिल्ली में चलाई गई । इसके मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं ।

(i) दिल्ली के अध्यापक अंग्रेजी, गणित और हिन्दी (ए कोर्स) की वर्तमान पाठ्यचर्या के भार को 'थोड़ा सा' अधिक मानते हैं जबकि विज्ञान और सामाजिक ज्ञान की पाठ्यचर्या के भार को 'कुछ अधिक' मानते हैं । पाँच विषयों की पाठ्यचर्या का भार सम्मिलित रूप में 'थोड़ा सा' अधिक है । पाँचों विषयों में कठिनाई का स्तर औसत दर्जे का है ;

(ii) महाराष्ट्र की कक्षा 9 और 10 में अंग्रेजी तथा सामाजिक अध्ययन की वर्तमान पाठ्यचर्या का भार थोड़ा सा अधिक है जबकि मराठी, विज्ञान और गणित का कुछ अधिक है । पाँच विषयों में किसी भी विषय की पाठ्यचर्या का भार अधिक नहीं है । पाँचों विषयों को मिलाकर पाठ्यचर्या का भार कुछ अधिक है । जीवविज्ञान को छोड़ पाँचों विषयों में कठिनाई का स्तर औसत दर्जे का है । विज्ञान के एक भाग के रूप में जीवविज्ञान को सरल समझा गया ।

(iii) हरियाणा में सेकंडरी स्तर पर पाँच विषयों अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, गणित तथा सामाजिक अध्ययन की वर्तमान पाठ्यचर्या का भार थोड़ा सा अधिक है। पाँचों विषयों का सम्मिलित रूप में भार भी थोड़ा सा अधिक है। विषय वस्तु के आधार पर इन पाँच विषयों का कठिनाई का स्तर भी औसत जाँचा गया है।

(iv) केरल में सेकंडरी स्तर पर अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित और सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या कुछ अधिक है जबकि विज्ञान की पाठ्यचर्या को थोड़ा सा अधिक समझा गया। पाँचों विषयों का सम्मिलित भार कुछ अधिक आंका गया। कोर्स की विषयवस्तु के आधार पर पाँचों विषयों की कठिनाई का स्तर औसत ही आंका गया।

(v) विकास-अभिमुख उद्देश्यों की अपेक्षा ज्ञान संवर्धन को शिक्षक अधिक महत्व देते हैं। उनके शिक्षण का मूल उद्देश्य छात्रों को वार्षिक परीक्षा के लिए तैयार करना है।

(vi) शिक्षकों द्वारा दिया गया गृहकार्य, उसके लिए दिए गए समय से बहुत अधिक होता है।

पाठ्यचर्या संसाधन केन्द्र तथा बुलेटिन

पाठ्यचर्या संसाधन केन्द्र देश और विदेश की विभिन्न शैक्षिक एजेंसियों के साथ ताल मेल रखता है। देश और विदेश की विभिन्न पाठ्यचर्या एजेंसियों की महत्वपूर्ण सूचनाओं और सामग्री को संकलित किया गया है जिससे पाठ्यचर्या पर काम करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता लाभ उठा सकें। समय समय पर यह केन्द्र विशेष पुस्तिका प्रकाशित करता है। 1982-83 के दौरान 'सेलेक्ट एनोटेटेड बिबलियोग्राफी ऑन स्कूल करिक्यूलम' नामक पुस्तिका निकाली गई।

पाठ्यचर्या बुलेटिन

सन् 1982-83 के दौरान त्रैमासिक 'करिक्यूलम बुलेटिन' ने अपने प्रकाशन के तीसरे वर्ष में प्रवेश किया। वर्ष के चारों अंक प्रकाशित हुए। इस बुलेटिन के चार अंकों में पुस्तक समीक्षा, अनुसंधान सार, पाठ्यचर्या से सम्बद्ध समाचारों के साथ ही साथ प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के "राष्ट्रीय एकीकरण के लिए पाठ्यचर्या का निर्वाह", "सामाजिक आवश्यकताएँ तथा स्कूल पाठ्यचर्या", "जीवन के लिए शिक्षा" आदि लेख भी प्रकाशित हुए।

इस बुलेटिन के प्रथम सात अंकों से चुने हुए लेखों का "रेफलेक्शन्स करिक्यूलम" नामक एक विशेषांक भी तैयार किया गया जो आजकल प्रकाशनाधीन है।

1982 में "बाल मनोविज्ञान तथा पाठ्यचर्या" नामक पुस्तक निकाली गई जो अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है।

प्राथमिक स्तर पर औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में कलाओं की भूमिका बढ़ाना

यह अनुसंधान और विकास की एक परियोजना है, जिसका लक्ष्य है—प्राथमिक कक्षाओं के स्तर पर औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में कला की भूमिका को बढ़ावा देना, कक्षा में कला की शिक्षण-अधिगम विधि का सुव्यवस्थित विकास करना और अन्य विषयों के शिक्षण के साथ उसे एकीकृत करना। प्राथमिक अवस्था में कलाओं को अन्य विषयों के साथ एकीकृत करने के उद्देश्य से शिक्षण इकाइयों के निर्माण के लिए दस स्थानीय प्राथमिक स्कूलों को चुना गया। इन स्कूलों के शिक्षकों तथा अन्य विशेषज्ञों की एक बैठक जनवरी 1982 में हुई। इसमें कक्षा III और IV के लिए चार शिक्षण इकाइयाँ बनाई गई और चारों का अपेक्षित योग्यताओं, व्यावहारिक उद्देश्यों और सुझाई गई गतिविधियों के संदर्भ में विश्लेषण किया गया।

अक्टूबर और दिसम्बर 1982 में शिक्षकों तथा हेडमास्टरों की शिक्षण कार्यगोष्ठियों की दो बैठकें हुई। इन कार्यगोष्ठियों में कक्षा III और IV के लिए दिसम्बर और जनवरी मास के लिए पाठ्यचर्या की विषयवस्तु का विश्लेषण किया गया। प्रायोगिक कला की क्रियाओं के संदर्भ में शिक्षकों के ज्ञान का नवीकरण किया गया। इन कलाओं में रंगिंग, स्वतंत्र चित्रकारी, कागज काटना, मिट्टी के मॉडल बनाना, अबरी बनाना, साधारण मुखौटे बनाना, मौलिक नाटक खेलना और कठपुतली बनाना शामिल हैं। इनका उपयोग हिन्दी, गणित, पर्यावरण और सामाजिक ज्ञान के शिक्षण के लिए होता था।

तीन स्तरों पर मूल्यांकन के कार्यक्रम पर विचार विमर्श हुआ। ये इस प्रकार हैं—प्रारम्भिक मूल्यांकन, प्रक्रिया मूल्यांकन और परिणामात्मक मूल्यांकन। कलाओं और सृजन क्रियाओं पर आधारित कक्षा शिक्षण अगस्त और सितम्बर 1983 में होगा जिसका उद्देश्य नए शिक्षण अधिगम कार्यक्रम की प्रभावकारिता को जाँचना है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् दूसरी कला परियोजनाओं पर भी कार्य कर रही है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य कला की पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री तैयार करना और उसे कार्यान्वित करना है।

'शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कला के विभिन्न क्षेत्रों में पाठ्यचर्या का प्रारूप तैयार करना' नामक परियोजना के अन्तर्गत +2 के स्तर के लिए दृश्य कला के कोर्सों को विकसित करने के लिए एक कार्यगोष्ठी का आयोजन मार्च 1983 में किया गया। विशेषज्ञ 1983-84 के दौरान इस प्रारूप को अन्तिम रूप देंगे।

'विभिन्न कलाओं में भिन्न भिन्न शिक्षा स्तरों पर शिक्षकों और छात्रों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना' नामक एक दूसरी परियोजना के अन्तर्गत मार्च 1983 में एक कार्यदल की बैठक हुई। इसका उद्देश्य शैक्षिक कठपुतलियों पर एक प्रारूप बनाना, मौलिक कला विधियों के लिए सामग्री, साधन और विधियों पर एक पुस्तिका के लिए कुछ नए प्रस्तावों का विश्लेषण करना था। चित्रों के साथ दोनों प्रारूपों को 1983-84 के दौरान अंतिम रूप दे दिया जाएगा साथ ही बच्चों की कला कृतियों को भी प्रकाशित किया जाएगा।

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी

नागरिक शास्त्र के कार्यक्रम

लगभग एक वर्ष पूर्व भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत यूनेस्को के साथ सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय कमीशन ने यूनेस्को के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। जिसके अन्तर्गत मानवाधिकार, निशस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की नयी संरचना जैसी संसार की समकालीन समस्याओं पर सामग्री की कार्यान्विति तथा उनका मूल्यांकन करना है। भारतीय राष्ट्रीय कमीशन की ओर से रा० शै० अ० और प्र० प० शैक्षणिक सत्र 1982-83 में इस परियोजना के कार्यान्वियन के लिए यूनेस्को से सहयोग के लिए तैयार हो गई। रा० शै० अ० और प्र० प० ने परियोजना की विषयवस्तु दिशानिर्देशन, कार्यविधि, प्रशासन तथा मूल्यांकन के लिए एक परियोजना कार्य समिति का गठन किया और परियोजना के कार्यान्वयन के लिए एक टास्कफोर्स भी बनाई। यह परियोजना, दिल्ली पब्लिक स्कूल और लेडी इर्विन स्कूल, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, और जामियामिलिया हायर सेकंडरी स्कूल में आरम्भ की गई। यह परियोजना मार्च 1983 में पूरी कर ली गई तथा इसकी अन्तिम रिपोर्ट बैंङ्कॉक स्थित यूनेस्को के दफ्तर को भेज दी गई।

इतिहास के कार्यक्रम

जम्मू और कश्मीर के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकार के दफ्तर के संरक्षण में माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास शिक्षकों के लिए मई और अक्तूबर 1982 में दो कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के कार्यक्रम में संकाय के सदस्यों ने साधन संपन्न व्यक्तियों के रूप में कार्य किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को कोर्स की उस विषयवस्तु से परिचित कराया गया जो परिषद् ने कक्षा IX-X के लिए बनाई थी तथा 1982 से जिसे जम्मू और कश्मीर के स्कूलों ने स्वीकार किया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के तत्त्वावधान में प्राथमिक तथा मिडिल स्तर पर सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रमों पर नए सिरे से विचार करने के लिए एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

जम्मू में, जम्मू और कश्मीर के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकार के दफ्तर ने, एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया जिसका उद्देश्य +2 स्तर पर परिषद् द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों को लगवाना था। इस कार्य-गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि जम्मू और कश्मीर की कक्षा XI-XII में परिषद् के पाठ्य-क्रम के साथ ही वहाँ के इतिहास पर एक अध्याय भी पढ़ाया जाए।

सुब्रह्मण्यम भारती की जन्म शताब्दी के अवसर पर उनकी कविताओं के संग्रह का हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। बाहर के कुछ विद्वानों की सहायता से हिन्दी और अंग्रेजी में अनूदित कविताओं के साथ ही उनकी मूल कविताओं का संकलन किया गया है। ये दोनों हिन्दी तथा अंग्रेजी संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

मौलाना अबुलकलाम आजाद पर बाहर के एक विद्वान द्वारा तैयार की गई पुस्तिका परिषद् को प्राप्त हो चुकी है। उसे संपादित किया जाएगा।

'भारत का स्वाधीनता संग्राम—दृश्यों और दस्तावेजों के माध्यम से' नामक परि-योजना को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

भूगोल के कार्यक्रम

'+2 के स्तर के लिए भौतिक भूगोल' की पुस्तक तैयार करने का कार्य आरम्भ किया गया। इसका प्रारूप तैयार करने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० में 21 से 25 मार्च 1983 तक एक कार्यगोष्ठी हुई।

'भारत विकास की ओर' नामक कक्षा IX-X की पुस्तक को संशोधित किया गया।

'पिक्चर बुक ऑन आस्ट्रेलिया' नामक परियोजना पर कार्य चल रहा है।

जम्मू और कश्मीर के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकार के दफ्तर के तत्त्वावधान में, मई और अक्तूबर 1982 में जम्मू और श्रीनगर में, सेकंडरी कक्षाओं के भूगोल अध्यापकों के लिए ज्ञान संवर्धन कार्यगोष्ठियाँ हुई।

'प्रीपेरेशन ऑफ ए सैट ऑफ चार्ट्स ऑन फिजिकल ज्योग्रेफी' नामक परियोजना जारी है और प्रथम 20 चार्ट लगभग तैयार हो चुके हैं।

भूगोल में क्षेत्रीय अध्ययन के प्रयोग के लिए मार्गदर्शन पर परियोजना का प्रथम प्रारूप लगभग तैयार है तथा निकट भविष्य में एक कार्यगोष्ठी के माध्यम से उसे अन्तिम रूप दे दिया जाएगा।

'भूगोल की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का महत्व' नामक परियोजना को अन्तिम रूप दिया जा रहा है । इस परियोजना के लिए मानचित्र तथा चित्र पूरे कर लिए गए हैं ।

'भारत के विभिन्न राज्यों में मिडिल, सेकंडरी तथा हायर सेकंडरी कक्षाओं के भूगोल के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन' नामक परियोजना पर आरम्भिक कार्य शुरू हो चुका है ।

अर्थशास्त्र के कार्यक्रम

रा० शै० अ० और प्र० प० ने 'भारतीय अर्थ व्यवस्था के मूल्यांकन की शिक्षण इकाइयाँ—कक्षा XI के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक' को बनाने के लिए एक कार्यगोष्ठी आयोजित की । भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोर्स को अधिक रुचिकर बनाने के लिए दस इकाइयाँ बनाई गई जिनमें ताजे आँकड़े शामिल किए गए । स्कूलों, अध्यापक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के लगभग 25 लोगों ने इस कार्यगोष्ठी में भाग लिया ।

रा० शै० अ० और प्र० प० ने स्कूलों में उत्पादकता संबंधी शिक्षा नामक परियोजना चलाई । इसके अन्तर्गत 'विकास की सीमाएँ नहीं' नामक एक पुस्तिका अंग्रेजी में अभी निकली है । इस पुस्तिका में उत्पादकता सिद्धान्त, धारणा तथा विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है । उत्पादकता के लिए शिक्षा विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार विमर्श किया गया है और इसके अन्तिम विश्लेषण से इस नतीजे पर पहुँचा गया है कि उत्पादकता एवं विकास प्रत्यक्ष रूप में व्यक्ति से जुड़े हैं जिसमें उसके विचार, उद्देश्य तथा अभिरुचि सम्मिलित हैं ।

रा० शै० अ० और प्र० प० ने 'विभिन्न सेकंडरी बोर्डों में अर्थशास्त्र शिक्षण के स्तर' विषय पर एक परियोजना अपने हाथ में ली है । इस पर एक पत्रक तैयार करके राज्यों को भेजा गया । बड़ी संख्या में उत्तर प्राप्त हो चुके हैं और जिन बोर्डों के उत्तर प्राप्त नहीं हुए उनसे परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों द्वारा आवश्यक सामग्री प्राप्ति हेतु सम्पर्क किया गया । पत्रक प्राप्त कर आँकड़ों पर कार्य किया जाएगा ।

अंग्रेजी के कार्यक्रम

रा० शै० अ० और प्र० प० ने ओपेन स्कूल के लिए ये पुस्तकें बनाईं—

इंग्लिश रीडर I इंग्लिश रीडर II	पाठ्यपुस्तकें
स्टोरीज एण्ड टेल्स स्टोरीज एण्ड लीजेंड्स	सहायक पुस्तकें

अरुणाचल प्रदेश के लिए कक्षा I और II के अंग्रेजी विषय के लिए पाठ्यक्रम को विकसित करके अन्तिम रूप दिया गया। इसी तरह अरुणाचल के लिए कक्षा I की पाठ्यपुस्तक भी विकसित की गई।

'रीडिंग्स ऑन लैंग्वेज एण्ड लैंग्वेज टीचिंग' की पाडुलिपि तैयार हो चुकी है। इस पुस्तक में 'पठन' के ऊपर भाषा तथा शिक्षण के तरीकों पर नवीनतम पुस्तकों के आधार पर सामग्री जुटाई गई है तथा भिन्न भिन्न विचारों को जन्म देने वाले अभ्यासों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

अंग्रेजी के लगभग 40 संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों ने जुलाई 1982 में एक नवीकरण कार्यक्रम में भाग लिया। इन व्यक्तियों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मार्गदर्शक व्यक्तियों के रूप में कार्य करना था। इन कार्यक्रमों को कुछ समय बाद राज्य शि० सं० ने प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों के लिए आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य ध्यान रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा तैयार की गई तथा सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजूकेशन द्वारा 'बी' कोर्स में लगाई गई 'स्टेप्स टु इंग्लिश बुक V' पाठ्यपुस्तक, सहायकपुस्तक और अभ्यासपुस्तिका पर विचार-विमर्श करने पर ही रहा।

कक्षा X की पुस्तकों का प्रयोग करने वाले दो सौ प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों के लिए वार्तामालाओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी के कार्यक्रम

बी० एच० ई० एल० हरिद्वार में 1 जून से 10 जून 1982 तक उत्तरी क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में काम कर रहे स्नातकोत्तर अध्यापकों (हिन्दी) के लिए एक स्थिति-निर्धारण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 56 अध्यापकों ने भाग लिया। इन्हें साहित्यिक और भाषा विज्ञान की प्रभावशाली विषयवस्तु तथा प्रशिक्षण के नवीनतम तरीकों से परिचित कराया गया।

'उत्तराखण्ड की यात्रा' नामक सहायक पुस्तक के प्रारूप को अन्तिम रूप देने के लिए, मदुरै विश्वविद्यालय में 14 से 19 सितम्बर 1982 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। लेखकों, यात्रावृतान्त लेखकों, अध्यापकों और शैक्षणिक व्यक्तियों की सहायता से पांडुलिपि को अन्तिम रूप दिया गया। प्रकाशन के लिए पांडुलिपि को संपादित किया जाना है।

'भारती भाग I' (कक्षा VI के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक) को विकसित तथा संशोधित करने के लिए कमच्छा, वाराणसी के अध्यापक प्रशिक्षण कालिज में एक कार्यगोष्ठी 23 से 29 नवम्बर 1982 तक संपन्न हुई। समस्त पुस्तक पर विस्तार से विचार विमर्श हुआ

और अन्त में कुछ पाठ निकाल दिए गए । कुछ पाठों को छोटा करके प्रभावशाली बना दिया गया । कुछेक पाठों को बदलने की बात भी सुझाई गई ।

राजकीय शिक्षा संस्थान चाङ्लाङ् में 15 से 24 दिसंबर 1982 के बीच अरुणाचल प्रदेश के हिन्दी शिक्षकों के लिए एक स्थिति निर्धारण कोर्स का आयोजन हुआ । इस कोर्स में पाठों के विश्लेषण करने के ढंग, शिक्षण बिन्दुओं को छाँटना और उनके अनुसार कक्षा में पढ़ाना आदि विषयों पर 58 प्रतिभागियों को दिशा निर्देश दिए गए । कुछ पाठों को पढ़ाकर भी दिखाया गया ।

रा० शि० सं० के परिसर में 2 और 3 मार्च 1983 को विद्यार्थी साहित्य कोश के सलाहकार मंडल की एक विशेषाधिकार प्राप्त बैठक हुई । सलाहकार मंडल के सुझावों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी शिक्षकों, साहित्यकारों, भाषाविदों तथा शिक्षक प्रशिक्षणदाताओं की एक कार्यगोष्ठी का आयोजन रा० शि० सं० परिसर में 31 मार्च से 4 अप्रैल 1983 तक कोश के विषयों को छाँटने के लिए किया गया ।

मातृभाषा हिन्दी

बाल भारती भाग I पर आधारित कक्षा I के लिए सहायक सामग्री तैयार की गई । इस सामग्री का प्रकाशन पुस्तिकाओं, फोल्डर तथा भित्ति चार्टों के रूप में होगा । यह सामग्री जिसकी रूपरेखा विशेषरूप से पाठ्यपुस्तक के साथ ही पढ़ने के लिए बनाई गई है, पठन अभ्यास के लिए अधिक अवसर प्रदान कर सकती है क्योंकि कहानियाँ, घटनाएं तथा कविताएँ बाल भारती के पाठों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर ही तैयार की गई हैं । यह सामग्री बच्चों की आवश्यकता पूर्ति करती है क्योंकि हिन्दी में इस स्तर के लिए रुचिकर सरल भाषा एवं शैली में लिखी कम ही पुस्तकें उपलब्ध हैं ।

यह सामग्री केवल भाषा के विकास को ही नही बल्कि बच्चों की शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक और उनके अपने चारों ओर के वातावरण में रुचि लेने की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है । इस सामग्री का चयन इस ढंग से किया गया है जिससे बच्चों में सहयोग, सफाई, साहस, शालीनता, कार्य करने के अच्छे ढंग, अनुशासन, मित्रता, ईमानदारी, सहभागिता, पशुओं के प्रति उदारता, आज्ञाकारिता, सहयोग, मिलकर काम करने की भावना, सच्चाई तथा प्रेम जैसी मान्यताएँ पनप सकें ।

कक्षा II से V तक के लिए सहायक पुस्तकों का प्रारूप भी तैयार हो चुका है । इसकी समीक्षा विशेषज्ञों तथा अध्यापकों द्वारा होनी है । यह ऐसी सामग्री है जिससे प्राइमरी स्तर के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत को बल मिलेगा ।

प्राइमरी स्तर पर पहली तीन कक्षाओं के लिए सुलेख पुस्तिकाओ की रूपरेखा तैयार हो चुकी है। पहली पुस्तक अन्तिम चरण में है।

दूसरी भाषा हिन्दी

रा० शै० अ० और प्र० प० अरुणाचल प्रदेश के लिए दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तकें तथा अभ्यास पुस्तिकाएँ बना रही है। कक्षा I के लिए पाठ्य पुस्तक तथा उसकी अभ्यास पुस्तिका और कक्षा II के लिए पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है जो अरुणाचल के शिक्षा निदेशक ने वहाँ के सभी स्कूलों में लगा दी है। कक्षा II की अभ्यास-पुस्तिका प्रेस में है। तीसरी पुस्तक पर कार्य चल रहा है।

नैतिकता की शिक्षा

नैतिकता की शिक्षा की मूलभूत बातो पर तथा पाठ्यचर्या के लिए मार्गदर्शी रेखाओं को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का विचार विमर्श आयोजित करने के बाद रा० शै० अ० और प्र० प० ने मिडिल तथा सेकन्डरी कक्षाओं के लिए नैतिकता की शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की। प्राइमरी कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या, जो अधिक क्रियाओं पर आधारित होगी, एक कार्यगोष्ठी में विकसित की जाएगी और इस प्रारूप को शैक्षणिक वर्ष 1983-84 के मध्य तक अन्तिम रूप दे दिया जाएगा। उसके बाद विभिन्न आयु वर्ग के लिए अनुकूल निर्देशन सामग्री बनाने का कार्य आरम्भ किया जाएगा।

स्त्रियों के लिए शिक्षण सामग्री

स्टेट रिसोर्स सेंटर के सहयोग से हरियाणा में ग्रामीण महिलाओं के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने का कार्य रा० शै० अ० और प्र० प० ने अपने हाथ में लिया। आवश्यकता पर आधारित अध्यापन तथा पठन सामग्री तैयार करने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया जिससे ग्रामीण महिलाओं की अभिरुचियों और आवश्यकताओं का पता लगाया जा सके। इस सर्वेक्षण से लेखकों को ग्रामीण स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ। इससे उन्हें विषय तथा शब्द भण्डार चयन में सहायता मिलती है। चार कार्यगोष्ठियों में इस सामग्री का तीसरा प्रारूप तैयार किया गया। इसमें नीचे लिखी चीजें शामिल हैं :

(i) प्राइमर (शब्दों तथा अंकों के ज्ञान के लिए)

(ii) निर्देशकों के लिए संदर्शिका

(iii) अभ्यास पुस्तिका (लेखन सिखाने के लिए)

(iv) कहानी संग्रह (जागने की इच्छा बलवती करने के लिए)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने मध्य प्रदेश सरकार के पंचायत एवम् समाज कल्याण निदेशालय के सहयोग से जनजाति तथा पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए पठन-पाठन सामग्री विकसित करने का कार्य अपने हाथ में लिया। आवश्यकता पर आधारित पठन-पाठन सामग्री तैयार करने के लिए सर्वेक्षण किए जा रहे हैं। इनमें साक्षात्कार तथा विचार विमर्श किया जाता है। अभी तक बस्तर और बहरामपुर में दो कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया जा चुका है और इनमें दस पाठ विकसित किए गए हैं। लेखन सिखाने के लिए अभ्यास पुस्तिका के पाठ तैयार किए गए हैं। सामाजिक जानकारी के लिए कविताएँ तथा कहानियाँ लिखी गई हैं।

संकाय के सदस्यों ने राजकीय अनुसंधान परिषद् हरियाणा द्वारा मई 1982 में रोहतक में तथा नवम्बर 1982 में इन्दौर में आयोजित दिशा निर्देशन कार्यक्रमों में भाग लिया। ये कार्यक्रम पंचायत एवं समाजकल्याण निदेशालय द्वारा आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में पठन और लेखन के नए तरीकों को बताने के साथ ही साथ परिषद् द्वारा तैयार की गई सामग्री का प्रयोग करना भी बताया गया है।

विज्ञान तथा गणित

पर्यावरणीय शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 1982-83 में विज्ञान शिक्षण में पर्यावरण के प्रयोग को आगे बढ़ाया। यूनेस्को की सहायता से पर्यावरणीय शिक्षा में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर 3 से 16 मार्च 1983 तक एक क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यगोष्ठी का आयोजन नीचे लिखे उद्देश्यों के लिए किया गया :

(i) यूनेस्को द्वारा तैयार की गई पर्यावरण संबंधी शिक्षा में शिक्षकों के प्रशिक्षण मॉड्यूल्स की विषयवस्तु से शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को अवगत कराने के लिए।

(ii) शिक्षक प्रशिक्षण के मॉड्यूल्स के प्रयोग तथा उनके स्थानीय अनुकूलन का सही तथा सस्ता मार्ग ढूँढ निकालने के लिए।

(iii) मॉड्यूल्स के स्थानीय अनुकूलन के लिए संस्थानों की पहचान करने के लिए और संभावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए।

(iv) बड़े क्षेत्रों के छोटे-छोटे भागों में पर्यावरणीय शिक्षा के विकास में सूचनाओं तथा विशेषज्ञों के ज्ञान का आदान प्रदान करने के लिए।

इस कार्यगोष्ठी में अफगानिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश तथा भारत के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस कार्यगोष्ठी में यूनेस्को द्वारा दिए गए निम्नलिखित दस्तावेजो पर विस्तार से विचार विमर्श हुआ :

(i) पर्यावरणीय शिक्षा की पाठ्यचर्या के विकास के तरीके ढूंढ़ना।

(ii) पर्यावरणीय शिक्षा में शिक्षकों के प्रशिक्षण के तरीके ढूंढ़ना।

(iii) सेवा के पूर्व और सेवा के मध्य शिक्षक प्रशिक्षण तथा प्राथमिक स्तर के स्कूलों के पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल्स I और II।

(iv) सेकन्डरी स्कूलों के लिए पर्यावरणीय शिक्षा में सेवा के पूर्व तथा सेवा के मध्य प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल्स III और IV।

(v) सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों तथा सेकंडरी स्कूलो के पर्यवेक्षकों के सेवा के पूर्व और सेवा के मध्य प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल VI।

प्रतिभागियों ने देश और राज्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। दिल्ली में पर्यावरण से सम्बद्ध समस्याओं के अनुभव के लिए कुछ यात्राओं का भी आयोजन किया गया।

इस परियोजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा में काम कर रहे शिक्षकों के सेवामध्य प्रशिक्षण के लिए एक मॉड्यूल विकसित किया गया। यह मॉड्यूल रा० शै० अ० और प्र० प० में लेखकों के एक दल ने तैयार किया तथा इसे यूनेस्को को टिप्पणी के लिए भेज दिया गया। उसके बाद यह मॉड्यूल क्षेत्र के एक भाग की कार्यगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया।

कक्षा III और IV के लिए पर्यावरण अध्ययन मे पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए परियोजना के अन्तर्गत राजकीय शिक्षा संस्थान चाङ्लाङ्, अरुणाचल प्रदेश में 3 से 12 जनवरी 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। सरकारी प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों ने एक कार्यगोष्ठी में भाग लिया जिसमे पर्यावरणीय शिक्षा की कक्षा III की पाठ्यपुस्तक के भाग II को अरुणाचल प्रदेश के स्कूलों की आवश्यकता के अनुसार संशोधित किया गया।

राज्यों के साधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए पर्यावरण अध्ययन में मार्ग निर्देशन कार्यक्रम नामक परियोजना के अन्तर्गत दो कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया गया। पहली कार्यगोष्ठी उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों के राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के साधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए थी। इसका आयोजन गवर्नमेंट सेन्ट्रल पेडागोजिकल इंस्टीट्यूट इलाहाबाद में हुआ। यह 5 से 15 अक्टूबर 1982 तक हुई और 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दूसरी कार्यगोष्ठी 15 से 25 फरवरी 1983 तक सर्वजन हायर सेकंडरी स्कूल, पीलामेडा, कोयम्बटूर में हुई, यह कार्यगोष्ठी दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों के लिए थी। इस कार्यगोष्ठी में भी 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

नीचे लिखी बातों से प्रतिभागियों को परिचित कराना इन कार्यगोष्ठियों के विस्तृत उद्देश्य थे :

(i) विभिन्न राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के प्राथमिक स्कूलों में पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में विज्ञान शिक्षा की स्थिति ।

(ii) रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा तैयार की गई सामग्री तथा कार्यक्रम ।

(iii) ई० वी० एस० प्रणाली तथा शिक्षक प्रशिक्षण की नीतियों में मार्ग निर्देशन ।

भौतिकी के कार्यक्रम

'कक्षा XI-XII के लिए भौतिकी की आदर्श प्रयोगशाला मैनुअल तैयार करना' नामक परियोजना के अन्तर्गत प्रायोगिक कौशलों के विकास के लिए प्रयोगों की एक सीरीज तैयार की गई । एक कार्यगोष्ठी का आयोजन, विभिन्न कौशलों और योग्यताओं के विकास के लिए नए प्रयोगों की जाँच करने के लिए अहमदाबाद में हुआ ।

'भौतिकी परियोजना के लिए मार्गदर्शक रेखाएँ' नामक परियोजना के अन्तर्गत चल रही परियोजनाओं में बढ़ोतरी के लिए और नई परियोजनाओं के विकास के लिए राज्य/शै० अ० और प्र० प० में, दिल्ली 23 से 26 मार्च 1983 तक एक कार्यगोष्ठी हुई । इसके द्वारा कक्षा 12 के छात्र समुचित परियोजना का चयन कर उसे पूरा कर सकेंगे ।

"कक्षा XI के भौतिकी के कोर्स के लिए निर्देशन की अलग अलग मार्गदर्शन प्रणाली" पर कार्य जारी है। इस प्रणाली में स्वप्रेरित अलग-अलग नियंत्रित आत्म-अवलोकन सम्मिलित है और उसे कक्षा XI के भौतिकी पाठ्यक्रम में जाँचा जा रहा है । सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकन्डरी एजूकेशन की कक्षा XI के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए भौतिकी की 21 इकाइयाँ प्रकाशित हो चुकी हैं ।

इसके साथ ही निर्देशन की अलग-अलग मार्गदर्शन प्रणाली को कार्यान्वित करने की रूपरेखा देते हुए एक पुस्तिका भी प्रकाशित हो चुकी है । उपरोक्त भौतिकी इकाइयों में 105 मास्टरी असेस्मेंट परीक्षण भी तैयार हो चुके हैं । कक्षा XI के लिए गणित पर भी कार्य आरम्भ हो चुका है और इस परियोजना के अन्तर्गत गठित की गई 22 इकाइयों का विकास किया गया है ।

'भौतिकी में कसेंट्रिक दशा के विषयों में धारणा को श्रेणीबद्ध करना' नामक परियोजना के लिए पुनर्निवेशन का विश्लेषण किया गया और संशोधित मूल्यांकित विषयों को अलग स्कूलों में पुनः जाँचा गया । प्राप्त पुनर्निवेशन का फिर से विश्लेषण किया गया ।

'+2 स्तर पर पाठ्यचर्या में संशोधन' नामक परियोजना के अन्तर्गत 28 मार्च से 2 अप्रैल 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यगोष्ठी में 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ये प्रतिभागी विश्वविद्यालयों, राजकीय विज्ञान शिक्षा संस्थानों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा स्कूलों से आए थे। भौतिकी की पाठ्यपुस्तक के प्रथम संस्करण पर विभिन्न माध्यमों से प्राप्त पुर्नानिवेशन पर आधारित एक परियोजना पत्रक प्रतिभागियों के विचारार्थ तैयार किया गया। कार्यगोष्ठी में संशोधित पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। भौतिकी शिक्षण में कुछ सरल प्रयोगों/प्रदर्शनों का विकास किया गया। रा० शै० अ० और प्र० प० ने कम पारे के इस्तेमाल से एक सस्ता बैरोमीटर तैयार किया। इसे कलकत्ता में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया।

रसायन शास्त्र के कार्यक्रम

'कक्षा XI की पाठ्यपुस्तक का संशोधन' नामक परियोजना के अन्तर्गत धारणाओं का विस्तार से अध्ययन किया गया विशेष रूप से स्कूल प्रणाली में उनकी संभावनाओं के संदर्भ में। शिक्षण में लगे शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रश्नावली भेजी गई। विश्वविद्यालय विभागों के विषय विशेषज्ञों ने पाठ्यपुस्तक को संशोधित किया। स्कूलों और विशेषज्ञों से प्राप्त पुर्नानिवेशन पर तथा उनके विचार तथा मूल्यांकन के नतीजों पर 2 से 5 अगस्त 1982 तक आयोजित एक गोष्ठी में विचार विमर्श किया गया। इसकी उपलब्धि को कक्षा XI की रसायन विज्ञान की पाठ्यपुस्तक को संशोधित करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

'सेकंडरी स्तर पर विभिन्न राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के रसायन विज्ञान पाठ्यक्रम का विश्लेषण' नामक परियोजना के अन्तर्गत रसायन विज्ञान के कार्यदल ने पाठ्यक्रम के विश्लेषण के लिए एक रूपरेखा तैयार की। परियोजना के मुख्य उद्देश्य हैं :

(i) राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के पाठ्यक्रम की अच्छाइयों तथा बुराइयों का पता लगाना।

(ii) रसायन विज्ञान अध्ययन प्रणाली की पहचान।

(iii) रसायन विज्ञान में अन्तः अनुशासिक अंतरापृष्ठ की पहचान।

(iv) राज्यों तथा संघीय क्षेत्रों के पाठ्यक्रम को आधुनिकतम और नवीनतम बनाने के लिए निर्देश रेखाएँ उपलब्ध कराना।

सीनियर सेकंडरी स्तर पर +2 स्तर के बाद शैक्षणिक तथा व्यावसायिक कोर्स की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला पाठ्यक्रम भी सुझाया गया। इसकी प्राप्ति के लिए 14 से 18 फरवरी 1983 तक एक कार्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालयो तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यचर्या विकास में लगे और रसायन विज्ञान के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

'कक्षा XII के लिए रसायन विज्ञान की पाठ्यपुस्तक' परियोजना के अन्तर्गत कक्षा XI के समान ही प्रणाली अपनाई गई। कक्षा XII की रसायन विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक की विषयवस्तु के परिणाम को निश्चित करने के लिए 14 से 18 मार्च 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

'+2 स्तर पर रसायन विज्ञान के लिए धारणा केन्द्रित प्रयोगों का विकास' परि-योजना के अन्तर्गत ऐसे प्रयोगों की रूपरेखा तैयार की गई जिन्हें +2 स्तर पर रसायन विज्ञान के प्रभावशाली शिक्षण के लिए जरूरी समझा गया और उनकी प्रयोगशाला में जाँच की गई। सीमित विषयवस्तु प्रयोगों पर एक प्रयोगात्मक संस्करण निकाला गया जिसकी स्कूलों में जाँच की गई। इन प्रयोगों का विकास करते हुए इनकी कीमत, भौतिक आवश्यक-ताओं और स्कूल के आस-पास प्राप्त सामग्री आदि बातों पर अधिक जोर दिया गया। कठिन एवं अमूर्त धारणाओं के लिए प्रयोगों की रूपरेखा भी तैयार की गई। इन प्रयोगों वाली पुस्तिका को 'कक्षा XI की रसायन विज्ञान भाग I के लिए धारणा केन्द्रित प्रयोग' का नाम दिया गया।

रसायन विज्ञान के शिक्षण के लिए कम कीमत वाले स्थानीय उत्पादित उपकरणों पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से यूनेस्को द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में 7 से 9 जनवरी 1983 तक आयोजित कार्यगोष्ठी में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने भी भाग लिया।

'रसायन-विज्ञान में कक्षा XI-XII के लिए प्रायोगिक परियोजना' के अन्तर्गत राज्यों तथा संघ क्षेत्रों के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के स्थिति निर्धारण कार्यक्रम की रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया गया तथा प्रकाशनार्थ उसे सम्पादित किया गया।

'+2 के रसायन विज्ञान के प्रायोगिक कोर्स में छात्रों के काम के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश विकसित करना' नामक परियोजना के अन्तर्गत दिशा निर्देशन की रूपरेखा की पांडुलिपि को अन्तिम रूप देकर मुद्रणार्थ भेज दिया गया।

जीव विज्ञान के कार्यक्रम

धारणाओं के सरल और वक्र ताल-मेल तथा उनके संबंध को जानने के लिए कक्षा III से XII तक के जीव-विज्ञान-पाठ्यक्रम का गहराई से अध्ययन किया गया। +2 स्तर पर जीव विज्ञान पाठ्यचर्या के साथ जीव विज्ञान से जुड़े व्यावसायिक कोर्स के संबंध की जाँच के लिए 21 से 28 मार्च 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों और ऐसे महाविद्यालयों के, जहाँ आयुर्विज्ञान की शिक्षा दी जा रही है, प्रतिभागियों की सहायता से जीव विज्ञान पाठ्यचर्या तथा सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजूकेशन के गृह-विज्ञान, कृषि तथा आयुर्विज्ञान के व्यावसायिक कोर्सों के वर्गों को आमने-सामने रखकर विश्लेषण किया गया।

"शिक्षक प्रशिक्षण सामग्री बनाने के लिए जीव विज्ञान शिक्षा में प्रशिक्षण क्रिया-कलाप और एशिया में जीव विज्ञान की शिक्षा पर उसकी अनुगामी लघु क्षेत्रीय गोष्ठी" नामक परियोजना के अन्तर्गत पाँच मॉड्यूल्स तैयार किए गए। ये हैं—(i) जैनेटिक कोड (ii) जैनेटिक इंजिनियरिंग (iii) अंडरस्टैंडिंग प्रोटीन (iv) एन्जाइम्स एण्ड हाऊ दे ऐक्ट (v) वाइल्ड लाइफ कनजर्वेशन।

गणित के कार्यक्रम

सहायक अध्ययन सामग्री तैयार करने के लिए $+2$ के गणित के पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया गया। यह गणित में व्यावसायिक कोर्सों को ध्यान में रखते हुए किया गया। बीजगणित और सांख्यिकी में तैयार की गई सामग्री की समीक्षा करने के लिए 21 से 25 मार्च 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यगोष्ठी में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और स्कूलों के अध्यापकों तथा आई० आई० टी० विशेषज्ञों ने भाग लिया।

'कक्षा VI और VII की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन और शिक्षक संदर्शिका बनाना' नामक परियोजना के अन्तर्गत दो कार्यगोष्ठियों का आयोजन 21 से 26 फरवरी 1983 तक किया गया। इस प्रकार कक्षा VI और VII में चल रहे पाठ्यक्रम की गहराई से समीक्षा की गई। दो पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन पहले किया गया था। उनकी रिपोर्ट पर इस कार्यगोष्ठी में विचार किया गया। शिक्षक संदर्शिका बनाने के लिए सुझाव भी प्राप्त हुए।

इस कार्यगोष्ठी की उपलब्धियों को मिडिल स्कूल स्तर पर पाठ्यपुस्तकों तथा शिक्षक संदर्शिकाओं की नई सीरीज बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाएगा।

इस वर्ष "ऑबजेक्टिव बेस्ड टेस्ट आईटम्स इन मैथेमेटिक्स फॉर क्लास IX" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

'गणित में निर्देशन की अलग-अलग मार्गदर्शक प्रणाली' नामक परियोजना के अन्तर्गत कक्षा XI के लिए 22 इकाइयों की रूपरेखा विकसित की गई।

एकीकृत विज्ञान शिक्षा का पाठ्यक्रम

'साइंस ए पार्ट ऑफ लाइफ' नामक फिल्म के आलेख का संशोधन एक ग्रुप ने किया। इसका फिल्मांकन हरियाणा में डाला के एक ग्रामीण स्कूल में अक्तूबर 1982 में आरम्भ किया गया।

'स्कूलों में एकीकृत विज्ञान पाठ्यचर्या को कार्यान्वित करने का गहराई से अध्ययन' नामक एक अनुसंधान परियोजना आरम्भ की गई। कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया गया

जिनमें दिल्ली के 13 प्रायोगिक स्कूल शामिल हुए। इन कार्यगोष्ठियों तथा बाद की बैठकों में कक्षा VI और VII के एकीकृत विज्ञान पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई। दिल्ली के शिक्षकों को एकीकृत विज्ञान पाठ्यचर्या से सम्बद्ध टेस्ट के विषय, छात्रों की क्रियाएँ और प्रदर्शनीय क्रियाएँ विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। शिक्षकों द्वारा विकसित सामग्री की समीक्षा की गई, उस पर विचार-विमर्श हुआ और शीघ्र ही इसे पूरा किया जाएगा।

'विज्ञान सीखना भाग I, II और III' के लिए संयुक्त शिक्षक संदर्शिका छप गई है तथा शीघ्र ही उसका विमोचन कर दिया जाएगा।

'ऑल इंडिया साइंस एजुकेशन प्रोजेक्ट (ए० आई० एस० ई० पी०) तथा आल इंडिया मैथमेटिक्स एजुकेशन प्रोजेक्ट (ए० आई० एम० ई० पी०)'

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और ब्रिटिश हाई कमीशन के ब्रिटिश कौंसिल डिवीजन के समझौते के अन्तर्गत, शिक्षा मंत्रालय की ओर से रा० शै० अ० और प्र० प० का विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग इन दोनों समझौतों को कार्यान्वित कर रहा है।

ए० आई० एस० ई० पी० के अन्तर्गत 1982-83 वर्ष में केरल, उत्तर प्रदेश और केन्द्रीय विद्यालयों से गणित शिक्षा की विकसित प्रणाली में 9 मास के प्रशिक्षण के लिए 23 अध्यापकों का चयन किया गया। इंग्लैंड जाने से पूर्व 12 अक्तूबर 1982 को इन शिक्षकों का संक्षिप्त अनुकूलन किया गया।

ए० आई० एस० ई० पी० के अन्तर्गत बिहार में भौतिकी, रसायनविज्ञान तथा जीव विज्ञान में प्रशिक्षणोत्तर गोष्ठियों का आयोजन किया गया। विज्ञान शिक्षा की विकसित प्रणाली में प्रशिक्षण प्राप्त कर इंग्लैंड से लौटे हुए शिक्षकों ने इन कार्यगोष्ठियों में संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के रूप में कार्य किया। इन कार्यगोष्ठियों का उद्देश्य इंग्लैंड में प्राप्त प्रशिक्षण के चहुँमुखी प्रभाव को बढ़ावा देना था। इसी तरह की कार्यगोष्ठियाँ उड़ीसा में आयोजित करने का प्रस्ताव है। विज्ञान (भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान) में बीस शिक्षावृत्तियाँ और गणित में तेईस शिक्षावृत्तियाँ 1983-84 वर्ष के लिए विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों को सुलभ कराई जा रही हैं। दो कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभाग ने अध्यापकों के चयन के लिए एक नए उपकरण का विकास किया। शिक्षकों के चयन का कार्य आरम्भ हो चुका है।

'स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा' नामक परियोजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूलों के लिए स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का कोर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम विकसित किया गया। उच्च कक्षाओं के लिए यह सुझाया गया कि स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा से सम्बद्ध घटक दूसरे विषयों के साथ ही मिला दिए जाएँ।

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी तथा राज्य स्तर की विज्ञान प्रदर्शनी

बच्चों के लिए 12वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन 10 से 16 नवम्बर 1982 तक रा० शै० अ० और प्र० प० और पश्चिमी बंगाल सरकार ने मिलकर कलकत्ता में किया। इसका उद्घाटन शिक्षा एवं संस्कृति की केन्द्रीय मन्त्री श्रीमती शीला कौल ने किया। 1982 की विज्ञान प्रदर्शनी का विषय 'विज्ञान और सामुदायिक विकास' था। इस प्रदर्शनी में 28 राज्यों,केन्द्र शासित क्षेत्रों और केन्द्रीय विद्यालयों के 400 बच्चों और अध्यापकों ने भाग लिया।

प्रदर्शनी में प्रदर्श-विषय थे :

(i) संसाधन तथा उनका अदलाव बदलाव।

(ii) स्थानीय समस्याएँ तथा उनका समाधान।

(iii) आम सामग्री और उपकरणों के लिए सस्ते अनुकल्प, और

(iv) भोजन सुरक्षित रखना।

'अपंगों के लिए सहायता', 'विज्ञान खेल है', और 'विज्ञान एवं गणित में शिक्षण सामग्री' आदि मॉडल प्रदर्शित किए गए थे। पाँच प्रदर्श बी० आई० टी० एम० द्वारा छाँटे गए तथा एक साल के लिए प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर दो पुस्तिकाएँ 'स्ट्रक्चर एण्ड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स 1982' तथा 'लिस्ट ऑफ एग्जिबिट्स' निकाली गई।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एम० दास गुप्ता ने 'आकाश की खोज यात्रा के 25 वर्ष' नामक विषय पर एक व्याख्यान दिया। प्रतिभागियों को बी० आई० टी० एम०, बोटैनिकल गार्डेन और बिरला कृत्रिम नभोमंडल, दिखाने ले जाया गया।

छब्बीस राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों ने राज्य स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन किया। राष्ट्रीय उत्पादकता वर्ष के साथ ताल मेल रखते हुए इन राज्य स्तर की प्रदर्शनियों का विषय 'उत्पादकता के लिए विज्ञान और प्रोद्यौगिकी' ही रखा गया।

रा० शै० अ० और प्र० प० के सहयोग से 14 से 28 मार्च 1983 तक संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों को विज्ञान क्लब किट्स का प्रयोग करना सिखाने के लिए प्रशिक्षण हेतु एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के 13 व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। बढ़ईगीरी, लोहारी और आसान बिजली के काम तथा इलैक्ट्रोनिक्स के काम में क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया।

शिक्षण-सामग्री केन्द्र

रा० शै० अ० और प्र० प० ने एक भीति पत्रिका आरम्भ की है। नीचे लिखे विषयों पर चार सैट हिन्दी और अंग्रेजी में प्रदर्शित किए गए—

(i) भारत में अणु।

(ii) पर्यावरण शिक्षा तथा रा० शै० अ० और प्र० प०।

(iii) वन्य जीवन, और

(iv) जल प्रदूषण।

5 मई 1982 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। 5 से 11 अक्तूबर 1982 तक वन्य जीवन सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें इच्छुक परियोजना के स्कूलों को शामिल किया गया। चलचित्र दिखाए गए, गोष्ठियों का आयोजन किया गया और रुचिकर सामग्री को प्रदर्शित किया गया।

नीचे दिए अवसरों पर शिक्षण सामग्री केन्द्र ने क्षेत्र-कार्य शुरू किया :

(i) मावलंकर हाल, दिल्ली में पर्यावरण पर प्रारम्भिक मंच तैयार करने के लिए अप्रैल-मई 1982 में एक प्रदर्शनी का आयोजन।

(ii) हैदराबाद के भारतीय विज्ञान शिक्षक संघ की वार्षिक बैठक का 10 से 12 जनवरी 1983 तक आयोजन।

(iii) 3 से 16 मार्च 1983 तक पर्यावरण शिक्षा के लिए सामग्री तैयार करने के लिए यूनेस्को की सभा का आयोजन।

(iv) गुड़गांव जिले के डाला के ग्रामीण सेकंडरी स्कूल में एक विज्ञान कोने की स्थापना।

नीचे दी गई गोष्ठियों/भाषणों का भी आयोजन किया गया।

(ii) पहली मार्च 1983 को उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद के निदेशक, डा० अलह्यांकर का 'कॉमेट्स' पर भाषण।

(ii) संयुक्त राज्य अमेरिका के ईस्ट कैरोलीन विश्वविद्यालय के डा० स्पूनर और उनके साथी की सहायता से 'विज्ञानशिक्षा में तर्क' पर 22 से 27 जनवरी 1983 तक एक गोष्ठी का आयोजन।

राज्यों तथा संस्थाओं को सहायता

पाठ्यचर्या के विकास, पाठ्य सामग्री तैयार करने और शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य में रा० शै० अ० और प्र० प० ने सहायता करना जारी रखा। जम्मू और कश्मीर राज्य के कक्षा 9 और 10 में विज्ञान और गणित विषयों में रा० शै० अ० और प्र० प० की पाठ्यपुस्तकें लगाने के फैसले को ध्यान में रखते हुए, जम्मू व कश्मीर क्षेत्र के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए जम्मू और श्रीनगर में दो स्थितिनिर्धारण कोर्सों का आयोजन किया गया। उन कार्यक्रमों के आयोजन में रा० शै० अ० और प्र० प० के भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान और गणित विषयों के विशेषज्ञों ने राज्य शिक्षा अधिकारियों की सहायता की।

रा० शै० अ० और प्र० प० के कर्मचारियों ने स्कूलों में प्रायोगिक कार्य में आने वाले विज्ञान के उपकरणों की सूची विकसित करने के लिए केरल के शिक्षा विभाग की सहायता की।

अरुणाचल प्रदेश राज्य को कक्षा I और II के लिए पर्यावरण अध्ययन के लिए पाठ्यपुस्तक बनाने में सहायता दी गई।

रा० शै० अ० और प्र० प० के गणित शिक्षा विभाग में काम कर रहे कर्मचारियों ने बोर्ड ऑफ सेकन्डरी एजुकेशन द्वारा आयोजित गणित की गोष्ठी में भाग लिया और राष्ट्रीय स्तर पर गणित की पाठ्यचर्या विकसित करने में बोर्ड की सहायता की।

शिक्षण सामग्री केन्द्र द्वारा कुछ शिक्षा संस्थाओं को जिनमें बांग्ला देश का शिक्षा विभाग भी शामिल है, इकाई की दशमलव प्रणाली पर परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई गई।

पोषाहार, स्वास्थ्य शिक्षा तथा पर्यावरणीय सफाई

वर्ष 1982 के अन्तर्गत गुजरात, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश और पंजाब में क्रमशः बड़ौदा, कोयम्बटूर, जबलपुर और लुधियाना नामक स्थानों पर पुराने केन्द्रों के साथ ही दस नए केन्द्र स्थापित किए गए। ये दस केन्द्र आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। बहुत से नए केन्द्रों ने आधारभूत सर्वेक्षण लगभग समाप्त कर लिया है। इसी पर अनुकूल पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया आधारित होगी। इनमें से कुछ पाठ्यचर्या विकास की अवस्था में हैं। एम० पी० के बाकी समय के लिए परियोजना के लिए प्रस्तावित कार्य की मुख्य बात यह रही कि बच्चों के लिए तथा उस समाज के लिए जिसमें वे रहते हैं, एक ही साथ दोनों को संदेश दिए जाएँगे, एक दूसरे के बाद नहीं जैसा पहले किया गया था।

1982 के दौरान पुराने केन्द्र छात्रों के लिए निर्देश सामग्री के संशोधन तथा शुद्धिकरण और शिक्षकों के लिए संदर्शिकाएँ बनाने में व्यस्त थे ।

1982 में प्रत्येक राज्य को इस कार्यक्रम को 300 स्कूलों में लागू करना था और उन स्कूलों के अध्यापकों को प्रशिक्षित करना था ।

1982 में पुराने केन्द्रों ने नीचे दिए क्रियाकलाप पूरे किए :

बड़ौदा केन्द्र

(i) पाठ्यचर्या सामग्री के संशोधन के लिए कार्यगोष्ठी

(ii) बाकी बचे अध्यापक-शिक्षकों और पर्यवेक्षकों के लिए प्रशिक्षण

(iii) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपलों और साधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए स्थिति निर्धारण कार्यक्रम

कोयम्बटूर केन्द्र

(i) प्राइमरी स्कूलों के लिए संशोधित पाठ्यक्रम का विकास

(ii) प्राथमिकता के विषयों तथा क्रियाओं का निर्धारण

(iii) बी० टी० आई० एस० द्वारा बचे हुए विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण

(iv) निर्देशन पैकेज के मूल्यांकन के लिए कार्यगोष्ठी

(v) निर्देशन सामग्री के संशोधन के लिए कार्यगोष्ठी

(vi) संशोधित निर्देशन सामग्री के संपादन के लिए कार्यगोष्ठी

(vii) शिक्षा के ढंग बताने वाले शिक्षकों के लिए स्थिति निर्धारण कोर्स

(viii) प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों के लिए पाठ्यसामग्री की समीक्षा हेतु कार्यगोष्ठी

जबलपुर केन्द्र

(i) बचे हुए विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण

(ii) निर्देशन पैकेज के मूल्यांकन के लिए कार्यगोष्ठी

(iii) निर्देशन सामग्री के संशोधन के लिए कार्यगोष्ठी

(iv) संशोधित निर्देशन सामग्री के सम्पादन के लिए कार्यगोष्ठी

लुधियाना केन्द्र

(i) बाकी बचे विज्ञान अध्यापक-शिक्षकों/पर्यवेक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपलों के लिए स्थिति निर्धारण-कार्यक्रम

यह भी प्रस्ताव है कि बड़ौदा, कोयम्बटूर, जबलपुर और लुधियाना के पो० स्वा० शि० और प० स० के केन्द्र, जिन्होंने 1976 में काम करना आरम्भ किया था, अपने समीपवर्ती राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के पो० स्वा० शि० और प० स० की परियोजनाओं के लिए साधन सम्पन्न केन्द्र के रूप में काम करेंगे। इन केन्द्रों का यह कार्य उन केन्द्रों के अपने कार्यों तथा क्रियाकलापों के अतिरिक्त होगा।

स्त्री शिक्षा

परिषद् ने स्कूल-पाठ्यचर्या के द्वारा स्त्रियों का स्तर ऊँचा उठाने और लड़कियों की शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए विभिन्न अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण के कार्यक्रमों को हाथ में लेती रही है। इस वर्ष के दौरान हाथ में लिए गए मुख्य कार्यकलापों में ये भी शामिल हैं--

अनुसंधान

अनुसंधान के क्षेत्र में परिषद् ने स्त्रियों का जीवन स्तर सुधारने के लिए लड़कियों की शिक्षा के सार्वजनीकरण से सम्बद्ध अनेक परियोजनाओं का काम जारी रखा। इनमें शामिल हैं -

(i) "आवश्यकता-आधृत, पारिस्थितिकी-निर्धारित एवं परिवर्तन-उन्मुख खाना-बदोश जाति के लिए शिक्षा-प्रणाली"

(परियोजना चल रही है)

(ii) "शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियों और स्त्रियों के वास्ते स्थानीय जरूरतों पर आधारित काम-धंधों की पहचान"

(परियोजना चल रही है)

(iii) "लड़कियों के लिए (जिनमें सामाजिक दृष्टि से अपंग लड़कियाँ भी शामिल हैं) गणित में कम उपलब्धि वाले निर्धारक"

(परियोजना चल रही है)

"अच्छे जीवन की आकांक्षा और उसे पाने के लिए कार्य" नामक परियोजना जिसे यूनेस्को का वित्तपोषण मिला हुआ है, शुरू की गई। स्त्री-शिक्षा एकक और राष्ट्रीय शैक्षिक

नियोजन एवं प्रशासन संस्थान के सहयोग से इसे प्रो० आर० के० मुखर्जी सँभाले हुए हैं। इस अध्ययन का मूल उद्देश्य अच्छे जीवन की आकांक्षाओं और उन्हें पाने के लिए किए जाने वाले कार्यों के अति संवेदी क्षेत्रों में अनुसंधान प्रणाली को सुदृढ़ बनाना है। अध्ययन पूरा कर लिया गया है।

विकास

वर्ष के दौरान स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में नीचे लिखे विकासात्मक कार्यों को किया गया :

'प्राइमरी स्तर के लिए गणित में शिक्षण सामग्री का विकास' पर एक कार्यगोष्ठी का आयोजन 17 से 22 जनवरी 1983 तक हुआ। इस कार्यगोष्ठी में छात्रों के चारों ओर के वातावरण से ली गई, हमारे जीवन से सम्बद्ध अंक प्रणाली तथा रेखागणित पर विभिन्न प्रकार की शिक्षण-सामग्री तैयार की गई जिसमें इस बात का ध्यान रखा गया कि इससे छात्रों को, विशेषरूप में लड़कियों को गणित के मूल सिद्धान्तों की समझ बढ़े और वे गणित में रुचि लें। विकसित शिक्षण-सामग्री बहुउद्देशीय है और उसमें अंक प्रणाली के बहुत से सिद्धान्त एक साथ ही समाहित हैं। इस सामग्री को सस्ती रखने तथा शिक्षकों को शीघ्र सुलभ कराने का प्रयत्न किया गया है। स्त्रियों की स्थिति के संदर्भ में भाषा की पाठ्य पुस्तकों और सहायक पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन उपकरण बनाए गए। पाठ्य सामग्री और सहायक पुस्तकों के मूल्यांकन का मापदंड विकसित करने के लिए उत्तरकाशी में जनवरी 1983 में और मसूरी में 15 से 19 मार्च 1983 तक दो कार्यगोष्ठियाँ हुई।

पूर्वस्नातक स्तर पर स्त्री शिक्षा के लिए कार्यकारी मॉडल में एक कोर्स का ढाँचा विकसित किया गया है। कानपुर विश्वविद्यालय के स्त्रियों के विकास के अध्ययन दल ने इसे मूल रूप से स्वीकार कर लिया है। कानपुर विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के कोर्स समन्वयकों के लिए पुनः स्थिति निर्धारण कार्यक्रम का आयोजन दिसम्बर 1982 में किया गया।

स्कूल स्तर पर समाज विज्ञान के शिक्षण के लिए बी० एड० के पाठ्यक्रम के विकास हेतु एक बैठक 26 से 28 अगस्त 1982 तक हुई। इसमें प्रतिभागी देश भर से लिए गये थे जिनमें समाज विज्ञान के प्रसिद्ध स्कूल शिक्षक प्रशिक्षक, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर शामिल थे।

इस एकक ने कक्षा 11 और 12 के लिए समाज विज्ञान में पाठ्यसामग्री को अन्तिम रूप देने के लिए प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिकों और स्कूल शिक्षकों के परीक्षणदल की एक बैठक का आयोजन 7 मार्च से 11 मार्च 1983 के बीच रा० शि० सं० परिसर में किया। दो पुस्तकों 'इंडियन सोसायटी' और 'प्रोबलम ऑफ इंडियन सोसाइटी' का परीक्षण किया गया।

यूनेस्को के लिए, "शैक्षिक कार्यक्रमों तथा पाठ्यपुस्तकों में सेक्स स्टीरियो टाइप की पहचान के लिए क्षेत्रीय संदर्शिका तैयार करने का काम" हाथ में लिया गया।

गणित पाठ्यचर्या द्वारा स्त्रियों के स्तर पर स्लाइड और टेप तैयार करने का कार्यक्रम पूरा किया गया ।

प्रशिक्षण और प्रसार कार्य

राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया । इसका विषय था 'पाठ्यचर्या द्वारा स्त्रियों का स्थान—एक शिक्षक संदर्शिका' । इसका आयोजन 4 से 6 जनवरी 1983 तक राजकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय रातू, रांची में हुआ । इस कार्यक्रम की मुख्य बात इसमें 200 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित करना था ।

आरम्भिक स्कूल शिक्षकों, प्रशिक्षकों और संसाधन-सम्पन्न व्यक्तियों का 'पाठ्यचर्या द्वारा स्त्री के स्थान पर पुस्तिका' पर अभिविन्यास कार्यक्रम हुआ । इसमें हिन्दी भाषी क्षेत्रों तथा पश्चिमी क्षेत्रों के शिक्षक शामिल हुए । इसका आयोजन 14 से 17 मार्च 1983 तक हुआ । इस कार्यक्रम में गोआ, महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली के शिक्षक प्रशिक्षकों को अभि-विन्यस्त किया गया ।

आठ मार्च का दिन 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया गया । इस अवसर पर रा० शै० अ० और प्र० प० ने 'स्त्रियों के लिए शिक्षा और रोजगार की समस्याएँ' और 'स्त्री शिक्षा में अनुसंधान' विषयों पर दो भाषणों का आयोजन किया । ये भाषण दो प्रतिष्ठित विदुषियों - डा० देवकी जैन और कु० सुशीला भान ने दिए ।

रा० शै० अ० और प्र० प० ने गुजरात के स्कूल पाठ्य पुस्तकों के राजकीय बोर्ड को पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए एक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने के लिए परामर्श सेवाएँ प्रदान कीं ।

'भविष्य के लिए शिक्षा' पर भी रा० शै० अ० और प्र० प० ने राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन संस्थान को परामर्श सेवाएँ प्रदान कीं ।

पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन

राष्ट्रीय एकीकरण समिति और अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशों के बाद भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने एकीकरण की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का काम आरम्भ किया है। शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय के सचिव ने फरवरी 1981 में राज्यों के शिक्षा सचिवों को पत्र लिख कर पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के कार्यक्रम को चलाने की प्रार्थना की थी । काम को शुरू करने के लिए सबसे पहले इतिहास और भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों को जाँचा जा रहा है । इस कार्यक्रम को विकेन्द्रीकृत कर दिया गया है और राज्यों तथा संघ क्षेत्रों

से अनुरोध किया गया है कि वे अपने स्तर पर इस कार्यक्रम को सँभालें। रा० शै० अ० और प्र० प० से कहा गया है कि वह कार्यक्रम का संयोजन और समन्वय तथा पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए उपकरणों की व्यवस्था करे और कार्य के लिए मार्गदर्शी रेखाएँ बनाए।

रा० शै० अ० और प्र० प० ने इतिहास और भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शी रेखाओं का प्रारूप तैयार किया। इस प्रारूप का संशोधन एक विशेषज्ञ समिति ने किया जिसे केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने गठित किया था। सितम्बर 1981 में, रा० शै० अ० और प्र० प० नई दिल्ली में एक सम्मेलन हुआ जिसमें विभिन्न राज्यों व संघ क्षेत्रों के इस कार्यक्रम के प्रभारी अधिकारियों ने भाग लिया और मार्गदर्शी रेखाओं पर विचार विमर्श हुआ। इस सम्मेलन में मार्गदर्शी रेखाओं को कुछ संशोधन के साथ स्वीकार कर लिया गया और कार्य संचालन की विधि को तय किया गया। पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन के उपकरणों और मार्गदर्शी रेखाओं को राज्यों और संघ क्षेत्रों के उन माध्यमों के पास भेज दिया गया है जिन्हें मूल्यांकन करना था।

इस कार्यक्रम को शुरू करने के लिए पश्चिमी बंगाल को छोड़ सभी राज्य सहमत हो गए। सभी संघ क्षेत्र भी इसके लिए सहमत हैं, केवल उन संघ क्षेत्रों को छोड़ जहाँ रा० शै० अ० और प्र० प० की बनाई पाठ्यपुस्तकें चलती हैं। सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों में कार्यक्रम भिन्न भिन्न चरणों में है। पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गुजरात तथा केन्द्र शासित मिज़ोरम और दिल्ली और सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन ने, 1983-84 के शैक्षणिक वर्ष के लिए कुछ कक्षाओं की पुस्तकों को संशोधित कर लिया है। गोआ, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश राज्यों में 1983-84 के शैक्षणिक वर्ष में पाठ्यपुस्तकों के संशोधित होने की संभावना है। विशेषज्ञ समिति ने, हरियाणा, कर्नाटक, उड़ीसा, त्रिपुरा और बिहार राज्यों तथा असम के बोर्ड ऑफ सेकन्डरी एजूकेशन की रिपोर्टों को अन्तिम रूप दे दिया है। आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल, जम्मू और कश्मीर तथा मिज़ोरम और सिक्किम राज्यों/संघ क्षेत्रों ने कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया परन्तु कार्य की गति धीमी है। मेघालय में पाठ्य-चर्या को संशोधित किया जा रहा है इसीलिए इस कार्यक्रम पर काम नहीं हुआ। शिक्षा मंत्रालय के कहने पर, रा० शै० अ० और प्र० प० ने इतिहास और भाषाओं की अपनी पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का काम भी हाथ में लिया। विशेषज्ञ समिति की बैठक सितंबर 1982 में आयोजित की गई। अन्तिम रिपोर्ट संबद्ध विभागों को आवश्यक कार्यवाही के लिए भेज दी गई।

7

शिक्षा और कार्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् समाजोपयोगी उत्पादक कार्य और शिक्षा के व्याव-सायीकरण पर अनुदेशीय और मार्गदर्शी सामग्री का विकास करती है जो स्कूली शिक्षा को देश के आर्थिक विकास के साथ जोड़ने का एक मुख्य साधन है। कार्यकलापों को छाँटने का आधार उनकी शैक्षिक उपयोगिता, उत्पादकता और सामाजिक उपादेयता है। कार्यानुभव की तीन अवस्थाएँ हैं—कार्य-जगत का पता लगाना, सामग्री के साथ प्रयोग करना और कार्य करना।

रा० शै० अ० और प्र० प० सीनियर सेकंडरी स्तर (+2) की कक्षा XI-XII के लिए अनेक व्याव-सायिक कोर्सों के लिए पाठ्यक्रम

विकसित करने में और भिन्न भिन्न राज्यों के ऐसे ही पाठ्यक्रमों के संशोधन के काम में सक्रिय भाग ले रही है। इस कार्य में लगी भिन्न भिन्न संस्थाओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। अलग अलग व्यावसायिक विषयों में बहुत से अंशकालिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शिक्षा के व्यावसायीकरण-कार्यक्रम के कार्यन्वयन का मूल्यांकन, तात्कालिक अध्ययन गोष्ठियों तथा सम्मेलनों के माध्यमों से होता रहता है। रा० शै० अ० और प्र० प० भारत के 300 ऐसे संस्थानों के साथ काम कर रही है जो हायर सेकंडरी स्तर पर व्यावसायिक कोर्सों में शिक्षा दे रहे हैं।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के बारे में अनेक गलत धारणाएँ पनप रही हैं जिनके कारण इसे कार्यानुभव, क्राफ्ट और बेसिक शिक्षा जैसे हाथ से काम करने वाले कार्यक्रमों के साथ जोड़ दिया जाता है। यही कारण है कि अनेक राज्यों में इसका कार्यान्वयन सुचारु रूप में नहीं हो सका। यदि इस कार्यक्रम को समीक्षा समिति के सुझाव के अनुसार स्कूल पाठ्य-चर्या में मुख्य स्थान देना है तो ऐसे संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के अनुकूलन का बहुत महत्त्व हो जाता है जिनके ऊपर इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन का भार है।

अनुकूलन-कार्यक्रम

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य पर रा० शै० अ० और प्र० प० ने उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर चार अनुकूलन-कार्यक्रमों का आयोजन किया :

(i) लक्षद्वीप के संसाधन संपन्न व्यक्तियों और शिक्षकों के लिए 17 से 19 अप्रैल 1982 तक अंद्रोथ में।

(ii) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के संसाधन संपन्न व्यक्तियों के लिए 27 से 31 अगस्त 1982 तक भोपाल में।

(iii) दक्षिणी क्षेत्र के चार राज्यों के संसाधन संपन्न व्यक्तियों के लिए 16 से 20 सितंबर 1982 तक बंगलूर में।

(iv) बिहार के संसाधन संपन्न व्यक्तियों के लिए 24 से 28 नवंबर 1982 तक पटना में।

मई 1982 तथा फरवरी-मार्च 1983 के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० ने स० उ० का० के चार अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित करने में नागालैंड और दिल्ली प्रशासन को सुविज्ञता प्रदान की।

इन कार्यक्रमों के दौरान संसाधन संपन्न व्यक्तियों को स० उ० का० के कार्यान्वयन के सभी संभव पहलुओं की जानकारी तो दी ही गई साथ ही उन्होंने बहुत से क्रियाकलाप भी किए। इन कार्यक्रमों में भाग लेने के बाद प्रतिभागी समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की विचारधारा और दर्शन से भली भाँति परिचित हो गए और उन में इस कार्यक्रम को समीक्षा समिति के सुझावों के अनुसार कार्यान्वित करने का आत्म विश्वास जागा।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की स्रोत-पुस्तिका

कक्षा I से X तक के लिए स० उ० का० से संबद्ध क्रियाकलापों की सूची देते हुए रा० शै० अ० और प्र० प० ने स्रोत-पुस्तिका के चार भागों का विकास किया। ये पुस्तिकाएँ स० उ० का० से संबद्ध ऐसे क्रियाकलापों की आदर्श रूप रेखा प्रस्तुत करती हैं जिन्हें ऐसे कार्य क्षेत्रों से लिया गया है जो विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के अनुकूल हैं। रा० शै० अ० और प्र० प० ने स० उ० का० की निर्देश सामग्री विकसित करने के लिए 15 से 22 फरवरी 1983 के दौरान रा० शि० सं० नई दिल्ली में एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया क्योंकि समाजोपयोगी उत्पादक कार्य पर ऐसी निर्देश सामग्री उपलब्ध नहीं थी जो सेकंडरी स्तर के बाद की कक्षाओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने कार्य-गोष्ठी में भाग लिया। इन विशेषज्ञों ने बहुत से ऐसे क्रियाकलापों का चयन किया जो स्कूल शिक्षा के इस स्तर के अनुकूल हों। साथ ही उन्हें क्रमशः इस प्रकार समझाया गया जिससे आम स्कूलों में बिना किसी कठिनाई के कार्यान्वित किया जा सके।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

शिक्षा के व्यावसायीकरण का उद्देश्य छात्रों में मूल कौशलों और सुविज्ञता का विकास करके उन्हें काम करने में अधिक उपयुक्त बनाना है। यह गंभीर कार्य व्यावसायिक शिक्षकों को सौंपा गया है जो इस जिम्मेवारी को ठीक तरह निभा रहे हैं। ऐसे उदाहरण भी हमारे सामने आते हैं जहाँ व्यावसायिक शिक्षक ईमानदारी और उत्साह से काम करने के बावजूद व्यावसायिक प्रशिक्षण में इच्छित परिणाम देने में असफल रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा के योग्य अध्यापक भी यह महसूस करते हैं कि अपने ज्ञान को नवीनतम करने के लिए उन्हें समय समय पर पुनश्चर्या या प्रशिक्षण कोर्स की आवश्यकता है। इस संदर्भ में इन कोर्सों का महत्त्व और भी अधिक हो जाता है कि व्यावसायिक शिक्षा के शिक्षकों को +2 स्तर पर व्यावसायिक स्ट्रीम के लिए, सेवा पूर्व प्रशिक्षण नहीं दिया गया।

अंशकालिक शिक्षक-प्रशिक्षण

शिक्षकों में व्यावसायिक विशेषज्ञता और योग्यता को अधुनातन बनाने के लिए तथा शिक्षा के व्यावसायीकरण की प्रक्रिया तथा दर्शन से उन्हें अवगत कराने के लिए रा० शै० अ०

और प्र० प० शिक्षकों के लिए विभिन्न व्यवसायों में विशेष अध्ययन के संस्थानों में अंश-कालिक प्रशिक्षण का आयोजन करती है। इन प्रशिक्षणों में अच्छे से अच्छे संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों की सेवाएँ ली जाती हैं।

वर्ष 1982-83 के दौरान नीचे दिए अंशकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

(1) वाणिज्य : 17 मई से 15 जून 1982 तक, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति में।

(2) प्रौद्योगिकी : 17 मई से 12 जून 1982 तक, सी० टी० आई० गुइंडी, मद्रास में।

(3) गृह विज्ञान : 26 मई से 22 जून 1982 तक श्री अविनाशलिंगम् गृह विज्ञान कालिज, कोयम्बटूर में।

(4) कृषि : 1 से 28 जून 1982 तक मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय में।

(5) पैरा मेडिकल : 1 जून से 28 जून 1982 तक बाउरिंग और लेडी करजन अस्पताल, बंगलूर में।

विभिन्न राज्यों के व्यावसायिक शिक्षा के शिक्षकों को उनके विभिन्न व्यवसायों में एक ही स्थान पर गहन प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से देश में व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार की आशा की जाती है क्योंकि इन अंशकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से शिक्षकों को अच्छा ज्ञान तथा सुविज्ञता प्राप्त हुई है।

स्थितिनिर्धारण कार्यक्रम

किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसके कार्यान्वियन में लगे लोग उस कार्यक्रम के दर्शन से भली भाँति परिचित हों। राज्यों के शिक्षा प्राधिकारी संस्थानों के अध्यक्ष और शिक्षा बोर्डों के प्राधिकारी ही ऐसे संसाधन सम्पन्न व्यक्ति हैं जिनसे शिक्षा के व्यावसायीकरण के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने की आशा की जाती है। राज्यों की प्रार्थना पर रा० शै० अ० और प्र० प० समय-समय पर राज्यों के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए स्थितिनिर्धारण कार्यक्रमों का आयोजन करती है। वर्ष 1982-83 में रा० शै० अ० और प्र० प० ने ऐसे राज्यों के लिए, जहाँ +2 स्तर पर व्यावसायिक कोर्स चल रहे हैं और जिन राज्यों में शुरू किए जाने हैं, नीचे लिखे स्थिति-निर्धारण कार्यक्रमों का आयोजन किया :

(1) 21 से 23 अप्रैल 1982 तक गांधी नगर में राजस्थान के बहुउद्देशीय स्कूलों के प्रिंसिपलों के लिए।

(2) 28 से 31 जुलाई 1982 तक हैदराबाद में, आंध्र प्रदेश के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए।

(3) 17 से 19 अगस्त 1982 तक दिल्ली में, सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन से सम्बद्ध स्कूलों के प्रिंसिपलों के लिए।

(4) 28 से 31 अगस्त 1982 तक तथा 2 से 5 सितम्बर 1982 तक क्रमशः दो स्थितिनिर्धारण कार्यक्रम त्रिची और मदुरै में, तमिलनाडु के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए।

इन स्थितिनिर्धारण कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को शिक्षा के व्यावसायीकरण के कार्यान्वयन के पहलुओं से परिचित कराया गया। यह कार्य व्याख्यानों तथा विचार विमर्श द्वारा किया गया। इन कार्यक्रमों द्वारा इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन की बहुत सी कठिनाइयाँ और समस्याएँ सामने आईं और इनके सम्भाव्य समाधानों पर भी विचार विमर्श हुआ।

इन कार्यक्रमों से संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों में अधिक जानकारी तथा आत्म-विश्वास के बढ़ने की आशा है जिससे वे इस कार्यक्रम को सही ढंग से कार्यान्वित कर सकेंगे।

शिक्षण-सामग्री

यह केवल कहने की ही बात नहीं बल्कि ऐतिहासिक सत्य है कि देश में +2 स्तर पर व्यावसायिक कोर्स ऐसे समय में आरम्भ किए गये जब व्यावसायिक छात्रों के लिए कोई भी शिक्षण सामग्री उपलब्ध नहीं थी। व्यावसायिक शिक्षा के शुरू होने के छह वर्ष बाद भी इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया। रा० शै० अ० और प्र० प० ने इस स्थिति को सुधारने में पहल की। सुधार का यह कार्य विशेषज्ञों के वास्तविक अनुभवों पर आधारित निर्देश-पुस्तिकाएं निकाल कर किया गया। व्यावसायिक क्षेत्रों में शिक्षण-सामग्री विकसित करने के लिए नीचे दी गई कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया गया :

(i) **कृषि :** 25 नवम्बर से 6 दिसंबर 1982 तक हैदराबाद के आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय में जल व्यवस्था, फार्म मशीनरी, मौसम विज्ञान तथा फसल उत्पादन पर चार पुस्तिकाएँ विकसित की गईं।

(ii) **प्रौद्योगिकी :** 1 से 10 दिसंबर 1982 तक रा०शि० सं० नई दिल्ली में मोटरों की मरम्मत पर एक पुस्तिका विकसित की गई जिसे 24 से 26 मार्च 1983 तक दिल्ली में आयोजित एक कार्यगोष्ठी में अन्तिम रूप दिया गया।

(iii) **गृह विज्ञान** : 7 से 14 दिसंबर 1982 तक, इंस्टीट्यूट ऑफ होमइकोनोमिक्स नई दिल्ली में भोजन परिरक्षण पर एक पुस्तिका विकसित की गई ।

(iv) **पैरा मेडिकल** : 24 से 31 दिसंबर 1982 तक रा० शि० सं०, नई दिल्ली में चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी के लिए परीक्षण इकाइयाँ तथा प्रश्न बैंक विकसित किए गए ।

(v) **वाणिज्य** : 24 जनवरी से 1 फरवरी 1983 तक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में, बैंकिंग, ऑफिस प्रैक्टिस एवं एकाउंटेंसी और ऑडिटिंग पर तीन पुस्तिकाएँ तैयार की गई ।

निर्देश तथा प्रायोगिक पुस्तिकाओं में ऐसी प्रमुख प्रक्रियाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है जो सम्बद्ध व्यवसाय में प्रयुक्त होती हैं और व्यवसाय के छात्रों के लिए ऐसी प्रक्रियाओं में आने वाले '**क्यों**' और '**कैसे**' का उत्तर पाना आवश्यक होता है । तीन पुस्तिकाएँ जो फसल विज्ञान में पहले वर्ष विकसित की गई थीं, विभिन्न राज्यों के स्कूलों को जाँच के लिए और विषय विशेषज्ञों को समीक्षा के लिए भेज दी गई हैं ।

जो फीड बैक तथा सुझाव आए हैं वे साबित करते हैं कि पुस्तिकाएँ व्यावसायिक छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं । इन पुस्तिकाओं का स्वागत केवल व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों और शिक्षकों ने ही नहीं बल्कि विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों और प्रोफेसरों ने भी किया है क्योंकि ये पुस्तिकाएँ बी० एससी० (कृषि) के छात्रों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं । शिक्षण-सामग्री का यह विकास देश में व्यावसायिक शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण है । रा० शै० अ० और प्र० प० दूसरे व्यावसायिक कोर्सों में भी विकास के कार्य जारी रखेगी ।

सर्वेक्षण कार्यकर्त्ताओं के लिए पुस्तिका

किसी भी राज्य में शिक्षा के व्यावसायीकरण की योजना के लागू होते ही जिला व्यावसायिक शिक्षा के सर्वेक्षण का कार्य आरम्भ हो जाता है जिससे आवश्यकता पर आधारित कोर्स आरम्भ किए जा सकें । जिला व्यावसायिक सर्वेक्षण के साथ ही रा० शै० अ० और प्र० प० ने 6 से 11 नवंबर 1982 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें अब तक किए गए सर्वेक्षणों की समीक्षा की गई, मूल सर्वेक्षण उपकरणों को संशोधित किया गया और संशोधित मार्गदर्शक रेखाओं को अन्तिम रूप दिया गया । इस सर्वेक्षण-पुस्तिका की सहायता से निश्चय ही अच्छे ढंग के सर्वेक्षण संपन्न हो सकेंगे जिससे राज्यों में +2 स्तर पर सार्थक व्यावसायिक शिक्षा का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा ।

परामर्श देने के कार्य

व्यावसायिक शिक्षा की उन्नति के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० विभिन्न राज्यों की संस्थाओं को उनकी प्रार्थना पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में लगातार सुविज्ञता और सहयोग प्रदान करती है। रा० शै० अ० और प्र० प० ने राज्यों के प्राधिकारियों, विदेशी प्रतिनिधियों और दूसरे विशेष व्यक्तियों से रा० शि० सं० में तथा उनके राज्यों में बैठकें कीं।

इन बैठकों में जिन संस्थानों से विचार विमर्श किया गया उनमें प्रमुख हैं—पंजाब शिक्षा सुधार आयोग, तमिलनाडु, गुजरात और आंध्र प्रदेश के राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन संस्थान।

8

अध्यापकों और अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अधीन चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल, तथा मैसूर में स्थित हैं। ये सभी महाविद्यालय पुस्तकालयों, शैक्षिक सुविधाओं तथा प्रयोगशालाओं से युक्त हैं तथा मुख्य रूप से अध्यापकों के सेवाकालीन तथा सेवापूर्व के प्रशिक्षण से संबंधित हैं। इन अध्यापक-प्रशिक्षण कोर्सों में ये बातें महत्त्वपूर्ण हैं—शिक्षा-विधि तथा विषय का समन्वय, कक्षा के वास्तविक वातावरण में छात्र-अध्यापकों का दीर्घकालीन प्रशिक्षण तथा विद्यार्थियों और अध्यापकों का सामुदायिक कार्यों में सहयोग।

सन् 1973 से लेकर अब तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, अध्यापक-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् के शैक्षिक सचिवालय के रूप में काम करती आई है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० का अध्यापक-शिक्षा विभाग अध्यापक-शिक्षा के स्तर पर अनुसंधान करता है, अध्यापक-शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रबंध करता है तथा अध्यापक-शिक्षा के राज्य बोर्डों से निकट संपर्क बनाए रखता है। विश्वविद्यालयों को अपने बी० एड० के पाठ्यक्रमों में सुधार लाने के लिए सहायता दी जाती है। राज्यों के सहयोग से रा० शै० अ० और प्र० प० ने जो अनुवर्ती शिक्षा केन्द्र स्थापित किए हैं, वे अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संचालित पत्राचार-सह-संपर्क कोर्स माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षण रहित अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करता है तथा इस प्रकार, प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी को दूर करने में सहायता प्रदान करता है। संपर्क कार्यक्रम संकाय के सदस्यों से परामर्श, प्रयोगशाला कार्य तथा निरीक्षणाधीन शिक्षण अभ्यास के अवसर प्रदान करते हैं और इस प्रकार पत्राचार कार्यक्रम को अधिक परिपूर्ण बनाने में सहायक होते हैं।

अध्यापक-शिक्षा की प्रशिक्षण गोष्ठियाँ

विज्ञान के अध्यापक-शिक्षकों की कार्यगोष्ठी : माध्यमिक स्तर के विज्ञान के अध्यापक-शिक्षकों तथा लेखकों की एक कार्यगोष्ठी रा० शै० अ० और प्र० प० के परिसर में 30 मार्च से 7 अप्रैल 1982 तक हुई। इसका आयोजन दो चरणों में किया गया। इसके पहले चरण में "माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षा" नामक पुस्तक से जीव-विज्ञान और भौतिकी पढ़ाने वाले अध्यापक-शिक्षकों से प्राप्त पुनर्निवेशन (फीडबैक) पर विचार-विमर्श किया गया। यह विचार-विमर्श 30 मार्च से 7 अप्रैल 1982 तक चला। अध्यापक-शिक्षकों से पुनर्निवेशन प्राप्त करने के लिए इस चर्चा में विज्ञान के 25 अध्यापक-शिक्षकों, परियोजना के 15 सदस्यों और 2 ब्रिटिश विशेषज्ञों ने भाग लिया। दूसरे चरण में ब्रिटिश विशेषज्ञों और परियोजना के सदस्यों ने अध्यापक-शिक्षकों द्वारा प्रस्तावित परिवर्तनों को लागू करने के लिए गोष्ठी में भाग लिया।

माध्यमिक स्तर के अध्यापक-प्रशिक्षण कालिजों में शैक्षिक मनोविज्ञान के शिक्षण में अनुकूलन-प्रशिक्षण

यह कार्यक्रम राज्य शिक्षा संस्थान, श्रीनगर में 11 अक्तूबर से 20 अक्तूबर 1982 तक किया गया। इसमें शैक्षिक मनोविज्ञान की शिक्षण विधि पर विचार किया गया। इस

कार्यगोष्ठी में 34 अध्यापक-शिक्षकों और विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों ने भाग लिया। इस बात पर विचार किया गया कि रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा प्रकाशित "माध्यमिक अध्यापक-शिक्षा के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक" को किस विधि से पढ़ाया जाए। इस पुस्तक में मनोविज्ञान के सिद्धांतों और भारतीय पृष्ठभूमि में कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों में उनके प्रयोग पर अधिक बल दिया गया है।

पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक-शिक्षकों के अनुकूलन के लिए कार्यगोष्ठी

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में 3 से 8 जनवरी 1983 तक छह दिन की एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका विषय था अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् के निर्देशों पर निर्मित "पाठ्यचर्या और मूल्यांकन शिक्षण" पाठ्यपुस्तक के प्रयोग में पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक-शिक्षकों का अनुकूलन करना। पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न राज्यों के 23 अध्यापक-शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। इस पाठ्यपुस्तक के विषय और प्रणाली पर तथा अध्यापक-शिक्षा विभाग द्वारा विकसित कोर्स की रूपरेखा पर विचार-विमर्श हुआ।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा सामुदायिक कार्य में अनुकूलन कार्यक्रम

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में प्रमुख व्यक्तियों के लिए अध्यापक-शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा सामुदायिक कार्य पर यह कार्यक्रम 5 नवम्बर से 10 नवम्बर 1982 तक उत्तर गौहाटी के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण कालिज में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षित व्यक्तियों को विभिन्न राज्यों द्वारा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा सामुदायिक कार्य के क्षेत्र में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रयुक्त किए जाने की आशा है। असम, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, नागालैंड तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह से आए हुए 23 प्रतिभागियों ने इसमें हिस्सा लिया।

शिक्षा अधिकारियों तथा शिक्षा उप-निदेशकों के लिए अनुकूलन कोर्स

शहरीकरण की दृष्टि से गुजरात राज्य देश में तीसरे नंबर पर है तथा औद्योगीकरण की दृष्टि से दूसरे नंबर पर। राज्य में औद्योगीकरण के फलस्वरूप सभी शहरी क्षेत्रों में गंदी बस्तियों का प्रसार हुआ है, विशेषकर अहमदाबाद, सूरत, अंकलेश्वर, भावनगर, राजकोट, बड़ौदा, नवासरी, जामनगर जैसे शहरों में। गंदी बस्तियों के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को भली भाँति पूरा करने के लिए बड़ौदा म्युनिसिपल बोर्ड के सहयोग से 26 से 30 दिसम्बर 1982 तक श्रेयस समर्पण, बड़ौदा में एक अनुकूलन कोर्स आयोजित किया गया। इसमें

गुजरात के म्युनिसिपल बोर्ड के शिक्षा अधिकारियों का अनुकूलन किया गया ताकि वे गंदी बस्तियों की शैक्षिक समस्याओं से भली भांति निपटने में समर्थ हो सकें। पाँच दिन के विचार-विमर्श के दौरान प्रतिभागियों को शहरी गंदी बस्तियों की संख्या में असाधारण वृद्धि, गंदी बस्तियों में रहने वालों की सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आजकल की शिक्षा के संदर्भ में उनके बच्चों की आवश्यकताओं तथा गंदी बस्तियों के जीवन और शिक्षा की विशेष समस्याओं से अवगत कराया गया। उन्हें उन विशेष कार्यक्रमों की भी जानकारी दी गयी जो गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों की शिक्षा, उनके तथा उनके माता-पिता के कल्याण के लिए अपनाए जा सकते हैं। प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी रिपोर्टों में उन कार्यक्रमों का ब्यौरा दिया जो उनके म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा गंदी बस्तियों में रहने वालों की शिक्षा और कल्याण के लिए चलाए जा रहे हैं। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों ने थोड़े समय में पूरी होने वाली योजनाएँ तैयार कीं ताकि उपलब्ध मानवीय एवं आर्थिक साधनों के प्रयोग से इन बच्चों की शिक्षा और जीवन में सुधार लाया जा सके।

"आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा" विषय पर अध्यापक-शिक्षकों के लिए अनुकूलन कोर्स

आंध्र विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के सहयोग से रा० शै० अ० और प्र० प० ने आंध्र प्रदेश राज्य के अध्यापक-शिक्षकों के लिए वाल्टेयर (आंध्र प्रदेश) में 31 मार्च से 5 अप्रैल 1983 तक एक अनुकूलन कोर्स का आयोजन किया जिसका विषय था "आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा"। राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् द्वारा प्रस्तुत ढाँचे पर आधारित अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम की नई योजना का यह पहला कोर कोर्स है। इस कोर्स में अध्यापक-शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधारभूत सिद्धांत पर बल दिया गया जो अध्यापकों की तैयारी की दृष्टि से हमारे आधुनिक समाज के लिए उपयुक्त हैं। राज्य के 12 माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से आए हुए 15 अध्यापक-शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कोर्स में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि भारतीय जीवन-दर्शन के सभी आधुनिक तथा प्राचीन अव्यावहारिक विचारों को राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् के मॉडल पर आधारित बी० एड० की नई योजना के कोर पेपर में स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। हमारी संस्कृति, परम्पराओं, और रीतिरिवाजों में से उन्हीं को अध्यापक-शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए जो हमारी आधुनिक राष्ट्रीय वृद्धि और विकास के अनुरूप हैं। अन्ततः, देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन की विभिन्नताओं में राष्ट्रीय एकता पर बल दिया जाना चाहिए। इसके लिए लोकतंत्रात्मक धर्म-निरपेक्ष तथा नैतिक मूल्यों (जैसे प्रेम, भाईचारा, सहनशीलता, आदि) को महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।

प्राथमिक अध्यापक-शिक्षा के लिए लघु-शिक्षण में प्रशिक्षण

पूर्वी क्षेत्र के प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए लघु-शिक्षण में एक अनुकूलन कोर्स 24 से 29 जनवरी 1983 तक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। इस कोर्स का उद्देश्य अध्यापक-शिक्षकों को लघु-शिक्षण की मूल धारणा और कार्यविधि से परिचित कराना था। लघु पाठों की योजना बनाने तथा केन्द्रिक शिक्षण की निपुणताओं में से एक का प्रयोग करके लघु कक्षाओं में इन पाठों को पढ़ाने की विधि में उन्हें प्रशिक्षित किया गया। उनके सम्मुख शिक्षण-निपुणताओं के समन्वय की मूल-धारणा की व्याख्या की गई और प्रबंध नीति पर विचार किया गया। कुल 41 अध्यापक-शिक्षकों ने इसमें भाग लिया।

बी० एड० के पाठ्यक्रम में संशोधन

"एन० सी० टी० ई० करीकुलम—ए फ्रेमवर्क" द्वारा अनुमोदित रूपरेखा के आधार पर बी० एड० के पाठ्यक्रम में संशोधन करने के लिए कुछ कार्यगोष्ठियों तथा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। पहली कार्यगोष्ठी नागपुर, औरंगाबाद तथा बम्बई विश्वविद्यालयों के बी० एड० के पाठ्यक्रम में संशोधन करने के लिए 14 से 27 अप्रैल 1982 तक राज्य शिक्षा संस्थान, पुणे में रखी गयी। इसमें राज्य के 17 जिलों के प्रिंसिपलों सहित 63 वरिष्ठ अध्यापक-शिक्षकों को निमंत्रित किया गया।

दूसरी कार्यगोष्ठी 12 से 16 जुलाई 1982 तक राजस्थान विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को संशोधित करने के लिए वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान में आयोजित की गई। भाग लेने वाले प्रिंसिपलों और वरिष्ठ अध्यापक-शिक्षकों ने "एन० सी० टी० ई० करीकुलम—ए फ्रेमवर्क" के अनुमोदनों, विशेषतः विषय एवं कार्यविधि तथा शिक्षण अभ्यास संबंधी अनुमोदनों पर बल दिया।

तीसरी कार्यगोष्ठी का आयोजन 6 से 9 सितम्बर 1982 तक राज्य शिक्षा संस्थान, पुणे में किया गया जिसमें कोल्हापुर, पुणे और एस० एन० डी० टी० विश्वविद्यालयों के बी० एड० पाठ्यक्रमों के संशोधन पर विचार हुआ। संबंधित विश्वविद्यालयों के विभागों के स्टाफ़ तथा माध्यमिक प्रशिक्षण कालिजों के प्रिंसिपलों ने भी इसमें भाग लिया।

चौथी कार्यगोष्ठी 22 से 27 नवम्बर 1982 तक पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में जम्मू व कश्मीर, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयों के बी० एड० पाठ्यक्रम को संशोधित करने के लिए आयोजित की गई। इसमें संबंधित कालिजों/विश्वविद्यालयों के 28 वरिष्ठ प्रिंसिपलों, प्रोफेसरों तथा वरिष्ठ प्राध्यापकों ने भाग लिया।

एक और कार्यक्रम गुजरात, भावनगर और सौराष्ट्र विश्वविद्यालयों तथा गुजरात विद्यापीठ के बी० एड० पाठ्यक्रम का संशोधन करने के लिए 13 से 17 दिसम्बर 1982

तक गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद में रखा गया । इसमें 27 वरिष्ठ अध्यापक-शिक्षकों और ट्रेनिंग कालिज के प्रिंसिपलों ने भाग लिया । वर्तमान पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए । संशोधित पाठ्यक्रम को संबंधित बोर्ड ऑफ स्टडीज के सामने मंजूरी के लिए रखा जाएगा ।

23 से 27 मार्च 1983 तक एम० बी० पटेल कालिज ऑफ़ एजुकेशन, वल्लभ विद्यानगर में गुजरात विश्वविद्यालय के बी० एड० के पाठ्यक्रम को संशोधित करने के लिए एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें 24 वरिष्ठ प्रोफेसरों और प्रिंसिपलों ने भाग लिया । विचार-विमर्श के बाद प्रतिभागियों ने रिपोर्टें तैयार कीं । इनसे अध्यापक-शिक्षा पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की आशा है ।

2 से 5 नवम्बर 1982 तक "शारीरिक शिक्षा में अध्यापक-शिक्षा" के बारे में एक गोष्ठी का आयोजन कालिज ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन, एन० बी० एस० महाविद्यालय, विष्णुपुर, बाँकुरा जिला, पश्चिमी बंगाल में किया गया । पश्चिमी बंगाल राज्य के शारीरिक शिक्षा के 11 माध्यमिक विद्यालय अध्यापक-शिक्षकों ने इसमें भाग लिया । इस गोष्ठी में माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों और माध्यमिक विद्यालयों के शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम पर विचार किया गया ।

राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन

राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शै० अ० और प्र० परिषदों के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन 7 से 9 मार्च 1983 तक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में हुआ । इसमें राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के निदेशकों/उनके वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया । प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी वार्षिक रिपोर्टें पेश कीं तथा निम्नलिखित कार्यक्रमों को अपनाने के बारे में बातचीत की :

—स्कूल स्तर पर तथा अध्यापक-शिक्षा स्तर पर सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को अपनाना, तथा

—विकलांगों की समन्वित शिक्षा ।

अध्यापक-शिक्षकों के लिए कार्यक्रम संबंधी गोष्ठी

इस कार्यक्रम को लागू करने का उद्देश्य नवाचारीय कार्यक्रमों को बढ़ावा देना तथा अध्यापक-शिक्षकों को अपने काम में प्रयोगों से प्राप्त अनुभवों तथा अध्ययन से प्राप्त विचारों को लिखने के लिए प्रेरित करना है, ताकि अध्यापक-शिक्षा के विभिन्न पक्षों की

शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन हो सके और उन्हें दूसरे अध्यापक-शिक्षकों तक पहुँचाया जा सके। भारत के अध्यापक-शिक्षा संस्थानों के समन्वयकों, अध्यापक-शिक्षकों तथा प्रिंसिपलों से लेख आमंत्रित किए जाते हैं। नवें अखिल भारतीय सेमिनार रीडिंग प्रोग्राम (1982-83) के मुकाबिले में आए अध्यापक-शिक्षकों के लेखों का 22 और 23 फरवरी 1983 को मूल्यांकन किया गया। माध्यमिक अध्यापक-शिक्षकों के 9 और प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के 7 लेखों को पुरस्कार के लिए चुना गया। पुरस्कृत लेखों पर विचार हेतु पुरस्कार प्राप्त-कर्त्ताओं की एक बैठक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में 24 से 26 मार्च 1983 तक हुई। प्रत्येक को 500 रु० नकद और एक मेरिट सर्टिफिकेट दिया गया और 25 मार्च 1983 को सबको दिल्ली के आस-पास के शैक्षिक तथा ऐतिहासिक स्थानों की सैर कराई गई।

अध्ययन

"प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक संबद्धता तथा उनकी कार्य-कुशलता से उसका संबंध" विषय पर एक अध्ययन पूरा किया गया।

निम्नलिखित अध्ययन चल रहे हैं :

—माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के लिए उपकरणों का विकास।

—स्व-धारणा, अभिवृत्ति और समायोजन का अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जन-जातियों के विद्यार्थी-अध्यापकों और अन्य जातियों के विद्यार्थी-अध्यापकों की उपलब्धियों के साथ संबंध।

— प्रारम्भिक विद्यालय पद्धति में शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि में अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन।

—भारत में अध्यापक का स्थान।

—समुदाय के साथ काम करने के लिए मूल्यांकन उपकरणों का विकास।

—अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम के विकास की दृष्टि से समुदाय के साथ काम करने संबंधी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों के काम का अध्ययन।

—माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए नियमों का निर्माण।

—विभिन्न प्रबंधों के अधीन संस्थानों में अध्यापक तैयारी के निजी खर्चे का माध्य-मिक और प्राथमिक दोनों स्तरों पर, सापेक्ष अध्ययन— शिक्षा के आर्थिक पहलू का प्रवृत्तिगत अध्ययन।

—कार्यकुशलता-आधारित विद्यार्थी-शिक्षा तथा शिक्षण-आदर्श आधारित विद्यार्थी-शिक्षा का विद्यार्थी-अध्यापकों की शिक्षण में कुशलता पर प्रभाव।

प्रकाशन

जो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं उनके नाम है—'टीचिंग ऑफ साइंस इन सेकंडरी स्कूल्स', 'कोर टीचिंग स्किल्स— माइक्रोटीचिंग अप्रोच'। निम्नलिखित पुस्तकें तैयार की जा रही हैं :

—करीकुलम एंड इवेल्युएशन (फॉर सेकंडरी टीचर ट्रेनीज)

—एजुकेशनल माइकोलोजी (फॉर सेकंडरी टीचर ट्रेनीज)

—कांटेंट-कम-मैथोडोलोजी ऑफ टीचिंग मैथेमेटिक्स फॉर सेकंडरी टीचर ट्रेनिंग इंस्टीच्यूशंस

—टीचर एंड एजुकेशन इन द अमर्जिग इंडियन सोसाइटी (सेकंडरी लेवल)

—थर्ड नेशनल सर्वे ऑफ सेकंडरी टीचर एजुकेशन इन इंडिया

—कांटेंट-कम-मैथोडोलोजी ऑफ टीचिंग मैथेमैटिक्स फॉर ऐलिमेंट्री टीचर ट्रेनिंग इंस्टीच्यूशंस

—सामान्य अध्ययन कौशल

निम्नलिखित पुस्तकों की पांडुलिपियाँ तैयार हो चुकी है :

—साईकोलोजी फॉर द ऐलिमेंट्री टीचर (टेक्स्ट बुक फॉर ऐलिमेंट्री टीचर एजुकेशन लैवल)

—स्टडीज़ ऐंड इंवेस्टीगेशंस ऑन टीचर एजुकेशन इन इंडिया (1976-80)

—टीचिंग ऑफ साइंस इन ऐलिमेंट्री स्कूल्स

—इन्नोवेटिव प्रेक्टिसेज़ इन सेकंडरी टीचर एजुकेशन इंस्टीच्यूशंस, वाल्यूम IV

अनुवर्ती शिक्षा के लिए केन्द्र

वर्ष 1982-83 के दौरान विभिन्न राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में 99 केन्द्र विद्यमान थे। इनमें से हरियाणा के तीन केन्द्र और नगर निगम दिल्ली का एक केन्द्र योजना से निकल गया। शेष में से 70 केन्द्र संतोषजनक रूप से काम कर रहे हैं और बाकी के (तीन हरियाणा और एक दिल्ली का छोड़कर) 25 केन्द्र ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहे हैं।

हाल ही में गुजरात में तीन और पश्चिमी बंगाल में चार (पुराने पाँच की जगह पर) केन्द्रों की स्थापना की गई है। परिषद् ने मंडी (हिमाचल प्रदेश) में एक नए केन्द्र की मंजूरी दी है। यह अगले वित्त वर्ष में काम करना शुरू कर देगा।

अब तक विभिन्न राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के 52 केन्द्रों को अनुदान दिया गया है। केन्द्रों के काम-काज का मूल्यांकन करके रिपोर्ट तैयार कर ली गई है जो अब विचाराधीन है।

राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद्

यह परिषद् निम्नलिखित शैक्षणिक समितियों के माध्यम से कार्य करती है—

—स्कूल-पूर्व तथा प्रारम्भिक अध्यापक-शिक्षा समिति।

—माध्यमिक तथा कालिज अध्यापक-शिक्षा समिति।

—शारीरिक रूप से अपंग तथा मानसिक रूप से पिछड़े हुए बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष विद्यालयों के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए समिति।

—राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् की संचालन समिति।

ये समितियाँ वर्ष में एक बार अपनी बैठक करती हैं और इनकी सिफारिशों को संबंधित संस्थानों, विभिन्न राज्यों/संघ क्षेत्रों की एजेंसियों तथा विश्वविद्यालयों को उनकी सूचनार्थ भेज दिया जाता है।

राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् अथवा इसकी समितियाँ कुछ उपसमितियों/कार्यकारी दलों का भी गठन करती है जो उनकी सिफारिशों को लागू करने से संबंधित विशिष्ट समस्याओं पर विस्तार से विचार करती हैं।

नीचे के अनुच्छेदों में विभिन्न समितियों द्वारा इस वर्ष किए गए काम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत है।

स्कूल-पूर्व तथा प्रारम्भिक अध्यापक-शिक्षा समिति

इस समिति की एक बैठक बेंगलूर के क्षेत्रीय सलाहकार के दफ्तर में 29 अक्तूबर 1982 को बुलाई गई। इसमें इस स्तर पर अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रमों में मूल्य-अभिमुख शिक्षा को शामिल करने पर विचार किया गया। इस बैठक की रिपोर्ट को अन्तिम रूप दे दिया गया है।

माध्यमिक तथा कालिज अध्यापक-शिक्षा समिति

इस समिति की एक बैठक फरवरी 1983 में हुई। राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् की माध्यमिक तथा कालिज अध्यापक-शिक्षा समिति की एक विशेष बैठक 25 जनवरी 1983 को हुई जिसमें अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में मूल्यों की शिक्षा के समावेश पर विचार किया गया। इसके द्वारा गठित समितियों और उनके काम का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

(क) रा० अ० शि० प० पाठ्यचर्या को लागू करने की समस्या : कार्यकारी दल की एक बैठक 15 सितम्बर 1982 को हुई। इसमें राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् की पाठ्यचर्या के लिए एक पेपर तैयार करने के लिए प्रश्नावली पर बहस हुई। इसमें यह पता

लगाने की कोशिश की गई कि इस पाठ्यचर्या को लागू करने के रास्ते में क्या रुकावटें है। इस संबंध में आँकड़े इकट्ठे किए जा रहे हैं।

(ख) **भविष्य-अभिमुख अध्यापक-शिक्षा :** उपसमिति की एक बैठक 23 सितम्बर 1982 को हुई जिसमें भविष्य-अभिमुख अध्यापक-शिक्षा पर होने वाली राष्ट्रीय गोष्ठी में विचारणीय विषयों का निश्चय किया गया।

(ग) **अध्यापक-शिक्षा में पत्राचार कोर्सों की समिति :** अध्यापक-शिक्षा में पत्राचार कोर्सों की विकल्प नीति पर विचार करने के लिए उपसमिति की एक बैठक 25 जनवरी 1983 को हुई।

गोष्ठियाँ : "भविष्य-अभिमुख अध्यापक-शिक्षा" विषय पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी रा० शै० अ० और प्र० प० के मुख्यालय में 21 से 23 मार्च 1983 तक हुई। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर तथा आने वाले वर्षों में अध्यापक-शिक्षा की स्थिति पर विचार करना था। इन विषयों पर पेपर पढ़े गए—शिक्षा और समाज : उभरता दृश्य; भविष्य के लिए शिक्षा की तकनीक और पद्धतियाँ; अध्यापक की बदलती तस्वीर; एम० एड० कोर्स का भविष्यत रूप। तीन दलों का गठन किया गया जिनके नाम इस प्रकार हैं—प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक अध्यापक-शिक्षा; माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और अध्यापक-शिक्षा; तथा स्नातकोत्तर अध्यापक-शिक्षा और शैक्षिक नियोजकों तथा प्रशासकों की तैयारी। इन दलों ने शिक्षा के विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया, जैसे कि शिक्षा की पद्धति और तकनीक में आवश्यक परिवर्तन जिससे सबको कम खर्च पर बराबर के शैक्षिक अवसर प्राप्त हो सकें। अन्य मुद्दे ये थे—शिक्षा में तकनीकी निवेश जो वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रबलित कर उसे भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ बना सके; शिक्षाशास्त्रीय पक्ष जो शैक्षिक कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक है; अध्यापक-शिक्षा के स्नातकोत्तर कोर्सों के लिए नए निवेश; शैक्षिक नियोजकों तथा प्रशासकों का प्रशिक्षण ताकि भविष्य के लिए शिक्षा का नियोजन और प्रबंधन किया जा सके; तथा नए संघटनात्मक नव परिवर्तन जो वर्तमान औपचारिक पद्धति के लिए आवश्यक हैं।

गोष्ठी ने बहुत-सी सिफारिशें कीं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(क) शिक्षा संसाधनों से पूरी तरह सम्पन्न केन्द्रों की स्थापना की जाए जहाँ उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग स्कूलों के समूह तथा अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ कर सकें।

(ख) आत्म-अधिगम को शिक्षा का महत्वपूर्ण उपकरण बनाना पड़ेगा, विशेषकर 9 से 16 वर्ष के बच्चों के लिए।

(ग) शैक्षिक सुविधाओं को समाज के सभी वर्गों, विशेषकर सुविधा-वंचित वर्गों तक पहुँचाने के लिए, जन संचार साधनों, विशेष तौर पर टी० वी० और रेडियो तथा छपी हुई सामग्री का उपयोग आवश्यक है।

(घ) अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाएँ विद्यार्थी-अध्यापकों का इस प्रकार अनुकूलन करें कि वे समाज की विभिन्न एजेंसियों जैसे पंचायतों तथा अन्य विस्तार-कर्मियों से संबंध स्थापित कर सकें।

(ङ) ऐसी प्रायोगिक परियोजनाओं को लेना चाहिए जो शिक्षा की नई तकनीकें और पद्धतियाँ अपनाती हों।

(च) आत्म-अधिगम तकनीकों का प्रयोग करके अध्यापकों को आवश्यकता-आधृत सेवाकालीन प्रशिक्षण प्राप्त कराया जाए।

(छ) विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए आवश्यक विशेष सामग्री अध्यापकों को उपलब्ध कराई जाए क्योंकि विकलांग बच्चों को भी भविष्य में सामान्य विद्यालयों में ही अधिकाधिक शिक्षा उपलब्ध कराई जानी है।

(ज) स्कूलों को अधिकाधिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ताकि वे अपनी पाठ्यचर्या का निर्माण और सुधार स्वयं कर सकें।

(झ) बच्चों की रचनात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के लिए सृजन केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए।

(ञ) स्कूल में औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की विधियों का प्रयोग होना चाहिए।

(ट) प्रतिभावान व्यक्तियों को शिक्षा व्यवसाय की ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से अध्यापकों के लिए एक प्रतिभा खोज योजना शुरू की जानी चाहिए।

(ठ) अध्यापक-शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्यों की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होना चाहिए।

(ड) स्नातकोत्तर स्तर पर शैक्षिक प्रौद्योगिकी में विशेष कोर्स उपलब्ध कराए जाने चाहिएँ।

(ढ) उत्तम प्रकार की शिक्षण सामग्री के विकास के साथ-साथ खुली पद्धति और ओपन यूनिवर्सिटी पद्धति को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

अध्यापक-प्रशिक्षण पर राष्ट्रीय स्तर के अधिकारियों तथा विशेषज्ञों के लिए और शिक्षा में उत्पादक कार्यों को लाने वाले अन्य शैक्षिक कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए यूनेस्को की क्षेत्रीय गोष्ठी

रा० शै० अ० और प्र० प० ने यूनेस्को की सहायता से एशिया और प्रशांत के लिए एक गोष्ठी का आयोजन परिषद् के मुख्यालय में किया जिसमें अफ़गानिस्तान, आस्ट्रेलिया, भूटान, बांग्ला देश, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान तथा थाईलैंड के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा में उत्पादक कार्य की सन्निविष्टि की समस्याओं को सुलझाना था। कार्यक्रम में यूनेस्को के नीचे लिखे दस्तावेजों का प्रस्तुतीकरण और उन पर विचार-विमर्श शामिल था :

—परिवेश शिक्षा की पाठ्यचर्या को बनाने की विधियाँ।

—परिवेश शिक्षा के शिक्षक को प्रशिक्षित करने की विधियाँ।

—परिवेश शिक्षा में प्राथमिक शिक्षकों तथा निरीक्षकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल I।

—प्राथमिक अध्यापकों और निरीक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल II।

—विज्ञान में माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल III।

—विज्ञान में माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल IV।

विशेष शिक्षा में अध्यापक-प्रशिक्षण

मानसिक रूप से पिछड़े हुए तथा शारीरिक रूप से अपंग बच्चों के लिए विशेष विद्यालयों के अध्यापकों की तैयारी के लिए गठित समिति की एक बैठक 8 जुलाई 1982 को रा० शै० अ० और प्र० प० के मुख्यालय में हुई। समिति ने परिषद् के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए :

(क) परिषद् का कार्य विशेष शिक्षा में अनुसंधान, उसके लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री के विकास तथा शिक्षण विधि के निर्माण तक सीमित होगा। प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय को विशेष शिक्षा के एक क्षेत्र में अध्यापक-प्रशिक्षण उपलब्ध कराना चाहिए।

(ख) नेत्रहीनों की शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिकता के आधार पर अनुसंधान किया जाना चाहिए ताकि उन्हें पढ़ाने के लिए उपयुक्त विधियों का विकास किया जा सके। यह सुझाव दिया गया कि रा० शै० अ० और प्र० प० इस कार्यक्रम को धीरे धीरे अपने हाथ में तभी ले जब क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में इसके लिए उपयुक्त ढाँचा खड़ा हो जाए। इस समिति की सिफारिशों पर निम्नलिखित कार्यकारी दलों का गठन किया गया है : (1) बधिरों के अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए मानक तैयार करने के कार्यकारी दल, और (2) नेत्रहीनों के अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए मानक तैयार करने के लिए कार्यकारी दल। पहले दल की बैठक अक्तूबर में हुई। इसमें बधिरों के अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए पाठ्यचर्या और मानक तैयार किए गए। नेत्रहीनों के अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए दूसरे कार्यकारी दल की बैठक निकट भविष्य में होगी।

अध्यापक-शिक्षा के राज्य बोर्ड

अध्यापक-शिक्षा के राज्य बोर्डों का वार्षिक सम्मेलन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल में 29 और 30 जुलाई 1982 को हुआ। इसने यह सिफारिश की कि बी० एड० के ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्सों को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में बंद कर दिया जाना चाहिए क्योंकि अब कई अन्य विश्वविद्यालयों ने भी इन्हें शुरू कर दिया है और इससे इनका स्तर गिर रहा है। इसने यह सुझाव भी दिया कि विस्तार सेवा केन्द्रों को सेवाकालीन कोर्सों का प्रबंध करने की बजाय स्कूलों का दौरा करना चाहिए, आदर्श शिक्षण का प्रदर्शन करना चाहिए और अध्यापकों को वहीं मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

संचालन समिति की दसवीं बैठक

राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् की संचालन समिति की दसवीं बैठक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में 10 फरवरी 1983 को हुई। इसमें 12 सदस्यों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

यह महाविद्यालय उत्तरी क्षेत्र के राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश के राज्यों तथा चंडीगढ़ और दिल्ली के संघ क्षेत्रों की अध्यापक-प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

प्रवेश संख्या : क्षे० शि० म० ने अपने नियमित बी० एड०, एम० एड०, बी० एस-सी० (आनर्स/पास) बी० एड० प्रथम वर्ष तथा बी० एससी० (आनर्स/पास) बी० एड०, द्वितीय वर्ष कोर्सों में 364 विद्यार्थियों को प्रवेश लेने दिया जिनका ब्यौरा इस प्रकार है—

बी० एड० (विज्ञान)	81
बी० एड० (कृषि)	31

बी० एड० (वाणिज्य)	37
बी० एड० (अंग्रेजी)	32
बी० एड० (हिन्दी)	40
बी० एड० (उर्दू)	32
एम० एड०	17
बी० एससी० (आनर्स/पास) बी० एड० प्रथम वर्ष	73
बी० एससी० (आनर्स/पास) बी० एड० द्वितीय वर्ष	21
	364

ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स : बी० एड० में प्रवेश संख्या 148 थी।

परिणाम : उत्तरी क्षेत्र के 232 अप्रशिक्षित अध्यापक चार महीने के शिक्षण और दस महीने के पत्राचार कोर्स के बाद बी० एड० ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स की जुलाई 1982 की परीक्षा में बैठे।

विस्तार सेवा विभाग : क्षे० शि० म० का विस्तार सेवा विभाग उत्तरी अंचल के राज्यों द्वारा सुझाए गए और कॉलिज संकाय द्वारा प्रस्तावित, राज्यों की शिक्षा की आवश्यकताओं के आधार पर विस्तार कार्यक्रमों का प्रबंध करता है। 1982-83 के शैक्षणिक सत्र के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम किए गए—

(क) **अंचल के विस्तार सेवा विभागों के अवैतनिक निदेशकों का एक सम्मेलन** राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, पटियाला में 14 से 17 अप्रैल 1982 तक हुआ जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् द्वारा तैयार किए गए प्रारूप-पाठ्यक्रम में विस्तार सेवा के कार्यक्रमों के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमर्श करना था। इस सम्मेलन में 21 अवैतनिक निदेशकों, संसाधन व्यक्तियों और समन्वयकों ने भाग लिया।

(ख) **पाठ-लेखन के लिए प्रमुख व्यक्तियों की एक कार्यगोष्ठी** राजकीय सी० पी० आई०, इलाहाबाद में 19 से 23 अक्तूबर 1982 तक हुई। उसका उद्देश्य पत्राचार पाठों को लिखने के लिए प्रमुख व्यक्तियों को प्रशिक्षण देना था। कुल 40 प्रमुख व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया।

(ग) **माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षण पर कार्यगोष्ठी** : क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में 16 से 20 दिसम्बर 1982 तक पुस्तक (एस० टी० ई० पी०) का

परीक्षण-शिक्षण हुआ। इस कार्यगोष्ठी का उद्देश्य विज्ञान-शिक्षण की इस पुस्तक की सामग्री पर सुझाव प्राप्त करना था। पुस्तक में दिए गए भौतिकी, रसायन शास्त्र तथा जीव विज्ञान के पाठों पर अलग-अलग और सामान्य विज्ञान शिक्षण दोनों पर प्रस्ताव आमंत्रित किए गए। इस कार्यगोष्ठी में 8 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया।

(घ) **सहकारी विद्यालयों के अध्यापकों, हैडमास्टरों/प्रिंसिपलों के लिए अनुकूलन सम्मेलन** 28 और 29 दिसम्बर 1982 को कालिज के प्रांगण में हुआ। इसका उद्देश्य कालिज के विद्यार्थी-अध्यापकों का उन सहकारी विद्यालयों के अध्यापकों तथा हैडमास्टरों/प्रिंसिपलों से परिचय कराना था जिनमें उन्हें बाद में शिक्षण अभ्यास कराना था।

(ङ) **माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण की शिक्षा** पर एक कार्यगोष्ठी का आयोजन अध्यापक-शिक्षकों के लिए कालिज में 7 से 12 मार्च 1983 तक किया गया। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण की अधुनातन विधियों की शिक्षा देना और माध्यमिक विद्यालयों के लिए शिक्षण सामग्री का विकास करना था।

(च) **अनुसंधान विधि और प्रायोगिक रूपरेखा तैयार करने पर** अध्यापक-शिक्षकों के लिए एक कार्यगोष्ठी का आयोजन 14 से 19 मार्च 1983 तक अम्बाला के सोहनलाल कालिज आफ़ एजूकेशन में किया गया। इस का उद्देश्य प्रतिभागियों को अनुसंधान से संबंधित मूलभूत आँकड़ों से परिचित कराना था। इस कार्यगोष्ठी में 44 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया।

(छ) **बुक-कीपिंग और लेखा पद्धति के कुछ क्षेत्रों में वाणिज्य शास्त्र के शिक्षकों का ज्ञान बढ़ाने** के लिए कालिज में एक कार्यगोष्ठी का आयोजन 21 से 26 मार्च 1983 तक किया गया। इसमें प्रतिभागियों को विषय के कुछ जटिल अंशों का ज्ञान प्राप्त कराया गया। इस कार्यगोष्ठी में 43 अध्यापकों ने भाग लिया।

एरिक (शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति) परियोजना

"किशोरों में वैज्ञानिक विचारों का विकास और निर्धारण" विषय पर काफी काम आगे बढ़ा। एरिक की इस परियोजना से संबंधित प्रोजेक्ट फ़ेलो ने अपना अनुसंधान-प्रबंध "किशोरावस्था के दौरान चरों का अपवर्जन" पी० एचडी० डिग्री के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय को प्रेषित किया। अब तक किया गया सारा काम प्रलेखित रूप में है। दो अन्य अनुसंधान-लेख परिपूर्णता के निकट हैं। ये हैं—किशोर अवस्था के दौरान विज्ञान में तार्किक मनन का विकास, और किशोर अवस्था के दौरान नियंत्रित प्रयोग। एम० एड० स्तर पर भी अपचारी बच्चों के पाइजीटियन उद्देश्यों की खोजबीन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

कृषि विभाग

इस विभाग में निम्नलिखित काम हुए :

शिक्षण : नीचे लिखे कोर्सों में नियमित शिक्षण-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ—(क) कृषि शिक्षण में विशिष्टीकरण वाला एक-वर्षीय बी० एड० कोर्स; (ख) चार-वर्षीय कृषि अभ्यास युक्त बी० एससी० (आनर्स/पास) बी० एड० के समन्वित कोर्स का द्वितीय वर्ष; (ग) बी० एड० (ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स) कृषि।

अनुसंधान : समुदाय के किसानों तथा कालिज के विद्यार्थियों को लाभान्वित करने के लिए शिक्षण फार्म पर अनुसंधान और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस सूखे प्रदेश में सर्दी के मौसम में हरे चारे की खेती का कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

विकास की गतिविधियाँ : चौथे वर्ष के विज्ञान के विद्यार्थियों की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण-फार्म पर एक फल-उद्यान का विकास किया गया। किचेन गार्डेन, ऑर्नामेंटल गार्डेन और पॉट कल्चर के क्षेत्र में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का ज्ञान फैलाने के लिए कालिज के प्रांगण में एक केन्द्रीय उद्यान नर्सरी का विकास किया गया। नए घास के मैदान और पेड़ पौधे कालिज की सजावट को बढ़ाने के लिए लगाए गए। प्रांगण के विन्यास में नव परिवर्तन वाला सजावट-सुन्दरता का एक गहन कार्यक्रम शुरू किया गया।

विस्तार की गतिविधियाँ : विद्यार्थियों और कर्मचारियों की व्यावसायिक जानकारी बढ़ाने के लिए कृषि-वैज्ञानिकों के भाषण करवाए गए। विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए समय-समय पर गोष्ठियों का प्रबंध किया गया। कृषि विभाग के कर्मचारियों ने स्थानीय कृषि ज्ञान केन्द्र के साथ सहयोग किया। यह केन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर का एक भाग है। इसमें किसानों के लिए एक प्रदर्शनी तथा कृषि प्रतियोगिताओं का आयोजन करने में कालिज के कृषि विभाग के कर्मचारियों ने सहयोग दिया। कृषि-शिक्षा की राष्ट्रीय संस्था की पत्रिका "वर्क एक्सपीरियंस ऐंड वोकेशनल एजूकेशन इन एग्रीकल्चर" के एक अंक का संपादन, प्रकाशन और वितरण भी विभाग के विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया।

विज्ञान विभाग : 1982-83 का शैक्षणिक सत्र चार-वर्षीय बी० एससी० (आनर्स/पास) बी० एड० कोर्स के प्रथम तथा द्वितीय वर्ष की कक्षाओं तथा बी० एड० (विज्ञान) और एम० एड० के एक-वर्षीय नियमित कोर्सों से शुरू हुआ।

इस सत्र में पहले से चली आ रही दो परियोजनाओं का काम आगे बढ़ा। रसायन शास्त्र की शिक्षा परियोजना पर श्री डी० एन० अग्रवाल और ग्रामीण प्रतिभा छात्रवृत्ति मूल्यांकन परियोजना पर श्री एस० सी० जैन काम कर रहे हैं।

औरंगाबाद में 9 से 11 दिसम्बर 1982 तक हुई एक अखिल भारतीय विचारगोष्ठी में डा० सी० ए० पी० राव ने परिवेश प्रदूषण विषय पर अपना शोध प्रबंध पढ़ा।

चारों क्षे० शि० म० में चल रहे चार-वर्षीय बी० एससी० बी० एड० कोर्स के लिए एक समान पाठ्यक्रम बनाने के सिलसिले में मैसूर में हुई बैठक में डा० एम० पी० भटनागर ने भाग लिया।

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम (केप) परियोजना

इस महाविद्यालय की केप टीम के सदस्यों सर्वश्री एस० एस० श्रीवास्तव, बी० एन० लाल, डा० बी० एस० रायजादा और डा० एच० सी० जैन ने भारत के उत्तरी राज्यों द्वारा आयोजित निम्नलिखित कार्यगोष्ठियों/कार्यक्रमों में संसाधन व्यक्तियों के रूप में भाग लिया।

—'केप और इसके दर्शन' पर कार्यगोष्ठियाँ।

—कैप्सूल्स, मॉड्यूल्स और अधिगम पैकेजेज़ की संकल्पनाओं पर भाषण।

—विशिष्ट स्थानीय समस्याओं के आधार पर कैप्सूल्स और मॉड्यूल्स तैयार करने का व्यावहारिक मार्ग दर्शन।

अधिगम-सामग्री के पुनर्निवेशन के प्रश्नों तथा उद्देश्यों की संरचना पर भाषण।

—तैयार अधिगम सामग्री की लघु तथा बृहत जाँच की प्रविधि पर भाषण।

—भारत के उत्तरी राज्यों के अध्यापक-शिक्षण संस्थानों तथा राज्य शिक्षा संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों द्वारा 1982-83 में तैयार सामग्री का प्रक्रियन और उसको अंतिम रूप देना।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल

भोपाल का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश राज्यों तथा गोआ, दमन, दीव एवं दादरा और नगर हवेली संघ क्षेत्रों की शिक्षा-आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह इन राज्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

कोर्स : महाविद्यालय निम्नलिखित कोर्सों को चला रहा है :

बी० ए०, बी० एड०	—	चार-वर्षीय समन्वित कोर्स जिसमें अंग्रेजी एक विशिष्ट विषय है ।
बी० एससी०	—	चार-वर्षीय समन्वित कोर्स ।
बी० एड०	—	एक-वर्षीय भाषा, विज्ञान और वाणिज्य कोर्स ।
बी० एड०	—	प्राथमिक शिक्षा ।
एम० एड०	—	विज्ञान शिक्षा, अध्यापक-शिक्षा, शैक्षिक प्रशासन और मार्गदर्शन के विशेष कोर्स ।
एम० एड०	—	प्राथमिक शिक्षा ।
बी० एड०	—	ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स ।

इन कोर्सों में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या अगले पृष्ठों की सारणी में दी गई है—

भोपाल के क्षे० शि० म० में प्रवेशार्थियों का विवरण

कोर्स का नाम	राज्य/संघ क्षेत्र								अन्य राज्य/देश	जोड़		कुल जोड़	विद्यार्थी जो परीक्षा में बैठे	विद्यार्थी जो परीक्षा में पास हुए
	मध्य प्रदेश		महाराष्ट्र		गुजरात		गोआ							
	सा	पि	सा	पि	सा	पि	सा	पि		सा	पि			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
बी० एड० (भाषा)	27	3	11	7	6	—	—	—	—	44	10	54	53	48
बी० एड० (विज्ञान)	19	2	11	4	7	—	1	—	—	38	6	44	39	37
बी० एड० (वाणिज्य)	15	3	11	4	2	1	2	—	—	30	8	38	38	38
बी० एड० (प्राथमिक शिक्षा)	12	2	3	15	4	8	—	—	—	19	25	44	42	41
बी० एससी० बी० एड० (प्रथम वर्ष)	64	4	2	—	—	—	—	—	1	67	4	71	66	54
बी० एससी० बी० एड० (द्वितीय वर्ष)	49	1	1	—	—	—	—	—	—	50	1	51	50	36

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
बी० ए० बी० एड० (प्रथम वर्ष)	26	1	—	—	—	—	—	—	6	32	1	33	32	26
बी० ए० बी० एड० (द्वितीय वर्ष)	21	3	—	—	—	—	—	—	—	21	3	24	23	21
एम० एड० (प्राथमिक शिक्षा)	5	—	—	—	—	—	—	—	—	5	—	5	3	3
एम० एड०	10	—	—	—	—	—	—	—	—	10	—	10	10	7
बी० एड० (ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स)	52	22	62	6	53	11	30	9	—	197	48	245	245	224
जोड़	300	41	101	36	72	20	33	9	7	513	106	619	601	535

नोट : सा—सामान्य वर्ग, पि—पिछड़ा वर्ग ।

सत्र के दौरान युगांडा से सात विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया ।

महाविद्यालय को इस बात की चिंता है कि मध्य प्रदेश को छोड़कर अन्य राज्यों तथा संघ क्षेत्रों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात और गोआ, दमन, दीव तथा दादरा और नगर हवेली से प्रवेशार्थियों की संख्या बहुत कम रही । अतः इन राज्यों/संघक्षेत्रों से प्रवेशार्थियों को प्रेरित करने के लिए कारगर उपाय किए गए । प्रवेशार्थी विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पुणे के क्षेत्रीय सलाहकार के दफ्तर में प्रवेश फ़ार्म उपलब्ध कराए गए । इस उद्देश्य से महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों ने अपने-अपने विशेष अधिकारियों को यह काम सौंपा ।

विस्तार के कार्यक्रम

नियमित कोर्सों के अतिरिक्त, महाविद्यालय ने वर्ष के दौरान अगले पृष्ठों पर लिखे सेवाकालीन कार्यक्रमों का प्रबंध किया :

भोपाल के क्षे० शि० म० द्वारा आयोजित सेवाकालीन कार्यक्रम

क्रम संख्या	कार्यक्रम का नाम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या आमंत्रित	आए
1	2	3	4	5	6
1	प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए क्रियाशीलता उपागम में अनुकूलन कार्यक्रम	12 से 17 जुलाई 1982	भोपाल	38	27
2.	प्राथमिक स्तर के लिए अधिगम कार्डों को तैयार करने पर कार्यगोष्ठी	15 से 20 जुलाई 1982	भोपाल	25	19
3.	प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों का कोर प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनुकूलन	21 से 30 जुलाई 1982	भोपाल	39	37
4.	मिडिल स्कूल अध्यापक-शिक्षकों के लिए रसायन-शास्त्र के शिक्षण में प्रक्रिया उपागम में अनुकूलन कार्यक्रम	16 से 23 अगस्त 1982	भोपाल	20	16
5.	माध्यमिक विद्यालयों के लिए अध्यापक-शिक्षकों का पाइजेशियन मनोविज्ञान में अनुकूलन	23 से 28 अगस्त 1982	भोपाल	38	13
6.	कक्षा XI के लिए सामाजिक विज्ञानों में शिक्षण सामग्री पर कार्यगोष्ठी	23 अगस्त से 1 सितम्बर 1982	जबलपुर	30	21
7.	गुजरात राज्य के अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों के लिए गुजराती भाषा में लेखन निपुणताओं के विकास पर कार्यगोष्ठी	2 से 7 सितम्बर 1982	वल्लभ विद्यानगर	25	10

1	2	3	4	5	6
8.	'माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान' पुस्तक के परीक्षण पर अध्यापक-शिक्षकों के लिए कार्यगोष्ठी	22 से 25 फरवरी 1983	भोपाल	44	10
9.	अंचल के मेथड मास्टर्स के लिए प्रदर्शन तथा प्रयोगशाला विधि से जीव विज्ञान शिक्षण पर कार्यगोष्ठी	10 से 17 सितम्बर 1982	भोपाल	44	9
10.	जनसंख्या शिक्षा संकल्पना के लिए भूगोल शिक्षण पर अनुकूलन कार्यक्रम	13 से 18 सितम्बर 1982	भोपाल	32	16
11.	महाराष्ट्र, गुजरात और गोआ के प्रशिक्षण कालिजों के अध्यापकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में अनुकूलन कार्यगोष्ठी	13 से 22 सितम्बर 1982	नासिक	30	15
12.	महाराष्ट्र राज्य के लिए कक्षा I की बालभारती (उर्दू) की अभ्यास-पुस्तिका के निर्माण पर कार्यगोष्ठी	दस दिन	भोपाल	30	17
13.	प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए शिक्षण में परिवेश उपागम पर अनुकूलन कार्यक्रम	14 से 19 फरवरी 1983	भोपाल	30	21
14.	गुजरात राज्य के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए विज्ञान में कार्यगोष्ठी-सह-अनुकूलन कोर्स	7 से 14 मार्च 1983	वल्लभ विद्यानगर	49	44
15.	गुजरात राज्य के अध्यापक-शिक्षकों के लिए गुजराती काव्य की शिक्षण पद्धतियों में नवपरिवर्तनों तथा नई प्रविधियों पर कार्यगोष्ठी	18 से 23 मार्च 1983	भोपाल	25	6

1	2	3
7.	मध्य शैशव में पाइजीशियन कांक्रीट आपरेशनल ग्रुपमेंट्स का अध्ययन	श्री ए० सी० पचौरी
8.	पश्चिमी क्षेत्र में पत्राचार कोर्स के द्वारा अध्यापक-प्रशिक्षण (बी० एड० डिग्री) का अध्यापकों की ऊर्ध्व गतिशीलता पर प्रभाव—एक सापेक्ष अध्ययन	डा० डी० सी० उप्रेती
9	पश्चिमी क्षेत्र में अध्यापक-शिक्षा के वर्तमान स्तर का अध्ययन	डा० जे० एस० राजपूत
10.	भोपाल के मिडिल और प्राइमरी स्कूलों के सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के लिए गुणात्मक सुधार कार्यक्रम	श्री० एस० सी० सक्सेना (ई० टी० सेल)

अकादमिक कार्यक्रम

समन्वित शिक्षण में सुधार के लिए महाविद्यालय प्रति सप्ताह दो घंटे लगाता है। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय संकाय के सभी सदस्य सम्मिलित होते हैं।

अकादमिक उपलब्धियाँ

(1) भोपाल विश्वविद्यालय ने श्रीमती सरला राजपूत को उनके शोध प्रबंध "राज्य प्रशासन में मुख्य मंत्री की भूमिका— मध्यप्रदेश का एक वृत्त अध्ययन" पर उन्हें पीएच० डी० डिग्री प्रदान की।

(2) श्रीमती ए० ग्रेवाल को उनके शोध प्रबंध "बुद्धि, रचनात्मकता और सामाजिक-आर्थिक स्तर के संबंध में परिकल्पना करने और परिकल्पना जाँच की योग्यताओं का अध्ययन" के लिए पीएच० डी० की डिग्री प्रदान की गई।

कैम्पस से बाहर की अकादमिक गतिविधियाँ

(1) वनस्पति विज्ञान विभाग में रीडर, डा० पी० के० खन्ना ने "युवकों द्वारा विद्यालय से बाहर की वैज्ञानिक गतिविधियों" से संबंधित मुख्य व्यक्तियों की क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लिया, जो 24 अगस्त से 2 सितम्बर 1982 तक बैंङ्कॉक में हुई। इस कार्यगोष्ठी को थाईलैंड की विज्ञान सोसाइटी ने विकास के लिए शैक्षिक नवाचार के एशियाई केन्द्र (यूनेस्को) के सहयोग से प्रवर्तित किया।

(2) भारत-सोवियत सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1981-82 के अंतर्गत डा० जे० एस० राजपूत, प्रिंसिपल, ने भारतीय सांस्कृतिक दल के सदस्य के रूप में रूस की दो सप्ताह की यात्रा सितम्बर 1982 में की।

(3) डा० जे० एस० राजपूत और डा० जे० एस० ग्रेवाल ने अक्तूबर 1982 में टॅरोंटो, कैनाडा में हुए "मानव-परिवेश-प्रभाव पर अन्तर्राष्ट्रीय विश्व सम्मेलन" में भाग लिया और इसमें अपना निबंध "भारत में परिवेश-शिक्षा में वर्तमान शैक्षिक अनुसंधान कार्यक्रम" पढ़ा।

(4) वाणिज्य विभाग के डा० यू० एस० प्रसाद और श्री आर० एन० नामादे ने वाणिज्य शिक्षा पर एशियाई सम्मेलन के सिलसिले में जापान और थाईलैंड का दौरा किया।

प्रदर्शन विद्यालय

सन् 1982-83 के लिए विभिन्न कक्षाओं की प्रवेश संख्या और परिणाम स्थिति नीचे दी गई है :

कक्षा	परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या	परीक्षा में पास होने वाले विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
I	82	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के नीति निर्णय के अनुसार सब विद्यार्थियों को उत्तीर्ण किया गया	
II	78		
III	72		
IV	75		
V	81	62	76%
VI	82	71	86%
VII	80	60	75%
VIII	60	57	93%
IX	67	51	76%
X	55	47	85%
XI	20	18	90%
XII	20	16	80%

व्यावसायिक विकास

विद्यालय के सात अध्यापकों ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा कोयम्बतूर के रामकृष्ण शिक्षा महाविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठियों/कार्यगोष्ठियों और कोर्सों में भाग लिया। विद्यालय के आठ अध्यापक विभिन्न विषयों में पीएच० डी० के लिए पंजीकृत हैं।

प्रथम अन्तर-प्रदर्शन-विद्यालय प्रतियोगिता

विद्यालय के 25 विद्यार्थियों ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया और उनमें से 24 ने इनाम जीते। समग्र रूप से उनका प्रदर्शन दूसरे नंबर पर आया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर

इस वर्ष क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर ने नियमित अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा 940 विद्यार्थी-अध्यापकों तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। विभिन्न अल्पकालीन प्रशिक्षण कोर्सों के माध्यम से 74 अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों को भी अनुकूलित किया गया। महाविद्यालय से संबद्ध प्रदर्शन विद्यालय ने प्राथमिक कक्षाओं से लेकर +2 स्तर तक 956 विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा उपलब्ध कराई।

सेवापूर्व के प्रशिक्षण कार्यक्रम

कुशल शिक्षकों का एक ऐसा दल तैयार करने के लिए जो स्कूल शिक्षा में अभीष्ट सुधार ला सके, महाविद्यालय निम्नलिखित नियमित कोर्स चला रहा है जो उड़ीसा के उत्कल विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त हैं :

(क) +2 स्तर के विद्यार्थियों के लिए चार-वर्षीय बी० एससी० (आनर्स) बी० एड० तथा बी० ए० (आनर्स) बी० एड० डिग्री के समन्वित कोर्स।

(ख) कला, विज्ञान और वाणिज्य के स्नातकों तथा स्नातकोत्तरों के लिए एक-वर्षीय बी० एड० (माध्यमिक) डिग्री कोर्स।

(ग) कला और विज्ञान में स्नातकों और स्नातकोत्तरों के लिए एक-वर्षीय बी० एड० (प्रारम्भिक) डिग्री कोर्स।

(घ) शिक्षा में स्नातकों के लिए एक-वर्षीय एम० एड० डिग्री कोर्स।

(ङ) विज्ञान स्नातकों के लिए दो-वर्षीय एम० एससी० (लाइफ़ साइंस) एड० डिग्री कोर्स।

नीचे दी गई दो सारणियों में दिखाया गया है कि 1981-82 में विश्वविद्यालय परीक्षा में महाविद्यालय का परिणाम कैसा रहा और 1982-83 में कितने छात्रों ने विभिन्न कोर्सों में प्रवेश प्राप्त किया :

सारणी-1

विश्वविद्यालय परीक्षा 1981-82 में महाविद्यालय के परिणाम

क्रम संख्या	कोर्स का नाम	प्रवेशार्थियों की संख्या	विश्वविद्यालय परीक्षा के परिणाम					
			परीक्षा में बैठे	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल उत्तीर्ण	प्रतिशत
1.	बी० एड०	180	175	2	118	—	120	68.6%
2.	एम० एड०	32	31	अभी विश्वविद्यालय ने परिणाम प्रकाशित नहीं किया।				
3.	एम० एससी० (लाइफ़ साइंस)		30					
4.	बी० एससी० (आनर्स) प्रथम वर्ष	80	70	—	—	—	40	57%
5.	बी० ए० (आनर्स) प्रथम वर्ष	60	48	—	—	—	48	100%

सारणी-2

1982-83 में विभिन्न कोर्सों में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या

क्रम संख्या	कोर्स का नाम	प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या
1	2	3
1.	बी० एससी० बी० एड० प्रथम वर्ष	84
2.	बी० एससी० बी० एड० द्वितीय वर्ष	55
3.	बी० ए० बी० एड० प्रथम वर्ष	32
4.	बी० ए० बी० एड० द्वितीय वर्ष	45

1	2	3
5.	एक-वर्षीय बी० एड० (विज्ञान) माध्यमिक	96
6.	एक-वर्षीय बी० एड० (कला) माध्यमिक	72
7.	एक-वर्षीय बी० एड० (वाणिज्य)	20
8.	एक-वर्षीय बी० एड० (विज्ञान) प्राथमिक	8
9.	एक-वर्षीय बी० एड० (कला) प्राथमिक	12
10.	एम० एड०	24
11.	एम० एससी० एड० (लाइफ़ साइंस) प्रथम वर्ष	20
12.	एम० एससी० एड० (लाइफ़ साइंस) द्वितीय वर्ष	21
	कुल	469

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

इन कार्यक्रमों को सेवारत अध्यापकों की कुशलता बढ़ाने की दृष्टि से किया जाता है। ये दो प्रकार के हैं—(क) ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स, तथा (ख) विस्तार कार्यक्रम।

(क) **ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स** : यह कोर्स खासकर उन स्नातक अथवा स्नातकोत्तर अप्रशिक्षित अध्यापकों के लिए है जिनके पास उत्तरी अंचल के किसी मान्यता-प्राप्त प्राथमिक/मिडिल/उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कम-से-कम पाँच वर्ष पढ़ाने का अनुभव हो। यह कोर्स प्रशिक्षणार्थियों को उत्कल विश्वविद्यालय की बी० एड० डिग्री दिलवाता है। इस कोर्स में इम्फाल के उप-केन्द्र सहित 451 अध्यापकों को प्रवेश दिया गया।

(ख) **विस्तार कार्यक्रम** : अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों को अनुकूलित करने के लिए महाविद्यालय ने 4 से 20 दिन के पाँच अल्पकालीन कोर्सों का आयोजन किया ताकि उन्हें विषय और पद्धति के अधुनातन विकास से अवगत् कराया जा सके जिससे वे कक्षा के शिक्षण को अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाने में समर्थ हों। इन कार्यक्रमों से पूर्वी अंचल के 74 अध्यापकों को लाभ हुआ। इन कार्यक्रमों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

विस्तार सेवा कार्यक्रम (1982-83)

क्रम संख्या	कार्यक्रम का नाम	प्रतिभागियों का विवरण	तारीखें और अवधियाँ	प्रतिभागियों की संख्या
1.	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य पर कार्यगोष्ठी	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक	18.1.83 से 24.1.83 (7 दिन)	7
2.	अध्यापक-शिक्षकों के लिए अनुसंधान पद्धति	माध्यमिक अध्यापक-शिक्षक	1.12.82 से 15.12.82 (15 दिन)	14
3.	असाधारण बच्चों की शिक्षा	प्राथमिक अध्यापक-शिक्षक	1.2.83 से 19.2.83 (19 दिन)	16
4.	हिन्दी में भाषा-विज्ञान और भाषा-शिक्षण	माध्यमिक प्रशिक्षण विद्यालयों के हिन्दी अध्यापक	20.11.82 से 25.11.82 (6 दिन)	26
5.	इनसेट फिल्म उत्पादन (उड़ीसा) के लिए ग्रामीण पृष्ठभूमि के विषयों के प्रतिपादन पर कार्यगोष्ठी	विज्ञान तथा मानविकी पढ़ाने वाले प्राथमिक शिक्षक	26.11.82 से 29.11.82 (4 दिन)	11

विशेष कार्यक्रम

महाविद्यालय ने 5 जुलाई 1982 से 20 अगस्त 1982 तक सात सप्ताह का गणित में क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन यूनेस्को की ओर से किया। इस कोर्स के मुख्य उद्देश्य थे, गणित के पाठ्यक्रमों का सम्पन्नीकरण तथा इन पाठ्यक्रमों को विद्यालय पाठ्यचर्या में लागू करना, विशेषकर तकनीकी और व्यावसायिक विद्यालयों में।

माध्यमिक, तकनीकी और व्यावसायिक स्कूलों के 20 अध्यापकों तथा अफ़गानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, लाओस, मालदीव और जापान के निरीक्षकों और गणित पाठ्यचर्या नियोजकों ने इस कोर्स में भाग लिया। भारत सरकार द्वारा संस्तुत ग्रामीण प्रतिभा खोज योजना पर अध्ययन पूरा कर लिया गया और इसकी रिपोर्ट भेज दी गई।

बहूद्देशीय प्रदर्शन विद्यालय

महाविद्यालय के साथ एक बहूद्देशीय प्रदर्शन विद्यालय संबद्ध है। यह विद्यालय कालिज के विभिन्न अध्यापक-शिक्षा कोर्सों में प्रविष्ट विद्यार्थी-अध्यापकों के लिए शिक्षण-अभ्यास के स्कूल के रूप में काम करता है। विद्यालय में शिक्षण की संशोधित विधियों और नवाचारीय पद्धतियों का अभ्यास किया जाता है। विद्यालय सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ़ सेकंडरी एजूकेशन, दिल्ली से संबद्ध है। विद्यालय में 1981-82 के सत्र में विद्यार्थियों की कुल संख्या 1023 थी।

विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या

वर्ष	कक्षाएँ													कुल
	के.जी.	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
1981-82	28	79	78	79	80	117	83	79	117	108	89	52	34	1023
1982-83		78	79	72	67	93	109	83	78	104	115	50	49	967

विद्यालय के परिणाम

(अखिल भारतीय माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक/सीनियर परीक्षाएँ)

वर्ष	परीक्षा	परीक्षा में बैठे	पास हुए
1975-76	अखिल भारतीय उच्चतर माध्यमिक परीक्षा, 1976	48	47
1976-77	अखिल भारतीय उच्चतर माध्यमिक परीक्षा, 1977	74	68
1976-77	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1977	65	65
1977-78	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1978	67	64
1978-79	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1979	80	77
1978-79	अखिल भारतीय सीनियर परीक्षा, 1979	50	44
1979-80	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1980	75	75
1979-80	अखिल भारतीय सीनियर परीक्षा, 1980	46	43
1980-81	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1981	75	73
1980-81	अखिल भारतीय सीनियर परीक्षा, 1981	36	34
1981-82	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1982	88	82
1981-82	अखिल भारतीय सीनियर परीक्षा, 1982	34	26
1982-83	अखिल भारतीय माध्यमिक परीक्षा, 1983	88	87
1982-83	अखिल भारतीय सीनियर परीक्षा, 1983	34	30

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर

सेवा-पूर्व के कार्यक्रम

महाविद्यालय ने पहले से चले आ रहे निम्नलिखित सेवा-पूर्व कोर्स 1982-83 में भी जारी रखे।

(1) **एम० एससी० एड० गणित/भौतिकी/रसायन शास्त्र :** ये चार-सिमेस्टर वाले स्नातकोत्तर कोर्स 1974 में शुरू किए गए थे। इनका इस प्रकार विकास किया गया है कि इनसे सुयोग्य अध्यापकों का एक ऐसा दल तैयार हो सके जो न केवल स्नातकोत्तर स्तर पर

अपने विषय के विशेषज्ञ हों, अपितु विषय का संबंधित शिक्षा-शास्त्रीय पक्ष से समन्वय कर उसे और प्रभावकारी बना सकें। इस प्रकार के नवाचारीय कोर्सों को स्वीकारने की अपनी ही कठिनाइयाँ होती हैं। परन्तु इसके बावजूद, महाविद्यालय द्वारा प्रशिक्षित अध्यापकों को स्नातकोत्तर अध्यापक/प्राध्यापक के रूप में नौकरी के अच्छे अवसर मिले हैं और आगे उच्च स्तर की पढ़ाई के भी अवसर अच्छे रहे हैं।

(2) **एम० एड०** : यह दो सिमेस्टर का कोर्स है। इसका पाठ्यक्रम मैसूर विश्व-विद्यालय के एम० एड० कोर्स के समान है और इसमें प्राथमिक शिक्षा आदि में विशेषज्ञता प्राप्त करने का प्रावधान है। शिक्षा-सत्र 1983-84 से शैक्षिक प्रौद्योगिकी और शैक्षिक प्रशासन की विशेषज्ञताओं वाले कोर्स को इस कोर्स में मिलाकर शुरू करने की मंजूरी भी मैसूर विश्वविद्यालय ने दे दी है।

(3) **बी० एससी० एड०** : यह एक आठ सिमेस्टर का समन्वित कोर्स है जिसमें बी० एससी० के अतिरिक्त बी० एड० स्तर का शिक्षा-शास्त्रीय कोर्स है। यह कोर्स विज्ञान और गणित के अध्यापक तैयार करता है। इस कोर्स को बी० एससी०, बी० एड० डिग्रियों के बराबर माना गया है और इसे एसोसिएशन ऑफ़ इंडियन यूनिवर्सिटीज़ तथा अन्य कई संस्थाओं से अध्यापक की नौकरियों के लिए तथा उच्च शिक्षा के लिए मान्यता प्राप्त है।

बी० ए० एड० : यह एक आठ सिमेस्टर का संशोधित कोर्स है जिसे बी० एससी० के कोर्स की तरह ही 1981-82 में संशोधित किया गया। यह कोर्स अंग्रेजी और इतिहास के अध्यापक तैयार करता है।

बी० एड० ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स : यह कोर्स दक्षिणी अंचल के अप्रशिक्षित माध्यमिक अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 1966 में शुरू किया गया था। यह उद्देश्य अब लगभग पूरा हो चुका है। इस कोर्स में 1982-83 में प्रवेश पाने वालों की संख्या नीचे की सारणी में दी गई है :

1982-83 में महाविद्यालय में प्रवेश पाने वालों की संख्या

कोर्स	स्वीकृत संख्या	वर्ष I	II	III	IV
1	2	3	4	5	6
एम० एससी० एड० (रसायन शास्त्र)	20	22*	14	—	—

1	2	3	4	5	6
एम० एससी० एड० (गणित)	20	13	13	—	—
एम० एससी० एड०* (भौतिकी)	20	13	13	—	—
एम० एड०	20	19	—	—	—
बी० एड० (माध्यमिक)	140	123	—	—	—
बी० एड० (प्राथमिक)	20	16	—	—	—
बी० एड० (ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स)	250	203	—	—	—
बी० एससी० एड०	60	58	46	54	47
बी० ए० एड०	30	31	19	—	—

*मैसूर विश्वविद्यालय ने 25 स्थानों तक भर्ती की अनुमति दे दी है ताकि 20 स्थान भरे रहें।

विश्वविद्यालय परीक्षा अप्रैल 1982 के परिणाम

मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित परीक्षाओं में महाविद्यालय के परिणाम कोर्स के अनुसार नीचे दिए गए हैं :

1982 के परीक्षा परिणाम

कोर्स	परीक्षा में बैठे	पास हुए	दुबारा बैठेंगे
1	2	3	4
एम० एससी० एड० (रसायन शास्त्र) प्रथम वर्ष	14	14	—
एम० एससी० एड० (रसायन शास्त्र) द्वितीय वर्ष	18	17	1
एम० एससी० एड० (गणित) प्रथम वर्ष	13	9	4
एम० एससी० एड० (गणित) द्वितीय वर्ष	15	13	2

1	2	3	4
एम० एससी० एड० (भौतिकी) प्रथम वर्ष	16	6	10
एम० एससी० एड० (भौतिकी) द्वितीय वर्ष	19	10	9
एम० एड०	17	15	2
बी० एड० (माध्यमिक) विज्ञान/गणित	70	63	7
बी० एड० (माध्यमिक) अंग्रेजी/इतिहास	36	33	3
बी० एड० (प्राथमिक)	17	17	—
बी० एड० (एस० एस० सी० सी०)	220	183	37
बी० एससी० एड० प्रथम वर्ष	48	31	17
बी० एससी० एड० द्वितीय वर्ष	54	43	11
बी० एससी० एड० तृतीय वर्ष	47	36	11
बी० एससी० एड० चतुर्थ वर्ष	50	44	6
बी० ए० प्रथम वर्ष	22	14	8

जैसा कि दिख रहा है, कुछ विद्यार्थी पहली बार में ही सभी विषयों में पास नहीं हो सकते। इसका मतलब उनका फेल होना नहीं है। सिमेस्टर योजना पर चलाए जा रहे इन कोर्सों के अनुबंध के अनुसार, विद्यार्थियों को उपचारीय शिक्षण देकर उन्हें कुछ कोर्सों में परीक्षा देने का अवसर दिया जाता है ताकि वे अन्ततः कोर्स को पास करने में सफल हो जाएँ। ये कोर्स इस प्रकार के हैं कि विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में उच्च स्तरीय व्यावसायिक योग्यता प्राप्त करनी होती है अतः उन्हें अपने आप को इन कोर्सों की आवश्यकताओं के अनुसार ढालने में कुछ समय लगता है। परन्तु जैसे-जैसे वे पहले वर्ष से आगे बढ़ते हैं, उनमें अधिकाधिक सुधार दिखता है।

सेवाकालीन कार्यक्रम

महाविद्यालय ने दक्षिणी अंचल के अध्यापकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए। इनके आधार निम्नलिखित थे :

(i) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यचर्या और शिक्षा नीति का कार्यान्वयन पक्ष।

(ii) अंचल के शिक्षा विभागों द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम ।

(iii) महाविद्यालय की संकाय द्वारा विद्यालय-शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी संकल्पनाओं के आधार पर संरचित कार्यक्रम ।

मैसूर विश्वविद्यालय के बी० एड० के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के निर्देशों के अनुसार संशोधित किया जा रहा है। मैसूर विश्वविद्यालय की प्रार्थना पर विश्वविद्यालय से संबद्ध शिक्षा महाविद्यालयों का एक सम्मेलन 7 और 8 अप्रैल 1982 को क्षेत्रीय महाविद्यालय, मैसूर में हुआ जिसमें 29 प्रिंसिपलों और अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् के पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन से अर्जित अनुभव उपलब्ध कराया गया।

इस कार्यक्रम के अनुवर्तन के रूप में तथा बी० एड० के पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप देने के लिए, महाविद्यालय ने 27 से 29 मार्च 1983 तक प्रिंसिपलों के एक और सम्मेलन का आयोजन किया। बँगलूर, कर्नाटक और गुलबर्गा सहित मैसूर और मेंगलूर विश्वविद्यालयों से संबद्ध शिक्षा महाविद्यालयों के 25 प्रिंसिपलों ने इसमें भाग लिया।

शिक्षण में इंटर्नशिप अध्यापक-शिक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष है। सहकारी विद्यालयों के अध्यापकों और प्रधानाचार्यों को इसमें अनुकूलित करने के लिए उनका और महाविद्यालय की संकाय का एक सम्मेलन, इंटर्नशिप शुरू होने से पहले आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों को शिक्षण और मूल्यांकन में निष्पक्षता अपनाने, विद्यार्थियों-के शिक्षण के मूल्यांकन और सहकारी स्कूलों की भूमिका में अनुकूलित किया गया। अध्यापक शिक्षकों तथा महाविद्यालय की संकाय के द्वारा प्रदर्शन पाठों का प्रबंध किया गया।

एक इंटर्नशिप-पूर्व सम्मेलन : इस महाविद्यालय में 12 से 14 जुलाई 1982 तक बी० एससी० बी० एड० में इंटर्नशिप शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सहकारी स्कूलों के 22 प्रधानाचार्यों और अध्यापकों ने भाग लिया।

महाविद्यालय की संकाय के लिए **मूल्यांकन पर एक अनुकूलन-सह-पुनश्चर्या** का आयोजन महाविद्यालय में 7 से 9 जुलाई 1982 तक किया गया। इसमें संकाय के 50 सदस्यों ने भाग लिया।

महाविद्यालय में 22 से 26 नवम्बर 1982 तक कर्नाटक में **अंग्रेजी के विषय निरीक्षकों के लिए अंग्रेजी शिक्षण में आधुनिक प्रवृत्तियाँ** विषय पर एक अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों को अनुकूलित करने के अतिरिक्त, अंग्रेजी शिक्षण के निरीक्षण पर एक प्रोफ़ार्मा भी तैयार किया गया।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, तमिलनाडु के निदेशक की प्रार्थना पर महाविद्यालय में 3 से 7 जनवरी 1983 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इसका विषय था विकासशील समाज में अध्यापक-शिक्षा, प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिशु अध्ययन में टेस्ट आइटमों की तैयारी और मूल्यांकन । इसमें 21 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया ।

केरल के आयुक्त और विशेष शिक्षा सचिव के अनुरोध पर महाविद्यालय ने राज्य के कक्षा I से X तक के विज्ञान और गणित पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन 14 से 23 फरवरी 1983 तक किया । एक संशोधित पाठ्यक्रम का प्रारूप आगे विचार के लिए तैयार कर उसका अनुमोदन किया गया । इसमें महाविद्यालय की संकाय को केरल और तमिलनाडु के 15 विशेषज्ञों ने सहायता दी ।

पिछले वर्ष आयोजित पारिवारिक जीवन शिक्षा पर क्षेत्रीय गोष्ठी के अनुवर्त्ती कार्यक्रम के रूप में एक कार्यगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय ने 24 से 27 फरवरी 1983 तक किया जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और स्नातकोत्तर स्तरों पर अध्यापक-प्रशिक्षण कार्य-क्रमों में पारिवारिक जीवन शिक्षा में अध्ययन कोर्स और पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप दिया गया । इसमें 13 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया ।

लघु-शिक्षण देश में अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण अंग बनता जा रहा है । केरल के राज्य शिक्षा संस्थान ने राज्य के प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में इसको अपनाने का निर्णय किया था । उनके अनुरोध पर प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए लघु-शिक्षण में एक अनुकूलन कोर्स का आयोजन 7 से 11 मार्च 1983 तक रामवर्मा-पुरम, त्रिचूर, केरल में किया गया । इसमें 36 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया ।

इसी प्रकार का एक कोर्स मैसूर और मेंगलूर विश्वविद्यालयों से संबद्ध शिक्षा महाविद्यालयों तथा कर्नाटक के कुछ प्राध्यापकों के लिए 23 से 25 मार्च 1983 तक महा-विद्यालय में हुआ । इसमें 25 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अध्यापक-शिक्षा विभाग ने माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षण पर एक पाठ्यपुस्तक तैयार की है । इस अंचल के कुछ चुने हुए शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापक-शिक्षकों से इस सामग्री पर पुनर्निवेशन प्राप्त करने की दृष्टि से तथा अगले शिक्षा वर्ष में इसकी जाँच परख करने के लिए एक अनुकूलन कार्यक्रम 8 से 12 मार्च 1983 तक महाविद्यालय में आयोजित किया गया । इसमें आंध्र-प्रदेश और तमिलनाडु के 9 अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया ।

अगले पृष्ठ की सारणी महाविद्यालय द्वारा इस वर्ष में आयोजित सेवाकालीन कार्यक्रमों का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करती है ।

वर्ष 1982-83 के दौरान आयोजित सेवाकालीन कार्यक्रम

कार्यक्रम	अवधि/तिथियाँ	प्रतिभागियों की संख्या	क्षेत्र
1	2	3	4
मैसूर विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के प्रिंसिपलों का राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् के ढाँचे पर सम्मेलन	2 दिन 7.4.82 से 8.4.82	29	कर्नाटक
बी० एससी० एड० इंटर्नशिप-इन-टीचिंग कार्यक्रम के लिए सहकारी अध्यापकों का इंटर्नशिप-पूर्व का सम्मेलन	3 दिन 12.7.82 से 14.7.82	22	आंचलिक
महाविद्यालय संकाय के लिए मूल्यांकन पर अनुकूलन कार्यक्रम	3 दिन 7.7.82 से 9.7.82	50	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर
कर्नाटक के अंग्रेजी विषय के विषय-निरीक्षकों का अंग्रेजी शिक्षण में आधुनिक प्रवृत्तियों पर अनुकूलन कार्यक्रम	5 दिन 22.11.82 से 26.11.82	16	कर्नाटक
तमिलनाडु के प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिशु अध्ययन तथा विकासशील समाज में अध्यापक-शिक्षा पर टेस्ट-आइटम्स की तैयारी और मूल्यांकन पर कार्यगोष्ठी	5 दिन 3.1.83 से 7.1.83	30	तमिलनाडु
सहकारी अध्यापकों का इंटर्नशिप-पूर्व का सम्मेलन	3 दिन 10.1.83 से 12.1.83	50	आंचलिक
केरल राज्य की कक्षा I से X के लिए विद्यालय विज्ञान पाठ्यक्रमों के पुनरावलोकन पर कार्यगोष्ठी	10 दिन 14.2.83 से 23.2.83	15	केरल

1	2	3	4
पारिवारिक जीवन शिक्षा पर पाठ्यक्रमों और कोर्सों को अन्तिम रूप देने और उनका पुनरावलोकन करने के लिए कार्यगोष्ठी	4 दिन 24.2.83 से 27.2.83	13	आंचलिक
विज्ञान-शिक्षण पर एस० टी० पी० पी० सामग्री का परीक्षण प्रयोग करने के लिए दक्षिणी अंचल के अध्यापक-शिक्षकों के लिए विज्ञान-शिक्षण पद्धतियों के लिए विषय-सह-प्रविधि पर अनुकूलन कार्यक्रम	5 दिन 8.3.83 से 12.3.83	9	आंचलिक
केरल के प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए लघु-शिक्षण पर कार्यगोष्ठी	5 दिन 7.3.83 से 11.3.83	36	केरल
मैसूर और मेंगलूर विश्व-विद्यालयों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए लघु-शिक्षण में अनुकूलन कोर्स	3 दिन 23.3.83 से 25.3.83	23	कर्नाटक
मैसूर विश्वविद्यालय के बी० एड० के पाठ्यक्रम का संशोधन करने के लिए कार्यगोष्ठी	3 दिन 27.3.83 से 29.3.83	31	कर्नाटक

चल रही अनुसंधान-परियोजनाएँ

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाओं पर काम चल रहा है :

—स्कूल विज्ञान में पाठ-गतिक संरचना और अधिगम निष्कर्षों का संबंध। — डा० जी० राजू

—माध्यमिक स्कूलों में भौतिकी के शिक्षण में कमियों के क्षेत्रों का पता लगाना और उनको दूर करने के उपायों की तलाश करना। — डा० सोमनाथ दत्त

—अंग्रेजी में समझ के साथ तेज पढ़ने की विधि की खोज और उसका कार्यान्वयन।	श्रीमती लक्ष्मी आराध्या
—घरेलू स्तर पर उपलब्ध घटकों, सुविज्ञता तथा ज्ञान के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों/ जूनियर कालिजों के लिए एक प्रतिरूप भौतिकी प्रयोगशाला का डिज़ाइन तैयार करना।	डा० ए० एन० महेश्वरी
—स्कूल जीव विज्ञान के लिए कार्यक्रमबद्ध संसाधन सामग्री का विकास।	श्री आर० के० भरतिया
—भौतिकी संसाधन सामग्री की तृतीय पुस्तक।	भौतिकी संकाय
—पिएजे का बौद्धिक विकास स्तर और इसका माध्यमिक स्कूलों के पाठ्यचर्या विषय से संबंध।	डा० जी० राजू
—संस्था (क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर) में एक सहकारी उपचारीय केन्द्र का प्रायोगिक मॉडल।	श्री बी० फालाचन्द्र मार्गदर्शन परामर्शक
—क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय (क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर) के कार्यक्रमों की ग्राह्यता, अभिज्ञता और प्रभाव।	डा० एस० दंडपाणि डा० डी० एस० बाबू

शैक्षिक प्रौद्योगिकी संबंधी गतिविधियाँ

महाविद्यालय के उत्साही कर्मियों की एक टीम द्वारा बनाए गए कुछ शैक्षिक खेलों को विभिन्न राज्यों के परियोजना समन्वयकों के सामने नई दिल्ली में 24 से 28 अगस्त 1982 तक आयोजित एक कार्यगोष्ठी में प्रदर्शित किया गया। इस महाविद्यालय में शैक्षणिक खेलों के क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेने वालों के नाम ये हैं— डा० एम० एस० मुरारी राव, डा० के एन० तांत्री, डा० पी० सी० ईपेन, डा० जी० राजू, डा० एन० बी० बद्री-नारायण, श्री एस० राघवेन्द्र भट्ट और श्री पी० वी० सत्यनारायण मूर्ति। इन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित शैक्षिक खेलों की कार्यगोष्ठी में भाग लिया जो 29 और 30 अगस्त 1982 को हुई।

शैक्षणिक सामग्री को अधिक सम्पन्न बनाने के लिए लघु-शिक्षण पर तथा पी० एस० एस० सी० और सी० एच० ई० एम० पाठ्यचर्याओं पर आधारित भौतिकी और रसायन विज्ञान से संबंधित शैक्षिक फिल्मों को खरीदा गया। अपने विद्यार्थियों और स्टाफ के लिए एक माइक्रो-कम्प्यूटर ट्रेनर भी प्राप्त कर लिया गया है।

केप परियोजना संबंधी गतिविधियाँ

केप टीम ने 10 से 19 जून 1982 तक अधिगम उपाख्यानों को तैयार करने की प्रणाली पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें भाग लेने वाले महाविद्यालय के बहूद्देश्यीय प्रदर्शन विद्यालय के अध्यापक थे।

तमिलनाडु की अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए अधिगम उपाख्यानों को संसाधित और परिमार्जित करने के लिए मद्रास में 20 से 26 जून 1982 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें केप टीम के एक सदस्य डा० जी० राजू ने एक संसाधन व्यक्ति के रूप में काम किया।

आंध्र प्रदेश की अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी-अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए अधिगम उपाख्यानों का पुनः संसाधन और विषय सम्पादन हैदराबाद में 1 से 7 जुलाई 1982 तक हुई एक कार्यगोष्ठी में किया गया। इस में श्री पी० वी० सत्यनारायण मूर्ति ने एक संसाधन व्यक्ति के रूप में काम किया।

महाविद्यालय की केप टीम के सदस्यों ने मैसूर में 20 से 24 सितम्बर 1982 तक हुई एक कार्यगोष्ठी में संसाधन व्यक्तियों के रूप में भाग लिया। इस कार्यगोष्ठी में पहले तैयार किए गए उपाख्यानों का पुनरावलोकन किया गया और उन्हें अन्तिम रूप दिया गया। इस कार्यगोष्ठी में आंध्र प्रदेश के केप टीम के सदस्यों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर की केप टीम के सदस्यों ने अधिगम उपाख्यानों को तैयार करने की प्रणाली पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इससे महाविद्यालय के एक-वर्षीय बी० एड० (प्राथमिक) के विद्यार्थी लाभान्वित हुए। कार्यक्रम 20 से 24 नवम्बर 1982 तक चला।

केप टीम के सभी सदस्यों ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में 20 से 24 अगस्त 1982 तक आयोजित एक बैठक में भाग लिया। इसमें राज्यों की केप परियोजनाओं की प्रगति का पुनरावलोकन किया गया। यह बैठक राज्यों की केप परियोजनाओं के समन्वयकों के लिए रखी गई थी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा राज्यों के कार्यक्रमों में संकाय का सहयोग

डा० एम० एस० मुरारी राव, डा० सी० शेषाद्रि तथा श्री एच० के० वेंकटरंगाचार्य ने राज्य स्तर के तीन दिन के एक सम्मेलन में भाग लिया। इसका आयोजन कर्नाटक के अध्यापक-शिक्षक संघ ने 18 से 20 फरवरी 1983 तक किया था।

फरवरी 1983 के प्रथम सप्ताह में उसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में डा० एस० दंडपाणि, रीडर (शिक्षा) ने एक पेपर पढ़ा, जिसका विषय था **शैक्षिक प्रविधि की संकल्पना** ।

श्री एन० एन० प्रह्लाद, प्राध्यापक (शिक्षा) ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में 18 से 22 मार्च 1982 तक अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक फेडरेशन के पदाधिकारियों के लिए एक पेपर प्रस्तुत किया जिसका विषय था प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या-निर्माण और उसका कार्यान्वयन ।

डा० वी० के० सत्यनारायण, प्राध्यापक (हिन्दी) ने मादीकेरी जिले के हिन्दी अध्यापकों के लिए एक कार्यगोष्ठी में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया । इसका विषय था हिन्दी शिक्षण की विधि । इसका आयोजन राजकीय जूनियर कालिज, मादीकेरी में किया गया ।

माध्यमिक स्तर के लिए जनसंख्या शिक्षा पर एक अध्यापक-संदर्शिका तैयार करने के लिए डी० एस० ई० आर० टी० बंगलूर ने दो कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया—पहली उडुपी में 15 और 16 सितम्बर 1982 को और दूसरी शिमोगा में 10 और 11 नवम्बर 1982 को । इन कार्यगोष्ठियों में कन्नड़ के प्राध्यापक श्री एस० राघवेंद्र भट्ट ने भाग लिया ।

डा० ए० एन० महेश्वरी, प्रोफेसर (भौतिकी) ने भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग के तत्वावधान में छठी हाई एनर्जी फिजिक्स विचारगोष्ठी का आयोजन किया । यह क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में 6 से 11 दिसम्बर 1982 तक हुई । इसमें भारत और विदेशों के 150 भौतिक विज्ञानियों ने भाग लिया ।

वनस्पति विज्ञान में रीडर, श्री आर० के भरतिया ने रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा नई दिल्ली में आयोजित दो कार्यगोष्ठियों में भाग लिया । पहली कार्यगोष्ठी अक्तूबर 1982 में हुई और दूसरी 31 मार्च से 8 अप्रैल 1983 तक । इन गोष्ठियों का विषय स्कूलों में जीव विज्ञान पढ़ाने के लिए योग्यताओं की पहचान करना था ।

श्री वी० कृष्ण कुमार ने रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा तिरुपति में आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया जो वाणिज्य के व्यावसायिक अध्यापकों के लिए किया गया था ।

अकादमिक तथा अन्य उपलब्धियाँ

रसायन शास्त्र की पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री पर एक क्षेत्रीय परिरूप कार्यगोष्ठी में महाविद्यालय के प्रिंसिपल डा० ए० के० शर्मा ने एक संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया । यह गोष्ठी यूनेस्को द्वारा ज्योंबाड़ नेशनल यूनिवर्सिटी, ज्योंजू, साउथ कोरिया में आयोजित की गई थी ।

इंटरनेशनल सेंटर ऑफ़ थ्योरेटिकल फिजिक्स, त्रीस्ते, इटली ने डा० ए० एन० महेश्वरी, प्रोफेसर (भौतिकी) और विज्ञान, टेक्नोलोजी के विभागाध्यक्ष को रिसर्च एसोसिएटशिप प्रदान की।

बड़ौदा विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी इन एजूकेशन (सी० ए० एस० ई०) ने शिक्षा विभाग के रीडर डा० सी० शेषाद्रि को विज़िटिंग फेलो के रूप में पाँच भाषण देने के लिए आमंत्रित किया।

कर्नाटक सरकार ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर शिक्षा विभाग में रीडर डा० एस० एल० भैरप्पा को साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किया।

प्राणि विज्ञान में रीडर, डा० जी० राजू यूनेस्को के सलाहकार मिशन के अन्तर्गत मालदीव गए।

डा० एन० बी० बद्रीनारायण, लेक्चरर (गणित), ने क्योटो, जापान में आयोजित सोरोबेन शिक्षा पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

तेलुगु में लेक्चरर, श्री पी० वी० सत्यनारायण मूर्ति को तिरुतन्नि में उनकी नाट्य-वादन प्रस्तुति पर उन्हें "नाट्यवादन कलाप्रापूर्ण" की उपाधि से विभूषित किया गया।

श्री के० पी० शंकरन, लेक्चरर (मलयालम) को केरल साहित्य अकादमी ने साहित्यिक पुरस्कार से सम्मानित किया।

श्री एन० एन० प्रह्लाद, लेक्चरर (शिक्षा) को यूनाइटेड राइटर्स एसोसिएशन ने ऐक्सीलेंस इन जर्नलिज्म का पुरस्कार प्रदान किया।

महाविद्यालय का पुस्तकालय

पुस्तकालय के सदस्यों में 947 विद्यार्थी और 295 कर्मचारी हैं। इस वर्ष कुल 24,905 पुस्तकें इशू की गईं जिसके अनुसार 71 पुस्तकें प्रतिदिन दी गईं। ऐसा अनुमान है कि 78,723 विद्यार्थी पुस्तकालय में आए और लगभग 2,17,225 पुस्तकें पुस्तकालय के अन्दर इस्तेमाल की गईं। इस प्रकार प्रति दिन की औसत 790 पुस्तकें निकलती हैं।

पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की पुस्तकों और पत्रिकाओं का एक बहुत बड़ा भंडार है। इस वर्ष 28,095.68 रुपये मूल्य की 1839 पुस्तकें और खरीदी गईं। इस तरह अब पुस्तकों की कुल संख्या 48,217 हो गई है और उनका मूल्य लगभग 9,17,927.03 रुपये बैठता है।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी पुस्तकालय ने 127 पत्रिकाएँ मँगाईं जिनका मूल्य 29,094.00 रुपये था जबकि पिछले वर्ष यह मूल्य 27,000.00 रुपये था। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय मे 20 पत्रिकाएँ उपहार के रूप में आती है। पुस्तकालय 12 समाचार पत्र और 21 अन्य पत्रिकाएँ सामान्य पाठकों के पढ़ने के लिए भी खरीदता है जिनका मूल्य लगभग 4,500.00 रुपये आता है।

प्रदर्शन विद्यालय, मैसूर

स्कूल के लिए 1982-83 का वर्ष चहल-पहल और व्यस्तता का वर्ष था। बड़ी संख्या में सहपाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ, जो अब विद्यालय का वार्षिक अंग बन गई हैं, इस बार अन्तर उच्च विद्यालय कन्नड़ वादविवाद प्रतियोगिता से 19 अगस्त 1982 को शुरू हुई। इस में 20 विद्यालयों ने भाग लिया। शील्ड के विजेता टी नर्सीपुर के बहुद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी रहे। दूसरे नंबर पर सेंट मेरी स्कूल के विद्यार्थी रहे और कप उन्हें मिला। हमारी स्कूल की टीम ने केलेगल में कन्नड़ वादविवाद प्रतियोगिता में शील्ड जीती। हमारे विद्यार्थियों ने **अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता** में रामकृष्ण विद्यालय से भी शील्ड जीती। अंग्रेजी और कन्नड़ वाद-विवाद की विभिन्न प्रतियोगिताओं में, जो स्थानीय विद्यालयों ने आयोजित कीं; हमारे विद्यार्थियों ने कई व्यक्तिगत कप जीते।

इस वर्ष पहली बार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में वाद-विवाद और मोनो एक्टिंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

रामकृष्ण विद्यालय और भगिनी सेवा समाज ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। उन दोनों में हमारे विद्यार्थियों ने शील्ड जीतीं। अक्तूबर के महीने में कर्नाटक विज्ञान परिषद् ने निबंध, गोष्ठी, सामान्य ज्ञान तथा प्रश्नोत्तरी में प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। हमारे विद्यार्थियों ने सभी प्रतियोगिताओं में अपनी वरीयता दिखाई, बहुत से व्यक्तिगत इनाम जीते तथा सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता में शील्ड जीती।

अन्तर-विद्यालय संगीत प्रतियोगिता स्कूल में आयोजित की गई और इसकी अवधि एक दिन और बढ़ानी पड़ी क्योंकि स्थानीय स्कूलों से भाग लेने वालों की संख्या अभूतपूर्व थी।

वन्य-प्राणी सप्ताह सितम्बर मास में मनाया गया। इसमें चित्रकला, निबंध लेखन, प्रदर्शनियाँ, प्रश्नोत्तरी तथा गोष्ठियाँ आदि विभिन्न कार्यक्रम रखे गए जिससे स्थानीय विद्यालयों के बच्चे इसमें भाग ले सकें और वन्य-प्राणियों के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ा सकें। मैसूर चिड़ियाघर के भ्रमण से विद्यार्थियों को जानवरों के रख-रखाव के बारे में अध्ययन करने का अवसर मिला। नागरहोल की एक दिन की यात्रा और रात वहाँ ठहरने से विद्यार्थियों को जानवरों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

शिक्षा सत्र के शुरू में ही श्री टी० एन० गोपालकृष्ण की दुखद मृत्यु के कारण शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों को बहुत बड़ा धक्का लगा। इसके परिणामस्वरूप अन्तर-स्कूल

खेलकूद प्रतियोगिता को रद्द करना पड़ा। फिर भी अन्तर-हाईस्कूल खेलकूद, विवेक कुमार मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट और एन० सी० सी० का वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम योजनानुसार चला। एन० सी० सी० के कैडेटों के लिए 30 जनवरी 1983 को ट्रेकिंग अभियान बहुत सफल रहा जो चौमुंडी हिल पर पैदल चढ़ने का अभियान था। अक्तूबर में 6 दिन की अवधि का एक छोटा भ्रमण कार्यक्रम मद्रास और उसके आसपास के स्थानों के लिए रखा गया। दक्षिणी भारत के तटीय किनारों का एक 13-दिवसीय लम्बा कार्यक्रम भी बहुत सफल रहा।

पहला अन्तर-प्रदर्शन-विद्यालय सम्मेलन, जो अब तक एक स्वप्न की तरह था, इस वर्ष वास्तविक रूप ग्रहण कर गया जब 6 दिन के लिए 13 से 18 दिसम्बर 1982 तक चारों विद्यालयों से 25-25 चुने हुए विद्यार्थी मैसूर में मिले। एक छह-दिवसीय योजना बनाई गई और उसे कार्यान्वित किया गया। हमारे विद्यालय का प्रदर्शन सर्वोत्तम रहा और उसने शील्ड जीत ली। भुवनेश्वर और भोपाल की टीमें दूसरे नंबर पर आई और उन्हें कप प्राप्त हुआ। इस आयोजन की कुछ बातों को अकाशवाणी के युववाणी कार्यक्रम में प्रसारित किया गया। हमारे विद्यालय की उपलब्धियाँ इस बात से स्पष्ट हो जाती हैं कि मैसूर शहर में हमारा स्कूल सर्वोत्तम माना गया और उसने 1982-83 वर्ष की शील्ड जीती। समग्र रूप में 1982-83 का शिक्षा-सत्र विद्यार्थियों की गतिविधियों से भरपूर था और इस वर्ष विद्यार्थी बहुत व्यस्त रहे और उन्होंने बहुत सी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

नीचे की सारणी में कक्षा I से XII तक के परिणामों का ब्यौरा दिया गया है :

कक्षा	विद्यार्थी जो परीक्षा में बैठे	जो विद्यार्थी पास हुए	पास प्रतिशत
I	81	72	89.0
II	84	72	85.7
III	87	77	88.5
IV	86	72	82.5
V	92	82	89.1
VI	87	81	93.0
VII	88	87	98.6
VIII	88	76	86.4
IX	77	67	87.0
X	75	74	98.7
XI	32	25	78.1
XII	7	5	71.4

अध्यापक-शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण करने और परीक्षण-अंकों की व्याख्या करने में प्रशिक्षण कोर्स : इस कोर्स का अल्पकालिक उद्देश्य अध्यापक-शिक्षकों में मनोवैज्ञानिक परीक्षण करने, परीक्षण अंकों को लगाने, उनकी व्याख्या करने तथा उनको सम्प्रेषित करने के कौशलों में प्रशिक्षण देना है ताकि वे विद्यार्थियों की मेधा, रुचि और उनके व्यक्तित्व के गुणों को सही-सही समझ सकें। इसका लम्बी-पहुँच का उद्देश्य है—बी० एड० स्तर के सेवा-पूर्व के कोर्सों में मनोवैज्ञनिक परीक्षणों की कुशलताओं का समावेश। यह कोर्स आठ दिनों की अवधि का है और अत्यन्त व्यावहारिक है।

सन् 1982-83 के दौरान, निम्नलिखित कोर्सों का आयोजन किया गया :

राज्य	स्थान	तिथि	प्रतिभागियों की संख्या
असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम और त्रिपुरा	गौहाटी	1.11.1982 से 11.11.1982	13
उड़ीसा	दिल्ली	27.12.82 से 2.1.83	11
बिहार और मध्य प्रदेश	दिल्ली	21.2.83 से 28.2.83	16

प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, कुछ विश्वविद्यालयों ने अपने बी० एड० के कोर्सों में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का समावेश कर लिया है।

माध्यमिक अध्यापक-शिक्षा संस्थानों और राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अध्यापक-शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास पर सम्पन्नीकरण कोर्स : अध्यापक अनुदेशों पर बल देते हैं और समझते हैं कि सीखने वाला उनसे सीख जाएगा। इसमें संदेह नहीं कि अध्यापक अधिगम-प्रक्रिया के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि कक्षा की शिक्षण-अधिगम स्थितियों में अधिगम को कैसे सफल बनाया जाए। इस विषय पर कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्यों के लिए एक दस-दिवसीय कोर्स 7 से 16 मार्च 1983 तक आयोजित किया गया। इसमें 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्राथमिक अध्यापक-शिक्षा संस्थान/राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के शैक्षणिक सदस्यों व अध्यापक-शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास पर सम्पन्नीकरण कोर्स : बच्चों की अधिगम और विकास प्रक्रिया में प्राथमिक स्कूल शिक्षक की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पर सामान्यतः यह देखा जाता है कि शिक्षक अथवा शिक्षिका को 'रिइनफोर्समेंट' के सिद्धांतों का ज्ञान नहीं होता, जिनकी जरूरत कक्षा संचालन के लिए पड़ती है। अतः शिक्षकों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए 6 से 11 वर्ष के बच्चों के अधिगम और विकास की प्रक्रियाओं के बारे में एक कोर्स का आयोजन किया गया। इस में असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और बिहार राज्यों ने भाग लिया। यह कोर्स 4 से 13 अक्तूबर 1982 तक आयोजित किया गया।

प्राथमिक स्तर के अध्यापक-शिक्षकों के लिए विद्यालय-परिस्थितियों में व्यवहार-परिष्करण तकनीक का प्रयोग : इस वर्ष रा० शै० अ० और प्र० प० ने प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए व्यवहार परिष्करण पर एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यगोष्ठी ने प्राथमिक-विद्यालय-परिस्थितियों में व्यवहार परिष्करण के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया। उद्देश्य यह था कि अध्यापक-शिक्षकों को व्यवहार परिष्करण के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का परिचय प्राप्त हो सके; वे इसे व्यवहार में लाना सीख सकें और उन्हें कुछ ऐसी तकनीकों का ज्ञान व्यावहारिक रूप से दिया जाए जिन्हें वे अपनी कक्षा में प्रयोग में ला सकें। कक्षा की स्थिति में बच्चों के साथ कुछ व्यावहारिक सत्रों का प्रदर्शन किया गया ताकि अध्यापक-शिक्षक समझ सकें कि किस तरह विद्यालय में समस्याओं से निपटा जाता है। प्राथमिक अध्यापकों के लिए नियोजित कार्यगोष्ठियों की कड़ी में यह तीसरी थी। इस कार्यगोष्ठी में कुल 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से 11 बिहार राज्य और 7 मध्य प्रदेश राज्य से आए।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने निम्नलिखित परियोजनाओं को भी हाथ में ले रखा है :

—मनोवैज्ञानिक परीक्षण में संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराने की परियोजना;

—मनोविज्ञान शिक्षण के लिए शैक्षणिक सामग्री में सुधार की परियोजना; तथा

—विद्यालय में, घर में तथा साधारण तौर पर समायोजन में मार्गदर्शन उपलब्ध कराने की परियोजना।

राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा स्थापित राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय चार प्रकार की सेवाएँ प्रदान करता है : (i) एक संदर्भ परीक्षण

पुस्तकालय के रूप में, (ii) मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए एक सूचना केन्द्र के रूप में, (iii) सभी प्रकाशित परीक्षणों का समालोचनात्मक पुनरावलोकन उपलब्ध कराने वाली एजेंसी के रूप में, तथा (iv) परीक्षण विकास में अन्तरालों की पहचान कराने वाली संस्था के रूप में। इसका मार्गदर्शन एक सलाहकार समिति करती है जिसके सदस्य देश के चोटी के साइकोमेट्रीशियन हैं। अब तक पुस्तकालय ने 403 प्रकाशित परीक्षणों को तथा 233 अप्रकाशित परीक्षणों को प्राप्त कर लिया है जिनको पीएच० डी० डिग्री के कार्यक्रम के एक भाग के रूप में बनाया गया था।

पुस्तकालय ने तीन बुलेटिन निकाले, तथा अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन की अनुमति से "स्टैंडर्ड्स इन एजूकेशनल ऐंड साइकोलोजिकल टेस्ट्स" का पुनर्मुद्रण किया। यह पुस्तिका टेस्ट तैयार करने में टेस्ट बनाने वालों तथा टेस्ट प्रयोग करने वालों को उनके मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होगी।

इस वर्ष की विशिष्टता यह रही कि परीक्षणों का समालोचनात्मक पुनरावलोकन करने के लिए देश के 40 प्रतिशत साइकोमेट्रीशियनों, मनोविज्ञान के प्रोफेसरों और शिक्षा के प्रोफेसरों का सहयोग प्राप्त हुआ। वे राष्ट्रीय महत्व के 30 संस्थानों और विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते है। परीक्षण विकास के क्षेत्र में इनका यह सहयोग और टेस्टों का पुनरावलोकन टेस्टों की गुणवत्ता को सुधारने में वरदान सिद्ध होगा। सम्पादन के बाद, 50 समालोचित टेस्टों को एक मानसिक मापन पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इन 50 टेस्टों में 29 व्यक्तित्व क्षेत्र में हैं और 21 मेधा क्षेत्र में।

कक्षा XI और XII के लिए मनोवैज्ञानिक प्रयोगों और व्यावहारिक ज्ञान की एक पुस्तिका का विकास

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् दो ऐसी पुस्तिकाएँ तैयार कर रही है जिनमें स्कूल स्तर पर मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या में रखे गए प्रयोगों के बारे में संबंधित ज्ञान और मार्गदर्शन का समावेश होगा। इनमें से एक पुस्तिका कक्षा XI की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की जा रही है और दूसरी कक्षा XII की। इन पुस्तिकाओं के प्रथम प्रारूप अध्यापकों तथा विषय-विशेषज्ञों की एक कार्यगोष्ठी में पुनरावलोकित किए गए। इनके परिष्कार के लिए प्राप्त सुझावों को इनमे शामिल किया जा रहा है।

कक्षा XI के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक

"साइकोलोजी : ऐन इंट्रोडक्शन टु ह्यूमन बीहेवियर" नामक पाठ्यपुस्तक इस वर्ष प्रकाशित की गई। यह पुस्तक +2 स्तर पर मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता की पूर्ति करती है।

मनोवैज्ञानिक सेवाओं का केन्द्र

इस केन्द्र की स्थापना मुख्य रूप से स्कूली बच्चों की समायोजन, अधिगम, व्यक्तित्व तथा कोर्सों के चुनाव से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की गई। अन्ततः यह उन्हें उपचारीय और ज्ञान संबंधी सेवाएँ भी प्रदान करेगा। इस काम के लिए यह केन्द्र विभिन्न उपकरण और सामग्री एकत्रित करने में व्यस्त है। वर्ष के दौरान 7 विद्यार्थियों ने केन्द्र में पंजीकरण कराया जिनमें से 6 को विस्तृत रोग निरूपण के लिए चुना गया।

सीनियर माध्यमिक स्तर पर मनोविज्ञान में आदर्श पाठ्यक्रमों का निर्माण

विभिन्न राज्यों में सीनियर माध्यमिक स्तर पर मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों के विस्तारपूर्वक विश्लेषण की आवश्यकता को महसूस किया गया, ताकि पिछले दो दशकों में मनोविज्ञान के क्षेत्र में आए परिवर्तनों को पाठ्यक्रमों में समाविष्ट किया जा सके। इस उद्देश्य से विभिन्न राज्यों से मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों को एकत्र करने, उनका विश्लेषण करने, सुधार के सुझाव प्रस्तुत करने तथा राज्यों के लिए एक संशोधित और आधुनिक पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करने की योजना है।

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन

दो अध्ययन पूरे किए गए और उनकी रिपोर्टें भेज दी गई। ये हैं—"बी० एड० के पत्राचार कोर्स के विद्यार्थियों की प्रेरणा का अध्ययन" और "केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर योग का प्रभाव"।

एक और अध्ययन पहली अप्रैल 1982 से शुरू किया गया। यह है शिलङ् (मेघालय) में और उसके आसपास के हाई स्कूलों के जनजाति के विद्यार्थियों के बारे में शैक्षिक तथा व्यावसायिक नियोजन, शैक्षिक उपलब्धियाँ तथा चुने हुए मनोवैज्ञानिक और घरेलू पृष्ठभूमि के चरों का अध्ययन। सन् 1982-83 में इस अध्ययन पर काम जारी रहा।

मार्गदर्शन प्रयोगशाला, जिसमें व्यावसायिक सूचना केन्द्र भी सम्मिलित है, के विकास का काम इस वर्ष भी जारी रहा।

माध्यमिक विद्यालयों की लड़कियों के लिए मार्गदर्शन कार्यक्रम के विकास का काम शुरू किया गया। इसमें विषय पर ग्रंथ-सूची का विकास और स्कूली लड़कियों की वरीयताओं, समस्याओं, व्यावसायिक तथा शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन सम्मिलित है। एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया और उसे एक राजकीय विद्यालय की कक्षा IX और X की लड़कियों से भरवाया गया। इस कार्यक्रम के संबंध में कुछ भाषणों का प्रावधान भी इसी विद्यालय के लिए योजना में है।

"सलाहकार प्रशिक्षार्थियों में प्रेषण कौशलों के विकास के लिए लघु परामर्श प्रविधि का उपयोग" पर एक विकासपरक अध्ययन शुरू किया गया है ताकि परामर्श प्रक्रिया में आवश्यक बुनियादी प्रेषण कौशलों को ज्ञात किया जा सके जिससे कौंसलरों को प्रशिक्षण देने के लिए लघु-परामर्श प्रविधि के आधार पर प्रशिक्षण नीति का निर्माण किया जा सके ।

"ए हैंडबुक फ़ॉर कैरियर टीचर्स" नामक पुस्तक के विकास का काम भी इसी वर्ष हाथ में लिया गया ।

"शैक्षिक और व्यावसायिक मार्ग दर्शन का डिप्लोमा कोर्स" का इस वर्ष इक्कीसवाँ कोर्स था । कुल 33 विद्यार्थियों ने कोर्स पूरा किया । इनमें से तीन विद्यार्थी कर्नाटक और मणिपुर राज्यों तथा दलाईलामा द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए थे । शेष 30 विद्यार्थी गैर सरकारी थे और निम्न राज्यों से थे दिल्ली-8, हरियाणा-3, पंजाब-2, चंडीगढ़-1, उत्तर प्रदेश-8, महाराष्ट्र-4, जम्मू एवं कश्मीर-1, केरल-1 और उड़ीसा-1 ।

इनमें से 7 प्रशिक्षार्थी (पिछले वर्ष के एक सहित) अनुसूचित जाति के थे । इन 7 प्रशिक्षार्थियों सहित 25 प्रशिक्षार्थियों को 250 रुपये महीने प्रति व्यक्ति का वज़ीफ़ा दिया गया । कोर्स में गहन सैद्धान्तिक शिक्षण के अतिरिक्त व्यावहारिक प्रशिक्षण भी शामिल किया गया है ताकि कोर्स को पूरा कर लेने पर प्रशिक्षार्थियों में इतनी योग्यता आ जाए कि वे राज्य स्तर की एजेंसियों को चला सकें अथवा देश के प्रशिक्षण महाविद्यालयों, माध्यमिक अथवा सीनियर माध्यमिक विद्यालयों में काम सँभाल सकें ।

नवम्बर-दिसम्बर 1982 में बंगलूर में मार्गदर्शन कोर्सों का आयोजन चर्च ऑफ़ साउथ इंडिया कौंसिल फ़ॉर चाइल्ड केअर के व्यावसायिक मार्गदर्शन अधिकारियों तथा आवासीय एककों के वार्डनों के लिए आयोजित किए गए । राजस्थान और दिल्ली के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए व्यावसायिक मार्गदर्शन में दो अनुकूलन कार्यक्रमों का प्रबंध किया गया । इनमें राजस्थान से 36 और दिल्ली से 18 जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया ।

इस वर्ष के दौरान असम के प्रभारी-परामर्शदाता के लिए मार्गदर्शन में एक अल्प अनुकूलन कोर्स उपलब्ध कराया गया । मार्गदर्शन सेवाओं में एक अनुकूलन कार्यक्रम जांबिया के एक अधिकारी को भी प्रदान किया गया । इस अधिकारी को स्कूल मार्गदर्शन सेवाओं के प्रबंध तथा विभिन्न तकनीकों के बारे में आवश्यक जानकारी दी गई ।

विद्यालय मार्गदर्शन के उन एककों को मार्गदर्शन और सामग्री प्रदान की गई, जिन्होंने इसकी माँग की ।

इस वर्ष के दौरान विश्वविद्यालयों की संकायों के सदस्यों तथा माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सदस्यों के लिए मार्गदर्शन में एक रिफ्रेशर कोर्स का प्रबंध किया गया।

सामाजिक सुरक्षा पर एक गोष्ठी में महाविद्यालय संकाय के एक सदस्य ने एक पेपर तैयार किया जिसका विषय था "मनोवैज्ञानिक पिछड़ापन : कारण और परिणाम"। यह गोष्ठी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में हुई।

इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ तथा अनुसंधान, प्रशिक्षण और रोजगार सेवाओं के केन्द्रीय संस्थान, पूसा, नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से एशियाई क्षेत्र के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें संकाय के एक सदस्य ने "स्कूल स्तर पर व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रम" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया।

विद्यार्थी मार्गदर्शन सीरीज में पहले से तैयार एक हिन्दी पुस्तिका को परिषद् ने प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था "पढ़ने को कैसे सुधारें"। "महिलाओं के व्यावसायिक प्रशिक्षण पर एक अखिल भारतीय गोष्ठी" में संकाय के एक सदस्य ने संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया। इस गोष्ठी का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ ने श्रम मंत्रालय के सहयोग से किया।

संकाय के एक सदस्य ने भारत सरकार के योजना आयोग के मानव शक्ति डिवीजन को परामर्श उपलब्ध कराया। उसने राष्ट्रीय स्तर की मार्गदर्शन समिति के उपयोग के लिए दो पेपर प्रस्तुत किए। ये थे—"स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्शदात्री सेवाएँ तथा आत्म-रोजगारिता का विकास" तथा "आत्म-रोजगारिता के लिए मार्गदर्शन"।

संकाय के एक सदस्य ने, मार्गदर्शन और व्यावसायिक सूचना केन्द्र, 1505, साओ पोलो, ब्राजील के शैक्षिक अनुसंधान के समन्वयक, प्रोफेसर फ्रांसिसको मोरेटो को परामर्श प्रदान किया और उन्हें भारत में मार्गदर्शन के क्षेत्र में उन अनुसंधानों और सामग्रियों की जानकारी दी जिन्हें पूरा किया जा चुका है।

स्टाफ के एक सदस्य ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के बाल-चिकित्सा विभाग के जिनेटिक एकक को उसकी एक परियोजना के संबंध में परामर्श प्रदान किया। उस परियोजना का शीर्षक है—"सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से वंचित बच्चों पर हस्तक्षेप कार्यक्रम का प्रभाव, विशेषकर उनके व्यक्तित्व और ज्ञानात्मक कारकों के संबंध में"।

एकक ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली को एक प्रोफ़ार्मा बनाने में भी सलाह दी जो उनके प्रजनन और मनो-यौन संबंधी सलाहकारिता के विषय में था ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नई दिल्ली को उनके एक अध्ययन की रिपोर्ट का मूल्यांकन करने में सहायता दी जिसका विषय था "सुविधा वंचित कामगारों का मानसिक स्वास्थ्य" ।

राजस्थान के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए मार्गदर्शन के अनुकूलन कार्यक्रम के मूल्यांकन का काम अनुवर्ती कार्य के रूप में किया गया ।

9

शैक्षिक प्रौद्योगिकी और शिक्षण-साधन

अध्ययन-अध्यापन के कार्य कलापं की सहायतार्थ राष्ट्रीय शै० अ० औ प्र० प० योजनान्तर्गत तथा योजनेत सहायक सामग्री का निर्माण करती है प्रयोगात्मक फिल्मों का निर्माण प्रोटो टाइप के तौर पर किया जाता है बहु-साधन संवेष्टनों का निर्माण भं किया जाता है। रेडियो तथा टेली विजन के द्वारा प्रसारण के लि शैक्षिक कार्यक्रमों का निर्माण भी किय जाता है। केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरं सारे भारत में फैली लगभग दो लार शिक्षण संस्थाओं को औसतन लगभ 10,000 शैक्षिक फ़िल्में उधार देतं है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

कार्यशालाओं, गोष्ठियों/प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन

प्रौढ़ शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अमल पर प्रोटोटाइप सामग्री के निर्माण के लिए 31 मार्च से 5 अप्रैल 1982 तक साक्षरता निकेतन, लखनऊ में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों (भाषा-विज्ञान, लेखन, कला तथा प्रशिक्षण) के लोगों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के फलस्वरूप "प्रौढ़ शिक्षण : नई प्रेरक विधियाँ" नामक एक पुस्तक तैयार की गई। बहुसाधन संवेष्टन के अंतर्गत पूर्व प्रकाशित पुस्तक "प्रौढ़ शिक्षण : नई विधि, नई विधा" को अपने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में उपयोग के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने अनुकूलन/अपनाने के लिए स्वीकार किया है। इसी पुस्तक के आधार पर राज्य सरकार ने पर्यावरण बोध, व्यावहारिकता, सामाजिक शिक्षा, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण के प्रतीकों पर एक पोस्टर छापा है।

दूरदर्शन महानिदेशालय, नई दिल्ली के सहयोग से इन्सैट टी० वी० ग्रामों के उपभोक्ता शिक्षकों/संरक्षकों का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। दो चरणों में आयोजित इस पाठ्यक्रम के प्रथम चरण में राज्यों के शिक्षा विभागों के राज्य स्तरीय रिसोर्स व्यक्तियों को टी० वी० के उपयोग में अनुकूलित किया गया। इन प्रशिक्षित रिसोर्स व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है कि वे लोग अपने-अपने राज्यों में ऐसे ही शिविर लगा कर वास्तविक उपभोक्ता शिक्षकों/संरक्षकों के दलों को प्रशिक्षित करेंगे।

22 और 23 जून 1982 को राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० में हुए प्रशिक्षण शिविर में उड़ीसा के 24 मुख्य व्यक्तियों के दल को टी० वी० सेवाओं के प्रभावी उपयोग के संबंध में अनुकूलित किया गया। इसके तुरंत बाद 25 और 26 जून 1982 को आंध्र प्रदेश के 26 मुख्य व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षार्थियों में राज्य शै० अ० और प्र० प० के लेक्चरर और स्कूलों के डिप्टी इंसपेक्टर और हैड मास्टर थे।

राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० पूर्वी दिल्ली की एक पुनर्वास बस्ती नंदनगरी के बुनकरों के लिए अनवरत शिक्षा की पाठ्यक्रम सामग्री के विकास के लिए एक परियोजना पर कार्य कर रही है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है : रंगाई, नमूने डालना, बुनना तथा अन्य आवश्यकता-आधारित हथकरघा-प्रौद्योगिकी के विकास, जैसे तैयार माल को बेचना, सहकारिता तथा वित्त तथा रोजमर्रा के व्यापार के लिए धन प्राप्त करना आदि पर उत्तम प्रशिक्षण सामग्री का विकास करना। इस परियोजना का एक और उद्देश्य पेशेवर समूहों अर्थात बुनकरों की समस्याओं के निवारण के लिए एक 'सिस्टम डिजाइन' का विकास करना भी है।

छह कार्यशालाओं के आयोजन के बाद प्रशिक्षण सामग्री का प्रोटोटाइप तीन पुस्तिकाओं के रूप में विकसित किया गया। ये हैं : (अ) नए रंग नई रेखाएँ, (ब) डिजाइनें और डिजाइनें, (स) बुनकर सहायक। ये पुस्तिकाएँ सरल भाषा और स्वयं-प्रशिक्षण शैली में तैयार की गई हैं। आशा है इनसे हथकरघा-प्रौद्योगिकी की विभिन्न कुशलताओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

अशिक्षित और अर्धशिक्षित बुनकरों की एक बड़ी संख्या को ध्यान में रखकर कई कैसेट कार्यक्रमों तथा स्लाइड-टेप कार्यक्रमों का विकास किया गया है।

राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० डिजाइन के नमूनों की पुस्तक, रंगों के कार्ड, रंग संयोजन आदि के लिए सहायक सामग्री तैयार कर रही है। समस्त बहु-साधन-संवेष्टनों के तैयार हो जाने के बाद, ये नंदनगरी में प्रयुक्त किए जाएँगे। उसके बाद इनका मूल्यांकन भी किया जाएगा।

'डिस्टेन्स लर्निंग' तकनीक की विधियों की डिजाइन तैयार करने तथा उन्हें विकसित करने के लिए राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० (अ) वर्तमान व्यवस्थाओं के प्रबंधन तथा आयोजन में सुधार, तथा (ब) डिस्टेन्स लर्निंग सामग्री के उत्पादन के लिए कार्मिकों के प्रशिक्षण की दिशा में कार्य कर रही है। इसके लिए राष्ट्रीय परिषद् ने पंजाब विश्वविद्यालय में 'रैस्पोन्स शीट एसाइनमेन्ट' के मूल्यांकन के लिए संदर्शिका के विकास के वास्ते एक पाँच-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के 13 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उन्होंने कुछ उपयोगी दिशा निर्देशक सामग्री तैयार की जिसे सभी सम्बद्ध लोगों को दिखाया जा रहा है।

राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा अंग्रेजी पत्राचार पाठ लेखकों के लिए एक अनुकूलन-पाठ्यक्रम तथा कार्यशाला का आयोजन 3 से 12 नवम्बर 1982 तक पंजाबी विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। सहभागियों को डिस्टेन्स एजूकेशन में लेखन की तकनीकों तथा कुशलताओं के बारे में अनुकूलित किया गया। इन लोगों ने प्रत्येक विषय में कई आदर्श पाठ तैयार किए जिन्हें सभी सम्बद्ध लोगों को दिखाया जा रहा है।

राष्ट्रीय परिषद् ने इम्फाल, मणिपुर में 8 से 22 नवम्बर 1982 तक शैक्षिक रेडियो के 'स्क्रिप्ट राइटरों' के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किया। इसमें 25 अध्यापकों तथा बाल-साहित्य के लेखकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य शिक्षा संस्थान में आयोजित किया गया। इन लेखों पर आधारित रेडियो-कार्यक्रमों के आकाशवाणी के इम्फाल केन्द्र से प्रसारित होने की आशा है।

प्रौढ़ शिक्षा की पठन-पाठन तकनीकों में शैक्षणिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग के लिए अध्यापकों के अनुकूलन की एक कार्यशाला का आयोजन जयपुर के आई० जी० जेल के सहयोग से 21 से 26 फरवरी 1983 तक जयपुर में किया गया।

पूर्वी क्षेत्रों के राज्यों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए राष्ट्रीय परिषद् ने 3 से 16 फरवरी 1983 तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी में एक पंद्रह दिवसीय अनुकूलन पाठ्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में किया। प० बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के कुल 15 लोगों ने इसमें भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को कक्षा-शिक्षण में शैक्षिक प्रौद्योगिकी की परिकल्पना तथा उसके प्रयोग से अवगत कराया गया। उन्हें कार्यक्रम की पठन सामग्री, पत्राचार पाठों की रूपरेखा तैयार करने तथा योजनान्तर्गत तथा योजनेतर प्रौद्योगिकी-सहायक-सामग्री के लेखन तथा सभाल का अभ्यास कराया गया। भाषा प्रयोग-शाला तथा दूरदर्शन केन्द्रों को देखने की व्यवस्था भी की गई। इसके बाद मीडिया (साधन) कार्यक्रमों के उपयोग और मूल्यांकन में प्रतिभागियों का अनुकूलन किया गया।

प्रौढ़ों, विशेषकर स्त्रियों तथा जनजातियों, की व्यावहारिक कुशलताओं को बेहतर बनाने के निमित्त पठन सामग्री विकसित करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन राँची के जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विसेज में 4 से 8 मार्च 1983 तक किया गया।

तीन कार्यशालाओं की एक शृंखला के फलस्वरूप सात-कुशलता-विकास कार्यक्रमों पर "आमदनी बढ़ाने के धंधे" नामक एक हस्तपुस्तिका बिहार राज्य के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर तैयार की गई। ये पुस्तिकाएँ मधुमक्खी पालने, साबुन बनाने, फसल काटने, कृत्रिम गर्भाधान कराने, पैपीन निकालने, रेशम के कोयों से सूत कातने, नींबू घास तथा इयूक्लिप्टस से तेल निकालने पर हैं।

प्रौढ़ शिक्षा के लिए बहु-साधन परियोजना के अन्तर्गत "गाँव से प्रखण्ड तक" नामक एक रिसोर्स पुस्तक राँची क्षेत्र के लिए तैयार की गई। इसमें गाँव तथा ब्लॉक स्तर के कार्य-कर्ताओं की सूची और उनके कामों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों की कई योजनाओं पर पठन सामग्री भी तैयार की गई है जिससे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों को लाभ होगा।

प्रौढ़ शिक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए एक संदर्शिका तैयार करने के निमित्त उत्तर प्रदेश सरकार को तथा प्रशिक्षकों द्वारा प्रयोग के लिए पठन-पाठन तकनीकें तैयार करने के निमित्त एक स्लाइड-कम-टेप कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय को परामर्श प्रदान किया गया।

इन्सैट शैक्षिक दूरदर्शन तथा अन्य कार्यकलाप

उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश के चुने हुए स्कूलों के लिए इन्सैट शैक्षिक दूरदर्शन-सेवा 16 अगस्त 1982 को शुरू हुई। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय परिषद् द्वारा तैयार किया गया प्रथम दिन का कार्यक्रम प्रसारित किया गया।

कटक तथा हैदराबाद के दूरदर्शन केन्द्रों से परामर्श करके एकीकृत कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। 15 अगस्त 1982 से इन्सैट द्वारा प्रसारित किए जाने के लिए कार्यक्रम के केपसूलों को दूरदर्शन के दिल्ली केन्द्र को भेज दिया गया था।

सितम्बर 1982 के प्रारम्भ में इन्सेट-वन-ए की असफलता के कारण दूरदर्शन के दिल्ली केन्द्र से प्रसारण बन्द कर दिया गया। फिर भी राष्ट्रीय परिषद् ने आंध्र प्रदेश तथा उड़ीसा में प्रसारण के लिए कार्यक्रम-कैपसूल दूरदर्शन के हैदराबाद तथा कटक केन्द्रों को भेजना शुरू कर दिया है। वर्तमान में राष्ट्रीय परिषद् द्वारा कार्यक्रम तैयार करके प्रति सप्ताह हैदराबाद तथा कटक प्रसारण के लिए भेजे जा रहे हैं।

दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए अध्यापक-निर्देशन नोट तैयार कर राज्य परिषदों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद के लिए भेजे जा रहे हैं जो दूरदर्शन-ग्रामों में बाँटे जाएँगे।

लगभग 100 प्रोटोटाइप शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम 5-8 तथा 9-11 आयुवर्ग के बच्चों तथा प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों के लिए पहले हिन्दी में तैयार किए गए और फिर उन्हें उड़िया तथा तेलुगु में डब किया गया ताकि उन्हें उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश में प्रसारित किया जा सके। इन्सैट वन-ए की असफलता के बावजूद शैक्षिक दूरदर्शन सेवा, जो 15 अगस्त 1982 को शुरू की गई थी, टैरिस्ट्रिअल स्टेशनों के माध्यम से पूर्ववत् जारी रखी गई।

गत वर्ष इन्सैट राज्यों से चुने गए कथा लेखकों के लिए आठ सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हैदराबाद स्थित सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लेंगुएजेज में आयोजित किया गया। 20 दिसम्बर 1982 को शुरू हुए कार्यक्रम में उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा दिल्ली के 22 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। प्रशिक्षार्थियों द्वारा लेखन अभ्यास के फलस्वरूप 60 सम्पूर्ण शैक्षिक दूरदर्शन कथा लेख तैयार हुए। इनमें से 10 का प्रयोग शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए हुआ तथा चार हैदराबाद के दूरदर्शन केन्द्र से प्रसारित हुए।

शैक्षिक दूरदर्शन के विषयों/प्रसंगों को जानने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी का आयोजन 31 मार्च से 5 अप्रैल 1983 तक हुआ। इसमें छह इन्सैट राज्यों, दूरदर्शन केन्द्रों, स्पेस एप्लीकेशन सेन्टर तथा राष्ट्रीय परिषद् के 40 प्रतिभागी शामिल हुए। इस कार्यगोष्ठी के बाद वर्ष 1983-84 के लिए संक्षिप्त कार्यक्रम तथा शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम आलेख तैयार करने का काम होगा।

इन्सैट के लिए फिल्म तथा वीडिओ पटकथाओं का लेखन

इन्सैट कार्यक्रमों के लिए फिल्म तथा वीडिओ कार्यक्रमों की पटकथाओं को तैयार करने के निमित्त 11 से 13 मई 1982 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें 15

प्रतिभागी शामिल हुए। इसमें कर्मचारियों के अलावा विज्ञान-शिक्षक, वैज्ञानिक, बाल-साहित्य लेखक तथा प्रचार माध्यम के विशेषज्ञ थे। कार्यगोष्ठी के दौरान साइट अनुभव, ग्रामीण अध्यापकों को विज्ञान-शिक्षण के अनुभव तथा इन्सैट के दूरदर्शन-कार्यक्रमों के शिक्षा संबंधी उपयोग पर विचार हुआ। बाद में दल ने विषयों को प्राथमिकता देने का कार्य किया। पाँच पटकथाओं का मसौदा विभाग के सदस्यों ने दल के विचारार्थ रखा। प्रतिभागियों के विचार विमर्श के फलस्वरूप चार पटकथाओं—(i) पानी, (ii) पीने योग्य पानी (iii) हैंड पम्प (iv) वृक्षों से भोजन—को वीडिओ कार्यक्रम के निमित्त निर्माण करने के लिए चुना गया।

रेडियो कार्यक्रम

"रेडियो की सहायता से प्रथम भाषा (हिन्दी) पढ़ाना"—परियोजना में कक्षा 3 के विद्यार्थियों के केवल एक दल ने वर्ष 1982-83 में भाग लिया। आकाशवाणी के जयपुर व अजमेर केन्द्रों से नित्य पंद्रह मिनटों का कार्यक्रम प्रसारित किया गया। अप्रैल 1982 में कक्षा 3 की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया। फिर कई अंतरालों में उच्चारण में सुधार किया गया। अंतिम मूल्यांकन की रिपोर्ट तैयार है। 31 मार्च 1983 को यह प्रयोग समाप्त हो गया।

मूल्यांकन कार्यक्रम

विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या के लिए, जो औपचारिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकती है, डिस्टेन्स लर्निंग विधि औपचारिक शिक्षा का एक विकल्प प्रस्तुत करती है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी द्वारा डिस्टेन्स लर्निंग विधियों में सुधार शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए महत्वपूर्ण है। उच्चतर स्तर पर पत्राचार शिक्षा पर आधारित सूचनाओं को इकट्ठा करने के लिए राष्ट्रीय परिषद् ने कई अध्ययन शुरू किए हैं। इस क्रम में द्वितीय अध्ययन पूरा हो गया है जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर के पत्राचार पाठ्यक्रम के बारे में है। प्रथम अध्ययन पत्राचार विद्यालय, दिल्ली के बारे में था जो 1980 में पूरा हुआ था। राजस्थान बोर्ड के पत्राचार पाठ्यक्रम के बारे में अनुसंधान-अध्ययन पूरा हो चुका है तथा उसका प्रारूप भी बन चुका है।

प्राइमरी स्कूलों के बच्चों तथा शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय परिषद् ने प्रोटोटाइप शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का निर्माण शुरू किया है। ये कार्यक्रम आंध्र प्रदेश और उड़ीसा के चुने हुए जिलों में प्रसारित किए जा रहे हैं। उपयोगी तथा आवश्यक कार्यक्रमों के निर्माण के लिए इन कार्यक्रमों का क्षेत्रों में ही निर्माण-मूल्यांकन किया गया। इस प्रकार जो जानकारी मिली उससे भविष्य के कार्यक्रमों को सुधारने तथा परिवर्तित करने में सहायता मिलेगी। अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की इन कार्यक्रमों के विषय में राय जानने का कार्य जारी है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के तकनीकी क्षेत्रों की गतिविधियां तथा अन्य कार्य

राष्ट्रीय परिषद् नई दिल्ली के परिसर में स्थित पुस्तकालय भवन के द्वितीय तल पर बने नए सम्मेलन कक्ष में एक नया 'कांफ्रेंस सिस्टम' जिसमें एक चेयरमैन यूनिट, बीस प्रतिनिधि यूनिट, मॉनीटरिंग यूनिट तथा पावर सप्लाई शामिल हैं, लगाया गया।

राष्ट्रीय परिषद् के परिसर में स्थित पुराने पुस्तकालय भवन के स्टोर ब्लाक को टी० वी० स्टूडिओ में बदला जा रहा है। इस कार्य के लिए अनुमानित खर्च का ब्यौरा आकाशवाणी के सिविल निर्माण विभाग द्वारा बनाया गया है।

ओ० बी० वैन के साथ टेली-सिने संपर्क स्थापित हो चुका है। इसका उपयोग फिल्मों तथा वीडिओ टेपों पर उपलब्ध कार्यक्रमों को रिकार्ड करने के लिए होगा।

शिक्षण साधन

राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० शिक्षा के लिए कम लागत वाली प्रौद्योगिकी का प्रयोग करती है। कम लागत वाले श्रव्य-दृश्य साधनों के निर्माण के अलावा परिषद् स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री द्वारा शिक्षण साधनों के निर्माण के लिए शिक्षकों व अन्य कार्मिकों को प्रशिक्षित करती है।

कार्यगोष्ठियाँ और प्रशिक्षण-कार्यक्रम

श्रव्य-दृश्य संसाधन का प्रबंधन एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर गंभीर ध्यान दिया जाना चाहिए। एक संसाधन विभाग की स्थापना तथा अध्यापकों को उन साधनों के उपयोग की अनुमति प्रदान करने की दिशा में कुछ विचार हुआ है। इस संबंध में काम चलाने की व्यावहारिक व्यवस्था को तैयार करने के उद्देश्य से एक द्विदिवसीय कार्यगोष्ठी तथा बैठक का आयोजन 28 व 29 अप्रैल 1982 को किया गया जिसमें दिल्ली शिक्षा निदेशालय के 15 क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारियों तथा प्रधानाध्यापकों ने भाग लिया। इस कार्यगोष्ठी ने छह सदस्यों की एक समिति बनाई जो इस कार्य को आगे चलाएगी। इस दिशा में आगे काम हो रहा है।

माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए भूगोल चार्ट

माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए भूगोल चार्टों को बनाने के वास्ते 20 से 24 सितम्बर 1982 तक एक कार्यगोष्ठी का आयोजन हुआ। विभिन्न

विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से विषय विशेषज्ञों तथा कलाकारों सहित 12 प्रतिभागियों ने इसमें हिस्सा लिया। इस कार्यगोष्ठी का उद्देश्य माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कक्षा में अध्यापन के निमित्त "बायोस्फेयर" तथा "हाइड्रोस्फेयर" पर चार्टों का निर्माण करना था। प्रतिभागियों ने पहले हुई एक कार्यगोष्ठी में निर्मित "लिथोस्फेयर" तथा "एट्मोस्फेयर" चार्टों का परीक्षण भी किया। सामूहिक अभ्यासों के फलस्वरूप प्रतिभागी दोनों विषयों पर चार्टों के निर्माण के लिए 23 सिद्धांत चुनने में सफल हुए। उक्त विषयों पर भूगोल के चार्टों के निर्माण का कार्य अन्तिम चरण में है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री के निर्माण में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्र० प० तमिलनाडु तथा केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, गिन्डी, मद्रास, के सहयोग से श्रव्य-दृश्य सामग्री के निर्माण के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 13 से 25 सितम्बर 1982 तक मद्रास में आयोजित किया गया। इसमें दक्षिणी राज्यों—तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश के 25 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया। व्याख्यानों से लाभान्वित होने के अलावा प्रतिभागियों ने चार्टों, फिल्म आलेखों, स्लाइडों तथा फलैनलग्राफ पैकजों का निर्माण किया। प्रतिभागियों ने सात फिल्म आलेखों तथा शिक्षण साधनों के निर्माण समेत दस परियोजनाओं को शुरू किया।

आंध्र प्रदेश, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश के देहाती स्कूलों के लिए शै० दू० द० कार्यक्रमों के आलेख

आंध्र प्रदेश, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश के देहाती स्कूलों के लिए शैक्षिक दूरदर्शन के कार्यक्रमों के आलेखों को अंतिम रूप देने के लिए एक कार्यगोष्ठी का आयोजन 27 से 29 जनवरी 1983 तक हुआ। इन कार्यक्रमों को इन्सैट द्वारा प्रसारित करना था। आलेख तैयार करने का प्रयोजन इस बात की जागरूकता लाना था कि अच्छा स्वास्थ्य कैसे बनाए रखा जाए तथा ग्रामीण बच्चों, युवाओं तथा प्रौढ़ों की शिक्षा के लिए दूसरा उपाय क्या हो।

विभागीय लोगों के अलावा दूरदर्शन के नौ विशेषज्ञों, पटकथा लेखकों, विषय वस्तु तथा बाल साहित्य में अनुभव प्राप्त लोगों ने उक्त कार्यगोष्ठी में भाग लिया। इसमें जल, पीने योग्य जल, हैन्ड पंप तथ वृक्षों से भोजन आदि पर आलेख तैयार किए गए और उन पर विस्तार पूर्वक विचार हुआ।

इनमें से हैन्ड पंप तथा वृक्षों से भोजन पर वीडिओ कार्यक्रम निर्माण नई दिल्ली स्थित 'सेन्डिट' के सहयोग से शुरू हो चुका है जिसके 1983-84 तक पूरा होने की आशा है।

शिक्षण साधन विभाग के उत्पादों तथा प्रोटोटाइपों का मूल्यांकन

जनसंख्या शिक्षा पर पाँच टेप-स्लाइड कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए एक दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 31 जनवरी और 1 फरवरी 1983 को हुआ। इसमें केन्द्रीय

शिक्षा संस्थान तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जनसंख्या की सीमा का अर्थ, हमारी बढ़ती जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि का परिणाम, पारिवारिक जीवन और राष्ट्रीय नीति तथा कार्यक्रम––इन पाँचों कार्यक्रमों का मूल्यांकन हुआ।

फिल्म स्ट्रिपों के लिए आलेख

राष्ट्रीय परिषद् ने सिक्किम राज्य शिक्षा संस्थान गङ्टोक के शिक्षा प्रौद्योगिकी एकक को 9 से 18 फरवरी 1983 तक फिल्म स्ट्रिप के लिए आलेख लेखन की एक कार्यगोष्ठी के लिए विशेषज्ञ सलाह प्रदान की। क्षेत्रीय शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों सहित 15 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। इस कार्यगोष्ठी के उद्देश्य थे :

(i) प्रतिभागियों को फिल्म स्ट्रिपों के लिए आलेख के स्वरूप से परिचित कराना।

(ii) फिल्म-स्ट्रिप के उत्पादन की बनावट की जानकारी देना।

(iii) फिल्म आलेख के उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया के विभिन्न चरणों और उसके प्रति लेखकीय दायित्व से प्रतिभागियों को परिचित कराना।

(iv) फिल्म आलेखों के स्वरूप और योगदान तथा आलेखन के विभिन्न चरणों से प्रतिभागियों को परिचित कराना, तथा

(v) शुरू में तीन या चार फिल्म-स्ट्रिपों का निर्माण तथा अन्य दस फिल्म स्ट्रिपों की रूपरेखा बनाना।

कम लागत के शिक्षण-साधन

गुड़गाँव स्थित हरियाणा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सहयोग से कम लागत के शिक्षण-साधनों पर एक कार्यगोष्ठी का आयोजन 14 से 21 फरवरी 1983 तक उच्चतर-माध्यमिक स्कूल, मुरथल जिला सोनीपत (हरियाणा) में किया गया। हरियाणा के ग्रामीण स्कूलों के 32 विज्ञान-शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। सहभागियों के लाभार्थ एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें कुछ नमूनों के मॉडल तथा सचित्र सामग्री रखी गई थी। इन नमूनों पर एक प्रश्नावली बनाई गई थी और पहले ही दिन प्रतिभागियों के विचार जाने गए थे। कार्यगोष्ठी का क्षेत्र माध्यमिक तथा प्राइमरी स्तर के गणित तथा विज्ञान के शिक्षण-साधनों के निर्माण तक सीमित था। कार्यगोष्ठी के कार्यक्रमों में प्राइमरी और माध्यमिक स्तर के सिद्धांतों तथा उप-सिद्धांतों का परिचय, पर्यावरण में उपलब्ध सामग्री की पहचान, सामग्री संचय, नियोजन तथा रूपरेखा निर्माण, साधनों का निर्माण तथा उद्देश्य बताने के लिए चार्टों पर लेख बनाना शामिल थे। कार्यगोष्ठी के दौरान 33 शिक्षण-साधनों का निर्माण हुआ और हरेक पर एक एक लेख लिखा गया।

गणित में स्वाध्याय कार्डों का निर्माण

गुजरात के अहमदाबाद जिले के ग्रामीण प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए गणित के स्वाध्याय कार्डों के निर्माण के निमित्त एक कार्यशाला का आयोजन 1 से 7 मार्च 1983 तक विक्रम साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र, अहमदाबाद में किया गया। इसका आयोजन राज्य शै० अ० और प्र० परिषद् अहमदाबाद तथा विक्रम साराभाई केन्द्र के सहयोग से हुआ। अहमदाबाद जिले के ग्रामीण स्कूलों के 25 प्राइमरी शिक्षकों ने इसमें भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में एक-शिक्षक-वाले स्कूलों के अध्यापकों की सहायता के लिए स्वाध्याय कार्डों का निर्माण करना था। कार्यशाला के दौरान सहभागी अध्यापकों ने 200 स्वाध्याय कार्डों का निर्माण गणित में किया, जिनमें ये छह विषय थे—जोड़, घटाना, गुणा, भाग, गिनती तथा स्थान मूल्य।

सहभागियों द्वारा बनाए गए कार्डों को परखने के लिए अहमदाबाद जिले के राजोदा गाँव में सभी सहभागियों को ले जाया गया।

विभाग ने इन्सैट के लिए फिल्म आलेखों तथा वीडिओ कार्यक्रमों के निर्माण के लिए 11 से 13 मई 1982 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें पंद्रह सहभागियों ने भाग लिया जिनमें विज्ञान शिक्षक, वैज्ञानिक, बाल साहित्य लेखक, तथा प्रचार साधन विशेषज्ञ और विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, शिक्षण-साधन विभाग तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के विभागीय सदस्य शामिल थे। कार्यशाला के दौरान 'साइट' तथा अन्य अनुभवों पर, जो देहाती स्कूल शिक्षकों को विज्ञान शिक्षण हेतु उपयोगी थे, तथा 'इन्सैट' के टेलीविजन कार्यक्रमों के शैक्षिक उपयोग पर विचार हुआ। बाद में दल ने विषयों की प्राथमिकता के आधार पर यह निर्णय किया कि किसे पहले लिया जाए। शिक्षण साधन विभाग के सदस्यों ने पाँच आलेखों का मसौदा दल के सामने सम्मति तथा सुधार के लिए रखा। सहभागियों के विचार विमर्श तथा सुझावों के फलस्वरूप चार आलेखों—(i) जल, (ii) पीने योग्य जल, (iii) हैन्ड पप, तथा (iv) वृक्षों से भोजन को वीडिओ कार्यक्रमों के उत्पादन के लिए अंतिम रूप से स्वीकार किया गया।

श्रव्य-दृश्य उपकरणों का परिचालन तथा प्रयोग

श्रव्य-दृश्य साज सामान के परिचालन व प्रयोग के बारे में तकनीकी प्रशिक्षण देने के लिए शिक्षण साधन विभाग में 4 से 13 अक्तूबर 1982 तक एक तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें केरल, राजस्थान, गुजरात, बिहार, तमिलनाडु, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, नागालैंड तथा मेघालय की राज्य परिषदों तथा स्थानीय शिक्षण संस्थानों के 15 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सहभागियों को एक नया 16 मि० मी० का फिल्म

प्रोजेक्टर दिखाया गया जिसे सिनेफोन ने बनाया था। उन्हें गाजियाबाद स्थित उच्च स्तरीय टेली-कम्युनिकेशन प्रशिक्षण केन्द्र भी ले जाया गया ताकि वे टेलीविजन ध्वनि स्टूडिओ भी देख सकें। पाठ्यक्रम के दौरान श्रव्य-दृश्य सामग्री, जैसे 16 मि० मी० का प्रोजेक्टर, ओवर हैड प्रोजेक्टर आदि पर कई फिल्में दिखाई गईं ताकि प्रशिक्षार्थी उन मशीनों को चलाना व उनके रख-रखाव को जान सकें।

गणित में कम लागत के शिक्षण साधन

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के चुने हुए ग्रामीण प्राइमरी/अपर प्राइमरी स्कूल-शिक्षकों के लिए गणित में कम लागत के शिक्षण साधनों पर राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० ने एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का आयोजन राज्य शिक्षा विभाग आंध्र प्रदेश, तथा गणित शिक्षा सुधार संघ, विजयवाड़ा के सहयोग से 13 से 20 अक्तूबर 1982 तक केसरपल्ली गाँव में किया गया। इस कार्यशाला के उद्देश्य ये थे :

—सहभागियों को कम लागत के शिक्षण साधनों को बनाने और उपयोग करने की आवश्यकता बताना।

—गणित के कठिन सिद्धान्तों को समझाना, यह तय करना कि कौन से साधन विषय के स्पष्टीकरण में सहायक होंगे, स्थानीय रूप से उपलब्ध साधनों के उपयोग द्वारा कठिन सिद्धान्तों पर साधन बनाना, कार्यशाला में बनाए गए साधनों का विश्लेषण तथा संशोधन।

प्रथम सत्र में सहभागियों के साथ "कक्षा में शिक्षण के लिए अनुदेशों की बजाय शिक्षण साधन क्यों जरूरी है" विषय पर बहस हुई। कार्यशाला में इस बात पर जोर दिया गया कि पर्यावरण में उपलब्ध सामग्री से ही शिक्षण साधन बनाने पर बल दिया जाना चाहिए। सभी सहभागी चार्ट, मॉडल, फ्लेनल-कट-आउट तथा हस्त निर्मित स्लाइडों तथा किटों को बनाने के बारे में विचार-विमर्श कर सके।

साधनों को बनाने के बाद इनका विश्लेषण करने के लिए कई सत्रों का आयोजन किया गया। इस अभ्यास के फलस्वरूप सहभागियों ने बनाए गए साधनों की सहायता से पाठ तैयार किए। इनसे आने वाले दिनों में बनाए जाने वाले साधनों में सुधार हो सका। आठ दिनों के अल्प समय में शिक्षण-साधनों के निर्माण में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का प्रयास किया गया। इस कार्य में वस्तु की अपेक्षा प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दिया गया ताकि यहाँ प्राप्त अनुभवों को सहभागी अपनी-अपनी संस्थाओं के अध्यापकों को प्रदान कर सकें।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा उसका श्रव्य दृश्य उपकरणों के निर्माण में उपयोग

शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा उसके उपयोगों के बारे में एक कार्यशाला का आयोजन शिक्षण-साधन विभाग में 10 से 23 दिसम्बर 1982 तक किया गया। इसमें उड़ीसा, मध्य

प्रदेश, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश से 19 सहभागी उपस्थित हुए। इन्हें शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा इसके सिद्धांतों, जैसे वीडिओ टेपों, टेप स्लाइडों, फिल्म स्ट्रिपों तथा चार्टों आदि विभिन्न श्रव्य-दृश्य उपकरणों के निर्माण के बारे में प्रशिक्षित किया गया। सहभागियों ने हैंड पंप पर वीडिओ टेप, मानचित्र पर टेप स्लाइड, वृक्ष पर टेप स्लाइड तथा हैंड पंप पर फ्लेनल ग्राफ और चार्ट एवं मानचित्र पर चार्ट जैसी छह परियोजनाओं को पूरा किया।

विभिन्न कार्यदलों की बैठकें

राष्ट्रीय परिषद् ने 19 और 20 जुलाई 1982 को कार्य दल की एक बैठक बुलाई जिसका उद्देश्य भौतिक भूगोल में उन चार्टों को अंतिम रूप देना था, जिन्हें 1980-81 में हुई कार्यशालाओं में बनाया गया था। दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विद्यालयों तथा दिल्ली प्रशासन के स्कूलों के भूगोल अध्यापकों को मिलाकर बनाए गए इस दल ने उपरोक्त चार्टों का आलोचनात्मक परीक्षण किया। इस दल के सुझावों के अनुसार संशोधित कर इन चार्टों को बड़ी संख्या में छापा जाएगा।

जीव विज्ञान के क्षेत्र में एक कार्यदल की बैठक 9 से 11 अगस्त 1982 तक बुलाई गई। इसका उद्देश्य जीव विज्ञान के चार्टों को अंतिम रूप देना तथा इन चार्टों के मूल्यांकन के लिए पहले हुई कार्यशाला की रिपोर्ट पर विचार करना था। संबंधित विभागीय सदस्यों के अलावा चार संसाधन व्यक्तियों ने इस बैठक में भाग लिया। दल ने जीवविज्ञान के चार्टों पर हुई मूल्यांकन-कार्यशाला की रिपोर्ट की अच्छी प्रकार से जाँच की। उस कार्य शाला के प्रतिभागियों के कुछ सुझाव बड़े उपयोगी थे। उनके आधार पर जीवविज्ञान के चार्टों को संशोधित कर लिया गया है। कार्यदल की बैठक के फलस्वरूप जीवविज्ञान के चार्टों को, सुझाए गए परिवर्तनों के साथ, अंतिम रूप देने का कार्य आगे चल रहा है।

विजयवाड़ा की गणित-शिक्षा-सुधार समिति तथा राज्य शै० अ० और प्र० परिषद् हैदराबाद के सहयोग से गणित में शिक्षण-साधनों के निर्माण के लिए दो सप्ताह की एक कार्यदल की बैठक 28 जनवरी से 10 फरवरी 1983 तक बुलाई गई।

उपरोक्त विषय पर एक संदर्शिका तैयार करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए गए :

(i) प्राथमिक स्तर पर गणित के शिक्षण साधनों के नक्शे बनाना।

(ii) कठिन सिद्धांतों तथा उप-सिद्धांतों की पहचान करना।

(iii) गणित-शिक्षा के सुधार के लिए समिति द्वारा पूर्व निर्मित सूची तैयार करना तथा विभाग द्वारा अक्तूबर 1982 में केसरपल्ली में कम लागत के शिक्षण साधनों पर आयोजित कार्यशाला में बनाए गए साधनों की सूची बनाना।

(iv) पुस्तिका के लिए शिक्षण साधनों का चयन ।

(v) सामग्री चयन तथा संदर्भ जुटाना ।

(vi) चार्टों तथा मॉडलों के लिए लेख तैयार करना ।

(vii) चार्टों तथा मॉडलों के लिए ड्राइंग बनाना ।

चार्टों व मॉडलों के रूप में 29 विषयों के 44 शिक्षण साधनों को बैठक में अंतिम रूप दिया गया । कुछ कच्ची ड्राइंगों पर भी विचार हुआ । इन ड्राइंगों तथा लेखों की साइक्लोस्टाइल द्वारा प्रतियाँ तैयार हो रही हैं जिन्हें प्राथमिक शिक्षकों द्वारा परखा जाएगा । उसके बाद संदर्शिका को अंतिम रूप दिया जाएगा ।

उत्पादन के कार्यक्रम

साँची पर स्लाइड, टेप स्लाइड के निर्माण का कार्यक्रम

साँची पर एक टेप स्लाइड कार्यक्रम तैयार हो चुका है । इसमें 78 स्लाइडें, एक आधा घंटे की रिकार्ड की हुई कैसेट तथा एक पुस्तिका है । इसका उद्देश्य साँची स्थित बौद्ध स्मारक और उसकी पृष्ठभूमि के बारे में एक सचित्र विवरण देना था । यह कार्यक्रम स्कूली बच्चों को साँची स्थित हमारी सांस्कृतिक विरासत से अवगत भी कराएगा ।

जनसंख्या शिक्षा

जनसंख्या शिक्षा पर एक श्रव्य-दृश्य पैकेज का निर्माण हो चुका है । इसमें 264 रंगीन स्लाइडें, अंग्रेजी/हिन्दी में पाँच कमेन्ट्री की तीन कैसेट और उसकी संदर्शिका शामिल हैं ।

यह पैकेज माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों को जनसंख्या शिक्षा से परिचित कराने के लिए बनाया गया है । जनसंख्या शिक्षा के समस्त क्षेत्र को पाँच एककों में बाँटा गया है । ये हैं —जनसंख्या शिक्षा का अर्थ और क्षेत्र, बढ़ती हुई जनसंख्या, जनसंख्या शिक्षा के परिणाम, पारिवारिक जीवन-शिक्षा तथा राष्ट्रीय नीति कार्यक्रम ।

स्लाइडों व फिल्म स्ट्रिपों को स्वचालित स्लाइड प्रोजेक्टरों अथवा हस्तचालित स्लाइड फ़िल्म प्रोजेक्टरों द्वारा दिखाया जा सकता है । हर कैसेट में दोनों ओर कमेन्ट्री हैं ।

इस पैकेज की प्रतियाँ बना ली गई हैं । समस्त पैकेज देश के सभी 30 जनसंख्या शिक्षा केन्द्रों को भेजे जा रहे हैं । कुल 140 सैट बनाए गए हैं जिन्हें देश की शिक्षा संस्थाओं में बाँटा और बेचा जाएगा ।

रसायन विज्ञान पर टेप-स्लाइड कार्यक्रम

"कैमिकल एण्ड आयोनिक बॉन्ड्स" शीर्षक का एक टेप-स्लाइड कार्यक्रम बन चुका है। इसमें 42 स्लाइडें तथा 30 मिनट की एक कैसेट तथा शिक्षण नोट हैं।

कम लागत वाले शिक्षण साधनों की संदर्शिका

ग्रामीण इलाकों के प्राइमरी/अपर प्राइमरी शिक्षकों के लिए कम लागत वाले शिक्षण-साधनों की संदर्शिका तैयार की गई है। इसमें 25 सटीक चित्र हैं। इसे कम लागत/बिना लागत वाले शिक्षण-साधनों पर आयोजित कई कार्यशालाओं में तैयार किया गया है। इसकी 500 प्रतियाँ छापी गई हैं जिन्हें उन कार्यशालाओं के प्रतिभागी अध्यापकों तथा रिसोर्स व्यक्तियों को भेजा गया है। इसका उद्देश्य अध्यापकों को कठिन विषयों पर स्थानीय प्रौद्योगिकी तथा विद्यार्थियों की सहायता से शिक्षण साधनों के निर्माण तथा उपयोग में सहायता करना है।

राष्ट्रीय नेताओं के चित्र

वर्ष 1982-83 में 25 राष्ट्रीय नेताओं के चित्रों का निर्माण कार्य शुरू किया गया। प्रत्येक चित्र पर उस नेता के शिक्षा, संस्कृति, धर्म तथा राष्ट्रीय एकता संबंधी उद्धरण होंगे। ये उद्धरण उस नेता की जीवनी, आत्मकथा, भाषणों तथा पुस्तकों से लिए जाएँगे। तैयार होने पर इन सैटों को शिक्षक-प्रशिक्षक संस्थानों, राज्य शिक्षा परिषदों, राज्य शिक्षा संस्थानों, राष्ट्रीय परिषद् के क्षेत्र सलाहकारों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा अन्य ऐसे संस्थानों को देश भर में वितरित किया जाएगा। ये यथा संभव संबद्ध भाषाओं में होंगे। इस योजना का उद्देश्य है कि बच्चे राष्ट्रीय नेताओं को पहचानें व उनसे प्रेरणा पाएँ और देश के प्रति उनके योगदान को जानें।

प्रथम चरण में सात नेताओं—महात्मा गाँधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, डा० सर्वपल्लि राधाकृष्णन, डा० जाकिर हुसैन, डा० भीमराव अम्बेदकर तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी के चित्रों के सैट बनाए गए हैं। अन्य 18 नेताओं के चित्रों के सैट 1983-84 के दौरान बनाए जाएँगे।

केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी

वर्ष 1982-83 के दौरान केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी में 25 फिल्में और जोड़ी गईं। अब फिल्मों की कुल संख्या 8174 है। 191 नए सदस्य 31 मार्च 1983 तक बनाए गए। अब सदस्यों की कुल संख्या 3805 है। वर्ष के दौरान सदस्यों को 6745 फिल्में लाइब्रेरी द्वारा दी गईं।

फिल्मों का पूर्वावलोकन तथा खरीद

केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी द्वारा संभाव्य खरीद के लिए वर्ष के दौरान अनेक शैक्षिक फिल्मों के पूर्वावलोकन की व्यवस्था की गई। फलस्वरूप निम्नलिखित फिल्मों को खरीदा गया :

(i) फ्रॉम वीज रूट्स—अमरीका के विलियम ग्रीव्ज प्रोडक्शन द्वारा निर्मित पुरस्कृत फिल्म

(ii) ओह स्पोर्ट यू आर पीस—मॉस स्टूडियो, मास्को द्वारा निर्मित मास्को ओलम्पिक 1980 पर एक आधिकारिक फिल्म।

(iii) शोर्स ऑफ दि कॉस्मिक ओशन

(iv) वन वाइस इन दि कॉस्मिक फ़्यूग

(v) दि हारमॅनी ऑफ दि वर्ल्ड

(vi) हैवेन एण्ड हैल

(vii) ट्रेडीशनल वर्ल्ड ऑफ इस्लाम

(viii) केयर ऑफ दि आईज (अंग्रेजी)

(ix) रवीन्द्रनाथ टैगोर (अंग्रेजी-हिन्दी)

(x) एयर पोल्यूशन (अंग्रेजी-हिन्दी)

(xi) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (अंग्रेजी)

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड, भारत द्वारा अंग्रेजी में निर्मित रंगीन टेप-स्लाइड कार्य-क्रम—"वैनिशिंग फॉरेस्ट्स" केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी द्वारा खरीदा गया। इसमें 91 स्लाइडें, 15 मिनट की कमेन्ट्री के कैसेट के अलावा आलेख हैं।

दृश्यों तथा आलेखों द्वारा भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर परियोजना

राष्ट्रीय परिषद् माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूल स्तर के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर एक फोलियो के निर्माण में संलग्न है। इस फोलियो में यूरोपीय लोगों के भारत आगमन से स्वाधीनता प्राप्ति तक स्वाधीनता संग्राम के विभिन्न आयामों पर 80 पैनल होंगे। इस योजना का उद्देश्य अध्यापकों के समक्ष भारतीय स्वाधीनता संग्राम की मुख्य घटनाओं को मूल दृश्यों तथा संबंधित दस्तावेजों के द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत करना है ताकि यह विषय अधिक आकर्षक बन सके। इस सामग्री की सहायता से अध्यापक इस विषय को अधिक सरल और प्रभावपूर्ण ढंग से पढ़ा सकेंगे। इस फोलियो

द्वारा शिक्षक और विद्यार्थी आधुनिक भारतीय इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण दौर की घटनाओं को सचमुच महसूस कर सकेंगे। पैनलों की मदद से विद्यार्थी तत्कालीन परिवर्तनशील परिस्थितियों को केवल पुस्तकों की अपेक्षा अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से समझ सकेंगे।

इस वर्ष के दौरान लगभग 45 पैनलों को अंतिम रूप दिया गया। आशा है 1983-84 के दौरान शेष पैनलों को भी पूरा किया जा सकेगा।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के विभिन्न आयामों को दर्शाने वाले पैनलों की प्रदर्शनी

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पैनलों की एक प्रदर्शनी शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में की गई। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री तथा कार्यकारी समिति के सदस्यों ने इसकी प्रशंसा की। यह अनुभव किया गया कि यह फोलियो माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी होगा। इससे राष्ट्रीय एकता में भी मदद मिलेगी।

श्रव्य-दृश्य उपकरणों तथा सामग्री की निर्देशिका का पुनर्मुद्रित संस्करण

निर्देशिका के संशोधित संस्करण के लिए आँकड़े संकलित करने के निमित्त एक प्रश्नावली बना कर साज-समान बनाने/बेचने वालों के पास भेजी गई है। उत्तर आने पर विश्लेषण कर उनका संकलन 1983-84 के दौरान किया जाएगा।

फिल्म निर्माण

राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० ने "विज्ञान जीवन का अंग है" शीर्षक से एकीकृत विज्ञान पर फिल्म बनाना शुरू किया है। इस वर्ष फिल्म की पटकथा को विशेषज्ञों की सलाह से अंतिम रूप दिया गया। फिल्म की शूटिंग हरियाणा के गुड़गाँव जिले में सोहना के निकट ग्रामीण अंचल में हुई। 1983-84 के दौरान फिल्म के पूरी होने की आशा है।

फिल्म का उद्देश्य स्कूलों में विज्ञान शिक्षण के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करना तथा स्थानीय पर्यावरण में बच्चों के दैनिक कार्यों और विज्ञान में निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों की सार्वभौमिकता पर विचार करना है।

फिल्मों का विक्रय

स्कूली पाठ्यक्रमों से संबंधित विभाग द्वारा निर्मित 16 मि० मी० की शैक्षिक फिल्मे रु० 87847.30 पैसों में देश की विभिन्न शिक्षा संस्थाओं को बेची गई।

—'अंडरस्टैंडिंग एनीमल्स' के 16 मि० मी० के प्रिंट तथा 'वाइल्ड लाइफ़ ऑफ इण्डिया' की 35 मि० मी० की रंगीन फिल्मस्ट्रिप उपहारस्वरूप बच्चों के अजायबघर के लिए मैक्सिको सरकार के विदेश संबंध मंत्री को भेजी गई।

—'नेशनल साइंस एग्जीबीशन' (अंग्रेजी) नामक 16 मि० मी० फिल्म उपहार स्वरूप इलफोर्ड, एसेक्स के नेशनल एसोसिएशन फॉर मल्टीरेशियल एजूकेशन को भेजी गई।

सुविधाओं का विकास

शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के ध्वनि स्टूडियो का टी० वी० ओ० बी० वैन की सहायता से सुधार किया गया ताकि पहले सेट के कार्यक्रमों को 16 जुलाई 1982 तक पूरा किया जा सके। शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा निर्मित एक डीज़ल जेनेरेटर भी टी० वी० ओ० बी० वैन के साथ चलाया गया ताकि बिजली फेल होने पर उसका उपयोग हो सके। 16 मि० मी० फिल्म तथा स्लाइडों के प्रयोग की अतिरिक्त उत्पादन सुविधा प्रदान करने के लिए टैलीसिने उपकरण को टी० वी० ओ० बी वैन से जोड़ा गया।

शैक्षिक दूरदर्शन परियोजना के साथ समय-साझेदारी के आधार पर रेडियो पाइलट परियोजना के कार्यक्रमों को भी रिकार्ड करने के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के ध्वनि स्टूडियो का उपयोग किया गया।

जनवरी 1983 तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के टेलीसिने कक्ष में पौन इंची 'यू' मैटिक वीडिओ कैसेट रिकार्डर सिस्टम को लगाने का कार्य पूरा हो गया था। इसे इस प्रकार लगाया गया है कि इसका उपयोग स्वतंत्र रूप से संपादन के लिए हो सकेगा और इसे कार्यक्रमों की रिकार्डिंग तथा प्लेबैक के लिए ओ० वी० वैन से भी जोड़ा जा सकेगा।

आई० वी० सी० कैलीफोर्निया/सिंगापुर से एक इंची वीडिओ टेपों के दो-दो सौ नगों वाले दो लॉटों का आयात किया गया। दिसम्बर 1982 तथा फरवरी 1983 में यह माल आ गया।

रंगीन ई० एन० जी० उपकरण के एक सैट का आयात नवम्बर-दिसम्बर 1982 में जापान से किया गया। इस सैट में दो पौन इंची वीडिओ टेप रिकार्डर, एक इलेक्ट्रानिक सम्पादन यूनिट, एक पोर्टेबुल वीडिओ रिकार्डर, एक रंगीन कैमरा, एक रंगीन मॉनीटर तथा एक टाइम बेस करेक्टर यूनिट हैं।

जनवरी 1983 में टोकियो, जापान से 300 पौन इंची वीडिओ टेपें आईं।

अमरीका की आई० वी० सी० से फरवरी 1983 में चार आई० वी० सी० स्कैनर आए ।

आई० वी० सी० स्पेयर्स जिसमें वीडिओ हैन्ड्स और इलैक्ट्रोनिक सर्किटरी बोर्ड हैं, का आयात जी० सी० ई० एल० पर किया गया । ये पाँच सैट सोनी पौन इंची 'यू' मैटिक ई० एन० जी० इक्विपमेंट सिस्टम तथा चार आर० सी० एन० एक इंची वीडिओ टेप रिकार्डरों के लिए मँगाए गए । आशा है ये 31 अगस्त 1983 तक आ जाएँगे ।

पुरानी लाइब्रेरी के पास बन रहे शैक्षिक दूरदर्शन स्टूडियो के लिए एक इलेक्ट्रोनिक व्हाइट डिमर सिस्टम खरीदने के लिए क्रयादेश (आर्डर) को अंतिम रूप दे दिया गया है । सामान के आने और लगाए जाने की जुलाई-अगस्त 1983 तक आशा है ।

पौन इंची वीडिओ उपकरण के लिए बैटरी चार्जर, बैटरी बेल्ट तथा पावर पैक जैसे अतिरिक्त सामानों का आर्डर दिया गया था । यह सामान कभी भी आ सकता है ।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए भवन-निर्माण के संबंध में राष्ट्रीय परिषद् तथा आकाशवाणी के सिविल निर्माण विभाग के बीच बात चल रही है । आकाशवाणी का सिविल निर्माण विभाग राष्ट्रीय परिषद् के परिसर में इस भवन के निर्माण के लिए सहमत हो गया हैं । इसे दो चरणों में बनाने का निश्चय किया गया है । प्रथम चरण में केवल तकनीकी भाग बनेगा ।

पुराने लाइब्रेरी भवन को शैक्षिक दूरदर्शन स्टूडियो में बदलने का काम आकाशवाणी के सिविल निर्माण विभाग ने हाथ में लिया था । इसे बदलने का राज-मिस्त्रियों वाला काम लगभग पूरा हो चुका है ताकि ये कमरे शैक्षिक दूरदर्शन स्टूडियो के लिए उपयोगी हो सकें । बिजली के तार डाले जा रहे हैं । 'एकोस्टिक ट्रीटमैंट' कार्य का विवरण तैयार किया जा रहा है । स्टूडियो के लिए एनेक्सी का निर्माण तथा प्लांट रूम की कंडीशनिंग का ठेका भी सिविल निर्माण विभाग को दिया गया है । इस विभाग द्वारा काम पूरा करने की सही तारीख अभी बताई जानी है । लाइटिंग लोड, लाइटिंग ग्रिड, एकोस्टिक ट्रीटमैंट, एयर कंडीशनिंग तथा अन्य सामानों के बारे में आवश्यक सूचना आकाशवाणी के सिविल निर्माण विभाग को दी जा चुकी है ।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र में 16 लैजरों का एक तकनीकी स्टोर है । इसमें 3,000 से अधिक चीजें हैं जिनका मूल्य लगभग 64,18,000 रुपए है ।

तकनीकी स्टोर के कार्यों में अग्रिम योजना, सामान मुहय्या करना, लेखा रखना, रख रखाव तथा संरक्षण, सामान इशू करना, सूची बनाना और समय-समय पर कम हुए सामान को पूरा करना है । इसके लिए कोटेशन/निविदा मँगाना, मूल्यांकन, आर्डर देना तथा

उन पर आगे की कार्यवाही करना आदि कार्य करने पड़ते हैं। विदेशों से सामान आयात करने के लिए और भी कई प्रकार के काम करने पड़ते हैं जैसे एल/सी कस्टम ड्यूटी की छूट खुलवाना, बैंक क्लियरेंस प्राप्त कर हवाई अड्डे से सामान छुटाना, डी० जी० एस० एण्ड डी०, डी० जी० टी० डी० तथा डी० ओ० ई० से सम्पर्क बनाए रखना।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा इन्सैट कार्यक्रमों को हाथ में लिए जाने के कारण भी काम बढ़ा है। उसके लिए संभावित आवश्यकताओं की पूर्ति और उनका अनुमान लगाने के लिए फैडरल रिपब्लिक ऑफ जरमनी तथा ब्रिटिश काउन्सिल के प्रतिनिधियों को तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया।

एक सहायक अभियंता को पौन इंची 'यू' मैटिक वीडिओ उपकरण तथा संबंधित तंत्रों के रख रखाव के प्रशिक्षण के लिए टोकियो, जापान भेजा गया। यह प्रशिक्षण नई मशीनों को ध्यान में रखकर कराया गया।

रीडर (इंजीनियरिंग) परियोजना-पूर्व के अध्ययन दौरे पर फैडरल रिपब्लिक ऑफ़ जरमनी की इस्सन यूनिवर्सिटी गए। इसके लिए यू० एन० डी० पी० द्वारा धन दिया गया था। उन्होंने शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए सुविधाओं के विकास का अध्ययन किया।

बम्बई के शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ के दो टेक्नीशियनों को दूरदर्शन की श्रव्य-दृश्य उत्पादन तकनीकों में 12 से 24 जुलाई 1982 तक प्रशिक्षित किया गया।

विज्ञान कार्यशाला

उपकरण तथा किट

स्कूलों के लिए विज्ञान सामग्री के अनुसंधान तथा निर्माण कार्य में विज्ञान कार्यशाला लगी रही। गत वर्षों की तरह राज्यों के अनुरोध पर प्रोटोटाइप तथा विज्ञान किटों का बहु उत्पादन किया गया। बड़ी संख्या में शैक्षिक संस्थानों से साइंस किटों के लिए अनुरोध आए। एक ओर स्कूलों दूसरी ओर विज्ञान-सामग्री के निर्माताओं से निकट का सम्पर्क बनाए रखने का प्रयास किया गया। कार्यशाला ने उस सामग्री के मानकीकरण की दिशा में भारतीय मानक संस्थान के ई० डी० सी० 77 के सदस्य के रूप में काफी योग दिया।

शिक्षा मंत्रालय की सलाह पर कार्यशाला ने एक प्रस्ताव तैयार किया जिसमें राज्य स्तर की नौ कार्यशालाओं की स्थापना, उनको एफ० आर० जी० से भविष्य में मिलने वाली बीस मिलियन जर्मन मुद्रा की सहायता से सुसज्जित करना, उनका संगठन, बजट तथा अन्य विवरण थे। जर्मनी के एक मूल्यांकन मिशन ने प्रस्ताव को जाँचा और कार्यशाला तथा राज्यों का दौरा किया। जर्मन तकनीकी विशेषज्ञों की सलाह तथा कार्यशाला की मदद से राज्य

स्तर की दो कार्यशालाओं की स्थापना की संभावना है। प्रथम चरण में कार्यशाला राज्यों के कार्मिकों को डिजाइन, तकनीकी ज्ञान तथा ब्लूप्रिंट बनाने में प्रशिक्षण प्रदान करने तथा अनुसंधान तथा विकास कार्य करने में सक्षम हो जाएगी।

डिजाइन और विकास

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी की सलाहकार समिति की सिफारिश पर कार्यशाला ने एक विज्ञान क्लब किट का निर्माण किया। इस किट में 58 बहु-उपयोगी औजार आदि और प्रथम चिकित्सा की चीजें हैं। इससे विद्यार्थियों व अध्यापकों द्वारा प्रयोगों व विज्ञान के नमूने को बनाने का काम आसान हो जाता है। राज्यों के संसाधन व्यक्तियों ने इन औजारों से काम करके देखा और इन्हें स्कूलों के लिए बहुत उपयोगी पाया।

1982 की बच्चों की राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में प्रदर्शित वस्तुओं का निर्माण भी इसी कार्यशाला में किया गया।

माध्यमिक स्कूल स्तर के लिए विज्ञान उपकरणों को इस्तेमाल कर देखा गया और प्राप्त अनुभव के आधार पर उनमें सुधार किया गया।

इलेक्ट्रानिकी में लघु परियोजनाओं को राज्यों के संसाधन व्यक्तियों के लिए तैयार किया गया। ये संसाधन सम्पन्न व्यक्ति इन परियोजनाओं के नए विचारों को स्कूल अध्यापकों तक पहुँचाएँगे।

किटों का वितरण

निम्नलिखित राज्यों को कुल 2,071 प्राइमरी स्कूल किट भेजे गए :

श्रीनगर के राज्य शिक्षा संस्थान को	—1600 किट
जम्मू के राज्य शिक्षा संस्थान को	— 452 किट
अन्य संस्थानों को	— 19 किट

दो सप्ताह के प्रशिक्षण को पूरा करने वाले तेरह संसाधन संपन्न व्यक्तियों को एक-एक विज्ञान क्लब किट भेंट किया गया।

प्रशिक्षण के कार्यक्रम

वैज्ञानिक उपकरणो के डिजाइन और निर्माण में नेपाल के एक टेक्नीशियन को प्रशिक्षित किया गया। उसे यूनेस्को ने एपीड के कम समय वाले विशेष तकनीकी सहयोग के अंतर्गत प्रवर्तित किया था।

आई० टी० आई० के प्रशिक्षार्थियों को इलेक्ट्रीशियन, फिटर, टर्नर, मशीनिस्ट, शीट मेटल तथा बढ़ईगीरी में प्रशिक्षित किया गया।

राज्यों के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण कार्यशाला में आयोजित किया गया। प्रशिक्षित व्यक्तियों की संख्या बढ़ाने के लिए ये लोग अपने-अपने राज्यों में ऐसे ही प्रशिक्षणों का आयोजन करेंगे। इस कार्य के लिए उन्हें एक पुस्तिका दी गई जिसमें सभी आवश्यक अभ्यासों और परियोजनाओं का विवरण दिया गया है। इसमें किट के सभी औजारों तथा उपकरणों के विवरण, प्रयोग तथा सुरक्षा के बारे में बताया गया है।

विविध कार्य

कार्यशाला राष्ट्रीय परिषद् की मोटर गाड़ियों, गर्मी और सर्दी के लिए कूलरों और हीटरों, पी० ए० सिस्टम, बिजली तथा इलेक्ट्रानिक के विविध उपकरणों के रख-रखाव का कार्य करती रही। कार्यशाला ने कम लागत वाले किन्तु प्रभावपूर्ण "शैड" तथा बच्चों के पार्क के उपकरणों का नवीकरण किया। "शैड" को लगा दिया गया है, इस पर पारंपरिक "शैड" की तुलना में कुल 20% खर्च आया है।

10

जनसंख्या शिक्षा

वर्ष 1982-83 में राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना अपने तीसरे चरण में चली गई। प्रथम चरण में बिहार, चंडीगढ़, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान तथा तमिलनाडु जैसे नौ राज्य और एक संघ क्षेत्र इस परियोजना में 1 अप्रैल 1980 को सम्मिलित हुए थे और दूसरे चरण में आंध्र प्रदेश, असम, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, केरल, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल जैसे सात राज्य और एक संघ क्षेत्र इस परियोजना में शामिल हुए। तीसरे चरण में अर्थात् 1982-83 में मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, गोआ, दमन व दिउ, मिजोरम एवं

पांडिचेरी के पाँच राज्य और चार संघ क्षेत्र इस परियोजना में शामिल हो गए। सत्ताइस राज्यों व संघ क्षेत्रों को साथ लेकर यह परियोजना अब सही अर्थों में अखिल भारतीय स्तर की हो गई है।

परियोजना की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

इस परियोजना की कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं---

(i) परियोजना के पहले और दूसरे चरण में संलग्न 18 राज्यों/संघ क्षेत्रों में से 17 ने जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठों की स्थापना कर ली है।

(ii) पूरे देश में परियोजना के कार्यान्वयन में लगे हुए पूर्णकालिक शैक्षणिक कर्मचारियों की संख्या इस समय 70 है।

(iii) इस समय काम करने वाली राज्य समन्वयन समितियों की संख्या 15 है। इस वर्ष उनकी 23 बैठकें हुई।

(iv) प्राथमिक और मिडिल स्कूल स्तर के लिए जनसंख्या शिक्षा की पाठ्यचर्याओं का निर्माण 16 राज्यों ने कर लिया है। सेकंडरी स्कूल स्तर को मिलाकर तीनों स्तरों के लिए पाठ्यचर्याओं का निर्माण 14 राज्यों ने किया है। आठ राज्यों ने जनसंख्या शिक्षा को अलग या अतिरिक्त विषय न मानते हुए अपने स्कूल स्तर के वर्तमान पाठ्यक्रमों में जनसंख्या शिक्षा की विषय वस्तु को मिला लिया है।

(v) बारह राज्यों ने अपने प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों में जनसंख्या शिक्षा को प्रविष्ट करा दिया है। 28 विश्वविद्यालयों ने अपनी बी० एड० पाठ्यचर्या में जनसंख्या शिक्षा की संकल्पना को शामिल कर लिया है। हर राज्य की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जनसंख्या शिक्षा को डालने के लिए अभी और कदम उठाने आवश्यक हैं।

(vi) अब तक कम से कम 12 राज्यों ने अपने शिक्षकों, अध्यापक-शिक्षकों, स्कूल-प्रशासकों और संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों को अभिविन्यस्त करने के लिए प्रशिक्षण पैकेजों का निर्माण किया है।

(vii) जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यस्त हुए अधीक्षकों और स्कूल-प्रशासकों की संख्या बढ़ कर इस वर्ष 3076 तक पहुँच गई। इसी प्रकार जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यस्त हुए कुल शिक्षकों की संख्या पचास हजार से भी ऊपर हो गई।

(viii) तेजी से बढ़ने वाली आबादी के कारणों और परिणामों को महसूस कराने के लिए 241 पाठ्यपुस्तक लेखकों को जनसंख्या शिक्षा से परिचित कराया गया।

(ix) स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों में जनसंख्या सम्बन्धी विचारों को सम्मिलित कराए जाने के लिए पाठ्यपुस्तकों के 183 नमूने के पाठों को या तो दुबारा लिखा गया या संशोधित किया गया। अपने स्कूलों की वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में जनसंख्या से सम्बद्ध पाठ्यविवरणों का समावेश कराने में चार राज्यों को सफलता मिली है।

(x) सोलह राज्यो ने अपने शिक्षकों के लिए समुचित शिक्षण-सामग्री का निर्माण किया है। विभिन्न राज्यों ने इस प्रकार की सामग्री के अंतर्गत अब तक कुल 156 विषयों पर सामग्री तैयार की है।

(xi) इस वर्ष के दौरान 23 रेडियो वार्ताओं और एक दूरदर्शन पाठ का प्रसारण हुआ।

(xii) विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए पाँच राज्यों ने पहल की है। इस समय किए जा रहे अनुसंधानों की संख्या बढ़कर 17 तक पहुँच गई है।

राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम

तीसरे चरण में सम्मिलित राज्यों के पूर्णकालिक कार्मिकों के निमित्त मुख्य रूप से दो गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जो इस प्रकार हैं—

(i)	लखनऊ	22 से 30 नवम्बर 1982 तक	पाठ्यक्रम-निर्माण एवं शिक्षण-सामग्री के विकास के सिद्धांत एवं विधियाँ
(ii)	मद्रास	6 से 14 दिसम्बर 1982 तक	प्रशिक्षण, प्रबोधन, मूल्यांकन और अनुसंधान से सम्बद्ध कार्य-विधियाँ

इन कार्यक्रमों में राज्यों एवं संघ राज्यों में स्थित जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठों के 49 सदस्यों ने भाग लिया।

तीसरे चरण वाले राज्यों/संघ क्षेत्रों के लिए परियोजना-प्रस्तावों के विकास के निमित्त कार्यगोष्ठियाँ

तीसरे चरण में सम्मिलित राज्यों/संघ क्षेत्रों के लिए परियोजना-प्रस्तावों के विकास के निमित्त पटना में 3 से 8 अप्रैल 1982 के बीच एक कार्यगोष्ठी की गई जिसमें मणिपुर, मेघालय, नागालैंड और सिक्किम के राज्य सम्मिलित हुए।

मिज़ोरम के संघ क्षेत्र ने अपने परियोजना-प्रस्तावों को 1 से 3 जुलाई 1982 के बीच नई दिल्ली में अंतिम रूप दिया। इसके पहले इन प्रस्तावों के निर्माण के लिए अपेक्षित आधार-सामग्री के संकलन में सहायता देने के विचार से रा० शै० अ० और प्र० प० के जनसंख्या शिक्षा एकक के अधिकारियों के तीन दल उत्तर पूर्वी क्षेत्र के राज्यों/संघ क्षेत्रों की यात्राओं पर गए।

पाठ्यपुस्तक-लेखकों का अभिविन्यास

पिछले वर्ष किए गए कार्यकलाप के निर्णयों के अनुसार काम करने के लिए लखनऊ के रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय में एक कार्यगोष्ठी की गई जिसमें पूर्ववर्ती कार्यगोष्ठियों में बनाए गए पाठों में से हिन्दी के कुछ पाठों को सम्पादित किया गया। इस तरह बने कुछ पाठों को राज्यों अथवा शिक्षा मंडलों ने अपनी पाठ्यपुस्तकों में समाविष्ट करने के लिए चुना है।

अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र के लिए जनसंख्या शिक्षा

जनसंख्या शिक्षा की राष्ट्रीय संचालन समिति ने सिफ़ारिश की थी कि औपचारिक शिक्षा में समाविष्ट करने के लिए जनसंख्या शिक्षा की जो पाठ्यसामग्री बन चुकी है उसे इस दृष्टि से परखा जाए कि क्या उसे अनौपचारिक शिक्षा के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। इसके लिए जनसंख्या शिक्षा एकक ने लुधियाना के पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में 4 से 11 नवम्बर 1982 तक एक कार्यगोष्ठी आयोजित की। इस कार्यगोष्ठी में स्कूल न जाने वाले 9 से 15 वर्ष के बच्चों की आवश्यकताओं को पहचानने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। कार्यगोष्ठी ने यह पता लगाने की कोशिश भी की कि 12 से 15 वर्ष की लड़कियों की ज़रूरतों को विशेष तौर पर ध्यान में रखते हुए क्या कुछ विशिष्ट किस्म की सामग्री के निर्माण की आवश्यकता है। कार्यगोष्ठी ने यह भी पता लगाने की कोशिश की कि यह सामग्री किन के लिए होगी। अंत में यह निर्णय हुआ कि सबसे पहले अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में काम कर रहे प्रशिक्षकों के लिए ही सामग्री बनाई जाए।

कुछ ऐसी शिक्षण-सामग्री बनाने के लिए एक और कार्यगोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया गया जिसे अपने आप अनुकूलित कर प्रशिक्षक इस्तेमाल कर सकें।

स्लाइडों और टेप की गई कमेंटरी का निर्माण

जनसंख्या शिक्षा एकक इस परियोजना पर पिछले कई वर्षों से शिक्षण-साधन विभाग के सहयोग से काम करता आ रहा है। ऐसे आलेख बनाने के लिए दो राष्ट्रीय कार्यगोष्ठियाँ

की गई जिन पर स्लाइडें और टेप कमेंटरी बनाई जा सकें। स्लाइड-कम-टेप कमेंटरी के लिए निम्नलिखित पाँच इकाइयाँ बनाई गई : (i) जनसंख्या शिक्षा का अर्थ और क्षेत्र; (ii) जनसंख्या गतिकी; (iii) जनसंख्या वर्ग के परिणाम; (iv) पारिवारिक जीवन; और (v) जनसंख्या नीति एवं कार्यक्रम।

250 से भी अधिक स्लाइडें बनाई गई। टेप कमेंटरी के साथ इन स्लाइडों को लगभग एक घंटे में दिखाया जा सकता है। टेप कमेंटरी हिन्दी और अंग्रेजी में अलग-अलग बनी हैं। फरवरी 1983 में मद्रास में परियोजना-प्रगति-समीक्षा-बैठक हुई जिसमें स्लाइड-प्रदर्शन किया गया। स्लाइडों की प्रतियाँ बनाई जा रही हैं। शीघ्र ही प्रतिभागी राज्यों में उन्हें बाँट दिया जाएगा।

मूल्यांकन उपकरणों का विकास

अब इस परियोजना को चूंकि लगभग सभी राज्यों में फैलाया जा चुका है इसलिए यह महसूस किया गया कि इस परियोजना के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यकलाप को और भी सुधारा जाए। इस उद्देश्य से जनसंख्या शिक्षा एकक ने अनेक कार्यगोष्ठियों और बैठकों के द्वारा मूल्यांकन उपकरणों की एक सीरीज बनाई है। बैठकों एवं कार्यगोष्ठियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

अवधि	स्थान
28 दिसम्बर 1982 से 2 जनवरी 1983 तक	मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में
16 से 22 जनवरी 1983 तक	नई दिल्ली स्थित जनसंख्या शिक्षा एकक (रा० शि० सं० परिसर में)
27 से 29 जनवरी 1983 तक	लखनऊ स्थित यू० पी० बोर्ड ऑफ सेकंडरी एंड हायर सेकंडरी एजुकेशन के कार्यालय में
30 जनवरी से 2 फरवरी 1983 तक	नई दिल्ली स्थित जनसंख्या शिक्षा एकक (राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में)
5 से 7 फरवरी 1983 तक	शिक्षा महाविद्यालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में
8 से 13 फरवरी 1983 तक	मद्रास स्थित टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट में

बनाए जा रहे उपकरण इस प्रकार हैं—

(i) स्टेट स्टडी शेड्यूल्स (शेड्यूल्स I-XVII)

(ii) उपलब्धि परीक्षण (मिडिल स्कूल स्तर के लिए)

(iii) सजगता परीक्षण (सेकंडरी स्कूल स्तर के शिक्षकों व छात्रों के लिए)

(iv) पाठ्यक्रम, पाठ्य एवं शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तरीकों की तरह के विशिष्ट घटकों का मूल्यांकन

उपकरणों और उनके माध्यम से एकत्र की गई मूल्यांकन की आधार-सामग्री को अगले वर्ष होने वाली त्रिपक्षीय समीक्षा समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा।

विदेशी प्रतिनिधियों की भारत-यात्रा

फिलीपाइन्स के अध्यापक-शिक्षकों का एक आठ-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल 5 से 9 सितम्बर 1982 के बीच भारत-यात्रा पर आया। इसके नेता विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे।

दूसरा प्रतिनिधिमंडल चीन के जनतंत्र से आया जिसमें सात प्रतिनिधि थे। यह प्रतिनिधिमंडल 11 से 21 सितम्बर 1982 तक भारत में रहा।

इन प्रतिनिधिमंडलों ने राज्य शिक्षा संस्थानों और राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों, स्कूलों, प्रशिक्षण महाविद्यालयों, दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब एवं महाराष्ट्र के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की यात्रा की। भारत के विभिन्न राज्यों में परियोजना को नवाचार के तरीकों से फलते-फूलते हुए देखकर अतिथिगण बड़े प्रभावित हुए।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत की प्रतिभागिता

सन् 1982 से 86 तक के चार वर्षों में एशियाई क्षेत्र में जनसंख्या शिक्षा को बढ़ावा देने वाली योजना के लिए हुए क्षेत्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व प्रोफेसर भालचंद्र सदाशिव पारख और श्री एस० एल० नाग्दा ने किया। यह सम्मेलन बैंङ्कॉक में 11 से 18 अक्तूबर 1982 तक हुआ था। सम्मेलन में प्रोफेसर पारख ने प्रमुख व्यक्ति की भूमिका अदा की। इस सम्मेलन के लिए कार्यकारी दस्तावेज तैयार करने के वास्ते बैंङ्कॉक में 4 से 9 अक्तूबर 1982 तक हुई तकनीकी दल की बैठक में भी ये सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठकें

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना का कार्यान्वयन राष्ट्रीय संचालन समिति की देखरेख में किया जाता है। इस समिति के अध्यक्ष भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के

सचिव हैं। इस समिति की बैठकों में राज्यों के अनेक शिक्षा-सचिवों और राज्य परियोजना निदेशकों ने बारी बारी से भाग लिया। इस वर्ष समिति की दो बैठकें लगभग छह-छह महीनों के अंतराल पर 16 जुलाई 1982 और 5 मार्च 1983 को हुईं। इस परियोजना के कार्यान्वियन के लिए विभिन्न राज्यों द्वारा किए जा रहे कार्य की प्रशंसा समिति ने की। समिति ने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि इस वर्ष चालीस हजार शिक्षकों को जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यस्त किया गया जबकि पिछले वर्ष केवल दस हजार को किया जा सका था। फिर भी समिति ने राज्यों से कहा कि हमारा लक्ष्य और ऊँचा होना चाहिए।

परियोजना की प्रगति की समीक्षा-बैठकें

वर्ष के प्रारम्भ में ही परियोजना की प्रगति के लिए तीन समीक्षा बैठकें इस प्रकार हुईं—

स्थान	अवधि	राज्य/संघ क्षेत्र
उदयपुर	12 से 14 अप्रैल 1982 तक	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, चंडीगढ़
त्रिवेंद्रम	17 से 19 अप्रैल 1982 तक	महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल
राँची	22 से 24 अप्रैल 1982 तक	असम, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश

अगस्त 1982 के अंत में दिल्ली में भी एक ऐसी ही बैठक हुई जिसमें रा० शै० अ० और प्र० प० के जनसंख्या शिक्षा एकक द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा की गई।

त्रिपक्षीय प्रगति समीक्षा की बैठक

इन चारों बैठकों की एक रिपोर्ट त्रिपक्षीय प्रगति समीक्षा समिति के सम्मुख 30 अगस्त 1982 को भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय में हुई बैठक में प्रस्तुत की गई। शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री एस० सत्यम ने बैठक की अध्यक्षता की। बैङ्कॉक स्थित एशिया और प्रशांत क्षेत्र के यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय के जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्रीय सलाहकार डा० डेला क्रूज इस बैठक में उपस्थित थे। यू० एन० एफ० पी० ए० की ओर से न्यूयार्क स्थित यू० एन० एफ० पी० ए० की तकनीकी शाखा के अध्यक्ष श्री ओ० जे० साइक्स भी इस बैठक में आए। नई दिल्ली स्थित यू० एन० एफ० पी० ए० के वरिष्ठ

जनसंख्या सलाहकार श्री वर्नन पेरीज भी बैठक में सम्मिलित हुए। इस परियोजना के अंतर्गत किए गए काम की और इसके कार्यान्वयन के लिए अपनाई गई अभिनव परिवर्तन वाली विविध विधियों की इस बैठक में प्रशंसा की गई। समिति ने तय किया कि अगली त्रिपक्षीय समीक्षा समिति की बैठक में परियोजना का मध्यावधि मूल्यांकन किया जाए और परियोजना के अंतर्गत किए गए विविध कार्यों के गुणात्मक मूल्यांकन पर जोर दिया जाए।

परियोजना की प्रगति की समीक्षा-बैठक

मद्रास में 8 से 13 फरवरी 1983 के दौरान परियोजना-प्रगति-समीक्षा की एक बैठक हुई। इस कार्यक्रम में 20 राज्यों/संघ क्षेत्रों ने भाग लिया। विभिन्न राज्यों द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा, रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा बनाए गए मूल्यांकन उपकरणों पर विचार-विमर्श, अगले वित्तीय वर्ष के लिए कार्यक्रमों का पुनर्निर्धारण और हर राज्य के लिए संभाव्य खर्च का आकलन बैठक में किया गया।

11

शैक्षिक मूल्यांकन

परीक्षा सुधार परियोजना अपनी स्थापना के समय से ही अनुसंधान-अध्ययनों, प्रशिक्षण और प्रसार कार्यक्रमों तथा नमूने की मूल्यांकन सामग्री द्वारा सुधार करती आ रही है।

रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने वाली रूपात्मकताओं को अपना कर लिखित परीक्षाओं का सुधार किया जाता है। प्रश्नों को ऐसी विधि में बनाया जाता है कि वे समूचे पाठ्य विषय को समाहित कर लें और अपने उद्देश्यों को सही रूप में परिभाषित करें।

भारत भर में लगभग सभी स्कूल विषयों में इकाई परीक्षणों और नमूने के प्रश्न पत्रों के अधिसंख्य निर्माण द्वारा एवं अनेक प्रशिक्षण कोर्सों, प्रश्न-

पत्र निर्माताओं की कार्यगोष्ठियों, परीक्षकों के सम्मेलनों आदि का आयोजन करके राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् परीक्षा-सुधार के कार्यक्रम चलाती है।

राष्ट्रीय परिषद् परीक्षा बोर्डों, राज्य शिक्षा संस्थानों, प्रशिक्षण महाविद्यालयों, विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों, राज्य अंग्रेजी अध्ययन संस्थानों और सेकंडरी स्कूलों के साथ मिलकर काम करती है।

आवासीय स्कूलों में रखे गए भारत सरकार की योग्यता-छात्रवृत्ति पाने वालों का गहन अध्ययन

छात्रवृत्ति पाने वालों और उनके अभिभावकों, छात्रवृत्ति को बीच में ही छोड़ देने वालों और उनके अभिभावकों, मान्यता प्राप्त आवासीय स्कूलों के प्रिंसिपलों, शिक्षा निदेशकों, सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन तथा शिक्षा मंत्रालय को एक प्रश्नावली भेजकर उनके उत्तरों द्वारा आधार सामग्री एकत्र की गई। इस आधार सामग्री को विश्लेषित कर अर्थ निकाला गया और अब रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

कक्षा XII के छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाएँ

इस परियोजना के अंतर्गत कक्षा XII के छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं पर एक साक्षात्कार शेड्यूल बनाया गया है। इसे 125 प्रशिक्षण महाविद्यालयों को भेजा गया है ताकि वे छात्रों को इस साक्षात्कार शेड्यूल द्वारा अनुसंधान अध्ययन के लिए प्रोत्साहित कर सकें और परिणामों को तुलनात्मक अध्ययन के लिए वापस भेज सकें।

प्रतिभा खोज अध्ययन

प्रतिभा-खोज के क्षेत्र में नीचे लिखे अध्ययन किए जा रहे हैं जिनका आधार सामग्री विश्लेषण से सम्बद्ध कार्य पूरा हो चुका है और परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है—

(क) प्रतिभा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास : रचनात्मक परीक्षणों के उपयोग का अध्ययन।

(ख) सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और बच्चों की रचनात्मक कार्यविधि के परिवर्तन।

(ग) कक्षा X के प्रतिभा सम्पन्न छात्रों की पृष्ठभूमि का अध्ययन।

(घ) कक्षा XI के प्रतिभा सम्पन्न छात्रों की पृष्ठभूमि का अध्ययन ।

(ङ) कक्षा XII के प्रतिभा सम्पन्न छात्रों की पृष्ठभूमि का अध्ययन ।

प्रतिभावान छात्रों की उपलब्धियों का गहन अध्ययन : राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियाँ

इस अध्ययन के लिए भारत के और बाहर के 80 प्रतिभावान छात्रों से आधार-सामग्री जुटाई जा चुकी है, और अधिक छात्रों से सम्पर्क करने की कोशिश की जा रही है । प्राप्त साहित्य की समीक्षा की जा रही है ।

कक्षा IX, X और XII के लिए राजस्थान के बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन द्वारा अपनाई गई व्यापक आंतरिक मापन योजना का मूल्यांकन

नमूने के स्कूलों से इकट्ठा की गई आधार-सामग्री का विश्लेषण किया गया और परिणाम निकालने के बाद उनको अंतिम रूप दिया गया । सन् 1982-83 के दौरान इसकी रिपोर्ट बन गई है ।

शिक्षण-अधिगम की इकाइयाँ

नागरिक शास्त्र के कक्षा-अधिगम को सुधारने के लिए कार्यकारी दल की बैठक की गई ताकि शिक्षण-अधिगम की उन इकाइयों को अंतिम रूप दिया जा सके जिनमें कक्षा VIII के इकाई परीक्षण भी शामिल हैं । केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग से परिषद् द्वारा कक्षा-अधिगम-सुधार की हाथ में ली गई परियोजना के परिणामस्वरूप यह सामग्री बनी । इस दल की बैठक 29 मार्च से 3 अप्रैल 1982 के बीच हुई । अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों, कालेजों, स्कूलों और राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों के नौ प्रतिभागियों ने इकाइयों को जाँचा और उन्हें अंतिम रूप दिया ।

व्यावहारिक परीक्षाओं का सुधार

एक दो-दिवसीय नियोजन-बैठक 20 और 21 अप्रैल 1982 को रा० शै० अ० और प्र० प० ने की जिसका मुख्य उद्देश्य प्रैक्टिकल परीक्षाओं के एक मोनोग्राफ़ को विचार-विमर्श के बाद अंतिम रूप देना था । इस बैठक में स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों और बोर्ड ऑफ सेकंड्री एजुकेशन के 15 विशेषज्ञों ने भाग लिया । मोनोग्राफ के विभिन्न अध्यायों पर विचार-विमर्श हुआ और उन्हें अंतिम रूप प्रदान किया

गया। सम्पादन के बाद इस मोनोग्राफ़ को छाप दिया गया है। इसका शीर्षक है, "विज्ञान की प्रैक्टिकल परीक्षाओं को सुधारने की पुस्तिका"।

परीक्षण सामग्री का संशोधन

रा० शै० अ० और प्र० प० ने विभिन्न विषयों में परीक्षण-मदों के संशोधन और विकास से सम्बद्ध मूल्यांकन पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया। दार्जिलिंग में 9 से 12 जून 1982 तक हुई इस कार्यगोष्ठी में विभिन्न विषयों के 16 विशेषज्ञों को बुलाया गया।

गणित में परीक्षण इकाइयाँ

गणित में +2 स्तर पर परीक्षण इकाइयाँ बनाने के लिए आठ दिनों वाली एक कार्यगोष्ठी दिल्ली में 29 सितम्बर से 6 अक्तूबर 1982 तक की गई। विभिन्न राज्यों के 11 प्रतिभागियों ने कार्यगोष्ठी में भाग लिया और उन्होंने बारहवीं कक्षा की पाठ्यचर्या के विषय-शीर्षकों को समाहित करने वाली 16 परीक्षण इकाइयाँ बनाईं। इन्हें अंतिम रूप दिया जा रहा है। बाद में जाँच परख के लिए इन्हें विभिन्न स्कूलों में भेजा जाएगा।

राजनीतिक विज्ञान में मूल्यांकन

राजनीतिक विज्ञान में मूल्यांकन विषय पर +2 स्तर की प्रस्तावित पुस्तक की रूपरेखा बनाने के लिए उच्चस्तरीय समिति की बैठक 7 और 8 अक्तूबर 1982 को की गई। इस समिति में विश्वविद्यालयों के राजनीतिक विज्ञान के चार प्रोफ़ेसर/वरिष्ठ लेक्चरर हैं जिन्होंने पुस्तक की रूपरेखा बनाई। मार्गदर्शी रेखाओं के सहारे सामग्री का विकास कर पुस्तक का प्रारूप बनाया जाएगा।

इतिहास में प्रश्न बैंक

नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में 11 से 18 अक्तूबर 1982 तक एक कार्यगोष्ठी इतिहास में प्रश्न बैंक बनाने के लिए की गई जिसमें छह राज्यों के 10 प्रतिभागी आए। इतिहास का प्रश्न बैंक पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

अर्थशास्त्र में प्रश्न बैंक

अर्थशास्त्र में प्रश्न बैंक के लिए परीक्षण मदें बनाने के विचार से छह दिनों वाली एक कार्यगोष्ठी 18 से 23 अक्तूबर 1982 तक की गई जिसमें गोआ (2), दिल्ली (3), मध्य प्रदेश (1), महाराष्ट्र (1), जम्मू और कश्मीर (2), बिहार (1), हरियाणा (1), राजस्थान (3) और उत्तर प्रदेश (1) के 15 व्यक्ति शामिल हुए। आठ अलग अलग विषयों पर परीक्षण मदें बनाई गईं। अब इन्हें स्कूलों को भेजा जा रहा है।

अर्थशास्त्र में परीक्षण मदें

अर्थशास्त्र की परीक्षण मदों को औचित्य, विषय वस्तु की शुद्धता, विशिष्टता आदि की दृष्टि से जाँचने के लिए स्कूलों को भेजा गया। स्कूलों से अपेक्षा है कि वे परीक्षण मदों की वास्तविक कार्यकुशलता के अनुसार परिणामों को भेजेंगे। इस अनुभव जनक अभ्यास से विभाग को परीक्षण इकाइयों के अंतिम रूप तैयार करने में मदद मिलेगी।

क्राइटेरियन रेफरेंस्ड टेस्टिंग

रा० शै० अ० और प्र० प० ने अंग्रेजी में एक मोनोग्राफ़ तैयार किया है—'क्राइटेरियन रेफ़रेन्स्ड टेस्टिंग'। इसे सारे देश में समीक्षा टिप्पणी के लिए भेजा गया है।

प्रारम्भिक स्कूलों में छात्रों का मूल्यांकन

प्रारम्भिक स्तर पर छात्रों की निष्पत्ति का मूल्यांकन कर पाने के लिए स्कूलों को व्यावहारिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के विचार से 'प्रारम्भिक स्कूलों में छात्रों का मूल्यांकन' नामक पुस्तिका स्कूलों को भेजी गई है।

परिवेश अध्ययन की परीक्षण सामग्री

मार्च 1983 में दिल्ली में एक कार्यगोष्ठी हुई जिसमें कक्षा III, IV, और V के लिए परिवेश अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) के क्षेत्र में परीक्षण सामग्री बनाई गई जिसमें ये चीजें शामिल हैं—प्रश्न, कार्यभार और परियोजना कार्य (साथ में उनके मूल्यांकन के उपकरण)। यह सामग्री राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की इस स्तर की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है। निकट भविष्य में यह सामग्री अध्यापक संदर्शिका के रूप में प्रकाशित की जाएगी।

शैक्षिक मूल्यांकन के संसाधन सम्पन्न व्यक्ति

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने पांडिचेरी के संघ क्षेत्र के लिए अंग्रेजी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक मूल्यांकन में संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए पांडिचेरी में 12 और 13 मई 1982 को एक कार्यगोष्ठी आयोजित की जिसमें हेडमास्टरों, स्कूल निरीक्षकों, और शिक्षकों के 21 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों में अभिविन्यस्त किया गया।

सिक्किम के वरिष्ठ शिक्षकों का अभिविन्यास

सिक्किम सरकार की प्रार्थना पर रा० शै० अ० और प्र० प० ने सिक्किम के शिक्षा निदेशालय के सहयोग से 14 से 20 जुलाई 1982 तक एक कार्यगोष्ठी गणित, जीवविज्ञान, भौतिकी और रसायन विज्ञान के वरिष्ठ शिक्षकों को मूल्यांकन की धारणा और विधियों में अभिविन्यस्त करने के लिए की। इस प्रशिक्षण-कार्यक्रम में जीवविज्ञान के 35 शिक्षक, रसायन विज्ञान के 17 शिक्षक, भौतिकी के 13 शिक्षक और गणित के 47 शिक्षक सम्मिलित हुए। प्रतिभागियों ने अपने अपने क्षेत्रों में परीक्षण इकाइयाँ बनाईं। हर वर्ग ने प्रभावी कक्षा-शिक्षण के लिए वार्षिक प्लैन भी बनाए। इन वार्षिक प्लैनों को निदेशालय में जाँचा जाएगा और उनके कार्यान्वियन के लिए कदम उठाए जाएँगे।

पहले स्तर की कार्यगोष्ठी के बाद दूसरी कार्यगोष्ठी नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में 10 से 17 फरवरी 1983 तक की गई जिसमें वैज्ञानिक समन्वयक को मिलाकर 19 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव-विज्ञान और गणित की शिक्षण इकाइयाँ बनाई गईं।

कार्यगोष्ठी की समाप्ति पर 250 पृष्ठों की रिपोर्ट निकाली गई जिसमें पृष्ठभूमि की सामग्री और नमूने की सामग्री शामिल है। अपने अपने स्कूल में इन विषयों को पढ़ाने वाले सिक्किम के शिक्षकों के लिए यह सामग्री बड़ी उपादेय होगी, ऐसी आशा है। सिक्किम का शिक्षा निदेशालय इस सामग्री को राज्य में अच्छी तरह बँटवाने के लिए प्रकाशित कर रहा है।

प्रश्नपत्र बनाने वालों के लिए प्रशिक्षण कोर्स

पटियाला के राज्य शिक्षा महाविद्यालय में 20 से 24 सितम्बर 1982 तक सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन के प्रश्नपत्र बनाने वालों के लिए एक प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन किया गया जिसमें कालेजों और विश्वविद्यालयों में सामाजिक विज्ञान तथा भाषाएँ पढ़ाने वाले 31 विषय विशेषज्ञ और हेडमास्टर सम्मिलित हुए। यह कार्यक्रम कक्षा X और XII की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बनाने वालों को बेहतर प्रश्नपत्र बनाने की विधा में प्रशिक्षित करने के निमित्त था। कार्यगोष्ठी में बनाए गए नमूने के हर विषय के प्रश्नपत्रों को बाद में बोर्ड को भेज दिया गया जिससे वह उन्हें प्रकाशित कर सम्बद्ध स्कूलों में भेज सके।

विज्ञान और गणित में प्रश्नपत्र बनाना

मध्य प्रदेश के बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन के सहयोग से विज्ञान और गणित में प्रश्नपत्र बनाने की विशेषज्ञता प्रदान करने के उद्देश्य से, पचमढ़ी में 3 से 12 नवम्बर 1982

तक दस दिनों वाली एक कार्यगोष्ठी की गई जिसमें कुल 44 प्रतिभागी और दो संसाधन सम्पन्न व्यक्ति आए। कार्यगोष्ठी में भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान और गणित के प्रश्नपत्र बनाए गए।

शैक्षिक मूल्यांकन में प्रशिक्षण कोर्स

हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय के मॉडल हाई स्कूल में 6 से 15 दिसम्बर 1982 तक जीवविज्ञान एवं गणित के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए शैक्षिक मूल्यांकन में एक अखिल भारतीय प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया गया जिसमें सिक्किम, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश के गणित के 18 और जीवविज्ञान के 12 प्रतिभागी उपस्थित हुए। कार्यक्रम में सैद्धांतिक भाषण हुए ताकि शैक्षिक मूल्यांकन, विशेषकर मूल्यांकन की प्रकृति और क्षेत्र, विषयवस्तु का विश्लेषण, शैक्षिक उद्देश्य, प्रश्नों के रूप, बेहतर प्रश्नपत्र बनाने की कला और उनके विश्लेषण का प्रशिक्षण दिया जा सके। व्यावहारिक कार्यों में शामिल था विभिन्न रूपों में आब्जेक्टिव बेस्ड प्रश्न बनाने और इकाई परीक्षण विकसित करने का गहरा अभ्यास। प्रतिभागियों ने कुल मिलाकर गणित में 8 और जीवविज्ञान में 3 इकाई परीक्षण बनाए। इसके अलावा हर वर्ग ने अपनी इकाई के वस्तु तत्व का विश्लेषण किया और नमूने की सचित्र सामग्री भी बनाई।

संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों का प्रशिक्षण

उड़ीसा के बोर्ड ऑफ़ सेकंडरी एजुकेशन के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों को 'नूतन परीक्षण' में प्रशिक्षित करने के लिए पुरी में 28 दिसम्बर 1982 से 5 जनवरी 1983 तक नौ दिनों वाली एक कार्यगोष्ठी की गई जिसमें उड़ीसा राज्य के विभिन्न कालेजों, शिक्षा महा-विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के 52 प्रोफ़ेसर, रीडर और सेकंडरी स्कूलों के हेडमास्टर सम्मिलित हुए। अंग्रेजी, उड़िया, नागरिक शास्त्र, इतिहास, भूगोल, सामान्य विज्ञान और गणित विषयों के लिए यह कार्यक्रम हुआ जिसमें शैक्षिक मूल्यांकन एवं मापन की मूल अवधारणाओं तथा प्रासंगिक प्रश्नपत्र बनाने की कला पर सामान्य भाषण हुए। अपने अपने विषय क्षेत्रों में हर दल ने संतुलित प्रश्नपत्र बनाए।

गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए फरवरी 1983 में केरल में शैक्षिक मूल्यांकन में एक कार्यगोष्ठी की गई। यह कार्यगोष्ठी केरल के शिक्षा निदेशालय के सहयोग से की गई। इसमें 46 व्यक्तियों ने भाग लिया जिन्हें शैक्षिक मूल्यांकन के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों और उसकी धारणाओं और कला में प्रशिक्षित किया गया। विभिन्न विषयों के इकाई परीक्षण बनाए गए जिन्हें बाद में केरल के शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित कर राज्य के स्कूलों में बँटवाया जाएगा।

प्रश्न बैंक बनाना

तमिलनाडु की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को विज्ञानों, राजनीतिक विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और गणित विषयों में सीनियर सेकंडरी स्तर के लिए प्रश्न बैंक बनाने के काम में राष्ट्रीय परिषद् ने अपनी विशेषज्ञता और सहायता प्रदान की।

नमूने के प्रश्नपत्र बनाना

नई दिल्ली के सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन को कक्षा X की अंग्रेजी (बी कोर्स) के लिए नमूने के प्रश्नपत्र बनाने में रा० शै० अ० और प्र० प० ने मार्गदर्शन और सहायता प्रदान की। नमूने के इन प्रश्नपत्रों को बोर्ड ने प्रकाशित कर स्कूलों में बँटवाया।

परामर्श सेवाएँ

नई दिल्ली के आर्मी पब्लिक स्कूल और ब्लु बेल्स स्कूल को रा० शै० अ० और प्र० प० ने परामर्श सेवाएँ प्रदान कीं। इन स्कूलों के शिक्षकों को मूल्यांकन की अवधारणा में और सभी विषयों अर्थात् भाषाओं, विज्ञानों, गणित और सामाजिक विज्ञानों में कक्षा-मूल्यांकन के लिए इकाइयों के निर्माण में प्रशिक्षित किया गया।

प्रकाशन

रा० शै० अ० और प्र० प० ने 1982-83 के दौरान शैक्षिक मूल्यांकन के निम्नलिखित प्रकाशन तैयार किए—

(1) प्रारम्भिक स्तर पर मूल्यांकन (बिहार के संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट)।

(2) सेकंडरी स्तर पर आब्जेक्टिव बेस्ड शिक्षण और प्रशिक्षण (सिक्किम सरकार का शिक्षा निदेशालय)।

(3) इतिहास में मॉडल प्रश्नपत्र बनाने के लिए हुई कार्यगोष्ठी की रिपोर्ट (शिलॉङ् स्थित मेघालय राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)।

(4) प्रारम्भिक स्कूलों में छात्र मूल्यांकन : सिद्धांत और व्यवहार।

(5) क्राइटेरियन रेफरेन्स्ड टेस्टिंग : ए मोनोग्राफ़।

(6) सैम्पुल यूनिट टेस्ट्स इन हिस्ट्री।

(7) रिसर्च एंड डेवेलपमेंट इन टैलेंट सर्च :
ए स्टडी इन दि यूज़ ऑफ क्रिएटिविटी टेस्ट्स।

(8) इंटर्व्यू शेड्यूल ऑन एजुकेशनल एंड वोकेशनल एस्पिरेशंस फॉर दि स्टुडेंट्स ऑफ़ क्लास XII।

12

सर्वेक्षण, आधार सामग्री प्रक्रिया और प्रलेखन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् सर्वेक्षण कराती है, आधार सामग्री प्रक्रिया की सेवाएँ उपलब्ध करती है, आधार सामग्री का विश्लेषण करती है, चुने हुए शैक्षिक आँकड़ों और जानकारी को एकत्र करती है, सर्वेक्षण विधियों में प्रशिक्षण प्रदान करती है, और नमूने के सर्वेक्षण करने के लिए राज्यों के कार्मिकों का अभिविन्यास करवाती है।

सर्वेक्षणों के बाद आधार सामग्री का विश्लेषण नमूने के आधार पर किया जाता है जिससे कि इस आधार सामग्री की बुनियाद पर शिक्षा के लिए जिला विकास योजनाएँ बन सकें। एकत्र की गई आधार सामग्री का उपयोग अन्य बातों के अलावा स्कूल

मैपिंग के लिए किया जाता है और देश में नए स्कूलों की स्थापना इन सर्वेक्षण-परिणामों के आधार पर ही होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पास आधार सामग्री प्रक्रिया के लिए कई मशीनें हैं। इसके पास कम्प्यूटर टर्मिनल है जिसमें LSI-II लगा हुआ है। इससे आधार सामग्री प्रक्रिया की राष्ट्रीय परिषद् की क्षमता बढ़ जाती है। कम्प्यूटर टर्मिनल में LSI-II/10 प्रोसेसर है जिसकी वर्ड मेमोरी 320 K 16-bit है।

शैक्षिक सर्वेक्षण

प्राथमिक स्तर पर नामांकन एवं अवरोधन दरों पर दोपहर के खाने के कार्यक्रम का प्रभाव

इस विषय पर रा० शै० अ० और प्र० प० ने एक अध्ययन कराया। अध्ययन का वित्त पोषण यू० एस० ए० आइ० डी० ने किया। लड़कों और लड़कियों पर अलग अलग अध्ययन किए गए। इसी प्रकार अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों के लिए अलग अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित 13 राज्य आ जाते हैं जहाँ सी० ए० आर० ई० की मदद से दोपहर के खाने का कार्यक्रम चल रहा है :

(1) आंध्र प्रदेश	(6) गुजरात	(11) महाराष्ट्र
(2) उड़ीसा	(7) तमिलनाडु	(12) राजस्थान
(3) उत्तर प्रदेश	(8) पंजाब	(13) हरियाणा
(4) कर्नाटक	(9) पश्चिमी बंगाल	
(5) केरल	(10) मध्य प्रदेश	

राज्यों को दो वर्गों में बाँटा गया—वे राज्य जहाँ यह कार्यक्रम केवल सी० ए० आर० ई० की सहायता से चल रहा है और वे राज्य जहाँ यह कार्यक्रम सी० ए० आर० ई० की सहायता के साथ-साथ देशी तरीकों से भी चल रहा है। इस अध्ययन में मापन की इकाई जिला था। हरियाणा और कर्नाटक के राज्यों में मापन की इकाई ब्लॉक था।

आधार सामग्री के विश्लेषण से दोपहर के खाने के प्रभाव के कोई सुनिश्चित प्रमाण नहीं मिले, संभवत: इस कारण कि मापन की इकाई इस प्रयोजन के लिए बहुत बड़ी थी। इसीलिए हरियाणा और कर्नाटक में ब्लॉक स्तर के अध्ययन के परिणाम अधिक स्पष्ट हैं।

शैक्षिक रूप से पिछड़े नौ राज्यों में प्राथमिक स्तर पर निष्क्रियता और स्कूल छोड़ जाने वालों का अध्ययन

इस अध्ययन को लड़कों और लड़कियों में अलग अलग किया गया। इसी प्रकार अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों तथा शहरी और ग्रामीण बच्चों पर अलग अलग किया गया। इस अध्ययन के अंतर्गत नीचे लिखे राज्य आ जाते हैं—

(1) असम
(2) आंध्र प्रदेश
(3) उड़ीसा
(4) उत्तर प्रदेश
(5) जम्मू एवं कश्मीर
(6) पश्चिम बंगाल
(7) बिहार
(8) मध्य प्रदेश
(9) राजस्थान
(10) हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश शैक्षिक रूप से पिछड़ा राज्य नहीं है। किंतु उसे राज्य सरकार की प्रार्थना पर इस अध्ययन के लिए ले लिया गया।

आधार-सामग्री के संकलन का मोड्यूल बन चुका है और हिन्दी में छप भी चुका है। अध्ययन किए जाने वाले स्कूलों का नमूना अंतिम रूप पा रहा है।

चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण पर आधारित नमूने का अध्ययन

अध्ययन को नमूने के आधार पर किया गया। उद्देश्य था स्कूल प्लांट, उपकरण, पाठ्यक्रमीय और पाठ्येतर सुविधाओं की उपलब्धि का अध्ययन। चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के दौरान प्रयुक्त स्कूल जानकारी के फार्मों को ही आधार बनाया गया। नमूने के अलग-अलग फ्रैक्शंस को अलग-अलग प्रकार के स्कूलों अर्थात् प्राथमिक, मिडिल, सेकंडरी और हायर सेकंडरी अथवा समकक्ष पर लागू किया गया। हर जिले से स्कूलों का एक एक नमूना लिया गया। पचास प्रतिशत से अधिक जिलों ने स्कूल फार्म नहीं लौटाए हैं। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा के राज्यों और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, गोआ दमन व दिउ और लक्षद्वीप के संघ क्षेत्रों की आधार सामग्री को कम्प्यूटर द्वारा देख लिया गया है और परियोजना पर रिपोर्ट तैयार हो रही है।

चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की आधार सामग्री के आधार पर जिला शिक्षा योजनाओं का विकास

प्राथमिक और मिडिल स्तरों पर शैक्षिक सुविधाओं के नियोजन के लिए चौथे सर्वेक्षण की आधार सामग्री को प्रयुक्त करने में जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों के अभिविन्यास का एक कार्यक्रम कुछ राज्यों में शुरू किया गया है। उन ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ प्राथमिकता के आधार पर प्राथमिक स्कूलों के खोले जाने की जरूरत है या जहाँ के प्राथमिक स्कूलों को मिडिल स्तर तक बढ़ा दिए जाने की जरूरत है, बस्तियों की खोज-पहचान के लिए एक तरीका ढूँढ़ा गया। इस वर्ष 1982-83 के दौरान राज्य स्तर का प्रशिक्षण गोआ, दमन व दिउ के लिए पंजिम में, तमिलनाडु के लिए मद्रास में और बिहार के लिए भागलपुर में आयोजित किया गया।

राजस्थान में अ० जा०/अ० जनजाति के लिए शैक्षिक सुविधाओं का नमूने का सर्वेक्षण

यह सर्वेक्षण इस बात का पता लगाने के लिए किया जा रहा है कि अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों द्वारा बहुसंख्यक रूप से आबाद किए गए इलाकों में प्राथमिक शिक्षा के लिए क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं और इन इलाकों में बच्चों को स्कूल क्यों नहीं भेजा जाता या पढ़ाई पूरी करने के पहले ही उन्हें प्राथमिक स्कूल से क्यों हटा लिया जाता है। अध्ययन के लिए भरतपुर और डूँगरपुर नामक जिलों को चुना गया है। डूँगरपुर में आधार सामग्री इकट्ठा कर ली गई है और भरतपुर में इकट्ठा की जा रही है।

लड़कियों के शैक्षिक पिछड़ेपन का अध्ययन

आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा राज्यों में, जहाँ प्राथमिक स्तर पर दाखिला लेने वाली लड़कियों की संख्या काफी कम है, लड़कियों के शैक्षिक पिछड़ेपन का अध्ययन करने के लिए एक अनुसंधान-परियोजना हाथ में ली गई है जिसे यूनिसेफ वित्तीय सहायता दे रहा है। उम्मीद की जाती है कि एकत्र की गई जानकारी के आधार पर दाखिला लेने वाली लड़कियों की संख्या बढ़ाने और बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने की प्रवृत्ति को कम करने के उपाय किए जा सकेंगे। अधिकांश राज्यों में आधार सामग्री को एकत्र कर विश्लेषित किया जा चुका है। एक राज्य ने तो जिला रिपोर्टों को प्रकाशित भी कर दिया है। इस अध्ययन में शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों से भी आधार सामग्री एकत्र की गई है।

नमूने के शैक्षिक सर्वेक्षण की विधियों के प्रयोग में प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम

नमूने के शैक्षिक सर्वेक्षण की विधियों को प्रयुक्त करने के तीसरे प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम का आयोजन अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 24 फरवरी से 5 मार्च 1983 तक किया गया। यह पाठ्यक्रम राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारियों एवं विभिन्न राज्यों/संघ क्षेत्रों के शिक्षा विभागों के अधिकारियों के लिए किया गया था। इस प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम में 13 राज्यों/संघ क्षेत्रों के 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें अजमेर के क्षे० शि० म० का एक प्रतिनिधि भी सम्मिलित है।

चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट

चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट प्रकाशित की गई है। रिपोर्ट से ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों, शिक्षकों, नामांकन आदि जैसी शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता के बारे में जानकारी मिलती है।

शिक्षा व्यवस्था पर रिपोर्ट

भारत के राज्यों और संघ क्षेत्रों में विद्यमान शिक्षा व्यवस्था की रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

पुस्तकालय और प्रलेखन

पुस्तकालय और प्रलेखन एकक अपने सदस्यों को सभी प्रासंगिक सुविधाएँ उपलब्ध कराता रहा। वर्ष 1982-83 के इस एकक संबंधी आँकड़े इस प्रकार हैं :

1. खरीदी गई पुस्तकों की संख्या	1239
2. मुफ्त में मिली पुस्तकों की संख्या	855
3. विभिन्न विभागों द्वारा परियोजनाओं के लिए खरीदी और पुस्तकालय की अवाप्ति-पंजिका में अवाप्त की गई पुस्तकों की संख्या	1737
4. बढ़ाई गई पुस्तकों की संख्या	3831
5. पुस्तकों और जिल्द चढ़ी पत्रिकाओं की संख्या	120893
6. सदस्यों की संख्या	2128

7. इस वर्ष जिल्द मढ़वाई गई पुस्तकों और पत्रिकाओं की संख्या (2037 + 562)	2599
8. पुस्तकालय की परामर्श-सुविधाओं से लाभ उठाने वाले बाहर के अनुसंधान-छात्रों की संख्या	3596
9. खरीदी गई पत्रिकाएँ	329
10. आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त पत्रिकाएँ	19
11. निःशुल्क प्राप्त पत्रिकाएँ	150
12. खरीदे गए अखबारों की संख्या	16
13. पत्रिकाओं के खरीदे गए पुराने अंक	83

प्रलेखन सेवाएँ

प्रलेखन सेवाओं के अंतर्गत वर्ष के दौरान निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान की गई :

1. करेंट कंटेंट्स	12 अंक
2. ऐक्सेशन लिस्ट	6 अंक
3. शिक्षा और अन्य सम्बद्ध विषयों की प्रेस कतरनें	1012

रिप्रोग्राफिक सेवाएँ

पुस्तकालय रिप्रोग्राफिक सेवाएँ प्रदान करने का कार्य करता रहा और विभिन्न विभागों/एककों/प्रकोष्ठों/वर्गों के अनुरोध पर दस्तावेज़ों की 12887 फोटो कापियाँ बनाई गईं।

स्टॉक प्रमाणन

पुस्तकालय के स्टॉक प्रमाणन का कार्य कई चरणों में करने की योजना बनाई गई है जिससे कि एक चक्र तीन वर्षों में पूरा हो जाए। इस दिशा में काम शुरू कर दिया गया है। संकलन के नौ अनुक्रमों का प्रमाणन हो चुका है। प्रमाणन के पहले चक्र के 1984 में पूरे हो जाने की संभावना है। स्टॉक प्रमाणन के कार्य को एक सदा चलती रहने वाली परियोजना के रूप में शुरू किया गया है ताकि प्रमाणन का काम भी चलता रहे और पुस्तकालय के सामान्य कामों में कोई रुकावट न आए।

प्रशिक्षण

पुस्तकालय विज्ञान में चार महीनों के प्रशिक्षण के लिए यू० एन० डी० पी० कार्य-क्रम के अंतर्गत यूनेस्को की छात्रवृत्ति पर भूटान के श्री यू० टी० लामा दिसम्बर 1982 में इस एकक में आए। श्री लामा का प्रशिक्षण काल 31 मार्च 1983 को समाप्त हो गया पर उन्हें दो महीनों का विस्तार दे दिया गया है।

स्कूल पुस्तकालयों के निदेशालय द्वारा आयोजित एक अभिविन्यास कार्यक्रम में संसाधन सम्पन्न व्यक्ति के रूप मे भाग लेने के लिए पुस्तकालय और प्रलेखन एकक के अध्यक्ष श्री के० एल० लूथरा को प्रतिनियुक्त किया गया।

कर्मचारियों की उन्नति

प्रलेखन अधिकारी श्री एस० एल० वर्मा एक वर्ष के अध्ययन अवकाश पर गए और इस अवधि में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० सी० आई० एससी० की डिग्री प्राप्त की।

13

अनुसंधान और नवीन प्रक्रियाएँ

अनुसंधान तथा अनुसंधान के लिए प्रोत्साहन परिषद् के महत्वपूर्ण क्रिया-कलाप हैं। परिषद् के विभागों/एककों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों द्वारा किए जा रहे अनुसंधानों के अलावा परिषद् बाहर के संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान कर शैक्षिक अनुसंधानों को प्रोत्साहन देती है। परिषद् कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता वृत्तियाँ प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की खोज-बीन की जा सके और देश के विभिन्न भागों में सक्षम अनुसंधानकर्ताओं की टोलियाँ बनाई जा सकें। परिषद् द्वारा प्रारंभ किए गए अथवा पोषित अधि-कांश अनुसंधान कार्य पहले से पहचाने हुए क्षेत्रों में प्राथमिकता के आधार पर किए जा रहे हैं।

वर्ष 1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) अनुसंधान को पोषित करने वाला प्रमुख तंत्र है। विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थाओं के शिक्षा और सहबद्ध विषयों के विख्यात अनुसंधानकर्ता, राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के प्रतिनिधि इस समिति के सदस्य हैं। साथ ही, इस समिति में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के सभी विभागाध्यक्ष; राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के प्रोफेसर स्थायी आमंत्रित सदस्य हैं।

एरिक के मुख्य क्रियाकलाप इस प्रकार हैं :

—शिक्षा और सहबद्ध विज्ञानों की नवाचारीय परियोजनाओं पर अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।

—शिक्षा में अनुसंधान करने के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करना।

—पीएच० डी० शोधों और प्रबंधों के लिए प्रकाशन अनुदान देना।

—शोध-निष्कर्षों का समय-समय पर प्रसार करना और अनुसंधान सम्मेलनों का आयोजन करना।

रा० शै० अ० और प्र० प० अपने विभागों/एककों से जिन अनुसंधान प्रस्तावों को प्राप्त करती है, उनका मूल्यांकन सर्वप्रथम छानबीन समिति द्वारा किया जाता है जिसमें बाह्य और आन्तरिक सदस्य होते हैं और जिसकी अध्यक्षता संयुक्त निदेशक करता है।

रा० शै० अ० और प्र० प० अपने विभागों/एककों के जिन प्रस्तावों को प्राप्त करती है उनका सर्वप्रथम मूल्यांकन संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में बाह्य और आंतरिक सदस्यों से गठित छानबीन समिति द्वारा किया जाता है। सामान्यतः प्रस्तावों का मूल्यांकन उनकी सार्थकता और रूपरेखा की उपयुक्तता आदि के आधार पर किया जाता है।

अन्य संस्थानों से प्राप्त अनुसंधान प्रस्तावों और प्रकाशन अनुदान के अनुरोधों का मूल्यांकन विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता वृत्तियाँ प्रदान करके शैक्षिक समस्याओं पर डॉक्टरेट स्तर पर किए जा रहे अनुसंधान को पोषित किया जाता है। इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में सात कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता और आठ कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में डॉक्टरेट की उपाधि के लिए काम करते रहे।

सम्मेलन/संगोष्ठियाँ/व्याख्यान

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की व्याख्यानमाला के अंतर्गत नौ वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। उनके द्वारा दिए गए व्याख्यान विस्तृत विषयों से संबंधित थे। इन विख्यात

व्यक्तियों के नाम और जिन विषयों पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए थे, उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है। नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर सी० वी० रामन के जन्मोत्सव के सिलसिले में 6 नवम्बर 1982 को अनुसंधानकर्ताओं का एक सम्मेलन भी रा० शै० अ० और प्र० प० ने आयोजित किया।

क्र० सं०	वक्ता	विषय	तिथि
1.	डा० सी० गोपालन न्यूट्रीशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया नई दिल्ली	बच्चों की पोषण सम्बन्धी समस्याएँ	30 जून 1982
2.	डा० बी० एन० जोशी बम्बई	मन को लगाए रखने की वृत्ति पर शिक्षा	16 जुलाई 1982
3.	सुश्री बेटी ऐडम्स नेशनल फाउंडेशन फॉर एजुकेशनल रिसर्च	यूनाइटेड किंगडम में शैक्षिक अनुसंधान	2 और 3 अगस्त 1982
4.	डा० एस० रामकृष्ण तमिल विद्वान	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती	18 सितम्बर 1982
5.	डा० एम० एल० फरहत त्रिपॉल अलफतह विश्वविद्यालय	तीसरी दुनिया में सामाजिक विकल्प	24 सितम्बर 1982
6.	सुश्री एबन बाना मैक्स म्यूलर भवन, 3, कस्तूरबा मार्ग नई दिल्ली	रुडॉल्फ स्टीनर के दर्शन पर आधारित प्रभावी स्कूल प्रणाली	24 जनवरी 1983
7.	प्रो० डब्ल्यू० मिटर निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, फ्रैंकफुर्त	जर्मनी के विशेष संदर्भ में यूरोप में शैक्षिक अनुसंधान	5 मार्च 1983
8.	डा० श्रीमती देवकी जैन अध्यक्ष, सामाजिक अध्ययन न्यास नई दिल्ली	स्त्रियाँ : विकास और रोजगार	8 मार्च 1983
9.	डा० कुमारी सुशीला भान अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक शोध परिषद्, नई दिल्ली	स्त्रियाँ और विकास	8 मार्च 1983

शिक्षा में अनुसंधान का तीसरा सर्वेक्षण

शिक्षा में अनुसंधान के लिए परिषद् ने तीसरा सर्वेक्षण शुरू कर दिया है। भारतीय शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर भारत और विदेशों में किए गए लगभग 1600 शोध कार्यों के सारांश एकत्र किए जा चुके हैं। पांडुलिपि को प्रकाशनार्थ सम्पादित किया जा रहा है।

पूरी हुई शोध-परियोजनाएँ

वर्ष के दौरान पूर्ण की गई शोध परियोजनाएँ, प्रमुख निष्कर्षों के साथ नीचे दी जा रही है :

पूरी हुई परियोजनाएँ

क्र० सं०	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1	2	3
1.	गुजरात राज्य में कक्षा VII के छात्रों के लिए प्राथमिक स्कूल उपलब्धि-परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण	डा० जयंती भाई एच० शाह, भावनगर
2.	आंध्र प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा का अर्थशास्त्र	श्री बी० राजय्या, वारंगल
3.	प्राथमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण—एक प्रशिक्षण कार्यक्रम	डा० के० आदिनारायण गांधीग्राम
4.	माध्यमिक स्कूल शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का अध्ययन	डा० बी० के० पासी इंदौर विश्वविद्यालय
5.	राष्ट्रीय प्रतिभा चयन की कसौटी की पहचान के लिए अध्ययन	डा० (कुमारी) सुदेश गखर, चंडीगढ़
6.	राजस्थान के स्कूलों में कक्षा-उपलब्धि के अधिगम-परिवेश की विशेषताओं का अध्ययन	डा० रामपाल सिंह अजमेर
7.	पाँचवीं कक्षा को विज्ञान पढ़ाने में पारम्परिक विधियों की तुलना में शैक्षिक खिलौनों के इस्तेमाल की प्रभावकारिता का अध्ययन	श्री शंकरनारायण शास्त्री, हसन
8.	प्राथमिक स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ जाने वालों पर नॉन ग्रेडेड इकाइयों का प्रभाव	डा० जी० सुब्रह्मण्य पिल्लै, मदुरै

1	2	3
9.	माध्यमिक स्तर के पत्राचार संस्थानों के छात्रों से सम्बद्ध चरों का अध्ययन	डा० वी० एस० देवल दिल्ली
10.	दिल्ली और बम्बई के शहरी मिडिल और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए कामवाद पर अभिविन्यास कोर्स (दूसरी अवस्था)	श्रीमती के० निश्चल बम्बई
11.	कबाड़ की सहायता से सुधरी हुई सस्ती शिक्षण-सामग्री का निर्माण	श्री एन० के० श्रीवास्तव बाँसवाड़ा
12.	सामान्य स्कूलों में अपंग बच्चे	डा० ए० बी० पाठक उदयपुर
13.	सन् 1973 से 1977 के बीच बृहत्तर बम्बई और थाणा जिलों के म्यूनिसिपल और स्थानीय प्राधिकरण के स्कूलों की कक्षा I से VIII तक के, बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले बच्चों की इस प्रवृत्ति का अध्ययन	श्रीमती माधुरी शाह बम्बई
14.	मिर्जापुर के जनजातीय छात्रों की समस्याओं, आकांक्षाओं, जीवन मूल्यों और व्यक्तित्व पैटर्नों का अध्ययन	डा० एस० एस० श्रीवास्तव, वाराणसी
15.	पढ़ाई के लिए गाँवों से शहर जाने वाले देहाती छात्रों की सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ	डा० सुविमल देव कलकत्ता
16.	उड़ीसा के स्कूली बच्चों के बुद्धि-विकास का खुराक और वृद्धि से संबंध	डा० एस० पी० पटेल भुवनेश्वर
17.	प्राथमिक स्कूलों के बच्चों की पठन-उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों का गहन अध्ययन	प्रो० आर० श्रीनिवास राव, तिरुपति
18.	बच्चों के लिए आह्लाद के क्षण	प्रो० रामाधार सिंह कानपुर

1. गुजरात राज्य में कक्षा VII के छात्रों के लिए प्राथमिक स्कूल उपलब्धि-परीक्षणों [प्रा० स्कू० उ० प०] का निर्माण और मानकीकरण

प्रमुख अन्वेषक : डा० जयन्तीभाई एच० शाह

गुजरात सरकार ने चूँकि 7+5+2 शिक्षा प्रणाली को चलाने का निश्चय किया है इसलिए कक्षा VII पहली अवस्था का अंतिम बिंदु होगा। इसीलिए यह पता लगाने की

जरूरत है कि अगली अवस्था शुरू करने की सामर्थ्य इन छात्रों में आ गई है या नहीं। इस अध्ययन का लक्ष्य सातवीं कक्षा के छात्रों की वास्तविक सामर्थ्य आंकने के लिए प्राथमिक स्कूल उपलब्धि-परीक्षणों [प्रा० स्कू० उ० प०] का निर्माण और मानकीकरण है।

प्रा० स्कू० उ० प० अमरीकी प्रणाली के स्कूल अथवा कालेज योग्यता परीक्षण की शैली में बनाया गया है। परीक्षण में चार उप-परीक्षण शामिल हैं जो स्कूल अधिगम योग्यताओं को सीधे सीधे नापते हैं।

पहली दो जाँचों में, 90 छात्रों पर परीक्षण किए गए। तीसरी जाँच के लिए 200 बच्चों को लिया गया जिन्हें उप-परीक्षणों के लिए 75, 60, 80 और 50 के बहुवैकल्पिक मदों में बाँटा गया। चौथी जाँच में तीन जिलों के 12 स्कूलों के कक्षा VII के 399 छात्रों को चुना गया। इसके लिए हर उप-परीक्षण के वास्ते 25 मदों को लिया गया।

18 जिलों में से 10 जिलों के 52 स्कूलों को चुनने के लिए झुंड नमूना पद्धति अपनाई गई।

शहरी और अर्धशहरी क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों दोनों माध्यमों के बीच तथा शहरी और देहाती क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों दोनों माध्यमों के बीच उल्लेखनीय अंतर देखे गए। लेकिन अर्धशहरी और देहाती क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों दोनों माध्यमों के बीच के अंतर महत्वपूर्ण नहीं थे। अतएव, शहरी क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों के लिए अलग अलग आदर्श और अर्धशहरी तथा देहाती क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों के लिए मिले जुले आदर्श बनाए गए।

अंतर-परीक्षण विश्वसनीयता, प्रोडक्ट मोमेंट फार्मूला से निकाली गई। सभी सह-सम्बन्ध सकारात्मक थे और पर्याप्त रूप से बताते थे कि उप-परीक्षणों में कुछ समान कारक विद्यमान हैं। विश्वसनीयता के गुणांक 0.76 से 0.94 के बीच घटने-बढ़ने वाले थे। अभिपुष्टिकरण के लिए परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत लिया गया और अन्य मानकीकृत परीक्षणों तथा अध्यापकों की श्रेणी को लिया गया।

2. आंध्र प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा का अर्थशास्त्र

प्रमुख अन्वेषक : श्री वी० राजय्या

विकासशील देशों में सामाजिक परिवर्तन के पीछे शिक्षा का हाथ होता है। चूंकि लड़कियों की पढ़ाई पिछड़ी है इसलिए सामाजिक परिवर्तन भी पिछड़ा है। शिक्षा एक ऐसी पूंजी है जिसे बढ़ाना होगा। सन् 1956 में आंध्र प्रदेश के बन जाने के बाद, शिक्षा के लिए जागरूकता बढ़ी है, इस बात के प्रमाण में वे आंकड़े देखे जा सकते हैं जो प्राथमिक शिक्षा में

दाखिला लेने वालों के हैं। औसत नामांकन 69.49 प्रतिशत है। नामांकित लड़कियों का अनुपात भी बढ़ा है। इस बढ़ोत्तरी का औसत प्रतिशत 3.62 का है। सच बात तो यह है कि लड़कियों का नामांकन लड़कों की अपेक्षा तेजी से बढ़ा है।

सन् 1956-57 और 1978-79 के बीच स्कूलों की संख्या में 36.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। अवरोधन की दर कम होने से, प्राथमिक स्कूलों के उत्पादन और साक्षरता की दरों में ऊँचा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों की संख्या में वृद्धि होने से स्त्रियों की प्रतिभागिता बढ़ गई।

चूँकि उपभोग और निवेश के खर्चों को अलग-अलग कर पाना संभव नहीं हो सका, इसलिए मानव-निवेश की मात्रा को आंका नहीं जा सका। राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शिक्षा के खर्च के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा का खर्च बढ़ गया। राज्य की आमदनी 1606 प्रतिशत बढ़ी जबकि प्राथमिक शिक्षा का खर्च 776 प्रतिशत बढ़ा। लेकिन शिक्षा के कुल निवेश में प्राथमिक शिक्षा का हिस्सा इस अवधि में घट गया। प्रति छात्र औसत वार्षिक खर्च लगभग दस गुना बढ़ गया। सभी कक्षाओं में शैक्षिक क्षय कम होता गया। लड़कों के मुकाबले लड़कियों में पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना बन्द कर देने की प्रवृत्ति कहीं ज्यादा दिखी। लड़कियों, और अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के बच्चों में वार्षिक क्षय की आवर्ती दर ज्यादा थी। अनुसूचित जनजाति के बच्चों में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर शैक्षिक क्षय की घटनाएँ सबसे ज्यादा घटीं। चूँकि प्राथमिक शिक्षा प्रणाली के लिए यह संभव न हो सका कि स्कूल जाने की उम्र वाले सभी बच्चों को संभाल पाता, इसलिए स्कूल-छोड़ने वालों की संख्या बढ़ी।

आंध्र प्रदेश के विभिन्न जिलों में साक्षरता की दरों में काफी अंतर है। इनमें तेलंगाना क्षेत्र शैक्षिक दृष्टि से सबसे ज्यादा पिछड़ा हुआ है।

3. प्राथमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण—एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रमुख अन्वेषक : डा० के० आदिनारायण

इस अध्ययन ने प्राथमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण की विधियाँ बनाने की कोशिश की। इसके विशिष्ट उद्देश्य थे—(i) प्रारम्भिक विज्ञान के शिक्षण में निपुणताओं वाले क्षेत्रों की पहचान करना; (ii) शिक्षक में अपेक्षित निपुणता पर आधारित प्रारम्भिक विज्ञान के कोर्स का मूल्यांकन करना; (iii) छात्रों की निरीक्षण और जिज्ञासा की वृत्तियों के लिए निकष तैयार करना; (iv) शिक्षकों के लिए शिक्षण-साधनों के पैकेज तैयार करना; तथा (v) इन पैकेजों के लाभों और प्रभावों का पता लगाना।

कक्षा IV और V के लिए तमिलनाडु की सरकार द्वारा स्वीकृत विज्ञान-पाठ्यचर्या की दो इकाइयाँ शिक्षण के लिए चुनी गई। प्रायोगिक विधि और पारम्परिक विधि से पढ़ाने के

लिए अलग अलग शिक्षण-पैकेज बनाए गए। प्रायोगिक विधि की कक्षा-गतिविधियों में विचार विमर्श, प्रदर्शन-शिक्षण आदि शामिल हैं जबकि पारम्परिक विधि में केवल लेक्चर व प्रदर्शन हैं। कक्षा के बाहर की गतिविधियां दोनों विधियों में समान हैं। दोनों विधियों की प्रभाव-कारिता की तुलना ज्ञान, बोध, निरीक्षण, जिज्ञासा और खोज की प्रवृत्ति के लिए हुए परीक्षण के आधार पर की गई। इस अध्ययन के लिए मदुरै जिले के अथूर पंचायत केन्द्र से सात ग्रामीण स्कूल और तीन अर्धशहरी स्कूल रैंडम सैम्पलिंग के आधार पर प्रयुक्त हुए थे।

कक्षा में पढ़ाने वाले अड़तालीस शिक्षकों को चुना गया था जिनमें से प्रायोगिक वर्ग को पढ़ाने वाले चौबीस शिक्षकों को कार्यक्रम के उद्देश्यों, विषय वस्तु के विश्लेषण, पढ़ाने की विधियों, तथा तकनीकों, मूल्यांकन की विधियों, कक्षा के आयोजन, परीक्षणों के संयोजन, पढ़ाते समय शिक्षक की भूमिका और प्रदर्शनों में अनुकूलित किया गया। नमूने के लिए 760 छात्रों को लिया गया था जिन्हें हर स्कूल में उम्र, मानसिक क्षमता और विज्ञान की पृष्ठभूमि-परीक्षा के आधार पर बराबर बराबर दलों में बांट दिया गया था। हर दल की परीक्षण-पूर्व एवं परीक्षणोत्तर निष्पत्तियों को देखने के लिए परीक्षण किए गए थे। समग्र निष्पत्ति को निरीक्षण, जिज्ञासा एवं खोज की प्रवृत्ति के आधार पर जांचा गया। विज्ञान के कार्यकलापों की प्रतिक्रिया को एक प्रतिक्रिया-मानदंड से मापा गया जिसे अन्वेषक ने बनाया था।

परिणाम इस प्रकार रहे—(i) प्रायोगिक वर्ग की निपुणताओं के विकास में उल्लेखनीय अंतर था; (ii) पारम्परिक विधि वाले छात्रों की तुलना में प्रायोगिक वर्ग के नौ स्कूलों के कक्षा IV के छात्रों और सात स्कूलों के कक्षा V के छात्रों में ज्ञान और बोध की वृद्धि देखी गई; (iii) निरीक्षण-कौशल के मामले में प्रायोगिक वर्ग के नौ स्कूलों के कक्षा IV के छात्रों और ग्यारह स्कूलों के कक्षा V के छात्रों में उल्लेखनीय सुधार देखा गया; (iv) प्रायोगिक वर्ग के ग्यारह स्कूलों की हर कक्षा में खोज की वृत्तियों में उल्लेखनीय विकास देखा गया; (v) प्रायोगिक वर्ग के दस स्कूलों के कक्षा IV के छात्रों और सात स्कूलों के कक्षा V के छात्रों में जिज्ञासा वृत्ति कौशल को उल्लेखनीय रूप से बढ़ते हुए देखा गया; एवं (vi) प्रायोगिक वर्ग के छात्र विज्ञान की गतिविधियों के अत्यधिक इच्छुक थे।

4. माध्यमिक-स्कूल-शिक्षकों की शिक्षण-योग्यता का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० बी० के० पासी

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के जनसांख्यिकीय चरों (लिंग और उम्र) एवं शिक्षण-योग्यता के संबंध का अध्ययन; (ii) माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के अन्य पूर्वबोध चरों (शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति, शिक्षण में रुचि,

अपने शिक्षण व्यवहार की आत्म संकल्पना, और मेधा) एवं शिक्षण-योग्यता के संबंध का अध्ययन; (iii) माध्यमिक भाषा शिक्षकों की शिक्षण-योग्यता एवं उत्पाद चरों (शैक्षणिक उपलब्धि और शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार का उनके छात्रों द्वारा पसंद किया जाना) के संबंध का अध्ययन; (iv) माध्यमिक स्तर पर हिन्दी/अंग्रेजी के शिक्षण के लिए अपेक्षित किसी एक शिक्षण-योग्यता के लिए शिक्षण-सामग्री बनाना; और (v) शिक्षण-योग्यता के विकास पर उसके प्रभाव का अध्ययन।

जिन पूर्व कल्पनाओं का परीक्षण किया जाना था, वे थीं -- (i) भाषा (हिन्दी/अंग्रेजी) पढ़ाने वाले माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों व शिक्षिकाओं की शिक्षण-योग्यताओं में ज्यादा अंतर नहीं होता; (ii) भाषा पढ़ाने वाले माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की उम्र का उनकी शिक्षण-योग्यता अथवा अपने शिक्षण के प्रति उनकी अभिवृत्ति के साथ कोई विशेष संबंध नहीं होता; (iii) शिक्षण में भाषा-शिक्षक की रुचि और उसकी शिक्षण-योग्यता के बीच कोई विशेष संबंध नहीं होता; (iv) शिक्षक/शिक्षिका की आत्मसंकल्पना का उसकी शिक्षण योग्यता के साथ कोई विशेष संबंध नहीं होता; (v) माध्यमिक स्तर के भाषा-शिक्षक की मेधा का शिक्षक की शिक्षण-योग्यता के साथ कोई विशेष संबंध नहीं होता; (vi) माध्यमिक स्कूल स्तर के भाषा-शिक्षक की शिक्षण-योग्यता और उसके छात्रों द्वारा उसके शिक्षण-व्यवहार के पसंद किए जाने के बीच कोई विशेष संबंध नहीं होता; (vii) माध्यमिक स्कूल स्तर के भाषा-शिक्षक की शिक्षण-योग्यता और उसके छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई विशेष संबंध नहीं होता; (viii) विकसित की गई शिक्षण-सामग्री के द्वारा किसी एक शिक्षण-योग्यता के अभ्यास से शिक्षकों की शिक्षण-योग्यता में सुधार होगा, और (ix) विकसित की गई शिक्षण-सामग्री के द्वारा शिक्षण-योग्यता के अभ्यास से शिक्षकों की भाषा-शिक्षण की योग्यता में सुधार होगा।

अध्ययन की विवरणात्मक अवस्था के मार्गदर्शी अध्ययन के लिए शिक्षण-अधिगम स्थितियों के 72 नमूने लिए गए। इनमें कक्षा IX, X और XI के 36 भाषा-शिक्षक और उनके छात्र शामिल हैं। अध्ययन की विवरणात्मक अवस्था के अंतिम अध्ययन के लिए कक्षा में 556 शिक्षण-अधिगम स्थितियों का निरीक्षण किया गया। कुल मिला कर 107 शिक्षकों को इस अध्ययन में शामिल किया गया जिनमें से 48 शिक्षक हिन्दी पढ़ाने वाले थे और 59 शिक्षक अंग्रेजी पढ़ाने वाले। ये शिक्षक इंदौर जिले के 38 माध्यमिक स्कूलों में कक्षा IX, X और XI के छात्रों को पढ़ाते थे। अपने शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार की पसंदगी-नापसंदगी के लिए 9360 छात्रों से आधार सामग्री एकत्र की गई। हिन्दी में उपलब्धि-परीक्षण कक्षा IX के 766 छात्रों पर किया गया। शिक्षण-सामग्री के मान्यकरण के उद्देश्य से, शिक्षण-विषय के रूप में हिन्दी लेने वाले 28 विद्यार्थी-शिक्षकों को चुना गया था जिनको दो वर्गों में बाँट कर, चौदह-चौदह विद्यार्थी-शिक्षकों का प्रायोगिक और पारम्परिक वर्ग बना दिया गया था।

जिन विभिन्न उपकरणों को प्रयुक्त किया गया वे थे—ग्रेवाल का शिक्षक-अभिवृत्ति-मानदंड, ग्रेवाल की शिक्षक-रुचि-सूची, रैवेन की स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज, रामा का स्वयं-

निर्धारण शिक्षक मानदंड, रामा का छात्र पसंदगी का मानदंड। कक्षा-निरीक्षण तालिका और हिन्दी का उपलब्धि-परीक्षण अन्वेषक ने बनाया था। आधार-सामग्री का विश्लेषण अनेक पद्धतियों की सहायता से किया गया था।

परिणाम ये थे—(1) उन्नीस शिक्षण-योग्यताओं को पहचाना गया जो इस प्रकार हैं : (i) कार्यभार देना, (ii) सस्वर पठन, (iii) पठन, (iv) प्रश्न पूछना, (v) पाठ-परिचय, (vi) कक्षा सँभालना, (vii) स्पष्टीकरण, (viii) गौण सस्वर पठन, (ix) ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल, (x) प्रबलन का प्रयोग, (xi) दुहराव बचाते हुए गति निर्धारण, (xii) पाठ समेकित करना, (xiii) छात्रों की प्रतिक्रियाओं को समझना, (xiv) छात्रों का व्यवहार सुधारना, (xv) श्रवणीयता, (xvi) गौण प्रबलन का प्रयोग, (xvii) छात्रों के ध्यान व्यवहार को पहचानना, (xviii) शाब्दिक रूप प्रस्तुत करना। (2) भाषा शिक्षक और शिक्षिका की योग्यता में कोई अंतर नहीं था। (3) माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले भाषा शिक्षकों की उम्र और उनकी शिक्षण-योग्यता के बीच उल्लेखनीय सकारात्मक सहसम्बन्ध था। (4) माध्यमिक स्तर पर हिन्दी/अंग्रेज़ी पढ़ाने वाले भाषा-शिक्षक की अभिरुचि, मेधा और शिक्षण-योग्यता के बीच कोई उल्लेखनीय संबंध नहीं था। (5) माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले भाषा-शिक्षकों की आत्म-संकल्पना और उनकी शिक्षण-योग्यता के बीच उल्लेखनीय ऋणात्मक सहसम्बन्ध था। (6) कक्षा IX के हिन्दी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और उन के शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार की पसंदगी तथा शिक्षक की शिक्षण-योग्यता के बीच उल्लेखनीय सकारात्मक सहसम्बन्ध था। (7) पारम्परिक विधि वाले विद्यार्थी-शिक्षकों की तुलना में प्रायोगिक विधि वाले विद्यार्थी-शिक्षकों की सस्वर पठन योग्यता उल्लेखनीय रूप से अधिक थी। माइक्रोटीचिंग की शिक्षण-सामग्री के द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रशिक्षण ने उनकी बोधात्मक योग्यता, संवेगात्मक योग्यता और सस्वर पठन की व्यवहारात्मक योग्यता को सुधारा। (8) पारम्परिक विधि वाले विद्यार्थी-शिक्षकों की तुलना में प्रायोगिक विधि वाले विद्यार्थी-शिक्षकों की वास्तविक कक्षा परिस्थिति में सस्वर पठन योग्यता प्रशिक्षण के बाद उल्लेखनीय रूप से अधिक सुधरी। (9) वास्तविक कक्षा परिस्थिति में भाषा-शिक्षण-योग्यता की दृष्टि से, प्रायोगिक विधि वाले और पारम्परिक विधि वाले विद्यार्थी-शिक्षकों की योग्यता में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं था।

5. राष्ट्रीय प्रतिभा चयन की कसौटी की पहचान के लिए अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० (कुमारी) सुदेश गक्खर

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) बुद्धिवादी व्यक्तित्व और राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की प्रक्रियाओं में निष्पत्ति के साथ प्रेरक चरों के सम्बन्ध का अध्ययन करना; (ii) प्रतिभावान छात्रों के चयन के लिए सर्वश्रेष्ठ निकष के रूप में काम आने वाले चरों के परिणामों का

मूल्यांकन करना; (iii) रा० प्र० खो० योजना में सफल और असफल वर्गों से सम्बद्ध चरों की विभिन्नताओं वाली किस्मों का अध्ययन करना।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज-योजना में सफल होने वालों और असफल रहने वालों के उल्लेखनीय अंतरों के सम्भाव्य चरों की पहचान करने के लिए विसंगति की विश्लेषण पद्धति अपनाई गई। इकतीस स्वतंत्र चरों में मेधा के दो, सृजनात्मकता के पाँच, व्यक्तित्व के सोलह, रुचि क्षेत्रों के दस अपवर्तक, एस० ई० एस० की पाँच इंडाइसेज और वैज्ञानिक अभिरुचि तथा उपलब्धि प्रेरकता के एक एक स्कोर शामिल हैं। आश्रित चर में हैं रा० प्र० खो० परीक्षा के तीन प्रकार के स्कोर (शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण, सामान्य मानसिक योग्यता और साक्षात्कार)।

नमूने केवल दिल्ली से लिए गए थे और उन्हें चार वर्गों में बाँटा गया था। वर्ग I—प्रतिभा छात्रवृत्ति पाने में सफल छात्र। वर्ग II—साक्षात्कार तक पहुँचने लेकिन उसमें असफल रहने वाले छात्र। वर्ग III—जो लिखित परीक्षा में भी उत्तीर्ण न हो सके। वर्ग IV—जो परीक्षा तक में नहीं बैठे।

इसमें इन परीक्षणों को प्रयुक्त किया गया था (i) सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण (हिन्दी में): जलोटा; (ii) स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज; (iii) रचनात्मक चिंतन वाले टोरेंस परीक्षण; (iv) वैज्ञानिक अभिरुचि परीक्षण : माइकेल, फोर्ड; (v) उपलब्धि प्रेरक परीक्षण और सूची : प्रयाग मेहता; (vi) ईसनेक पर्सनैलिटी इंवेंटरी; (vii) जूनियर सीनियर हाई स्कूल पर्सनैलिटी क्वेश्चनेयर; (viii) सामाजिक-आर्थिक मानदंड : देव-मोहन; और (ix) रा० शै० अ० और प्र० प० की रुचि-सूची का अनुकूलन।

परिणामों से पता चला कि (i) साक्षात्कार में सफल या असफल रहने वाले छात्रों में मौखिक और अमौखिक मेधा तथा रचनात्मकता के चरों की दृष्टि से कोई अंतर नहीं था। सफल छात्र अधिक विचारशील और सक्रिय थे। (ii) लिखित परीक्षा में असफल रहने वालों की तुलना में छात्रवृत्ति पाने वाले छात्र अमौखिक मेधा, रचनात्मकता की नम्यता और मौलिकता में बेहतर थे जबकि असफल छात्र मौखिक मेधा, अर्थशास्त्रीय रुचि और बाहर के क्रियाकलापों में बेहतर थे। (iii) अमौखिक मेधा, मौखिक रचनात्मकता और वैज्ञानिक अभिरुचि के क्षेत्रों में परीक्षा में न बैठने वालों की तुलना में छात्रवृत्ति पाने वालों ने अधिक नम्बर पाए। जबकि परीक्षा में न बैठने वालों ने बाहर की गतिविधियों, अर्थशास्त्र और अमौखिक रचनात्मकता में बेहतर कर दिखाया। (iv) मौखिक रचनात्मकता और वैज्ञानिक अभिरुचि के क्षेत्र में, लिखित परीक्षा में असफल रहने वाले छात्रों की तुलना में साक्षात्कार में असफल रहने वालों ने बेहतर कर दिखाया हालाँकि दोनों ही वर्ग मेधावान थे। (v) रा० प्र० खो० परीक्षा में चयन की कसौटी के सम्भाव्य चर ये लगते हैं : अमौखिक मेधा, मौखिक

रचनात्मकता के चारों आयाम, वैज्ञानिक अभिरुचि और प्रवृत्ति तथा बाहरी क्रियाकलाप। (vi) साक्षात्कार के नम्बरों के साथ मौखिक मेधा उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक तौर पर सहसंबंधित थी जबकि साक्षात्कार के नम्बरों के साथ अमौखिक मेधा उल्लेखनीय रूप से ऋणात्मक तौर पर सहसंबंधित थी। (vii) परिवार का शैक्षिक स्तर साक्षात्कार के नम्बरों के साथ उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक तौर पर सहसंबंधित था।

6. राजस्थान के स्कूलों में कक्षा-उपलब्धि के अधिगम-परिवेश की विशेषताओं का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० रामपाल सिंह

इस अध्ययन के उद्देश्य थे : (i) छात्रों की शैक्षणिक सफलता और सामान्य कक्षा व्यवहार के साथ सामाजिक-संवेगात्मक कक्षा वातावरण के सम्बन्ध का अध्ययन करना; (ii) गाँव और शहर के स्कूलों के कक्षा वातावरण के पैटर्नों और स्कूल अधिगम पर उनके प्रभावों को पहचानना एवं विश्लेषित करना; (iii) शिक्षक के पुरुष या स्त्री होने की विशेषता के प्रभावों को पहचानने के लिए शिक्षक और शिक्षिका द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं के सामाजिक-संवेगात्मक वातावरणों की तुलना करना; (iv) छात्रों की दृष्टि में शिक्षकों के कक्षा-व्यवहार और कक्षा के सामाजिक-संवेगात्मक वातावरण के बीच के अंतर-सम्बन्ध का अध्ययन करना; (v) उच्च और निम्न उपलब्धियों वाली कक्षाओं में विद्यमान सामाजिक-संवेगात्मक वातावरणों की तुलना करना; (vi) सहपाठियों की दृष्टि में छात्रों के व्यवहार-विकास को मापने के लिए एक सोश्यो-मीट्रिक टेस्ट बनाना।

तेईस मदों वाली छात्र-सूचना-तालिका से उच्च और निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की आत्म संकल्पना को आँका गया; आदतों, विचारों, बोधात्मक पक्षों और शारीरिक विशेषता जैसी व्यक्तित्व-विशेषताओं को छात्रों के पाँच सूत्रीय निर्धारणों द्वारा मापा जा सका। स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज़ और जलोटा के मानसिक योग्यता परीक्षण की सहायता से छात्रों की मेधा के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। कुप्पुस्वामी के सोश्यो-इकोनोमिक स्टेटस स्केल के प्रथम संस्करण की मदद से सामाजिक और स्कूली जीवन में छात्रों की स्थिति पता की गई। स्पॉलडिंग के कोपिंग एनालिसिस शेड्यूल के आधार पर दस क्षेत्रों को समाहित करने वाली छात्रों की कक्षा व्यवहार सूची बनाई गई। अजमेर शहर के नमूने के 500 छात्रों पर जाँचा गया, सभी आयामों का विश्वसनीयता-गुणांक 0.77 था। छात्रों की दृष्टि में कक्षा वातावरण को मापने के लिए एंडर्सन और वेलबर्ग की अधिगम वातावरण सूची का इस्तेमाल किया गया। राजस्थान के 15 हायर सेकंडरी स्कूलों, पब्लिक स्कूलों और सेंट्रल हायर सेकंडरी स्कूलों के कक्षा XI के उन छात्रों में से जो राजस्थान की 1979 की सेकंडरी परीक्षा में बैठे थे, पाँच सर्वश्रेष्ठ और पाँच सबसे कमजोर छात्रों को नमूने के तौर पर लिया गया। टी टेस्ट

और विसंगति का बिश्लेषण किया गया । सहसम्बन्ध के प्रोडक्ट मोमेंट गुणांक से पता चला कि चरों में सम्बन्ध है । आंशिक सहसम्बन्ध की मदद से, मेधा और सामाजिक-आर्थिक स्तर जैसे मध्यवर्ती चरों के प्रभावों को निकाला गया । समाश्रयण विश्लेषण ने चरों की शक्ति बताने में मदद की । विश्लेषण के उद्देश्य से वैयक्तिक स्कोर्स और स्कूल मीन्स को इकाई माना गया ।

अध्ययन से पता चला कि (i) छात्रों की उपलब्धि स्कूल की श्रेणी से संबंधित थी । (ii) प्राइवेट स्कूलों, खास कर मिशन स्कूलों में उच्च उपलब्धि वाले छात्र थे । (iii) सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सम्बन्ध था, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले छात्र उच्च उपलब्धि में असफल रहे । (iv) शिक्षकों की तुलना में शिक्षिकाओं ने उल्लेखनीय रूप से बेहतर उपलब्धि दिखाई । (v) कक्षा-वातावरण ने उल्लेखनीय रूप से छात्रों की उपलब्धि को प्रभावित किया, कक्षा के बुरे वातावरण ने छात्रों की उपलब्धि को कम कर दिया । (vi) हालाँकि गाँव के स्कूलों में पढ़ाई का वातावरण था, फिर भी खराब उपलब्धि वाले स्कूल गाँवों में ही थे । (vii) सामाजिक-संवेगात्मक वातावरण ने न केवल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित किया, अपितु उसने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बारे में विश्वसनीय रूप से बताया । (viii) कक्षा-वातावरण ने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ उनके कक्षा-व्यवहार से सम्बन्धित कार्यकलाप को भी प्रभावित किया ।

7. पाँचवीं कक्षा को विज्ञान पढ़ाने में पारम्परिक विधियों की तुलना में शैक्षिक खिलौनों के इस्तेमाल की प्रभावकारिता का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : श्री शंकरनारायण शास्त्री

परिकल्पना थी कि (i) शैक्षिक खिलौनों द्वारा विज्ञान पढ़ाना उतना पुरअसर नहीं होगा जितना कि पारम्परिक विधियों से हो सकता है; और (ii) शैक्षिक खिलौनों के माध्यम से विज्ञान-शिक्षण ज्ञानबोध को आसानी से नहीं बढ़ा सकता ।

अध्ययन के लिए, प्राथमिक स्कूल विज्ञान पाठ्यचर्या में सम्मिलित किसी न किसी अवधारणा पर आधारित खिलौनों, माडलों अथवा चित्रों का इस्तेमाल किया गया ।

कर्नाटक के एक प्राथमिक स्कूल की कक्षा V के दो सेक्शनों को लिया गया । एक वर्ष के लिए, प्रायोगिक वर्ग के रूप में एक सेक्शन को खिलौनों के माध्यम से विज्ञान पढ़ाया गया । इसके लिए कुछ खिलौने शिक्षक/अन्वेषक ने बनाए और कुछ स्थानीय बाजार से लिए गए या बच्चों के घरों से लाए गए । खिलौनों का चुनाव इस दृष्टि से किया गया कि वे भौतिकी, रसायन विज्ञान, और जीव विज्ञान की अवधारणाओं से कितने सम्बन्धित हैं । एक

ही शिक्षक ने दोनों वर्गों को पढ़ाया ताकि किसी किस्म का अंतर न रहे। इस शिक्षक को खिलौनों द्वारा विज्ञान पढ़ाने के लिए अभिविन्यस्त किया गया था। कक्षा में बच्चों को खेलने के लिए चुने हुए खिलौने बाँट दिए जाते थे। इसके बाद शिक्षक बच्चों से बातचीत करता था जो खिलौनों के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित होती थी।

एक प्रश्नावली, निरीक्षणों और परीक्षा के प्राप्तांकों की मदद से आधार-सामग्री एकत्र की गई।

खोज-परिणामों से पता चला कि (i) पारम्परिक विधि वाले वर्ग की तुलना में प्रायोगिक वर्ग के छात्रों ने पूर्व-परीक्षण में बेहतर कर दिखाया। लेकिन दोनों वर्गों में पूर्व-परीक्षण में उत्तीर्ण लोगों की संख्या बराबर थी, शायद इस कारण कि अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें नई विधि का आभास हो गया था। (ii) दोनों वर्गों के स्कूल में प्राप्तांकों की तुलना करने पर पाया गया कि प्रायोगिक वर्ग के प्राप्तांकों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। (iii) प्रारम्भ में प्रायोगिक वर्ग में खिलौने के इस्तेमाल के कारण, पारम्परिक वर्ग की तुलना में अधिक समय लगा, लेकिन आगे चल कर उसकी पढ़ाई तेजी से और आसानी से आगे बढ़ी। (iv) प्रायोगिक वर्ग के छात्रों में विज्ञान की पढ़ाई के प्रति अभिरुचि का विकास देखा गया। (v) प्रायोगिक वर्ग के छात्रों और शिक्षक के बीच अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध बढ़ते हुए दिखे। (vi) स्कूल में पहले अथवा अंतिम घंटे में विज्ञान पढ़ाने पर प्रायोगिक वर्ग के छात्रों ने अधिक रुचि दिखाई।

8. प्राथमिक स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ जाने वालों पर नॉन ग्रेडेड इकाइयों का प्रभाव

प्रमुख अन्वेषक : जी० सुब्रह्मण्य पिल्लै

इस अध्ययन के लक्ष्य थे––(i) प्राथमिक शिक्षा में शैक्षिक अपक्षय को कम से कम करने के लिए नॉन ग्रेडेड इकाइयों के परिणामों को कूतना; (ii) नॉन ग्रेडेड इकाइयों के बारे में शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को जानना; (iii) नॉन ग्रेडेड प्राथमिक स्कूलों में व्यवहृत अभ्यासों को पहचानना; और (iv) कक्षा I, II व III में उपलब्ध सुविधाओं का पता लगाना।

निम्नलिखित पूर्व-कल्पनाओं को जाँचा गया—(i) प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने की प्रवृत्ति को कम करने में नॉन ग्रेडेड इकाइयों ने सहायता पहुँचाई है; (ii) नॉन ग्रेडेड इकाइयों को शिक्षकों ने पसंद किया है; (iii) स्कूलों में नॉन ग्रेडेड इकाइयों के मुख्य अंगों को चलाया गया है; और (iv) स्कूलों में नॉन ग्रेडेड इकाइयों को लागू करने के लिए समुचित सुविधाएँ प्रदान की गई हैं।

तमिलनाडु के मदुरै, रामनाद, तिरुनेलविली और कन्याकुमारी जिलों से नमूने के 150 प्राथमिक स्कूलों के 875 शिक्षकों को नमूने के तौर पर चुना गया। नामांकन खोज प्रपत्र, नॉन ग्रेडेड इकाई प्रतिक्रिया मानदंड और इस अध्ययन के लिए बनाई गई साक्षात्कार तालिका की मदद से आधार सामग्री एकत्र की गई।

परिणाम बताते है कि (i) तमिलनाडु के प्राथमिक स्कूलों में लाई गई नॉन ग्रेडेड इकाइयों ने पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने की प्रवृत्ति को बहुत कम करने में सहायता दी है; (ii) शिक्षकों ने नॉन ग्रेडेड इकाइयों को पसंद किया है; (iii) व्यक्तियों या छोटे वर्गों को न पढ़ाकर पूरी कक्षा को ही एक साथ पढ़ाया गया है; (iv) प्रतिभा और रुचि का ध्यान रखकर कार्यभार नही दिया गया है; (v) न तो छात्रों की व्यक्तिगत प्रगति का रेकार्ड रखा गया, न ही लगातार परीक्षण किए गए; (vi) नॉन ग्रेडेड प्रणाली के लिए अधिकांश शिक्षकों का अभिविन्यास नहीं किया गया; (vii) इस प्रणाली के आने से छात्रों का निष्पादन सुधरा हैं, इस बात को मानने के लिए शिक्षक तैयार नहीं थे; (viii) कक्षा I, II व III को एक इकाई नहीं माना गया क्योंकि हर कक्षा के लिए अलग-अलग समय सारिणी बनी थी; (ix) जो प्रतिभावान बच्चे अपना काम जल्दी कर लेते थे उन्हें अतिरिक्त काम नहीं दिया गया। न ही छात्रों की प्रतिभा और रुचियों का विशेष ध्यान ही रखा गया; (x) कक्षा III से IV में जाने के लिए चूंकि 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक थी, इसलिए मई 1981 में कक्षा IV में केवल 45.76 प्रतिशत छात्र ही जा पाए; (xi) इस प्रणाली के आने से कक्षा III में स्थिरीकरण बढ़ा; और (xii) इससे सम्बद्ध शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों की दुश्चिता बढ़ी क्योंकि इस प्रणाली में अभिप्रेरण का अभाव है।

9. माध्यमिक स्तर के पत्राचार संस्थानों के छात्रों से सम्बद्ध चरों का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० ओ० एस० देवल

सबसे पहले पत्राचार पाठ्यक्रम उच्च शिक्षा के स्तर पर चलाए गए थे ताकि शिक्षा का प्रसार नियमित हो सके और रोजगार से लगे लोगों के लिए शिक्षा सुलभ हो सके। स्कूल स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम सन् 1964 में ही शुरू किया जा सका ताकि प्राइवेट छात्रों का शैक्षणिक स्तर सुधर सके। ऐसे पाठ्यक्रमों को शुरू करने वाले चार संस्थान हैं—भोपाल स्थित मध्य प्रदेश बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन; दिल्ली का पत्राचार विद्यालय; अजमेर का बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन, राजस्थान; और उड़ीसा का बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन।

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) पत्राचार संस्थानों में छात्रों के वितरण को समझना; और (ii) पत्राचार शिक्षा की विभिन्न उप-प्रणालियों के लिए छात्रों की प्रति-

क्रियाओं का अध्ययन जैसे कि पाठ्यक्रम का कठिन या सरल होना, पढ़ाई के लिए समय का कम या पर्याप्त होना, फ़ीस का कम या ज्यादा होना।

चारों संस्थाओं में पंजीकृत हुए 3,000 छात्रों में से, दिल्ली, भोपाल और अजमेर के संस्थानों से नमूने के लिए 80 छात्रों को लिया गया। चूँकि उड़ीसा के बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन से पूरी आधार सामग्री नहीं मिल सकी, इसलिए उसे अध्ययन से बाहर कर दिया गया। छात्रों के बारे में जानकारी और पत्राचार शिक्षा के लिए उनकी प्रतिक्रियाओं का पता लगाने के लिए एक प्रश्नावली बनाई गई। छात्रों की उम्र, लिंग, आमदनी, परीक्षा माध्यम, राज्यवार प्रतिनिधित्व, अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति के होने न होने के बारे में जानकारी एकत्र की गई। साथ ही कोर्स के कठिन अथवा सरल होने, पढ़ाई के समय, डाक की स्थिति, पाठों की एकरूपता, व्यक्तिगत सम्पर्क की उपयोगिता, फीस और व्यक्तिगत पत्र व्यवहार के बारे में उनकी प्रतिक्रियाओं को भी एकत्र किया गया।

परिणामों से पता चला कि (i) स्त्रियों का पंजीकरण सबसे ज्यादा दिल्ली में (25 प्रतिशत) और सबसे कम राजस्थान में (2.2 प्रतिशत) हुआ; (ii) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति का पंजीकरण बहुत कम हुआ, वस्तुतः दिल्ली में कोई भी अनुसूचित जनजाति की छात्रा न थी और राजस्थान में अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की किसी भी छात्रा ने पंजीकरण नहीं कराया था; (iii) तीनों संस्थानों के अधिकांश छात्र 18-21 वयक्रम के थे; (iv) अधिकांश छात्र निम्न और मध्यम आयवर्ग के थे, केवल 5.3 प्रतिशत छात्र ऐसे परिवारों के थे जिनकी आमदनी 12,000 रुपये साल की या उससे अधिक की थी; (v) दिल्ली के पत्राचार विद्यालय में सबसे अधिक संख्या दिल्ली वालों की थी (89.4 प्रतिशत), जबकि हरियाणा, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु का प्रतिनिधित्व क्रमशः 2.2, 2.6 एवं 1.5 प्रतिशत का था, राजस्थान बोर्ड में सभी पंजीकरण राजस्थान वालों का था किन्तु मध्य प्रदेश बोर्ड में कम ही छात्र मध्य प्रदेश के थे, वहाँ सबसे अधिक छात्र क्रमशः हरियाणा, राजस्थान, केरल और पंजाब के थे; (vi) राजस्थान बोर्ड के सभी छात्रों ने हिन्दी माध्यम मांगा, जबकि अंग्रेजी की माँग मध्य प्रदेश में 32.5 प्रतिशत छात्रों की ओर से और दिल्ली में 8 प्रतिशत की ओर से आई; (vii) हालाँकि अधिकांश छात्रों ने कोर्स को सामान्य कठिनाई वाला माना, दिल्ली का कोर्स अधिक कठिन माना गया क्योंकि वह अखिल भारतीय स्तर का था; (viii) अधिकांश छात्रों ने सप्ताह में 13 से 24 घंटों की पढ़ाई की और रविवार को सबसे ज्यादा पढ़ा; (ix) हर संस्थान के छात्रों ने अंग्रेजी को सबसे कठिन विषय माना, मध्य प्रदेश और राजस्थान के छात्रों ने अंग्रेजी के बाद वाणिज्य को सबसे कठिन विषय समझा और दिल्ली के छात्रों के लिए गणित सबसे कठिन विषय रहा; (x) अधिकांश छात्रों के लिए पाठ स्वयं-सम्पूर्ण नहीं थे, गणित, अर्थशास्त्र और वाणिज्य के मुकाबले अंग्रेजी के लिए यह बात ज्यादा महसूस की गई; (xi) आधे छात्रों ने व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम पर ध्यान नही दिया और केवल 30 प्रतिशत ने उसके एक हिस्से पर

ध्यान दिया; (xii) जिन आधे छात्रों ने सम्पर्क कार्यक्रम पर ध्यान दिया था उन्होंने उसे किसी काम का न समझा; (xiii) उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन से कोई भी छात्र संतुष्ट न था, इसके अलावा मध्य प्रदेश के छात्र उत्तर पुस्तिकाओं के लौटाए जाने के लिए, लिए जाने वाले समय से असंतुष्ट थे; और (xiv) छात्रों द्वारा पूछे जाने वाले सामान्य प्रश्नों का उत्तर तो दिया जाता था किंतु अधिकांश असामान्य प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते थे।

10. दिल्ली और बम्बई के शहरी मिडिल और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए कामवाद पर अभिविन्यास कोर्स (दूसरी अवस्था)

प्रमुख अन्वेषक : श्रीमती के० निश्चल

अध्ययन की इस दूसरी अवस्था में दिल्ली के शहरी मिडिल और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों की वर्तमान मनोवृत्ति को बदलने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम के निर्माण का प्रयत्न किया गया। अध्ययन ने यह पता लगाने की कोशिश की कि अभिविन्यास कार्यक्रम कक्षा में वयस्क सेक्स भूमिकाओं और व्यवहार की दिशा में शिक्षकों की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन लाने में सफल हो सका या नहीं।

अध्ययन की पहली अवस्था में दिल्ली और बम्बई के शिक्षकों की मनोवृत्ति का अध्ययन किया गया था। उस अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह तय किया गया कि अध्ययन को सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के हिन्दू शिक्षकों (पुरुष) तक ही सीमित रखना चाहिए। अभिविन्यास कार्यक्रम के लिए एक सरकारी (केवल पुरुष) और एक गैर सरकारी (सहशिक्षा) स्कूल के दस-दस शिक्षकों को नमूने के तौर पर चुना गया था। लेकिन बीमारी के कारण छह शिक्षकों से मुलाकात न हो सकी। अभिविन्यास कार्यक्रम के शुरू होने के पहले, छह विशेषज्ञों ने कक्षाओं अथवा खेल के मैदान में शिक्षकों का निरीक्षण इस दृष्टि से किया कि वे अपने सामान्य व्यवहार में छात्रों तक किसी तरह का सेक्सिस्ट संदेश प्रेषित करते हैं या नहीं। दोनों स्कूलों के शिक्षकों को पाँच व्यावहारिक, मौखिक एवं अमौखिक अभ्यास दिए गए। कार्यक्रम की समाप्ति पर शिक्षकों से उस प्रश्नावली के उत्तर फिर से माँगे गए जो उनसे पहले भी भरवाई जा चुकी थी।

अध्ययन से पता चला कि (i) हालाँकि स्त्रियों और पुरुषों के लिए व्यावसायिक मार्ग एक समान खुले हुए हैं, फिर भी अनुक्रियाएँ बताती हैं कि काम धंधों के बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ स्त्रियों और पुरुषों को व्यावसायिक कार्यभार दिए जाने में असंतुलन दिखता है। हालाँकि व्यावसायिक मार्ग-दर्शन देना प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों का काम नहीं है, फिर भी

रूपांतरित रूप से ऐसे संदेश प्रेषित किए जाते हैं जिनसे छात्र घिसे पिटे लक्ष्यों की ओर ही जाते हैं। (ii) हालांकि उनका कहना और मानना है कि सभी काम स्त्रियों और पुरुषों के लिए एक समान हैं क्योंकि दोनों बराबर है, फिर भी व्यवहार में काम देते समय वे इस बात को मन में रखे रहते हैं कि कौन सा काम 'जनाना' है और कौन सा 'मर्दाना'। (iii) शिक्षकों को यह बात मालूम है कि समाज में स्त्रियों और पुरुषों को घिसे पिटे पुराने विभाजनों से देखा जाता है और पाठ्यपुस्तकों में भी यही बात परिलक्षित होती है। (iv) हालाँकि अध्ययन के लिए जो नमूने लिए गए थे वे स्त्रियों और पुरुषों दोनों के लिए लगभग बराबर बराबर थे, फ़िर भी अनुक्रियाओं से पता चला कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को सभी स्वीकारते हैं। (v) सेक्स-शिक्षा दिए जाने के बारे में 'नमूनों' के जवाब समान रूप से विभाजित थे। लड़कों के लिए बनी फिल्म को लड़कियों को भी दिखाना चाहिए या नहीं, इस बारे में भी 'नमूनों' की राय समान रूप से बँटी हुई थी। आधे लोगों ने महसूस किया कि ऐसे समय लड़कियों को वहाँ नहीं होना चाहिए जबकि बाकी आधे लोगों ने कहा कि किसी प्रकार का भेद भाव न होना चाहिए। (vi) प्रवृत्तियों की प्रश्नावली को शिक्षकों से दो बार भरवाया गया था : टेप-स्लाइड दिखाने और जागरूकता के अभ्यास करवाने से पहले और कार्यक्रमों के बाद। (पुरुष) शिक्षकों की प्रवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया लेकिन शिक्षिकाओं की प्रवृत्ति में कम परिवर्तन हुआ था। कारण यह है कि कार्यक्रम के पहले ही उन्होंने स्त्री-पुरुष-समानता की माँग की थी। (vii) सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की प्रवृत्ति में वयस्क सेक्स भूमिकाओं के प्रति अधिक सकारात्मक अंतर आ गया था, जबकि गैर-सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की प्रवृत्ति में कक्षागत भूमिकाओं के प्रति अधिक सकारात्मक अंतर देखा गया।

11. कबाड़ की सहायता से सुधरी हुई सस्ती शिक्षण-सामग्री का निर्माण

प्रमुख अन्वेषक : श्री एन० के० श्रीवास्तव

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) परिवेश में उपलब्ध रद्दी के सामान की मदद से शिक्षण-साधनों को तैयार करना; (ii) परिवेश में उपलब्ध कबाड़ के महत्व के बारे में शिक्षकों को सचेत करना; और (iii) मितव्ययिता से बेहतर शिक्षा प्रदान करना।

राजस्थान के परिवेश में उपलब्ध रद्दी के सामान से प्राथमिक और अपर प्राथमिक स्कूलों के लिए बने शिक्षण-साधनों तक ही अध्ययन ने अपने को सीमित रखा। सम्पूर्ण राजस्थान को छह भौगोलिक हिस्सों में बाँटकर वहाँ के कबाड़ को इकट्ठा किया गया। कबाड़ से बने शिक्षण-साधनों को एक नुमाइश में दिखाया गया। प्राथमिक और अपर प्राथमिक स्कूलों के सौ शिक्षकों को ये प्रदर्श दिखाकर उनसे राय माँगी गई और सुधार के लिए एक प्रश्नावली के माध्यम से सुझाव आमंत्रित किए गए। 82 शिक्षकों ने जवाब दिए जिनका इस्तेमाल किया जाएगा। अधिकांश शिक्षण-साधन विज्ञान और गणित पढ़ाने के लिए थे।

परिणामों से पता चला कि (i) गाँवों में सामग्री की उपलब्धि के बारे में 68.29 प्रतिशत लोगों के विचार से सामग्री उपलब्ध नहीं है; 4.88 प्रतिशत लोगों के विचार से बहुत कम सामग्री उपलब्ध है; और 26.83 प्रतिशत लोगों के विचार से कुछ सामग्री उपलब्ध है। (ii) इसी तरह के शिक्षण-साधन बनाने के बारे में 26.83 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उन्हें इसके लिए तकनीकी सहायता चाहिए; 48.78 प्रतिशत लोगों के विचार से उन्हें कुछ सहायता चाहिए; और 24.39 प्रतिशत लोगों को किसी सहायता की जरूरत नहीं है। (iii) इन शिक्षण-साधनों को बनाने के लिए 59.76 प्रतिशत लोगों को अतिरिक्त घंटों की जरूरत होगी; 34.15 प्रतिशत लोग खाली घंटों का इस्तेमाल कर लेंगे; लेकिन 6.09 प्रतिशत लोग यह तय ही नहीं कर पाए कि वे यह काम कब करेंगे। (iv) कक्षा-शिक्षण में इन साधनों के इस्तेमाल से 57.33 प्रतिशत शिक्षकों को काफी मदद मिल सकेगी; जबकि 28.04 प्रतिशत शिक्षकों को कुछ मदद मिल पाएगी; और 14.63 प्रतिशत शिक्षकों के विचार से शायद ही कोई मदद मिलेगी। (v) इस तरह के शिक्षण-साधनों के निर्माण के बारे में 68.39 प्रतिशत शिक्षकों का विचार था कि समुदाय और छात्रों के साथ मिलकर वे इन्हें बना सकते हैं; जबकि 14.63 प्रतिशत शिक्षकों के विचार से छात्रों के साथ मिलकर शिक्षक इन्हें बना लेंगे; किंतु 16.98 प्रतिशत की राय थी कि इन साधनों को छात्र और समुदाय वाले मिल कर बना लेंगे। (vi) शिक्षकों ने सुझाव दिया कि प्राथमिक और अपर प्राथमिक शिक्षकों को सभी शिक्षण-साधनों के बारे में कुछ साहित्य भी दिया जाना चाहिए और शिक्षण-साधनों को कक्षा और विषय के हिसाब से श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए।

12. सामान्य स्कूलों में अपंग बच्चे

प्रमुख अन्वेषक : डा० ए० बी० पाठक

इन अन्वेषण का उद्देश्य इन बातों का अध्ययन करना था—(i) सामान्य स्कूलों में पढ़ने वाले विकलांग बच्चों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ; (ii) विकलांग बच्चों का सामंजस्य; (iii) विकलांग बच्चों की आकांक्षाएँ; (iv) सामान्य स्कूलों के विकलांग बच्चों की सोश्योमीट्री; और (v) सामान्य बच्चों के साथ घुलने मिलने के तरीके।

राजस्थान के उदयपुर, बाँसवाड़ा और जोधपुर जिलों के सामान्य स्कूलों में पढ़ने वाले विकलांग बच्चों में से नमूने लिए गए। अंतिम नमूनों में 32 माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों (जिनमें नौ स्कूल देहात के थे) के 72 लड़के थे जिनकी उम्र 12 से 18 वर्षों के बीच की थी; हालाँकि अधिकांश लड़के 14 से 17 वर्ष तक के थे। अध्ययन के लिए प्रयुक्त हुए उपकरण थे—हाई स्कूल व्यक्तित्व प्रश्नावली (कपूर एवं मेहरोत्रा); सामंजस्य सूची (सिन्हा एवं सिंह); तथा आकांक्षा प्रश्नावली और इस अध्ययन के लिए बनाया गया व्यक्तिगत आधार सामग्री बैंक।

अध्ययन से पता चला कि (i) अधिकांश विकलांग बच्चों के पिता गरीब घरों के निरक्षर लोग थे, 79 बच्चों में से 63 बच्चों के पिता हायर सेकंडरी तक या उससे भी कम पढ़े हुए थे और 46 बच्चे ऐसे परिवारों के थे जिनकी आमदनी 500 रुपयों से कम थी। (ii) अधिकांश बच्चे बड़े आकार के परिवारों के थे जिनमें चार-पाँच बच्चे होते हैं। (iii) ये बच्चे कुछ चुप्पे या संकोची, भावात्मक रूप से स्थिर-मति, संतोषप्रद रूप में समंजित लेकिन पढ़ाई की सामर्थ्य के हिसाब से कमजोर, जल्दी ही भड़कने वाले, आज्ञाकारी, कार्यसाधक, हट्टे कट्टे, तनाव में न रहने वाले और साथ देने वाले थे। (iv) कुल मिलाकर इनका सामंजस्य औसत दर्जे का था, भावात्मक सामंजस्य अच्छा था और सामाजिक तथा शैक्षिक सामंजस्य औसत ही था। (v) सोश्योमीट्रिक स्थिति संतोषप्रद थी, 41.6 प्रतिशत साठवें शततमक से ऊपर थे और 22.2 प्रतिशत नब्बेवें शततमक से ऊपर। केवल तीन बच्चे एकाकी थे। (vi) अधिकांश विकलांग बच्चे स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ना चाहते थे। (vii) धंधे के रूप में अध्यापन को सभी बच्चे सबसे ज्यादा चाहते थे, और सबसे कम पसंदगी सेना, पुलिस व खिलाड़ियों के पेशे के लिए थी। धार्मिक जीवन पद्धति के लिए सभी ने प्राथमिकता दी थी और बौद्धिक, राजनीतिक तथा भौतिक सुविधाओं की आकांक्षा में किसी की रुचि नहीं थी। (viii) अधिकांश विकलांग बच्चों को लगता था कि उनके सामने कोई विकराल समस्या नहीं है, जो समस्याएँ थीं वे स्कूल से डरने की, कक्षा में होने वाली पढ़ाई की कठिनाई की, शिक्षकों के प्रति असंतोष की, साथी बच्चों द्वारा चिढ़ाए जाने की, और पाठ्यक्रमेतर कार्यकलापों में शामिल होने की थी।

13. सन् 1973 से 1977 के बीच वृहत्तर बम्बई और थाणा जिले के म्यूनिसिपल और स्थानीय प्राधिकरण के स्कूलों की कक्षा I से VII तक के, बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले बच्चों की इस प्रवृत्ति का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : श्रीमती माधुरी शाह

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) वृहत्तर बम्बई और थाणा जिले के म्यूनिसिपल कार्पोरेशन और स्थानीय प्राधिकरण द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न भाषायी स्कूलों के लड़कों और लड़कियों के पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ देने की घटनाओं का आकलन करना, और (ii) पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ देने की इस प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी कारकों का अध्ययन करना।

जो प्राक्कल्पनाएँ प्रतिपादित की गई, वे थीं—(i) पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ने की घटनाओं के अध्ययन से शोधकर्ताओं को पता चल सकेगा कि इस प्रवृत्ति के मूल

में कौन से कारण काम कर रहे हैं और इस प्रकार उन कारणों को दूर करने में सहायता मिल सकेगी, (ii) सुधरी हुई शिक्षण पद्धतियों और समुचित शिक्षण सामग्री के इस्तेमाल से स्कूल जाना छोड़ने की प्रवृत्ति कम की जा सकेगी।

इस अध्ययन को वृहत्तर बम्बई और थाणा जिले में किया गया। इसके लिए म्यूनिसिपल स्कूलों, म्यूनिसिपल सहायता प्राप्त स्कूलों और थाणा जिले के कुछेक जिला परिषद् स्कूलों को लिया गया। अध्ययन चार चरणों में किया गया। पहले चरण में क्षेत्र में स्कूल जाना छोड़ देने की घटनाओं का आकलन और इस प्रवृति के कारणों का अध्ययन किया गया। दूसरे चरण में ऐसी घटनाओं की केस स्टडी हाथ में ली गई। तीसरे चरण में पाँच स्कूलों का विशेष अध्ययन किया गया। चौथे चरण में दो स्कूलों में एक प्रयोग किया गया। इन दोनों में एक मराठी माध्यम वाला स्कूल है और दूसरा गुजराती माध्यम वाला। अध्ययन के लिए एक आधार-सामग्री पत्रक बनाया गया जिसके माध्यम से स्कूल जाना छोड़ देने वालों के बारे में जानकारी इकट्ठा की गई। एक प्रश्नावली भी बनाई गई जिसके द्वारा केस-स्टडीज की गई।

अध्ययन के पहले चरण से पता चला कि (i) मराठी माध्यम वाले म्यूनिसिपल स्कूलों में पढ़ाई के बीच में स्कूल जाना छोड़ देने की प्रवृत्ति सबसे ज्यादा कक्षा I में थी और सबसे कम कक्षा VII में। कक्षा V में इस प्रवृत्ति की प्रतिशतता में तेज बढ़ोतरी हुई। (ii) वृहत्तर बम्बई के गुजराती माध्यम वाले म्यूनिसिपल स्कूलों में पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ देने की प्रवृत्ति सबसे ज्यादा कक्षा I में थी और सबसे कम कक्षा VII में। (iii) हिन्दी माध्यम वाले म्यूनिसिपल स्कूलों में पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ देने की प्रवृत्ति सबसे ज्यादा कक्षा I में थी और सबसे कम कक्षा VII में। (iv) उर्दू माध्यम वाले म्यूनिसिपल स्कूलों में यह प्रवृत्ति सबसे ज्यादा सन् 1975-76 में कक्षा I में, सन् 1974-75 में कक्षा II में, सन् 1974-75 में कक्षा III में, सन् 1976-77 में कक्षा IV में, सन् 1973-74 में कक्षा V में और सन् 1975-76 में कक्षा VI में थी। (v) अंग्रेजी माध्यम वाले म्यूनिसिपल स्कूलों में यह प्रवृति सबसे ज्यादा कक्षा I में, उससे कम कक्षा V में उससे भी कम कक्षा VI में और सबसे कम कक्षा VII में थी। (vi) तेलगु माध्यम वाले स्कूलों में यह प्रवृत्ति सामान्यतः कक्षा I में, कभी कभी कक्षा II में और III में सबसे ज्यादा थी। (vii) तमिल माध्यम वाले स्कूलों में यह प्रवृत्ति सबसे ज्यादा कक्षा I में थी। (viii) मलयालम माध्यम वाले स्कूलों में यह प्रवृति किसी भी कक्षा में लगातार ज्यादा नहीं रही। (ix) यह प्रवृत्ति चारों वर्षों के औसत रूप में तेलगु माध्यम के स्कूलों में सबसे ज्यादा और मलयालम माध्यम के स्कूलों में सबसे कम थी। (x) हिन्दी और तेलगु माध्यम वाले स्कूलों में यह प्रवृत्ति लगातार ज्यादा रही। (xi) यह प्रवृत्ति मराठी माध्यम वाले स्कूलों में 1973-74 में, अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में 1975-76 में और सिन्धी माध्यम वाले स्कूलों में 1974-75 में ज्यादा रही। (xii) जिला परिषद् के स्कूलों में सबसे ज्यादा नामांकन कक्षा I में हुआ और

सबसे कम कक्षा VII में। नामांकन में तेजी से कमी होने की यह प्रवृति कक्षा V में शुरू हुई। (xiii) स्कूल छोड़ जाने की प्रवृत्ति लड़कों, और लड़कियों में सामान्यत: एक जैसी ही थी।

पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने वालों की केस स्टडी से पता चला कि (i) लगभग 40 प्रतिशत अभिभावक पढ़ने के लिए कभी भी स्कूल नहीं गए थे, जबकि 54 प्रतिशत अभिभावक कक्षा IV या VII तक पढ़े हुए थे। (ii) 366 अभिभावकों में से 261 नौकरी पेशा थे, 35 श्रमिक थे, 28 व्यापारी थे और 24 फेरीवाले थे। (iii) इन 366 अभिभावकों में से 206 की आमदनी 300 से 500 रुपयों तक थी और 127 लोगों की आमदनी 101 से 300 रुपयों तक थी। (iv) लगभग 60 प्रतिशत अभिभावक प्रतिदिन छह से आठ घंटों की ड्यूटी बजाते थे और कुछ मिसालें ऐसी भी थीं जिनमें माता-पिता दोनों काम पर बाहर जाते थे और चूंकि उनकी नियमित नौकरी नहीं थी इसलिए पूरे दिन बाहर ही रहते थे। (v) पढ़ाई के बीच में ही बच्चों के स्कूल छोड़ देने का एक कारण यह भी था कि माता-पिता में से किसी की बीमारी के कारण या छोटे भाई बहनों को घर पर सँभालने के लिए परिवार में और कोई नहीं बचता था। (vi) अधिकांश स्थितियों में, घर पर माता-पिता का हाथ बटाने के लिए, कुछ स्थितियों में काम मिल जाने के कारण और एक प्रतिशत स्थिति में माता-पिता के व्यापार में मदद करने के लिए, बच्चे स्कूल छोड़ गए थे।

पाँच स्कूलों में शैक्षिक अवरोध की स्थिति का अध्ययन करने पर पता चला कि (i) फेल होने की स्थिति कक्षा II और III में ज्यादा है और कक्षा I में सबसे ज्यादा है। (ii) कुछ छात्र एक ही कक्षा में सात बार फेल हुए फिर भी उन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी।

शिक्षण-विधियों में सुधार और बेहतर शिक्षण-सामग्री के इस्तेमाल वाले प्रयोग से पता चला कि (i) शिक्षकों और हेडमास्टरों की राय में स्कूल के लिए सबसे आदर्श समय ग्यारह बजे सुबह से शाम के पाँच बजे तक का है। (ii) दोनों ही वर्गों ने महसूस किया कि छात्रों पर पड़ा प्रभाव इस बात में परिलक्षित होता है कि वे व्यक्तिगत रूप से अधिक स्वच्छ रहने लगे और नियमित रूप से स्कूल आने लगे। (iii) क्रियाकलाप वाली विधि गणित-शिक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुई क्योंकि इससे गणित में छात्रों की दिलचस्पी बढ़ गई। (iv) कुल मिला कर गुजराती माध्यम वाले स्कूलों में, कक्षा I में गणित और कक्षा II में गुजराती पढ़ाने में बेहतर और अधिक सफलता दिलाने में प्रायोगिक विधि का महत्वपूर्ण हाथ है। (v) मराठी माध्यम वाले स्कूलों में, कक्षा II में सामान्य-ज्ञान विषय को छोड़कर बाकी सभी विषयों में बेहतर और अधिक सफलता दिलाने में प्रायोगिक विधि का ही हाथ है।

14. मिर्ज़ापुर के जनजातीय छात्रों की समस्याओं, आकांक्षाओं, जीवन-मूल्यों और व्यक्तित्व-पैटर्नों का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० एस० एस० श्रीवास्तव

इस अध्ययन के उद्देश्य थे (i) मिर्ज़ापुर जिले के हाई और हायर सेकंडरी स्कूलों तथा इंटर कालेजों के जनजातीय, पिछड़े वर्गों के और सवर्ण छात्रों की समस्याओं को खोजना और उनकी तुलना करना; (ii) छात्रों के तीनों वर्गों के मूल्य-प्रतिमानों को खोजना और उनकी तुलना करना; (iii) तीनों वर्गों के व्यक्तित्व प्रतिमानों को खोजना और उनकी तुलना करना; तथा (iv) छात्रों के तीनों वर्गों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का पता लगाना।

अध्ययन को दुद्धी और राबर्ट्सगंज सब डिवीजनों, जो कि मुख्यतः जनजातीय इलाके हैं हालांकि वहां केवल जनजातियों के लिए कोई शिक्षा संस्थान नहीं है, के हाई स्कूलों, हायर सेकंडरी स्कूलों और इंटर कालेजों की कक्षा IX और XI के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया। मिले जुले स्कूलों और कालेजों से छात्रों के तीनों वर्गों को चुना गया। सभी 56 जनजातीय छात्रों को इन वर्गों में मिलाया गया था और उसी अनुपात में पिछड़े वर्गों और उच्च जाति के वर्गों के छात्रों को इन्हीं संस्थाओं से चुना गया था। अध्ययन के लिए इन उपकरणों को प्रयुक्त किया गया—मनी प्रॉब्लम चेकलिस्ट (श्रीवास्तव और राय) का हिन्दी रूपांतर, व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (शेरी और वर्मा), जूनियर-सीनियर हाई स्कूल व्यक्तित्व प्रश्नावली (कपूर, श्रीवास्तव और श्रीवास्तव), और इस अध्ययन के लिए बनाई गई व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली। आधार सामग्री का विश्लेषण मीन, स्टैंडर्ड डेविएशन, प्रतिशतता और टी-टेस्ट के प्रयोग द्वारा किया गया।

परिणामों से पता चला कि (i) जनजातीय छात्रों की सबसे बड़ी समस्याएँ मनोवैज्ञानिक-व्यक्तिगत सम्बन्धों, स्वास्थ्य और शारीरिक विकास तथा कोर्टशिप, सेक्स और विवाह को लेकर हैं। पिछड़े वर्गों के छात्रों की सबसे बड़ी समस्याएँ कोर्टशिप, सेक्स और विवाह, सामाजिक एवं मनोरंजनात्मक सुविधाओं और स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास के बारे में हैं। उच्च वर्गों के छात्रों की समस्याएँ स्वास्थ्य और शारीरिक विकास, वित्त, जीवन स्तर, रोजगार और सामाजिक तथा मनोरंजनात्मक कार्यकलाप के बारे में हैं। (ii) जनजातीय छात्रों को जिन समस्याओं से कोई मतलब नहीं था, वे हैं : पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रक्रियाएँ, स्कूल-कार्य का समंजन, नैतिक बातें और धर्म। पिछड़े वर्गों के छात्रों के लिए जिन समस्याओं का कोई अस्तित्व नहीं था, वे हैं : घर, परिवार, पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रक्रियाएँ, और स्कूल कार्य का समंजन। उच्च वर्ण के छात्रों के लिए जो समस्याएँ न होने के बराबर थीं, वे हैं : पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रक्रियाएँ, शैक्षिक और व्यावसायिक भविष्य, व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध। (iii) उच्च वर्ण के छात्रों की व्यावसायिक आकां-

क्षाएँ तेरह पेशों तक सीमित थीं, जबकि पिछड़े वर्गों और जनजातीय छात्रों के लिए यह संख्या नौ थी और शिक्षण व्यवसाय उनके लिए सबसे ज्यादा पसंदगी का था। जनजातीय और अ-जनजातीय छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई अंतर नहीं था। (iv) हालाँकि अधिकांश छात्र किसान परिवारों के थे, सभी वर्गों के 5 प्रतिशत से भी कम छात्रों ने कृषि व्यवसाय में जाने की इच्छा प्रकट की। (v) पिछड़े वर्गों के छात्र तकलीफों से बचने और मौज करने की प्रवृत्ति वाले थे, वे दूसरों से आगे बढ़ने और उन पर शासन करने के इच्छुक थे, जबकि जनजातीय छात्र इतनी सुखवादी प्रवृत्ति के न थे। पिछड़े वर्गों और उच्च वर्णों के छात्रों में उल्लेखनीय रूप से चार जीवन-मूल्यों की दृष्टि से जबर्दस्त अंतर था। ये चार मूल्य हैं—सामाजिक, ज्ञान संबंधी, सुखवादी और शक्ति। (vi) व्यक्तित्व की एक विशेषता— स्थिरमति होना अथवा उत्तेजना से भड़क उठने वाला होना—को छोड़ कर पिछड़े वर्ग और जनजातीय वर्ग के मिर्जापुर जिले के उन्हीं स्कूलों के छात्रों में कोई अंतर न था। (vii) पिछड़े वर्गों के छात्र अधिक कोमल मन वाले, भावुक, और भरोसेमंद थे, उनकी इच्छा शक्ति अधिक नियंत्रित थी, वे अधिक तनाव वाले भी थे। उनकी तुलना में उच्च वर्ण वाले छात्र भड़क उठने वाले, अधीर और बेकाबू थे। (viii) व्यक्तित्व के चार कारकों की दृष्टि से उच्च वर्णों के छात्रों और पिछड़े वर्गों के छात्रों में महत्वपूर्ण अंतर था लेकिन इन दोनों वर्गों के छात्रों और जनजातीय छात्रों में व्यक्तित्व के दो कारकों की दृष्टि से ही अंतर था।

15. पढ़ाई के लिए गाँवों से शहर जाने वाले देहाती छात्रों की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

प्रमुख अन्वेषक : *डा० सुविमल देव*

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) शहर जाने वाले देहाती छात्रों की संख्या, और पार की गई भौगोलिक दूरी का पता लगाना; (ii) उनकी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का पता लगाना; (iii) उनकी ग्राम्यता या नागरिकता की पसंदगी की प्रकृति का पता लगाना; और (iv) उन क्षेत्रों का पता लगाना जिनमें वे असमंजित महसूस करते हैं।

इस अध्ययन के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत बीस किलोमीटर की परिधि में फैले हुए 25 शहरी कालेजों को लिया गया जिनमें पश्चिम बंगाल की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा प्रस्तुत प्रणाली पर कक्षा XI और XII की पढ़ाई होती थी। इन कालेजों में देहात से आए छात्र छात्रावास में या शहर में रहते हुए पढ़ते थे। अध्ययन के लिए नमूनों के तौर पर 450 ऐसे छात्रों को लिया गया जो देहात से शहर में पढ़ने के लिए आए थे, जिनकी स्कूली शिक्षा गाँव के स्कूलों में हुई थी, जो अंशकालिक रोजगार में नहीं थे, आर्थिक रूप से अभिभावकों पर आश्रित थे और छात्रावास में नहीं रहते थे। तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक और वर्ग भी चुना गया जिसके छात्र कलकत्ता में पिछले दस वर्षों से

रह रहे थे, जो कभी भी देहाती इलाकों के स्कूलों में नही गए थे, जो कलकत्ता के ही किसी स्कूल में पढ़ चुके थे और जिनके माता-पिता कलकत्ता मेट्रोपॉलिटन के रहने वाले थे ।

एक सूचना सारणी बनाई गई ताकि देहात से पढ़ाई करने के लिए शहर आने वाले छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझा जा सके । इसी प्रकार की सूचना सारणी शहरी वर्ग वाले छात्रों के लिए भी बनाई गई । यह सारणी सामाजिक-आर्थिक पक्षों से सम्बद्ध बीस क्षेत्रों को समाहित करती थी । उत्तर पांचसूत्री पैमाने पर दिए जाते थे । चालीस मदों वाला एक ग्रामीण शहरी चुनाव मानदंड भी बनाया गया । एक सामंजस्य सूची बनाकर शहर आने वालों की समंजन की समस्याओं का पता लगाने के लिए प्रयुक्त की गई । ची-स्क्वैअर टेस्ट और टी-टेस्ट प्रयुक्त किए गए ।

परिणामों से पता चला कि (i) शिक्षा और आधुनिकता की दृष्टि से देहाती और शहरी छात्रों के दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं है । (ii) अंतर-वर्ग तुलनाओं ने समंजन समस्याओं में कोई अंतर नही पाया । (iii) देहाती वर्ग कृषि-उन्मुख परिवारों का था जिनकी आमदनी कम थी, जिनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि निम्न थी, जिनके मकान घटिया किस्म के थे, और जिनके अभिभावक स्तर-अभिमुखता की दृष्टि से निम्न थे ।

16. उड़ीसा के स्कूली बच्चों के बुद्धि-विकास का खुराक और वृद्धि से सम्बन्ध

प्रमुख अन्वेषक : डा० एस० पी० पटेल

इस अध्ययन का उद्देश्य उड़ीसा के जिला-मुख्यालयों के हाई स्कूलों की कक्षा VIII, IX और X के सर्वश्रेष्ठ दस छात्रों के परिवारों की पोषणीय स्थिति और शैक्षिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में शारीरिक वृद्धि और मानसिक विकास के सम्बन्ध को ढूंढ़ना था ।

जिन प्राक्कल्पनाओं का परीक्षण किया गया, वे थीं—(i) सामान्य शारीरिक वृद्धि वाले छात्र बोधात्मक परीक्षणों में अन्य छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ होंगे । (ii) पारम्परिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र आई० क्यू० परीक्षण में ज्यादा नम्बर पाएँगे क्योंकि पब्लिक स्कूलों के छात्र आर्थिक प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके स्कूल उन्हें अधिक अभिप्रेरण प्रदान करते हैं । (iii) पोषक मानवमिति के श्रेणीकरण की तरह का श्रेणीकरण/रूपांतर आई० क्यू० परीक्षण नम्बरों का भी है ।

एक जिले के तीन स्कूलों (एक लड़कों का, दूसरा लड़कियों का, तीसरा पब्लिक स्कूल) की कक्षा VIII, IX और X के दस सर्वश्रेष्ठ छात्रों को अध्ययन के लिए चुन लिया गया । यह मान कर आगे बढ़ा गया कि पारम्परिक स्कूलों के छात्रों की तुलना में पब्लिक

स्कूल के छात्र उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के होते हैं। इन छात्रों के घरों पर लगातार तीन दिनों तक जाकर देखा गया कि क्या खाना खाया जाता है। तराजू, एक जैसे प्यालों और चम्मचों, को इस्तेमाल कर खाने की सही मात्रा को आंका गया। मानव-मितीय मापों को लिख लिया गया। स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसों का भी प्रयोग हुआ।

परिणामों से पता चला कि (i) मेधा के मामले में पारम्परिक और पब्लिक स्कूल के छात्रों में काफ़ी अंतर था। (ii) शरीर के वजन (लम्बाई नहीं) और आई० क्यू० के बीच सकारात्मक सम्बन्ध था। (iii) पारम्परिक स्कूल के लगभग आधे छात्र जरूरत से कम वजन वाले थे जबकि पब्लिक स्कूल के केवल एक तिहाई छात्र ही कम वजन वाले थे। (iv) पारम्परिक स्कूलों के 32 प्रतिशत छात्र सही वजन वाले थे जबकि पब्लिक स्कूलों के 43 प्रतिशत छात्र सही वजन वाले थे। (v) उच्च आय वर्ग वाले परिवारों के पब्लिक स्कूल के छात्रों की खुराक सही शारीरिक वृद्धि के विचार से बिल्कुल ठीक थी, उसे किसी पूरक खुराक की जरूरत नहीं थी। (vi) अगर वंशानुक्रम से कोई कमजोर बाढ़ वाला और कम मेधा वाला होने के कारण कम आमदनी वाले वर्ग में धकेल दिया जाता है तो उसके बच्चे और भी कमजोर होते चले जाएँगे।

17. प्राथमिक स्कूलों के बच्चों की पठन-उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों का गहन अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : प्रो० आर० श्रीनिवास राव

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—(i) बच्चों की पठन-उपलब्धि को उनके घरों और स्कूलों के विविध कारकों तथा व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ जोड़ने का परीक्षण; (ii) बच्चों की पठन-उपलब्धि पर इन कारकों के सापेक्ष प्रभाव का आकलन; और (iii) पठन की दृष्टि से कमजोर बच्चों के पठन-कौशलों को सुधारने के लिए नैदानिक उपायों का सुझाव।

अध्ययन के लिए तीन मोटी श्रेणियों को लिया गया—घर की पृष्ठभूमि, स्कूल की स्थितियाँ और बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताएँ। आंध्र प्रदेश के तीन क्षेत्रों रायलसीमा, तेलंगाना और सरकार जिले के यों ही चुन लिए गए साठ स्कूलों तक ही अध्ययन को सीमित रखा गया। हर क्षेत्र की ग्रामीण और शहरी बस्तियों के अलग-अलग तरह की प्रबंध समितियों वाले बीस-बीस स्कूलों को लिया गया था। हर स्कूल से पाँच-पाँच लड़कियों व लड़कों को नमूने के तौर पर चुना गया। इस प्रकार नमूने के कुल छात्रों की संख्या छह सौ थी। अध्ययन कक्षा III से VIII तक के तेलगु पढ़ने वाले छात्रों तक ही सीमित था। शांत पठन का परीक्षण हुआ जिसमें मिलने वाले नम्बरों को ही बच्चे की पठन-उपलब्धि माना गया। घर की पृष्ठभूमि से आशय था : किस श्रेणी का कितनी जगह वाला मकान है,

उसमें पठन की क्या सामग्री उपलब्ध है, अभिभावक की शैक्षिक योग्यता कैसी है, पिता का पेशा क्या है, परिवार की आमदनी कितनी है और समाज में घुलने-मिलने की उसकी प्रवृत्ति कैसी है । स्कूल की स्थितियों में ये बातें शामिल थीं : स्कूल में कितनी जगह है, कैसी सुविधाएँ मिली हुई हैं, कक्षा में कितने बच्चे हैं, शिक्षकों की योग्यता और अनुभव कैसा है, शिक्षण-सामग्री उपलब्ध है या नहीं, लाइब्रेरी है कि नहीं । बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताओं का तात्पर्य है बच्चे की सामान्य मानसिक योग्यता, शब्दों की पहचान और ध्वनियों की पहचान का विवेक, साफ उच्चारण, पढ़ने की आदतें, पढ़ने में बच्चे की दिलचस्पी । घर की पृष्ठभूमि और स्कूल की स्थितियों के बारे में जानकारी प्रश्नावली और साक्षात्कारों द्वारा एकत्र की गई । कक्षा III व IV , V व VI, VII व VIII के लिए अलग अलग पठन-परीक्षण बनाए गए । पूरे आंध्र प्रदेश के हर स्तर से 1000 छात्रों को लेकर विश्वसनीयता एवं मान्यता स्थापित की गई । स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसों का भी प्रयोग किया गया । शिक्षकों और हेडमास्टरों से जानकारी लेने के अलावा निरीक्षण और साक्षात्कार से भी सूचनाएँ प्राप्त की गई । पठन-परीक्षण की निष्पत्ति के आधार पर छात्रों को तीन वर्गों में बाँटा गया और अन्य प्रकार के परीक्षण किए गए ।

अध्ययन से पता चला कि (i) पठन-उपलब्धि और घर की पृष्ठभूमि के हर कारक के बीच अलग अलग घनिष्ठ संबंध है; (ii) पठन-उपलब्धि और स्कूल की हर स्थिति के बीच अलग-अलग संबंध है; (iii) पठन-उपलब्धि हरेक व्यक्तिगत विशेषता के साथ जुड़ी हुई है; (iv) घर की पृष्ठभूमि के सभी कारकों और स्कूल की सभी स्थितियों को सम्मिलित रूप से मिलाने पर पठन-उपलब्धि के साथ जो सह सम्बन्ध बनता है, उसके मुकाबले व्यक्तिगत विशेषताओं और पठन-उपलब्धि के बीच का सह सम्बन्ध कहीं ज्यादा बड़ा और मजबूत है; (v) पठन-उपलब्धि और व्यक्तिगत विशेषताओं के बीच का बहुविध सह सम्बन्ध 81.5 प्रतिशत, स्कूल स्थितियों का 82.5 प्रतिशत और घर की पृष्ठभूमि का 83 प्रतिशत था ।

18. बच्चों के लिए आह्लाद के क्षण

प्रमुख अन्वेषक : प्रो० रामाधार सिंह

इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य इस बात का अध्ययन करना था कि चार से नौ वर्ष की उम्र वाले बच्चे अपने तुरंत के आह्लाद को कैसे अभिव्यक्त करते हैं । इसके लिए कुल चार प्रयोग किए गए । हर प्रयोग में क्रमशः 72, 144, 48 और 48 बच्चों को 'विषय' के रूप में लिया गया ।

प्रायोगिक कार्यभार नियोजित किए गए । कार्यभार I में मौखिक और निश्चित प्रबलनों के क्रमगुणित समुच्चय थे । बच्चों ने एक साधारण प्रेरक पर निष्पादन किया और मौखिक प्रबलनों तथा बैलून के कई समुच्चयों में से एक को प्राप्त किया । उन्होंने अपने

आह्लाद के स्व-निर्णयों को 15 फलकों वाले मानदंड पर दिया। कार्यभार 2 में सकारात्मक और ऋणात्मक मौखिक प्रबलनों की क्रमिक स्थितियों को छलयोजित किया गया। 'विषयों' ने अपने संचयी आह्लाद को तीन मौखिक निरीक्षणों से प्रकट किया। सूचना एकीकरण सिद्धांत के अनुसार यह अपेक्षा की गई कि व्यक्तिगत आह्लाद को व्यक्त करने में कार्यभार 1 के मौखिक और निश्चित प्रबलनों और विभिन्न क्रमिक स्थितियों के मौखिक प्रबलनों का औसतीकरण कर दिया जाएगा।

पहले और दूसरे प्रयोगों ने 'सेंट्रेशंस' के खिलाफ जोरदार साक्ष्य प्रस्तुत किए। अपने आह्लाद को व्यक्त करने में, 4 से 5 वर्ष वाले सभी बच्चे मौखिक और निश्चित दोनों प्रबलनों पर ध्यान देने में समर्थ थे। इससे भी महत्वपूर्ण साक्ष्य यह था कि मौखिक और निश्चित प्रबलनों के एकीकरण में उन्होंने औसतीकरण के नियम का पालन किया। अपने आह्लाद को व्यक्त करने में 8 से 9 वर्ष वाले लड़कों ने बैलून की उपेक्षा की। लड़कों के तीनों वय-क्रमों में निश्चित मौखिक प्रबलनों की रूपरेखा का पैटर्न भी परिवर्तनशील था। लड़कियों में आह्लाद ने एक अ-रेखीय नियम का पालन किया। उन्होंने यह अर्थ भी निकाला कि बैलून की अनुपस्थिति दंडस्वरूप है।

तीसरे और चौथे प्रयोगों ने आह्लाद में अभिनवता-प्रभाव पाया। अंतिम प्रबलन ने बच्चों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। अपने आह्लाद को व्यक्त करने में उन्होंने तीनों मौखिक निरीक्षणों का इस्तेमाल कर लिया। परिणाम से यह भी पता चला कि पाइजेट की सेंट्रेशन की प्राक्कल्पना के विरोध में भी कुछ कहा जा सकता है।

कुल मिलाकर चारों प्रयोगों के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

(क) आह्लाद औसतीकरण के नियम के अनुसार चलता है;

(ख) बच्चों के निर्णय अभिनवता-प्रभाव वाले होते हैं;

(ग) भारत में 4 से 5 वर्ष वाले बच्चों में एक सुविकसित मीट्रिक समझ है; और

(घ) प्रबलित करने वाली स्थितियों के बहुविधि पक्षों को विकेंद्रित करने में भी 4 से 9 वर्ष वाले बच्चे सक्षम थे।

तदनुसार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जितना समझा जाता था, बच्चे उससे कहीं अधिक जटिल हैं।

पीएच० डी० के शोध प्रबंधों/ग्रंथों के लिए प्रकाशन अनुदान

डॉक्टरेट की उपाधि के लिए शोध-प्रबन्धों और ग्रंथों के प्रकाशन के लिए अनुदान

देने की योजना के अन्तर्गत एरिक ने जो प्रकाशन अनुदान दिए उनका विवरण नीचे की सारणी में दिया जा रहा है —

सन् 1982-83 में एरिक द्वारा दिए गए प्रकाशन-अनुदान

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1.	शिक्षक व्यवहार के उभरते हुए पैटर्न	डा० बृजकिशोर शर्मा प्रतापगढ़
2.	अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास के लिए बनी योजनाओं के बारे में अ० जा० की जागरूकता का अध्ययन	डा० एस० के० यादव नई दिल्ली
3.	रिसर्च इंडिकेटर्स इन नॉर्मल एंड क्लिनिकल ग्रुप्स इन मिलिट्री पापुलेशन	डा० बी० एल० दुबे चंडीगढ़
4.	पर्सन पर्सेप्शन	डा० प्रकाशचन्द्र वर्मा गोरखपुर
5.	पढ़ाई में छात्रों को लागने वाले कुछ कारकों का अध्ययन	डा० (श्रीमती) आशा भटनागर नई दिल्ली
6.	राजस्थान के सेकंडरी स्कूलों के संगठन का अन्वेषण	डा० मोतीलाल शर्मा दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय
7.	गति विकास-सह-प्रशिक्षण की अवधारणा	डा० (श्रीमती) उपदेश बेवली नई दिल्ली
8.	ग्रामीण और शहरी हाई स्कूलों के बच्चों की व्यावसायिक आकांक्षाओं से सम्बद्ध कुछ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारक	डा० एस० एस० चड्ढा चंडीगढ़
9.	मेरठ विश्वविद्यालय के कालेजों में ग्रुप ऐक्सपटेंस और कुछ अन्य शैक्षिक पहलुओं से सम्बद्ध प्रशासकीय नेतृत्व के आयामों का अध्ययन	डा० एस० पी० कौशिक मेरठ

विभागीय परियोजनाएँ

नीचे लिखी विभागीय परियोजनाएं पूरी हो गई

पूरी हुई विभागीय परियोजनाएँ

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1.	बी० एड० पत्राचार कोर्स के छात्रों का अभिप्रेरण	डा० कुलदीप कुमार
2.	विभिन्न राज्यों में माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम भार का तुलनात्मक अध्ययन	श्री जी० एल० अरोड़ा
3.	प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक संसधित और संस्थानों की कुशलता से उनके सम्बन्ध का अध्ययन	डा० एन० के० जांगीरा
4.	प्रतिभा-खोज में अनुसंधान और विकास : रचनात्मकता-परीक्षणों के इस्तेमाल का अध्ययन	डा० एम० के० रैना

1. बी० एड० पत्राचार कोर्स के छात्रों का अभिप्रेरण

प्रमुख अन्वेषक : डा० कुलदीप कुमार

शिक्षा के प्रसार से सम्बद्ध समस्याओं के व्यावहारिक समाधान के रूप में पत्राचार शिक्षा की प्रणाली सामने आई थी। इस शिक्षा प्रणाली को सन् 1966 में रा० शै० अ० और प्र० प० ने स्कूल स्तर के अध्यापक-प्रशिक्षण के लिए अपनाया था। तब राष्ट्रीय परिषद् ने शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए एक ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स चलाया था।

प्रस्तुत अध्ययन को रा० शै० अ० और प्र० प० के कोर्स के छात्रों (सेवाकालीन स्कूल शिक्षक) तक ही सीमित रखा गया था। जिन लोगों ने कोर्स की जरूरतों को पूरा कर लिया था और जो प्रश्नावली के उत्तर अंग्रेजी में दे सकते थे, उन सभी लोगों को इस अध्ययन में शामिल किया गया था।

अन्वेषण इस जानकारी के लिए किया गया था कि (i) ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स में आने वालों का अभिप्रेरण क्या था; (ii) बी० एड० की डिग्री पा जाने के बाद चुने गए लोगों का तुरंत का और दूरगामी लक्ष्य क्या होगा; (iii) विभिन्न कोर्स इनपुट के संचालन के बारे में इन लोगों का क्या अवगम था।

निम्नलिखित पक्षों को समाहित करने वाले कोर्स इनपुट को चेकलिस्ट ने बताया : (क) पाठों को पाने में नियमितता, (ख) पाठों को समझने में कठिनाई, (ग) पाए गए पाठों की शैक्षणिक गुणवत्ता, (घ) हर पर्चे में मिले कार्यभार की संख्या, (ङ) कार्यभार को पूरा करने के लिए मिला समय, (च) शिक्षण अभ्यास के लिए मार्गदर्शन और सुविधाएँ, (छ) कोर्स में अपनाई गई मूल्यांकन प्रविधियाँ ।

इनके अलावा पत्राचार शिक्षा के प्रति ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स के छात्रों की अभिवृत्तियों एवं उपलब्धि अभिप्रेरणाओं को पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग अलग विश्लेपित किया गया और उनकी तुलना पूर्णकालिक बी० एड० के छात्रों के एक वर्ग के साथ की गई ।

अध्ययन से पता चला कि (i) शिक्षण के पेशे में आने के ये कारण हैं—(क) इस व्यवसाय की प्रतिष्ठा और इसके माध्यम से मानवता की सेवा, (ख) पुरुषों के अनुसार रुचि, पसंद और महत्वाकांक्षा के साथ जीविकोपार्जन, महिलाओं ने भी ये ही तीन कारण बताए लेकिन इनका क्रम बदला हुआ था यानी द्वितीय, तृतीय और प्रथम के क्रम में था । (ii) पत्राचार कोर्स के माध्यम से बी० एड० करने के जो कारण अधिकांश लोगों ने बताए, वे थे—(क) नौकरी करते हुए इसे करना आर्थिक रूप से समीचीन था, (ख) व्यावसायिक कुशलताओं को इस तरह सुधारा जा सकता था । (iii) जीवन लक्ष्यों के विश्लेषण से पता चला कि जहाँ तक तुरंत के लक्ष्य का सम्बन्ध है, एक बेहतर शिक्षक बनने के लक्ष्य को ज्यादातर लोगों ने दुहराया जबकि एक पुस्तक लिखने के उद्देश्य को बहुत कम लोगों ने माना । दूरगामी लक्ष्यों के प्रसंग में भी अधिकांश पुरुषों ने वही बात दुहराई किंतु स्त्रियों ने कहा कि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं । पूर्णकालिक बी० एड० करने वालों ने तुरंत के लक्ष्य के जवाब में बताया कि वे प्रशिक्षण अध्यापक का वेतन पाने के लिए ऐसा कर रहे हैं । दूरगामी लक्ष्य के सिलसिले में उनका कहना था कि उच्च शिक्षा के लिए वे यह कोर्स कर रहे हैं । (iv) ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स के छात्रों और नियमित बी० एड० के छात्रों के उपलब्धि अभिप्रेरण के मूल्यांकनों में अधिक अंतर नहीं है । (v) ग्रीष्म-स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स के छात्रों ने शिक्षा के प्रति अभिरुचि पर उच्च मीन स्कोर किया । (vi) भुवनेश्वर, भोपाल और मैसूर के क्षे० शि० महाविद्यालयों के छात्रों ने पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम की कड़ी आलोचना की । उनका कहना था कि पाठ्यचर्या बड़ी लम्बी और सैद्धांतिक है । अधिकांश छात्रों ने अपने अनुभव के आधार पर कहा कि शिक्षण अभ्यास को पाठ्यचर्या से हटा देना चाहिए अथवा काफी कम कर देना चाहिए । (vii) भोपाल के क्षे० शि० म० के छात्र शिक्षण-विधियों के तरीके से संतुष्ट नही थे । उनके विचार से इस पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए । (viii) भोपाल और मैसूर के कुछ छात्रों ने कहा कि ग्रीष्म कार्यक्रमों में क्षे० शि० म० के नियमित शिक्षकों को पढ़ाना चाहिए । (ix) कुछ छात्रों ने सुझाया कि पत्राचार माध्यम से एम० एड० कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए । कुछ ने सेवाकालीन

शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर कोर्स, स्टडी लीव आदि की माँग की । (x) एक तिहाई छात्रों ने भाषणों को समझने में कठिनाई महसूस की । यह कठिनाई मुश्किल शब्दों, शिक्षण-माध्यम और शंकाओं के समाधान के लिए शिक्षकों के न मिलने के बारे में थी । (xi) लगभग आधे छात्रों ने महसूस किया कि लेक्चरों का प्रबंध ठीक से नहीं किया जा रहा है । (xii) अजमेर के तीन-चौथाई छात्रों ने महसूस किया कि कोर्स के अनुदेश अपर्याप्त थे । (xiii) मूल्यांकन पद्धति से दो-तिहाई छात्र संतुष्ट थे । (xiv) शैक्षणिक समस्याओं के समाधान के लिए तीन चौथाई छात्र एक स्टडी सर्किल बनाना चाहते थे ।

2. विभिन्न राज्यों में माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम-भार का तुलनात्मक अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : श्री जी० एल० अरोड़ा

पाठ्यक्रम-भार एक सापेक्ष शब्द है और इसके बारे में निर्णय लेने के पहले कई कारकों को ध्यान में रखना चाहिए । ये कारक हैं—पाठ्यक्रम को सीखने में छात्रों द्वारा, और उसे सिखाने में अध्यापकों द्वारा लगाया जाने वाला समय एवं शक्ति; स्कूल का परिवेश और संसाधन; उपलब्ध समय और छात्रों की मानसिक योग्यता के परिप्रेक्ष्य में प्रबंधकुशलता की सीमा ।

इस अन्वेषण का प्रमुख उद्देश्य माध्यमिक स्तर अर्थात् कक्षा IX और X के छात्रों के पाठ्यक्रम-भार का अध्ययन करना था । यह अध्ययन दिल्ली, हरियाणा, केरल और महाराष्ट्र में किया गया ।

अध्ययन के अनुसंधान-प्रश्न को इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है : "दिल्ली, हरियाणा, केरल और महाराष्ट्र में पाँच अनिवार्य विषयों में वर्ष 1981-82 के दौरान लगाया गया पाठ्यक्रम क्या भारी है ?"

इस अध्ययन के लिए आधार-सामग्री का संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार, वर्ग चर्चा, निरीक्षण, अनुमान आदि के द्वारा किया गया । आधार-सामग्री प्राप्त करने के लिए चारों राज्यों/संघ क्षेत्रों के विभिन्न प्रकार के अनेक स्कूलों से सम्पर्क किया गया जैसे कि ग्रामीण और शहरी स्कूल, बालक एवं बालिका विद्यालय, सरकारी और सरकारी सहायता से चलने वाले स्कूल ।

इन स्कूलो के शिक्षकों से वर्तमान पाठ्यक्रमों और शिक्षण के उद्देश्यों, कोर्स को समय से समाप्त न करा पाने के कारणों, कोर्स को जल्दी से समाप्त करने के तरीकों, कोर्स की कठिनाइयों, पाठ्यक्रम-भार के समंजन के लिए सुझावों आदि के बारे में जानकारी और राय ली गई । प्राप्त उत्तरों के आधार पर जो निष्कर्ष निकले वे इस प्रकार हैं :

(1) दिल्ली के शिक्षक अंग्रेजी, गणित और हिन्दी के वर्तमान पाठ्यक्रम को 'तनिक सा भारी' मानते है, और विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के पाठ्य-क्रम को 'कुछ भारी'। छात्रों की राय में केवल विज्ञान का पाठ्यक्रम भारी है।

(2) महाराष्ट्र के शिक्षक अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन के वर्तमान पाठ्यक्रम को 'तनिक सा भारी' मानते हैं, और मराठी, विज्ञान तथा गणित के पाठ्य-क्रम को 'कुछ भारी'। छात्रों की राय में केवल विज्ञान का पाठ्यक्रम भारी है।

(3) हरियाणा के शिक्षक अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन के वर्तमान पाठ्यक्रम को 'तनिक सा भारी' मानते हैं। छात्रों की राय में केवल गणित का पाठ्यक्रम भारी है।

(4) केरल के शिक्षक विज्ञान के वर्तमान पाठ्यक्रम को 'तनिक सा भारी' मानते हैं, और अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित और सामाजिक विज्ञान के पाठ्य-क्रम को 'कुछ भारी'। छात्रो की राय में केवल गणित का पाठ्यक्रम भारी है।

3. प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक संसक्ति और संस्थानों की कुशलता से उनके सम्बन्ध का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० एन० के० जांगीरा

इस अध्ययन को उत्तर प्रदेश के 33 प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों में किया गया। सामाजिक संसक्ति को इस अध्ययन के लिए बनाई गई सामाजिक संसक्ति मूल्यांकन सूची द्वारा मापा गया। बोर्ड परीक्षाओं में मिले प्राप्तांकों को ही छात्र-अध्यापकों की उप-लब्धि माना गया। अभिवृत्तियों को अहलूवालिया अभिवृत्ति सूची से और संस्था के प्रति अभिवृत्ति को रोमा दत्ता के उपकरण से मापा गया। इस अध्ययन से निम्नलिखित बातें पता चलीं---

---छात्र-अध्यापक उपलब्धि और अंतर वैयक्तिक आकर्षण, पूरे वर्ग को एक मान कर उसका मूल्यांकन, नेतृत्व शैली और निर्णयक्षमता पर सामाजिक संसक्ति के स्कोर के बीच जो सह सम्बन्ध है वह .01 स्तर पर महत्वपूर्ण है और वर्ग में बने रहने की सुस्पष्ट इच्छा के साथ उसका सहसम्बन्ध .05 स्तर पर महत्वपूर्ण है। अन्य सहसम्बन्ध महत्वपूर्ण स्तर पर न पहुँचते हुए भी सकारात्मक हैं।

—शिक्षा के सिद्धांतों में छात्र-अध्यापक उपलब्धि और अंतर वैयक्तिक आकर्षण, पूरे वर्ग को एक मान कर उसका मूल्यांकन, नेतृत्व शैली और निर्णय-क्षमता पर सामाजिक संसक्ति के स्कोर के बीच जो सहसम्बन्ध है वह महत्वपूर्ण है। वर्ग के साथ घनिष्ठता और महत्वपूर्ण स्तर पर पहुँचे बिना ही वर्ग में बने रहने की सुस्पष्ट इच्छा के साथ भी उसका सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

—शिक्षण अभ्यास में छात्र-अध्यापक उपलब्धि और वर्ग में बने रहने की सुस्पष्ट इच्छा, अंतर, वैयक्तिक आकर्षण, पूरे वर्ग को एक मान कर उसका मूल्यांकन, वर्ग के साथ घनिष्ठता, नेतृत्व शैली और निर्णय क्षमता के बीच महत्वपूर्ण सह-सम्बन्ध है।

—सामाजिक संसक्ति के किसी भी स्कोर के साथ समंजन और अभिवृत्ति के चर महत्वपूर्ण रूप में सहसम्बन्धित नहीं हैं। शिक्षा के सिद्धांतों में, छात्र-अध्यापक उपलब्धि के मीन स्कोर और उनकी कुल उपलब्धि, उच्च व निम्न सामाजिक संसक्ति वाले संस्थानों में महत्वपूर्ण रूप से अलग अलग है।

—उच्च और निम्न सामाजिक संसक्ति वाले संस्थानों में अध्यापकों (अध्यापक-शिक्षकों) के प्रति छात्र-अध्यापक की अभिवृत्तियाँ महत्वपूर्ण रूप से अलग अलग हैं।

—थ्योरी में छात्र-अध्यापक उपलब्धि के लिए सामाजिक संसक्ति के स्कोर निम्न भविष्य वाचन वाले हैं। वे विसंगति के 11.69 प्रतिशत के ही लिए हैं। छात्र-अध्यापक समंजन और अभिवृत्ति बेहतर भविष्य-वाचक हैं। वे विसंगति के क्रमशः लगभग 36 प्रतिशत और 14.41 प्रतिशत को बताती हैं।

—शिक्षण अभ्यास में छात्र-अध्यापक उपलब्धि को बताने वाले सामाजिक संसक्ति के चर, बेहतर भविष्य वाचक हैं। वे विसंगति के 48.23 प्रतिशत के लिए हैं।

अन्वेषणात्मक प्रकृति वाले इस अध्ययन ने केवल एक राज्य के प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों तक अपने को सीमित रखा।

4. प्रतिभा-खोज में अनुसंधान और विकास : रचनात्मकता-परीक्षणों के इस्तेमाल का अध्ययन

प्रमुख अन्वेषक : डा० एम० के० रैना

इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य रचनात्मक चिंतन योग्यता (वालाख एंड कोगन टेस्ट्स ऑफ क्रिएटिविटी), रचनात्मक बोध और प्रतिभा के मापन के बीच के सम्बन्ध को

पता लगाना था । अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो अध्ययन का उद्देश्य नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देना था :

(i) 'वालाख-कोगन टेस्ट्स ऑफ क्रिएटिविटी' पर परखे जाने पर, राष्ट्रीय प्रतिभा-खोज छात्रवृत्ति के लिए चुने गए छात्रों और साक्षात्कार के लिए बुलाए गए किंतु चुने न गए छात्रों की निष्पत्ति में क्या अत्यंत उल्लेखनीय अंतर होता है ?

(ii) रचनात्मकता के परीक्षणों के स्कोर्स और प्रतिभा के मानदंडों के बीच क्या सहसम्बन्ध है ?

(iii) रचनात्मकता के परीक्षणों के मौखिक और चाक्षुष रूपों से निकाले गए मानदंडों के बीच क्या सहसम्बन्ध है ?

(iv) प्रतिभा के मानदंडों द्वारा मापी गई बुद्धि की तुलना में, रचनात्मकता-परीक्षणों की दो बैटरियाँ क्या बुद्धि के दो अलग अलग आयामों को परिभाषित करती हैं ?

भारत के दो अलग अलग परीक्षा-केन्द्रों में, सन् 1977 में, साक्षात्कार के लिए बुलाए गए कक्षा X के 276 प्रत्याशियों को नमूने के लिए लिया गया । सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण और शैक्षणिक अभिरुचि परीक्षण में उनकी निष्पत्तियों के आधार पर उन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था । राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति के लिए इन प्रत्याशियों में से 48 को चुना गया और 228 को नहीं चुना गया ।

सन् 1978 में, भारत के तीन अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों में साक्षात्कार के लिए बुलाए गए कक्षा XI और XII के 205 प्रत्याशियों को नमूने के लिए लिया गया । राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति के लिए इन प्रत्याशियों में से 50 को चुना गया और 155 को नहीं चुना गया ।

इस अन्वेषण के लिए 'वालाख एंड कोगन टेस्ट्स ऑफ क्रिएटिविटी' के मौखिक और चाक्षुष दोनों परीक्षणों को रचनात्मकता मापने के लिए और रचनात्मक बोध मापने के लिए प्रयुक्त किया गया ।

प्रमुख परिणामों को संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है :

(i) चुने गए और नहीं चुने गए प्रत्याशियों की रचनात्मकता के तुलनात्मक अध्ययन से पता चला कि : (क) दोनों वर्षों के परीक्षा-परिणामों का यही कहना था कि रचनात्मकता के मौखिक आयामों पर चुने गए और नहीं चुने गए प्रत्याशियों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं थे । (ख) चाक्षुष रचनात्मकता

परीक्षणों में भी कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं मिले। (ग) रचनात्मक बोध के मापन में भी, दोनों वर्गों के बीच कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं मिला।

(ii) प्रतिभा और रचनात्मकता के मापन के बीच के सम्बन्धों ने बताया कि (क) रचनात्मकता के चाक्षुष और मौखिक परीक्षणों तथा जी० एम० ए० टी० स्कोर्स के बीच मामूली और निम्न सहसम्बन्ध हैं। सन् 1978 के वर्ग के मामले में भी इसी तरह के परिणाम मिले थे। (ख) रचनात्मकता के चाक्षुष और मौखिक परीक्षणों के विविध आयामों और एस० ए० टी० स्कोर्स के बीच अति निम्न और मुख्यतः ऋणात्मक सहसम्बन्ध मिले। सन् 1978 में भी जो सहसम्बन्ध मिले थे, वे निम्न थे और कई मामलों में शून्य थे। (ग) दोनों ही वर्षों में, रचनात्मकता के चाक्षुष, और मौखिक परीक्षणों तथा साक्षात्कार स्कोर्स के बीच पाए गए अधिकांश सहसम्बन्ध शून्य के आसपास ही थे।

(iii) जहाँ तक प्रतिभा के मापन और रचनात्मक बोध के बीच के सम्बन्ध का सवाल है: (क) 1978 वर्ग के मामले में रचनात्मक बोध और जी० एम० ए० टी० स्कोर्स के बीच तनिक सा सहसम्बन्ध मिला था। (ख) रचनात्मक बोध के मापन के साथ एस० ए० टी० स्कोर्स का ऋणात्मक सहसम्बन्ध था। (ग) सन् 1978 के कुल प्रत्याशियों और न चुने गए प्रत्याशियों के वर्गों के मामले में साक्षात्कार ने रचनात्मक बोध के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दिखाया। उसने चुने हुए प्रत्याशियों के वर्ग में निम्न और न के बराबर सहसम्बन्ध दिखाया ($r = \cdot 13$)।

(iv) रचनात्मक चिंतन योग्यता के मानदंडों में अंतर-सहसम्बन्धों के लिए (क) दोनों वर्षों के परिणामों ने जाहिर किया कि रचनात्मकता के विविध कार्यभारों के स्कोर काफी संसक्त थे। (ख) रचनात्मकता की छह मौखिक अनुक्रमणिकाएँ चार मौखिक अनुक्रमणिकाओं के साथ बहुत अच्छी तरह से सहसम्बन्धित नहीं थीं। (ग) कारक विश्लेषण परिणामों ने रचनात्मकता के परीक्षणों में कार्यभार विशिष्टता और रूप विशिष्टता का संकेत दिया। संख्या कारक; प्रतिदर्श अर्थों के कारक; विलक्षणता की रेखा के अर्थों के कारक; शैक्षणिक योग्यता के कारक; विलक्षणता की समानताओं के कारक और विलक्षणता की घटनाओं के कारक उभर कर सामने आए। परिणामों ने रचनात्मकता के मानदंडों और प्रतिभा के मानदंडों के सांख्यिकीय अलगाव का भी संकेत दिया।

नई परियोजनाएँ

अनुसंधान रिपोर्टों और शोध ग्रंथों को प्रकाशन-अनुदान देने और परियोजनाओं को

वित्तीय सहायता देने की योजना के अंतर्गत 29 शोध परियोजनाओं को स्वीकृत किया गया। इस पृष्ठ व अगले पृष्ठों की सारणी में इन परियोजनाओं का ब्यौरा दिया जा रहा है :

वित्तीय सहायता के लिए स्वीकृत नई अनुसंधान-परियोजनाएँ

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1	2	3
1.	आत्म-अवधारणा और परामर्श तथा अन्य सहायक रणनीतियों के प्रभाव	प्रो० जे० एन० जोशी चंडीगढ़
2.	उत्तर प्रदेश के निराश्रय-गृहों में पल रहे बच्चों की मार्ग-दर्शन-आवश्यकताएँ	डा० साहब सिंह वाराणसी
3	पठन-सुधार-कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए कक्षा V, VI और VII के छात्रों के लिए गुजराती में शांत पठन बोध परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण	डा० बी० वी० पटेल वल्लभ विद्यानगर
4.	आंध्र प्रदेश में गणित शिक्षण और अधिगम का अनुभवजन्य अध्ययन	डा० के० संगीता राव गुंटूर
5.	रा० शै० अ० और प्र० प० के अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षणों द्वारा जुटाई गई आधार सामग्री को प्रयुक्त कर नामांकन एवं स्कूली सुविधाओं की विसंगतियों को मापना	श्री० जे० एल० आजाद नई दिल्ली
6.	बड़ौदा जिले में स्कूल प्रसारणों का अध्ययन	डा० जी० आर० सुदामे बड़ौदा
7.	आंध्र प्रदेश के रायल सीमा इलाके की रक्षा 3 से 7 तक में पढ़ने वाले बच्चों में पठन अयोग्यता की प्रकृति और घटनाओं का अन्वेषण	डा० आर० श्रीनिवास राव, तिरुपति
8.	भारत में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का व्यवहार	श्रीमती कुसुम कामथ बम्बई
9.	+2 और पूर्व स्नातक स्तरों पर हिन्दी कहानी की शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन उपकरण	डा० आर० एस० शर्मा एवं श्रीमती कमला बोरा नई दिल्ली

1	2	3
10	चोर्यासी ब्लॉक में प्रथम श्रेणियों के बीच डिस-कैल्कूलिया	डा० एस० जी० शाह सूरत
11.	आंध्र प्रदेश के वारंगल जिले में प्राथमिक शिक्षा में प्राइवेट निवेश	डा० एन० राजय्या वारंगल
12.	स्कूलों में पोषण और स्वास्थ्य प्रणाली की स्थिति और प्रासंगिकता का अध्ययन	डा० सी० गोपालन नई दिल्ली
13.	प्राथमिक कक्षा के बच्चों में अधिगम-अक्षमता	डा० के० जी० देसाई अहमदाबाद
14.	उत्तर प्रदेश के तीर्थों में साधु संगठनों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति	डा० जे० के० मिश्र मुरादाबाद

पीएच० डी० शोध-प्रबंधों और अनुसंधान रिपोर्टों के लिए प्रकाशन अनुदान

क्रम संख्या	शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1	2	3
1.	अभियांत्रिकी रचनात्मकता से जुड़े प्रतिभाशाली और अप्रतिभाशाली कारक	डा० एम० सेन गुप्त नई दिल्ली
2.	पंजाब विश्वविद्यालय के 1950-51 और 1974-75 वर्षों का लागत-विश्लेषण	डा० बी० पी० गर्ग नई दिल्ली
3.	शिक्षण की प्रकृति	प्रो० आर० पी० सिंह नई दिल्ली
4	दिल्ली के स्कूल-अध्यापकों की सामाजिक पृष्ठभूमि और व्यावसायीकरण का सम्बन्ध	डा० सी० एल० बधावन नई दिल्ली
5.	प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि एवं उनकी कार्य-संतुष्टि	डा० (श्रीमती) करुणा शाह, वाराणसी

1	2	3
6.	हाईस्कूल छात्रों के लिए भौतिक भूगोल में कार्यक्रमित पाठ्य का विकास	डा० निर्मल सिंह कुरुक्षेत्र
7.	सामान्य और समस्याग्रस्त शिशुओं के व्यक्तित्वों के अंतरों का अध्ययन	डा० श्याम कृष्णन गोरखपुर
8.	श्रवण अपंगता वाले शिशुओं के शिक्षकों के लिए व्यावहारिक सहायक पुस्तक	सुश्री मेनका पार्थसारथी मद्रास
9.	प्राचीन भारत की जनशिक्षा पर धर्म का प्रभाव	डा० डी० पी० मुखर्जी विश्वभारती
10.	ऐन इन्वेस्टिगेशन इंटू दि एम्पीरिकल वैलिडिटी ऑफ ब्लूम्स टैक्सोनोमी ऑफ़ एजुकेशनल आब्जेक्टिवज़	डा० प्रीतम सिंह नई दिल्ली
11.	सामाजिक-आर्थिक स्तर पर शिक्षा का प्रभाव	डा० बी० एम० मोदी अहमदाबाद
12.	ऐन एम्पीरिकल स्टडी ऑफ़ दि डेवेलपमेंट ऑफ़ एचीवमेंट मोटिव्ज़ एंड फंक्शन्स ऑफ़ प्रोलांग्ड डेप्रीवेशन	डा० अष्टानंद तिवारी देवरिया
13.	दिल्ली के हायर सेकंडरी स्कूलों के शिक्षकों में आत्म-यथार्थीकरण	डा० (श्रीमती) ए० के० सत्पथी, नई दिल्ली
14.	शिक्षक समंजन में समान कारकों का विश्लेषण	डा० एस० के० मंगल रोहतक
15.	नागा भाषा-भाषी छात्राओं की हिन्दी सीखने की समस्याएँ	डा० रामकृपाल कुमार आगरा

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान के कार्यक्रमों के तीन मुख्य केन्द्र बिंदु हैं : (क) सीखने वाला, (ख) सिखाने-सीखने की प्रक्रिया, और (ग) सिखाने-सीखने की परिस्थिति । रा० शै० अ० और प्र० प० इन तीनों बिन्दुओं से सम्बद्ध अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रमों

का आयोजन और सामग्री का निर्माण करती है। ऊपर गिनाए गए उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा जगत की प्राथमिकताओं के साथ अनुसंधान की एक योजना बनाई गई। अगले पाँच-दस वर्षों के पूर्व अनुमानित पालनपोषण के प्रयासों पर ही ध्यान केन्द्रित करने का प्रस्ताव है। तीन प्रकार की अपंगताएँ पहचानी जा चुकी हैं : अधिगम अपंगताएँ; सामाजिक वंचनाएँ और आर्थिक वंचनाएँ। इन तीनों क्षेत्रों की समस्याओं के आधार पर अनुसंधान प्रस्ताव बनाए जाएँगे।

पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ देने की प्रक्रिया और लक्षणों का अनुदैर्ध्य अन्वेषण

इस अनुदैर्ध्य अन्वेषण का लक्ष्य इस बात का परीक्षण करना है कि किस प्रकार एक विशेष प्रकार के छात्र और संस्थागत लक्षण स्कूल छोड़ देने की प्रवृत्ति से संबंधित हैं। इस प्रवृत्ति को नियंत्रित करने का लक्ष्य भी इसी अन्वेषण का है।

(क) जिन छात्रों ने 1981-82 के दौरान पढ़ाई के बीच में ही स्कूल जाना छोड़ दिया, उनके नाम प्राप्त किए गए।

(ख) स्कूल-परिवेश और छात्रों की विशेषताओं पर शिक्षकों का मूल्य-निर्धारण प्राप्त किया गया।

(ग) स्जोन्दी टेस्ट और पिक्चर फस्ट्रेशन टेस्ट की टीका करने के लिए विस्तृत मार्गदर्शी रेखाएँ बनाई गईं।

(घ) पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने की प्रक्रिया पर प्राक्कल्पनाएँ और केस स्टडीज बनाई जा रही हैं।

हायर सेकंडरी स्तर पर धारा के भीतर ही धारा और कोर्सों को लाने के लिए निकष विकसित करना

रिपोर्ट लिखी जा रही है और निम्नलिखित के प्रथम प्रारूप बन चुके हैं :

—शैक्षणिक उपलब्धि के भविष्य वाचक के रूप में 'जी' और 'एस ए टी' के मानदंड।

—सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट के भविष्य वाचक के रूप में सेकंडरी स्कूल सर्टिफिकेट इक्जामिनेशन।

—ई० पी० क्यू० और शैक्षणिक निष्पादन।

—रुचि कारक और शैक्षणिक निष्पादन ।

—शैक्षणिक समंजन और शैक्षणिक निष्पादन ।

व्यावसायिक खोज कार्यक्रम की प्रभावकारिता का अन्वेषण

माध्यमिक स्कूल स्तर पर व्यावसायिक खोज कार्यक्रम की प्रभावकारिता का अन्वेषण ही इस अध्ययन का लक्ष्य है। इसके दो प्रमुख भाग हैं: (i) अपनी खोज, और (ii) व्यवसायों की खोज ।

इस वर्ष 'अपनी खोज' की सामग्री हिन्दी और अंग्रेजी में बनाई गई जिनके शीर्षक थे—(i) तुम्हारी जरूरतें, (ii) अपनी खोज, (iii) तुम्हारी रुचि, (iv) तुम्हारी अभि-रुचि, (v) सामाजिक और व्यावसायिक प्रभाव, (vi) तुम्हारे खाली वक्त के काम काज ।

छात्रों ने उपरोक्त सामग्री को नियमित कक्षा में पढ़ा और बाद में उस पर चर्चाएँ की। (i) आत्म सूचना सूची, (ii) पेशा परिपक्वता सूची, (iii) पेशा परिपक्वता पैमाना, और (iv) कई अभिवृत्ति परीक्षणों पर उनकी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गईं ।

आनुषंगिक प्रबन्ध द्वारा प्रारम्भिक छात्रों के कक्षा व्यवहार और बोधात्मक क्रियाओं को सुधारना

इस अनुसंधान परियोजना का उद्देश्य प्रारम्भिक छात्रों के कक्षा व्यवहार और बोधा-त्मक क्रियाओं को सुधारने में प्रबंध तकनीक की क्षमता का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के लिए चुने गए तीन स्कूलों में इन प्रबंध तकनीकों को प्रयुक्त किया गया। प्रयोग-पूर्व की आधार-सामग्री भी इकट्ठा की गई है। परिणामों को विश्लेषित किया जा रहा है ।

प्रेक्षा ध्यान द्वारा जीवन विज्ञान प्रशिक्षण की प्रभावकारिता

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से जीवन विज्ञान में प्रशिक्षण की क्षमता का अध्ययन करने के लिए तुलसी अध्यात्म नीड़म एवं राजस्थान शिक्षा निदे-शालय द्वारा संयुक्त रूप से यह परियोजना शुरू की गई थी। परिषद् ने मूल्यांकन अध्ययन के लिए अपनी सहमति दी थी। यह अन्वेषण निदान पूर्व और निदानोत्तर परीक्षण का नियोजन करता है ।

निम्नलिखित चरों की आधार सामग्री संकलित की गई :

सामान्य स्वास्थ्य : ऊँचाई, वजन, रक्तचाप, वक्ष-प्रसार, साँस रोकने की क्षमता, दृष्टि (चश्मा लगाने वाले विशेष रूप से बताएँ), कान-नाक-गला का सामान्य परीक्षण, कोई प्रत्यक्ष रोग।

— सामान्य शैक्षणिक उपलब्धि।

—सामान्य मानसिक योग्यता।

—रचनात्मकता।

—चिंता।

—समंजन।

— कुंठा सहिष्णुता।

— समस्या-समाधान क्षमता।

—सामाजिक-आर्थिक स्तर।

तुलसी अध्यात्म नीड़म द्वारा प्रशिक्षित नियमित स्कूल शिक्षकों ने सितम्बर 1982 से फरवरी 1983 तक जीवन विज्ञान प्रशिक्षण दिया।

उपरोक्त क्षेत्र अध्ययन के अलावा, एक स्कूल में एक गहन अन्वेषण शुरू किया गया जिसमें निम्नलिखित चरों पर अतिरिक्त आधार-सामग्री भी संकलित की गई : इलेक्ट्रो इसी-फैलोग्राफी (ई ई सी), मेज लर्निंग (इलेक्ट्रिकल) रिऐक्शन टाइम गैल्वैनिक स्किन रेजिस्टेंस। निदानपूर्व आधार सामग्री स्कोर की जा चुकी थी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने निम्नलिखित उद्देश्यों से प्रमुख व्यक्तियों के विकास के लिए, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया : अध्यापक-शिक्षकों की गुणवत्ता को और अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों वाले उनके ज्ञान को सुधारना; छात्रों को समझने के लिए कौशलों को विकसित करना; सीखने वाले के व्यावहार को सुधारने के लिए कौशलों का विकास करना।

14

प्रतिभा की खोज

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का उद्देश्य प्रतिभाशाली छात्रों को खोज निकालना और उन्हें वित्तीय सहायता देना है ताकि वे उच्च शिक्षा तक पढ़ाई जारी रख सकें। छात्रवृत्तियाँ मूल विज्ञानों, सामाजिक विज्ञानों, कृषि, वाणिज्य और इंजीनियरिंग तथा चिकित्साशास्त्र जैसे व्यावसायिक कोर्सों वाले विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए दी जाती हैं।

हर वर्ष कुल 550 छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं जिनमें 50 छात्रवृत्तियाँ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति के छात्रों के लिए होती हैं। हर साल 400 से अधिक केन्द्रों में परीक्षाएँ ली

जाती हैं जो कक्षा X, XI और XII की फाइनल सार्वजनिक परीक्षा में बैठने वाले छात्रों के लिए होती हैं।

भारत के संविधान में मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं में ये परीक्षाएँ होती हैं। बाद में राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों की निष्पत्तियों के गहन अध्ययन किए जाते हैं।

इस वर्ष राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा 9 मई 1982 को भारत के 439 केन्द्रों और जर्मनी के एक केन्द्र में हुई। कुल मिला कर 83,320 छात्र इसमें बैठे—कक्षा X में 46,365, कक्षा XI में 8,988 और कक्षा XII में 27,967 छात्र। इसमें से 550 छात्रों को छात्रवृत्तियों के लिए चुना गया जिनमें अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के 50 छात्र सम्मिलित हैं।

आगे एक सारणी दी जा रही है। इसमें 1982 वर्ष में कक्षा X, XI और XII के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठने वाले छात्रों, साक्षात्कार के लिए बुलाए गए छात्रों और चुने गए छात्रों का विवरण राज्य क्रम से दिया गया है। इसमें संक्षिप्त किए गए शब्द इस प्रकार हैं :

परीक्षा में बैठे = प०

साक्षात्कार में आए = सा०

चुने गए = चु०

सन् 1982 की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा

क्रम संख्या	राज्य/संघ क्षेत्र	कक्षा X			कक्षा XI			कक्षा XII		
		प०	सा०	चु०	प०	सा०	चु०	प०	सा०	चु०
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	आंध्र प्रदेश	3518	16	5	48	—	—	2328	19	15
2.	असम	332	1	1	4	—	—	287	1	1
3.	विहार	7013	100	50	6	—	—	1923	32	13
4.	गुजरात	1167	7	3	1	—	—	1137	7	3
5.	हरियाणा	559	7	3	382	13	7	189	—	—
6.	हिमाचल प्रदेश	367	1	—	142	3	2	67	—	—
7.	जम्मू व कश्मीर	183	—	—	107	—	—	112	—	—
8.	कर्नाटक	2217	13	7	—	—	—	923	5	3
9.	केरल	2400	10	7	25	2	—	732	2	1
10.	मध्य प्रदेश	840	7	4	4134	18	8	177	1	—
11.	महाराष्ट्र	4533	92	43	4	—	—	2836	53	33
12.	मणिपुर	33	—	—	—	—	—	30	—	—

1.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
13.	मेघालय	88	—	—	—	—	—	36	—	—
14.	नागालैंड	3	—	—	—	—	—	5	—	—
15.	उड़ीसा	1800	9	4	490	17	12	1883	10	4
16.	पंजाब	716	7	3	499	15	9	241	5	2
17.	राजस्थान	2481	21	12	2820	119	56	338	7	2
18.	सिक्किम	6	—	—	—	—	—	11	—	—
19.	तमिलनाडु	3358	22	9	21	—	—	2920	28	16
20.	त्रिपुरा	65	1	—	—	—	—	63	—	—
21.	उत्तर प्रदेश	6188	22	9	44	1	—	4607	28	13
22.	पश्चिमी बंगाल	2824	29	12	2	—	—	2130	20	14
23.	अंडमान निकोबार द्वी. स.	65	—	—	—	—	—	46	—	—
24.	अरुणाचल प्रदेश	36	—	—	—	—	—	8	—	—
25.	चंडीगढ़	373	4	4	246	28	11	193	4	1
26.	दादरा व नगर हवेली	—	—	—	—	—	—	—	—	—
27.	दिल्ली	4860	177	97	53	1	—	4479	101	50
28.	गोआ, दमन व दिव	85	1	1	—	—	—	64	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
29.	लक्षद्वीप	8	1	—	—	—	—	2	—	—
30.	मिजोरम	29	—	—	—	—	—	2	—	—
31.	पांडिचेरी	213	—	—	—	—	—	186	—	—
32.	विदेश	6	—	—	—	—	—	2	—	—
		46365	549	274	8988	217	105	27967	323	171

(प)—परीक्षा में वैठे कुल छात्र = 83,320

(सा)—साक्षात्कार में बुलाए गए छात्र = 879

(चु)—चुने गए कुल छात्र = 550

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति के लिए 1982 में चुने गए छात्रों की पढ़ाई की वर्तमान स्थिति (1982-83)

क्रम संख्या	कक्षा	चुने गए छात्रों की संख्या	सन् 1982-83 में पढ़े जा रहे विषय					
			+2 स्तर	बी०ए०प्रथम वर्ष	बी० काम० प्रथम वर्ष	बी० एससी० प्रथम वर्ष	इंजीनियरिंग (अर्थात् बी०ई० या बी० टेक०) प्रथम वर्ष	एम०बी०बी०एस० प्रथम वर्ष
1.	X	250	250	—	—	—	—	—
2.	XI	100	35	25	6	21	13	—
3.	XII	150	—	24	36	13	48	29
	कुल	500	285	49	42	34	61	29

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति श्रेणी में 1982 में चुने गए छात्रों की स्थिति

क्रम संख्या	कक्षा	चुने गए छात्रों की संख्या	+2 स्तर	बी०ए०प्रथम वर्ष	बी० काम० प्रथम वर्ष	बी० एससी० प्रथम वर्ष	इंजीनियरिंग (अर्थात् बी०ई० या बी० टेक०) प्रथम वर्ष	एम०बी०बी०एस० प्रथम वर्ष
1.	X	24	24	—	—	—	—	—
2.	XI	5	1	2	1	1	—	—
3.	XII	21	—	4	3	1	7	6
		50	25	6	4	2	7	6

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति पाने वालों की पढ़ाई की वर्तमान स्थिति (वर्ष 1982-83)

क्रम संख्या	कक्षा/स्तर	सामान्य श्रेणी में चुने गए छात्रों की संख्या	अ० जा०/अ०ज० श्रेणी में चुने गए छात्रों की संख्या	कुल
1	2	3	4	5
1.	+2 स्तर	500	43	543
2.	बी० ए० प्रथम वर्ष	60	6	66
3.	बी० ए० द्वितीय वर्ष	50	7	57
4.	बी० ए० तृतीय वर्ष	76	—	76
5.	बी० कॉम० प्रथम वर्ष	47	4	51
6.	बी० कॉम० द्वितीय वर्ष	35	—	35
7.	बी० कॉम० तृतीय वर्ष	25	—	25
8.	बी० एससी० प्रथम वर्ष	63	2	65
9.	बी० एससी० द्वितीय वर्ष	18	2	20
10.	बी० एससी० तृतीय वर्ष	39	—	39
11.	एम० ए० (प्रथम)	69	—	69
12.	एम० कॉम० (प्रथम)	11	—	11
13.	एम० एससी० (प्रथम)	40	—	40
14.	एम० ए० (फाइनल)	23	—	23
15.	एम० कॉम० (फाइनल)	3	—	3
16.	एम० एससी० (फाइनल)	10	—	10
17.	पीएच० डी० (प्रथम वर्ष)	26	—	26
18.	पीएच० डी० (द्वितीय वर्ष)	33	—	33
19.	पीएच० डी० (तृतीय वर्ष)	25	—	25
20.	पीएच० डी० (चतुर्थ वर्ष)	25	—	25

1	2	3	4	5
21.	बी० ई०/बी० टेक० प्रथम वर्ष	203	7	210
22.	बी० ई०/बी० टेक० द्वितीय वर्ष	159	7	166
23.	बी० ई०/बी० टेक० तृतीय वर्ष	195	—	195
24.	बी० ई०/बी० टेक० चतुर्थ वर्ष	201	—	201
25.	बी० ई०/बी० टेक० पंचम वर्ष	143	—	143
26.	एम० बी० बी० एस० प्रथम वर्ष	121	9	30
27.	एम० बी० बी० एस० द्वितीय वर्ष	142	3	145
28.	एम० बी० बी० एस० तृतीय वर्ष	164	—	164
29.	एम० बी० बी० एस० चतुर्थ वर्ष	120	—	120
30.	एम० बी० बी० एस० पंचम वर्ष	48	—	48
	कुल	2674	90	2764

मूल विज्ञान पढ़ रहे रा० प्र० खो० छा० पाने वाले स्नातकोत्तर छात्रों के लिए मई-जून 1982 में हुए समर प्लेसमेंट कार्यक्रम का विवरण

क्रम संख्या	समर प्लेसमेंट कार्यक्रम का स्थान	प्रतिभागी छात्रों की संख्या
1.	इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस, बँगलूर	17
2.	भाभा एटमिक रिसर्च सेंटर, बम्बई	2
3.	टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ़ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई	27
4.	फ़िजिकल रिसर्च लेबोरेटरी, अहमदाबाद	1
5.	रेडियो ऐस्ट्रोनॉमी सेंटर ऑफ़ टी० आई० एफ० आर०, ऊटकमंड	3
6.	इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीच्यूट, नई दिल्ली	1
7.	इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, कानपुर	1

मूल विज्ञान पढ़ रहे रा० प्र० खो० छा० पाने वाले पूर्व स्नातक स्तर के छात्रों के लिए मई-जून 1982 में हुए ग्रीष्म-स्कूलों का विवरण

क्रम संख्या	ग्रीष्म-स्कूल आयोजित करने वाले निदेशक का नाम-पता	प्रतिभागियों की संख्या और कक्षा का विषय
1.	प्रो० एम० एस० सोढा भौतिकी विभाग आइ० आइ० टी० नई दिल्ली	(14) भौतिकी प्रथम वर्ष
2.	प्रो० के० वी० राव भौतिकी विभाग आइ० आइ० टी० खड़गपुर	(14) भौतिकी द्वितीय वर्ष
3.	प्रो० सी० रामशास्त्री भौतिकी विभाग आइ० आइ० टी० मद्रास	(15) भौतिकी तृतीय वर्ष
4.	प्रो० आर० डी० दुआ रसायन शास्त्र विभाग आइ० आइ० टी० नई दिल्ली	(19) रसायन विज्ञान प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष
5.	प्रो० सी० एम० पुरुषोत्तम गणित विभाग आइ० आइ० टी० मद्रास	(21) गणित प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष
6.	डा० वाइ० आर० मलहोत्रा जीवविज्ञान विभाग जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू (जम्मू व कश्मीर)	(16) जीवविज्ञान प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष

15

विस्तार के कार्य और राज्यों के साथ काम करना

शिक्षकों को निरंतर सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से, देश भर के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों व स्कूलों में स्थापित किए गए केन्द्रों एवं विस्तार सेवा विभागों के साथ रा० शै० अ० और प्र० प० बड़े पैमाने पर काम करती है। कक्षा शिक्षण अभ्यासों को सुधारने के लिए परिषद् के चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और सोलह क्षेत्र एकक विस्तार के कार्यक्रमों और अभिनव परिवर्तनों को बढ़ावा देते हैं।

भारत में स्कूल शिक्षा प्रणाली के व्यवहार और संगठन को सुधारने की दृष्टि से परिषद् महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को शुरू करती है। यह कोर्सों, अभि-विन्यास-कार्यगोष्ठियों, परिचर्चाओं,

प्रतियोगिताओं और सम्मेलनों का आयोजन करती है जिनमें भारत भर के शैक्षिक संस्थानों के परामर्शक, कैरियर मास्टर, अध्यापक-शिक्षक, निरीक्षक, अधीक्षक, शिक्षक, प्रिंसिपल और हेडमास्टर शामिल होते हैं। विस्तार के कार्यक्रम इन विषयों से सम्बद्ध होते हैं : गहन सुधार परियोजनाएँ, स्कूलों में अच्छे अभ्यास, नवाचार को प्रोत्साहन, प्रमुख व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन, राज्य अधिकारियों की राष्ट्रीय गोष्ठियाँ, एवं शैक्षिक सामग्री की अखिल भारतीय नुमाइशें। भारत के सभी 22 राज्यों तथा नौ संघ क्षेत्रों के लिए विस्तार के ये कार्यकलाप किए जाते हैं।

अहमदाबाद के क्षेत्र कार्यालय ने गुजरात के विभिन्न स्कूलों से 28 परियोजनाओं के लिए प्रस्ताव प्राप्त किए जिनमें से 13 परियोजनाओं को 1982-83 में वित्तीय पोषण दिया गया। इन 13 स्कूलों को प्रायोगिक परियोजनाएँ शुरू करने के लिए मार्गदर्शन और आवश्यक वित्तीय सहायता दी जा रही है।

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय ने स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की नवाचारीय एवं प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यकलापों को बढ़ावा दिया। क्षेत्र कार्यालय ने क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के बीस प्रिंसिपलों के लिए एक कार्यगोष्ठी आयोजित की जिसमें इन संस्थानों द्वारा शुरू की जाने वाली प्रायोगिक डिज़ाइनों को तैयार किया गया। इस सम्बन्ध में काम किया जा रहा है। क्षेत्र सलाहकार ने उन दो संस्थानों का दौरा किया जहाँ परियोजनाओं को शुरू किया जा चुका है।

कलकत्ता के क्षेत्र कार्यालय ने इस वर्ष पश्चिम बंगाल और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के विभिन्न स्कूलों से 14 प्रायोगिक परियोजनाओं के लिए प्रस्ताव प्राप्त किए। पश्चिम बंगाल के शिक्षा निदेशक की अध्यक्षता में बनी समिति ने इन प्रस्तावों की जाँच की और वित्तीय पोषण दिए जाने के लिए आठ प्रस्तावों को चुना। इन आठ स्कूलों में से सात को रकम दे दी गई। आठवाँ स्कूल अपेक्षित कागज-पत्र नहीं दे पाया इसलिए उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया।

गौहाटी के क्षेत्र कार्यालय ने असम के बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन के अध्यक्ष और शैक्षणिक कर्मचारियों के साथ बैठक की और माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं और अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में उनसे विचार-विमर्श किया।

चंडीगढ़ के क्षेत्र कार्यालय ने सभी राज्यों की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों तथा राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशकों एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रिंसिपलों से प्रायोगिक परियोजनाओं की स्कीम को खूब प्रचारित करने की प्रार्थना की तथा शिक्षकों से परियोजना-प्रस्ताव माँगे। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ से क्रमशः 45, 8, 5 और 3 परियोजना-प्रस्ताव आए। इन प्रस्तावों की जाँच करने के लिए

एक समिति बनाई गई जिसमें क्षेत्र सलाहकार और सम्बद्ध राज्यों के दो-दो प्रतिनिधि थे। समिति ने पंजाब के चार, हिमाचल प्रदेश के तीन और चंडीगढ़ के तीन परियोजना-प्रस्तावों को मंजूर कर उन्हें वित्तीय पोषण दिया।

जयपुर के क्षेत्र कार्यालय ने एस० टी० सी० स्कूल इंस्ट्रक्टरों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम और कई अन्य कार्यकलापों के द्वारा विद्यार्थियों में मानव बंधुता की भावना उपजाने बढ़ाने के लिए किए गए कार्यक्रमों में भाग लिया।

त्रिवेन्द्रम के क्षेत्र कार्यालय ने कैसरगोद इलाके के शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं पर चार दिनों का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। उस इलाके के 22 शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने में राज्य के दो संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों ने क्षेत्र सलाहकार की सहायता की। इस कार्यक्रम में, परियोजना-प्रस्तावों को बनाने में शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। कोर्स के अंत में शिक्षकों ने अपने अपने प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिए जिन्हें विशेषज्ञों ने जाँचा।

पटना के क्षेत्र कार्यालय ने सितम्बर 1982 के चौथे सप्ताह में, प्रायोगिक परियोजनाओं पर काम करने वाले स्कूल शिक्षकों के लिए एक गोष्ठी की। भाषा, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में प्रायोगिक परियोजनाएँ बनाने के लिए विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन दिया। ये विशेषज्ञ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा पटना के अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय से आए थे। विस्तार सेवा केन्द्रों के माध्यम से, बिहार के विभिन्न स्कूलों से 51 प्रायोगिक परियोजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त किए गए। वित्तीय पोषण के लिए जाँच करने पर केवल 16 प्रस्तावों को ही ठीक पाया गया। उनमें से केवल आठ शिक्षकों ने अनुदान के लिए कागज पत्रों को समय पर भेजा।

पुणे के क्षेत्र कार्यालय ने इन कार्यक्रमों में प्रतिभागिता की : अध्यापक-शिक्षकों का प्रशिक्षण, विज्ञान शिक्षकों का अनुकूलन, खिलौना बनाने की प्रतियोगिता, नवाचारीय परियोजनाएँ, राज्य स्तर की विज्ञान-प्रदर्शनी और शिक्षण सामग्री की जाँच परख एवं छात्रों का मूल्यांकन।

बँगलूर का क्षेत्र कार्यालय इन कामों में व्यस्त रहा : राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में प्रशिक्षण, शैक्षिक खिलौना बनाने की प्रतियोगिता, कक्षा I से X तक का आंतरिक मूल्य निर्धारण, अध्यापक-शिक्षकों के लिए अधिगम एवं विकास का सम्पन्नीकरण कोर्स, तमिल में अधिगम उपाख्यान, प्रतिभा खोज परीक्षा, और यूनिसेफ़ सहायता प्राप्त परियोजनाएँ।

भुवनेश्वर के क्षेत्र कार्यालय ने उड़ीसा के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों से प्रायोगिक परियोजनाओं के प्रस्ताव आमंत्रित किए और जारी प्रायोगिक परि-

योजनाओं को आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया। कुल मिलाकर राज्य के प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों से 46 और माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों से 36 परियोजनाओं के लिए प्रस्ताव आए। इनकी जांच के लिए बनी समिति ने इन प्रस्तावों की परख की और प्राथमिक स्कूलों की 17 और माध्यमिक स्कूलों की नौ परियोजनाओं को वित्तीय पोषण दिए जाने की सिफ़ारिश की। परियोजनाओं पर काम शुरू करने के लिए 15 प्राथमिक स्कूलों और चार माध्यमिक स्कूलों को 3,239 रुपयों का अनुदान दिया गया।

जो परियोजनाएँ स्कूलों ने ले रखी हैं, उनके बारे में क्षेत्र कार्यालय द्वारा उन्हें परामर्श और शैक्षणिक मार्गदर्शन दिया गया।

"प्रयोगात्मक परियोजनाओं के लिए सहायता की योजना" नामक पुस्तिका के उड़िया संस्करण को विस्तार सेवा केन्द्रों, स्कूलों, संस्थानों, विभिन्न बैठकों-गोष्ठियों-कार्यशालाओं-परिचर्चाओं के प्रतिभागियों में विस्तृत सूचना प्रदान करने के लिए बाँटा गया।

भोपाल का क्षेत्र कार्यालय स्कूलों में चल रही प्रयोगात्मक परियोजनाओं को काफी महत्व देता है। इन प्रयोगात्मक परियोजनाओं को मध्य प्रदेश के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के विस्तार सेवा केन्द्रों के माध्यम से चलाया जाता है। इस वर्ष राज्य के स्कूलों से 26 प्रयोगात्मक परियोजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त किए गए, जिनमें से 21 को स्वीकृत कर 5,350 रुपए अनुदान के तौर पर दिए गए।

मद्रास के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यक्रमों में भाग लिया : तमिल भाषा के कौशलों का सुधार, शिक्षा का व्यावसायीकरण, पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन, विज्ञान प्रदर्शनी, औपचारिक शिक्षा, सतत शिक्षा, एवं शैक्षणिक आदर्शों को मजबूत करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम।

शिलङ् के क्षेत्र कार्यालय ने राज्यों/संघ क्षेत्रों को इन कामों में सहायता देना जारी रखा : प्रायोगिक परियोजनाएँ, अभिनव परिवर्तन वाले कार्य, परीक्षा सुधार, खिलौना बनाने की प्रतियोगिताएँ, प्रतिभा खोज, अनौपचारिक शिक्षा, विज्ञान प्रदर्शनियाँ, शिक्षण-साधन, परामर्श एवं सम्पर्क-कार्य।

श्रीनगर के क्षेत्र कार्यालय ने 18 से 21 अगस्त 1982 तक लेह में, लद्दाख इलाके के माध्यमिक स्कूल शिक्षकों के लिए एक कार्यगोष्ठी आयोजित की जिसमें कक्षा और स्कूल परिस्थितियों पर स्वीकृत प्रायोगिक परियोजनाओं को आकस्मिक सहायता देने की योजना को समझाया गया। चुनी हुई समस्याओं पर परियोजना-प्रस्ताव बनाने में 16 शिक्षकों को

मदद दी गई। स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए स्वीकृत परियोजनाओं को संभवतः 1983-84 में वित्तीय सहायता दी जाएगी।

हैदराबाद के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यक्रमों में भाग लिया : लड़कियों का राष्ट्रीय एकीकरण शिविर, प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का प्रबोधन और मूल्यांकन, शिक्षा का व्यावसायीकरण, अनौपचारिक शिक्षा एवं प्रतिभा खोज परीक्षा।

16

अंतर्राष्ट्रीय सहायता और अंतर्राष्ट्रीय संबंध

परिषद् स्कूल स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रयत्नशील है और इस संबंध में राष्ट्रीय महत्व की संस्था होने के नाते वह यूनेस्को और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से संपर्क बनाए रखती है। परिषद् ने यू० एन० डी० पी० और यूनेस्को जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से सहायता प्राप्त की है। जहाँ तक स्कूल शिक्षा का संबंध है, परिषद् उन द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के प्रावधानों के कार्यान्वयन की प्रमुख एजेंसी के रूप में भी कार्य करती है, जिन पर भारत सरकार और विभिन्न देशों के बीच समझौता होता है। परिषद् विकास के लिए शैक्षिक नवीन

प्रक्रिया के एशियाई केन्द्र (एपीड) के लिए राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में भी कार्य करती है। अन्य कार्यों के अलावा, सचिवालय-कार्यों में निम्नलिखित कार्य शामिल हैं— शिक्षा निदेशकों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों, राज्य शिक्षा संस्थानों और अन्य एपीड के संबद्ध केन्द्रों के साथ संचार माध्यम को स्थापित करना; सूचना/प्रलेखन सेवाएँ प्रदान करना; एपीड के अंतर्गत प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों का विकास और मूल्यांकन करना; और एपीड द्वारा सहायता प्राप्त या प्रायोजित नवीन प्रक्रियात्मक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए सुविधाएँ जुटाना।

यूनेस्को/एपीड

यूनेस्को कार्यक्रमों में सीधे भाग लेकर; एपीड (विकास के लिए शैक्षिक नवीन प्रक्रिया के एशियाई कार्यक्रम) के जरिये यूनेस्को के कार्यकलापों में भाग लेकर; और शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन करके परिषद् यूनेस्को के कार्यकलापों में भाग लेती है। यूनेस्को के कार्यकलापों में सीधे भाग लेने में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, विचार-गोष्ठियों आदि में भाग लेने के लिए परिषद् के अधिकारियों को भेजने के साथ-साथ शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण के लिए विदेशी नागरिकों को बुलाना भी शामिल है। वर्ष के दौरान यूनेस्को के क्रियाकलापों में परिषद् के निम्नलिखित अधिकारियों ने भाग लिया :

परिषद् के अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के रीडर डा आर० एन० माथुर भौतिकी में 'इक्जैम्प्लर ट्रेनिंग मॉड्यूल्स' और 'ओपेन एंडेड लेबोरेटरी एक्सपेरीमेंट्स' तैयार करने के लिए हुई यूनेस्को उपक्षेत्रीय लेखन कार्यगोष्ठी में भाग लेने के वास्ते 22 से 26 जून 1982 तक मलयेशिया में रहे।

सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया एकक के रीडर श्री० के० एन० हिरियन्निया पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने की समस्या पर अंतर-देशीय अध्ययन करने के लिए मलयेशिया और थाईलैंड की यात्रा पर 6 से 15 सितम्बर 1982 तक गए।

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के रीडर डा० दि० सी० मुले सहयोगी स्कूल परियोजना के अंतर्गत समसामयिक विश्व समस्याओं का अध्ययन करने के लिए 24 अगस्त से 10 सितम्बर 1982 तक फिलीपाइन्स और थाईलैंड की यात्रा पर गए।

यूनेस्को परियोजना 'व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा में सचल टीम' के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा एकक के रीडर डा० सी० के० मिश्र और भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लेक्चरर श्री आर० एम० नामदे 25 फरवरी से 11 मार्च 1983 तक के लिए इंडोनेशिया, आस्ट्रेलिया और थाईलैंड की अध्ययन-यात्रा पर गए।

यूनेस्को परियोजना 'व्यायसायिक और तकनीकी शिक्षा में सचल टीम' के अंतर्गत भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के रीडर डा० यू० एस० प्रसाद 20 से 30 मार्च 1983 तक की अध्ययन-यात्रा पर फिलीपाइन्स और जापान गए।

'सेकंडरी विज्ञान और गणित में कक्षा परीक्षण और मापन के प्रशिक्षण' वाले संलग्नक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मैसूर के क्षे० शि० म० के लेक्चरर डा० एस० एन० प्रसाद मलयेशिया की छह सप्ताह की यात्रा पर 4 अप्रैल 1982 को गए।

रसायन विज्ञान की पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री की एपीड रीजनल डिज़ाइन वर्कशॉप में भाग लेने के निमित्त मैसूर के क्षे० शि० म० के० प्रोफेसर डा० ए० के० शर्मा एवं विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के रीडर डा० आर० डी० शुक्ल सिओल की एक सप्ताह की यात्रा पर 21 से 28 अक्तूबर 1982 तक के लिए गए।

अपंग बच्चों/लोगों की विशेष शिक्षा पर प्रशिक्षण देने के लिए जापान में हुए द्वितीय एपीड क्षेत्रीय सम्मेलन में भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० के रीडर इन एजुकेशन डा० एस० सी० चतुर्वेदी ने 16 से 23 सितम्बर 1982 तक भाग लिया।

शैक्षिक विकास की उन्नत तकनीकी के व्यवहार पर यूनेस्को द्वारा पेनाङ (मलयेशिया) में 20 से 24 सितम्बर 1982 तक आयोजित एसीड स्टडी ग्रुप मीटिंग में शै० प्रौ० के० की प्रोफेसर डा० स्नेहलता शुक्ल ने भाग लिया।

सेकंडरी विज्ञान और गणित के उपकरणों (डिज़ाइन और प्रोटोटाइप उत्पादन) के विकास का प्रशिक्षण, जिसे एपीड के अंतर्गत 20 सितम्बर से 27 नवम्बर 1982 तक पेनाङ (मलयेशिया) में आयोजित किया गया था, लेने के लिए भुवनेश्वर में क्षे० शि० म० के भौतिकी के लेक्चरर श्री० एम० ए० चंद्रशेखर मलयेशिया गए।

यूनेस्को और एपीड के सहयोग से जापान की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्था द्वारा शैक्षिक जानकारी पर आयोजित क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में 1 से 23 फरवरी 1982 तक सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया एकक के रीडर श्री के० एन० हिरियन्निया ने भाग लिया।

व्यावसायिक शिक्षा एकक के अध्यक्ष प्रो० अरुण कुमार मिश्र ने तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की संभाव्यता पर पेरिस में 1 से 4 मार्च 1983 तक आयोजित यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय परामर्श में भाग लिया।

रा० शै० अ० और प्र० प० के संयुक्त निदेशक डा० त्रिलोकनाथ धर ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण पर विशेषज्ञों की बैंङ्कॉक में 21 से 29 मार्च 1983 तक हुई बैठक में भाग लिया।

परिषद् में आए विदेशी अतिथि

दूसरे देशों के विशेषज्ञों के लिए परिषद् ने नीचे लिखी भारत-यात्राओं की व्यवस्था की- -

विज्ञान के शिक्षण-साधनों के उत्पादन की नई विधियों में एक सप्ताह की निरीक्षण-यात्रा की व्यवस्था नेपाल के पाँच शिक्षाविदों के लिए अप्रैल 1982 में की गई।

पेरिस के अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन संस्थान ने नौ एशियाई देशों के 11 प्रशिक्षार्थियों के लिए भारत के राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन संस्थान की यात्रा की व्यवस्था की थी। वे लोग 1 जून 1982 को रा० शै० अ० और प्र० प० की यात्रा पर भी आए। उन्हें यहाँ के कार्यक्रमों से परिचित कराया गया।

यूनेस्को शिक्षावृत्ति पर दो इंडोनेशियाई, सर्वश्री मुज़ामिल खलीमी और अलेक्स मोजेज ओपियर, रा० शै० अ० और प्र० प० के एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 6 से 10 जून 1982 तक यहाँ रहे। उनके प्रशिक्षण का क्षेत्र था विज्ञान शिक्षा।

बैङ्कॉक स्थित, एशिया और प्रशांत में शिक्षा के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय की पर्यावरणीय शिक्षा की क्षेत्रीय सलाहकार डा० (श्रीमती) डब्ल्यू० डी० पोन्निया परिषद् की अध्ययन-यात्रा पर 9 से 11 जून 1982 तक के लिए आईं।

श्रीलंका के उप शिक्षा मंत्री, श्री समरवीर वीरवाणी वहाँ के शिक्षा सुधार के मुख्य तकनीकी सलाहकार डा० एरिक जे० डि सिल्वा के साथ परिषद् में 1 से 3 जुलाई 1982 तक के लिए आए। उन्होंने राष्ट्रीय परिषद् के शैक्षणिक अधिकारियों के साथ अनेक बैठकें और चर्चाएँ कीं।

जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन करने के लिए सात चीनी शिक्षकों का एक प्रतिनिधिमंडल परिषद् में 14 से 20 सितम्बर 1982 तक रहा।

जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन करने के लिए फिलीपाइन्स के आठ शिक्षकों का एक दल परिषद् में 6 से 9 सितम्बर 1982 तक रहा। उनके साथ बैङ्कॉक स्थित यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय के जनसंख्या शिक्षा विशेषज्ञ डा० अनसार अली खाँ भी थे।

जाम्बिया के अध्येता श्री जी० एम० के० फीरी के लिए परिषद् ने मार्गदर्शन और परामर्श में दस सप्ताहों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 26 जुलाई से 3 अक्तूबर 1982 तक किया। श्री फीरी विशेष राष्ट्रमंडल सहायता योजना (1982-83) के अंतर्गत शिक्षा मंत्रालय की छात्रवृत्ति पर आए थे।

श्रव्य-दृश्य संसाधन विकास के क्षेत्र में, 3 अगस्त से 30 सितम्बर 1982 तक भूटान के यूनेस्को फेलो श्री गैली दोरजी के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

थाईलैंड के शिक्षा कार्यक्रम अधिकारी, श्री सिरिपीन चंटानौंट राष्ट्रीय परिषद् में 13 अगस्त 1982 को आए। वे यूनेस्को नेशनल कमीशन पर्सोनेल आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार के निमंत्रण पर दस दिनों की अध्ययन-यात्रा पर आए थे।

यूनिसेफ़ सहायता के अंतर्गत, स्कूल के बाहर के शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए, 15 अफगान शिक्षकों की टीम दो सप्ताहों की अध्ययन यात्रा पर 29 सितम्बर 1982 को आई।

इथियोपिआ के यूनेस्को फेलो सर्वश्री केबेडे फ़ीसेनबेत, अब्दुल एम० अहमद और डोनेबुल शैक्षिक उपकरण एवं सामग्री के उत्पादन में अध्ययन कार्यक्रम के लिए राष्ट्रीय परिषद् में 21 से 27 अक्तूबर 1982 तक रहे।

नेपाल के यूनेस्को फेलो श्री विष्णु कुमार भुजु, विज्ञान किटों के निर्माण के क्षेत्र में एपीड विशेष तकनीकी सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत, दो सप्ताहों के एक प्रशिक्षण के लिए 29 नवम्बर 1982 से राष्ट्रीय परिषद् में रहे।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के निमंत्रण पर, यहाँ की स्कूल स्तर की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करने के लिए, भारत यात्रा पर आए हुए कीनिया के बुनियादी शिक्षा मंत्री, श्री जे० के० एडीनी राष्ट्रीय परिषद् में भी 3 नवम्बर 1982 को आए।

भूटान के यूनेस्को फेलो श्री उगेन टी० लामा, पुस्तकालय विज्ञान में परिषद् में हुए छह महीनों वाले एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 6 दिसम्बर 1982 से 31 मई 1983 तक सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय परिषद् में तीन सप्ताहों के लिए 15 दिसम्बर 1982 से शुरू हुए प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भूटान के पाँच यूनेस्को फेलो सर्वश्री मधुकर गजमेर, त्योङ्पेन वाङ्दी, मदनकुमार लामा, हर्क बहादुर विश्वा और सोमनाथ प्रधान सम्मिलित हुए।

शैक्षिक सांख्यिकी और सूचना के क्षेत्र में दो महीनों वाले एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पाँच अफगान नागरिक—कुमारी नसरीन रफीक़, सर्वश्री एम० आइ० हबीबी, अजीउल्लाह, यूनुस और अब्दुल गफ्फार तलातूम राष्ट्रीय परिषद् में 17 जनवरी 1983 को आए।

इजिप्ट सरकार के शिक्षा के उपमंत्री, डा० मंसूर हुसेन, इजिप्ट के शिक्षा मंत्रालय के राज्य अवर सचिव श्री एल० हसैनी सादक और इजिप्ट के प्राथमिक शिक्षा विभाग की

महानिदेशिका श्रीमती सोग अनीस 24 मार्च 1983 को राष्ट्रीय परिषद् में आए। उन्हें परिषद् के कार्यकलापों और कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

पेरिस स्थित यूनेस्को की कार्यक्रम विशेषज्ञा, श्रीमती लिडा फ्रिश राष्ट्रीय परिषद् में 16 मार्च 1983 को आईं।

स्कूल छोड़ जाने वाली समस्या और शिक्षा प्रणाली की सचलता का अध्ययन करने के लिए, मलयेशिया के श्री ली मियो राष्ट्रीय परिषद् में 7 से 9 सितम्बर 1982 तक रहे।

थाईलैंड की श्रीमती मथाई एवं मनीला (फिलीपाइंस) की श्रीमती फोजनोसा राष्ट्रीय परिषद् में 29 अगस्त से 2 सितम्बर 1982 तक रहीं। ये महिलाएँ यूनेस्को परियोजना के सिलसिले में आई थीं। परियोजना शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ाने की दृष्टि से सामयिक विश्व समस्याओं के अध्ययन पर सामग्री के निर्माण, क्रियान्वयन, और मूल्यांकन से सम्बन्धित थी।

एपीड के सहयोगी केन्द्र के रूप में परिषद् के कार्यक्रम

एपीड के सहयोगी केन्द्र के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए :

तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित बुनियादी विज्ञानों के कोटि-उन्नयन के लिए, गणित में एक क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन, भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में, 5 जुलाई से 20 अगस्त 1982 तक किया गया। इस प्रशिक्षण कोर्स में अफगानिस्तान, बांग्ला देश, भूटान, लाओस, मालदीव और नेपाल के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

पर्यावरणीय शिक्षा में अध्यापक-प्रशिक्षण पर, एक यूनेस्को उप-क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी का आयोजन, परिषद् ने 3 से 16 मार्च 1983 तक किया जिसमें अफ़गानिस्तान, बांग्ला देश और श्रीलंका के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

एशिया में जीवविज्ञान की शिक्षा पर एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी का आयोजन, प्रशिक्षण सामग्री के निर्माण के लिए परिषद् में 28 नवम्बर से 8 दिसम्बर 1982 तक किया गया।

अध्यापक शिक्षा में उत्पादक कार्य की प्रविष्टि पर एक क्षेत्रीय गोष्ठी, परिषद् में 5 से 14 अप्रैल 1982 तक की गई। इसमें अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मालदीव, बांग्ला देश, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान और थाईलैंड के प्रतिभागी आए। फ्रांस और थाईलैंड के तीन यूनेस्को विशेषज्ञ भी इस गोष्ठी में आए।

परिषद् द्वारा ली गईं यूनेस्को-परियोजनाएँ

निम्नलिखित अध्ययनों को कराने के लिए, परिषद् ने यूनेस्को के साथ अनुबंध किए :

शैक्षिक कार्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों में सेक्स के रूढ़िवादी रूपों को पहचानने और वहाँ से उन्हें हटाने के लिए एक क्षेत्रीय निर्देशिका का निर्माण।

भारत में विज्ञान शिक्षा की स्थिति का अध्ययन।

"सुविधा-वंचित वर्गों के लिए प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की वैकल्पिक संरचनाओं" का अध्ययन।

शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ाने के उद्देश्य से, सामयिक विश्व समस्याओं के अध्ययन की अंतर-क्षेत्रीय प्रायोगिक परियोजना।

परिषद् ने 'जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन' का एक विशेषांक निकाला जिसकी सामग्री सहयोगी केन्द्र की सेवाकालीन प्राथमिक अध्यापक शिक्षा पर ही थी।

द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

परिषद् द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने वाली महत्वपूर्ण एजेंसियों में से एक है। कार्यान्वित करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करते हुए रा० शै० अ० और प्र० प० अपने शिष्टमंडलों को नवीन प्रक्रियात्मक शैक्षिक विकासों का अध्ययन करने के लिए विदेशों में भेजकर विदेशी राष्ट्रों के साथ विचारों के पारस्परिक अदान-प्रदान में भाग लेती है। भारत सरकार द्वारा हस्ताक्षरित सांस्कृतिक आदान-प्रदान समझौतों के प्रावधानों के अंतर्गत परिषद् अन्य देशों के साथ पाठ्यपुस्तकों, पूरक पठन सामग्री, अनुसंधान विनिबंधों, फिल्मों और फिल्म पट्टियों सहित शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान करती रही है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् के जो अधिकारी विदेश गए और जो विदेशी आगंतुक भारत आए, उनका विवरण नीचे दिया गया है :

परिषद् में आए विदेशी अतिथि

भारत-सीरिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1980-82) के मद 1 के अंतर्गत, पाठ्यक्रम-विकास का अध्ययन करने के लिए दो सप्ताह की यात्रा पर सीरिया के विशेषज्ञ, श्री मुहम्मद खैर अल हिलो परिषद् में 11 अक्तूबर 1982 को आए।

भारत-सीरिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1980-82) के मद 2 के अंतर्गत, अध्यापकों के प्रशिक्षण से सुपरिचित होने के लिए, एक महीने की यात्रा पर सीरिया के दो

विशेषज्ञ, श्री मुहम्मद सईद मेलोही और श्री फरहद जिन्नायल 11 अक्तूबर 1982 को परिषद् में आए ।

भारत-सोवियत सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1981-82) के मद 32 के अंतर्गत, भारत में स्कूली शिक्षा से सुपरिचित होने के लिए, दस दिनों की यात्रा पर, दो सदस्यीय सोवियत प्रतिनिधिमंडल 27 अक्तूबर 1982 को राष्ट्रीय परिषद् में आया । प्रतिनिधिमंडल के नेता आर्मीनियन सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक के आर्मीनिया जन शिक्षा के मंत्री, श्री अखूमिया सीमेन तिगीनोविच थे । दूसरे सदस्य थे, मास्को स्थित यू० एस० एस० आर० की शैक्षणिक विज्ञानों की अकादमी के ललित कला विभाग के अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर जुसोव बोरिस पेत्रोविच ।

भारत-सीरिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1980-82) के मद 4 के अंतर्गत, शिक्षा और दूरदर्शन के क्षेत्र में भारतीय अनुभव का अध्ययन करने के लिए, दो सप्ताहों की यात्रा पर, सीरिया के दो विशेषज्ञ, श्री जार्ज डीब और श्री महमूद आबिद अल अज़ीज़ 21 दिसम्बर 1982 को राष्ट्रीय परिषद् में आए ।

प्रतिनियुक्तियाँ

भारत-सोवियत सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1981-82) के मद 31 के अंतर्गत, यू० एस० एस० आर० में शैक्षिक सूचना प्रणाली का अध्ययन करने के लिए, भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल, डा० जे० एस० राजपूत को 15 से 28 सितम्बर 1982 तक के लिए सोवियत रूस में प्रतिनियुक्त किया गया ।

भारत-बेल्जियम सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1980-82) के मद 4 से 10 के अंतर्गत, बेल्जियम में व्यावसायिक शिक्षा और शिक्षण-सामग्री के निर्माण के कार्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए, क्रमशः परिषद् के पुणे स्थित क्षेत्र कार्यालय के क्षेत्र सलाहकार श्री एम० जी० केलकर और रीडर (कार्यक्रम) डा० एम० एस० खापर्डे को दो सप्ताहों के लिए 20 सितम्बर 1982 को बेल्जियम में प्रतिनियुक्त किया गया ।

भारत-फ्रांस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1982-83) के मद 5 (i) के अंतर्गत, फ्रांस में हायर सेकंडरी स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा और प्रारम्भिक शिक्षा के अध्ययन के लिए क्रमशः त्रिवेंद्रम में परिषद् के क्षेत्र सलाहकार, श्री० वी० एस० गोपालन एवं अनौपचारिक शिक्षा एकक के लेक्चरर श्री एच० एल० शर्मा को एक सप्ताह के लिए 27 दिसम्बर 1982 को फ्रांस में प्रतिनियुक्त किया गया ।

अन्य गतिविधियाँ

अनौपचारिक शिक्षा के प्रोफेसर डा० कृष्णगोपाल रस्तोगी ने अंतर्राष्ट्रीय पठन संघ के शिकागो में हुए वार्षिक सम्मेलन में 28 से 30 अप्रैल 1982 तक भाग लिया ।

शैक्षिक दूरदर्शन के लिए ग्राफिक और जीवंतता तकनीकों में प्रशिक्षण के निमित्त, ब्रिटिश टैक्निकल कोआपरेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम्स के अंतर्गत, ब्रिटिश काउंसिल की छात्रवृत्ति पर, यू० के० में प्रशिक्षण के लिए, निम्नलिखित कर्मचारियों को तीन महीने की प्रतिनियुक्ति पर 4 मई 1982 को भेजा गया : शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की लेक्चरर कुमारी विमला वर्मा, शिक्षण-साधन विभाग के लेक्चरर श्री के० के० चैनानी और शिक्षण-साधन विभाग के कलाकार श्री० आर० पी० सेन्नों ।

शिक्षकों के संसाधन किटों के निर्माण पर यूनेस्को योजना सम्मेलन में भाग लेने के लिए, शिक्षण-साधन विभाग के अध्यक्ष, प्रोफेसर एम० एम० चौधरी 3 से 15 जून 1982 तक के लिए टोकियो (जापान) गए ।

विश्व की विज्ञान-शिक्षा की प्रवृत्तियों पर हुए द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम में दो सप्ताहों तक भाग लेने के लिए, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के रीडर, डा० छोटन सिंह नॉटिंघम (यू० के०) की यात्रा पर 21 जुलाई 1982 को गए ।

देहाती समाज के इस्तेमाल के लायक, कम खर्च वाली शैक्षिक श्रव्य-दृश्य सामग्री बनाने के लिए ट्यूरिन (इटली) में 12 जुलाई से 20 अगस्त 1982 तक हुए प्रशिक्षण कोर्स में, इतालवी सरकार की छात्रवृत्ति (1981-82) के अंतर्गत, शिक्षण-साधन विभाग के अनुसंधान सहयोगी श्री हरमेश लाल ने भाग लिया ।

भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र के रीडर डा० पी० के० खन्ना ने बैङ्कॉक में दस दिनों के लिए हुई एक क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में 24 अगस्त से 2 सितम्बर 1982 तक भाग लिया । यह कार्यगोष्ठी एसीड के सहयोग से थाईलैंड के विज्ञान समाज ने आयोजित की थी । यह युवाओं द्वारा स्कूल के बाहर के वैज्ञानिक कार्यकलाप से सम्बद्ध प्रमुख व्यक्तियों के लिए थी ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संयुक्त निदेशक, डा० त्रिलोक नाथ धर ने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो द्वारा जेनेवा में 20 से 23 जुलाई 1982 तक आयोजित, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में भाग लिया । इस सम्मेलन का विषय था, "विज्ञान और प्रौद्योगिकी के समुचित प्रवेश के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण एवं नवीकरण" । जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान द्वारा टोकियो में 4 से 17

नवम्बर 1982 की अवधि में आयोजित क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में प्रोफेसर आर० सी० दास, डीन (शैक्षणिक) सम्मिलित हुए। यह कार्यगोष्ठी शैक्षिक विषय वस्तु और प्रविधियों में सुधार के कार्यान्वयन और मूल्यांकन से सम्बद्ध अनुसंधान के विकास पर हुई थी।

नियोजन, समन्वय और मूल्यांकन एकक के अध्यक्ष, प्रो० हरिसिंह श्रीवास्तव चार सप्ताहों के लिए, 21 दिसम्बर 1982 से 20 जनवरी 1983 तक, पेरिस और हैम्बुर्ग की यात्रा पर गए। उनका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन संस्थान (आइ० आइ० ई० पी०) और यूनेस्को शिक्षा संस्थान (यू० आइ० ई०) के सहयोग से प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रबोधन एवं मूल्यांकन की परियोजना को पूरा करना व उपकरणों और विधियों को अंतिम रूप देना था।

17

प्रकाशन

परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्य स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-सामग्री, छात्रों की अभ्यास-पुस्तिकाओं, शिक्षक-संदर्शिकाओं/दीपिकाओं, अनुसंधान-अध्ययनों/प्रबंधों आदि का प्रकाशन है। परिषद् शिक्षा के क्षेत्र में एक व्यापक श्रेणी के प्रकाशनों को छापती और वितरित करती है जिनमें पूरक पठन-सामग्री, शैक्षिक सर्वेक्षणों की रिपोर्टें, सहायक पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि भी शामिल हैं।

इस वर्ष के दौरान, निम्नलिखित प्रकार के साहित्य का प्रकाशन हुआ—

साहित्य का प्रकार	पुस्तकों की संख्या
प्रथम संस्करण वाली पाठ्यपुस्तकें/ अभ्यास पुस्तिकाएँ/स्वीकृत सहायक पुस्तकें	6
पुनर्मुद्रित पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएँ/ स्वीकृत सहायक पुस्तकें	117
अन्य सरकारी माध्यमों की पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएँ	19
अनुसंधान-प्रबंध/रिपोर्टें और अन्य प्रकाशन	24
पत्र-पत्रिकाएँ (अंक गिनकर)	15
	कुल 181

इस अध्याय के अंत में विस्तृत विवरण दिया हुआ है।

वितरण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशनों के वितरण और विक्रय का कार्य केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय का नई दिल्ली स्थित प्रकाशन विभाग करता रहा, क्योंकि परिषद् का राष्ट्रीय वितरक वही है। पहले उसका यह कार्य देश के उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के ही लिए, उसके नई दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई के सेल्स एम्पोरियमों के माध्यम से होता था। इस वर्ष सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने मद्रास में भी अपना सेल्स एम्पोरियम खोल दिया। परिणामस्वरूप परिषद् के प्रकाशनों का तमिलनाडु, केरल और पांडिचेरी में वितरण और विक्रय का कार्य भी उसी को सौंप दिया गया। लेकिन परिषद् की पत्र-पत्रिकाओं की बिक्री और वितरण का कार्य पिछले वर्षों की तरह परिषद् के ही पास रहा। विक्रय और वितरण की उपरोक्त व्यवस्था के अलावा, भारत के प्रमुख अखबारों में छपे विज्ञापनों के जवाब में, स्कूलों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं से सीधे प्राप्त किए गए क्रयादेशों के अनुसार परिषद् की पाठ्यपुस्तकें सीधे उनको बेची गईं।

वर्ष के दौरान 329 सीधे क्रयादेश प्राप्त किए गए जो इस प्रकार थे—केन्द्रीय विद्यालयों से 31, सैनिक स्कूलों से 15, सेंट्रल स्कूल्स फ़ॉर तिब्बतंस से 20, अन्य स्कूलों से 253 (इसमें आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के पुस्तक-विक्रेताओं के क्रयादेश भी शामिल हैं), और अरुणाचल प्रदेश के जिलों से 10। परिषद् ने 1983-84 सत्र के लिए, सिक्किम के शिक्षा

निदेशालय के क्रयादेश पर उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तकें सीधे ही भेजी। जम्मू और कश्मीर के बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन को भी परिषद् ने सीधे ही अंग्रेजी, और उर्दू की कक्षा IX-X की 13 पाठ्यपुस्तकें थोक में भेजी।

पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेना

वर्ष के दौरान परिषद् ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशनों की नुमाइश की :

(i) कलकत्ता की राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी।

(ii) नई दिल्ली के तीन मूर्ति की बाल साहित्य प्रदर्शनी।

(iii) चंडीगढ़ का ग्यारहवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला।

नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया के माध्यम से अपने चुने हुए प्रकाशनों को भेजकर परिषद् ने निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में भी भाग लिया :

(i) फ्रैंकफुर्त का पुस्तक मेला।

(ii) लंदन की भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी।

(iii) सिंगापुर का चौदहवाँ पुस्तकोत्सव।

(iv) मलयेशिया की भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी।

(v) बहरैन का मध्यपूर्व पुस्तक मेला।

(vi) तेहरान की भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी।

(vii) मनीला का अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला।

(viii) मारीशस में भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी।

(ix) नाइजीरिया की भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी।

विक्रय

वर्ष के दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अ० और प्र० प० के प्रकाशनों की बिक्री से रु० 2,52,38,783.17 पैसों की आय हुई। अन्य देशों में $ 416.09 और £ 19.30 के प्रकाशन बिके। इस आमदनी के अलावा, प्रकाशकों से रु० 5,826 की रायल्टी भी प्राप्त हुई।

राज्य सरकारों और अन्य एजेंसियों को कापीराइट अनुमति

रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में राज्य स्तर की कई एजेंसियों ने रुचि ली है। आगे दिए गए विवरण से पता चलेगा कि वर्ष के दौरान परिषद् ने किन माध्यमों को कापीराइट अनुमति दी है---

असम

निदेशक, असम प्राथमिक शिक्षा गौहाटी	अनौपचारिक शिक्षा रीडर 'सिको अहा' की प्रकाशन अनुमति

गुजरात

गुजरात राज्य स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड 29, सरकारी बंगलो डफनाल्स के पास कन्टूनमेंट अहमदाबाद	उपयोग अनुमति--- (i) 'इंग्लिश रीडर' बुक 1 (जेनेरल सीरीज) के शुरू के 21 पाठ (ii) 'टीचर्स गाइड टु इंग्लिश रीडर' बुक 1 (जेनेरल सीरीज) को अनूदित करने की

जम्मू और कश्मीर

निदेशक डोगरी अनुसंधान केन्द्र जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू	'समाचार पत्र' पाठ को डोगरी में अनूदित करने की अनुमति

मध्य प्रदेश

बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन मध्य प्रदेश, भोपाल	'संस्कृतोदय:' को प्रकाशित करने की अनुमति

उत्तर प्रदेश

शिक्षा निदेशक एवं अध्यक्ष बोर्ड ऑफ हाई स्कूल एंड इंटरमीडिएट एजुकेशन उत्तर प्रदेश	प्रकाशन अनुमति-- (i) 'सभ्यता की कहानी' भाग I (ii) 'सभ्यता की कहानी' भाग II (iii) 'मनुष्य और वातावरण' (iv) 'भारत विकास की ओर' (v) 'हम और हमारा शासन'

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल राज्य पुस्तक बोर्ड 6-ए, राजा सुबोध मल्लिक स्क्वैयर कलकत्ता	बांग्ला में अनुवाद कर प्रकाशन की अनुमति-— (i) 'प्राचीन भारत' लेखक रामशरण शर्मा (ii) 'मध्यकालीन भारत' भाग I और II लेखक डा० सतीशचन्द्र

पत्र-पत्रिकायें

रा० शै० अ० और प्र० प० की प्रकाशन-गतिविधियों में पत्र-पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ये प्राथमिक स्कूल अध्यापक से लेकर अनुसंधानकर्ताओं तक के लिए पाठ्यसामग्री जुटाती हैं। हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली पत्रिका "प्राइमरी शिक्षक"/"प्राइमरी टीचर" अध्यापकों तथा प्रशासकों को केन्द्रीय स्तर पर तय की जाने वाली शैक्षिक नीतियों के बारे में आधिकारिक जानकारी देती है। यह उनको प्राथमिक स्तर पर हो रहे शैक्षिक विकास की नव परिवर्तन वाली धारणाओं से भी परिचित कराती है। इसका उद्देश्य कक्षा में सीधे उपयोग के लिए सार्थक एवं प्रासंगिक सामग्री देना है। त्रैमासिक "इंडियन एजुकेशनल रिव्यू" शिक्षा-अनुसंधानों के प्रचार के लिए तथा शोधकर्ताओं, विद्वानों, अध्यापकों और शिक्षा-अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य व्यक्तियों को अनुभवों के विनिमय के लिए माध्यम मुहैया करता है। "दि जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन" वर्तमान शिक्षा-दृष्टियों पर विचार-विमर्श के द्वारा शिक्षा में मौलिक तथा समीक्षात्मक वैचारिकता को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापकों, अध्यापक-शिक्षकों तथा शोधकर्ताओं को मंच प्रदान करता है। यह एक द्वैमासिक प्रकाशन है। "स्कूल साइंस" विज्ञान शिक्षा का एक त्रैमासिक पत्र है जो अध्यापकों तथा छात्रों को विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, इनकी समस्याओं, सम्भावनाओं तथा निजी अनुभवों पर विचार-विमर्श के लिए एक खुले मंच का कार्य करता है।

वर्ष के दौरान पत्र-पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक प्रकाशित किए गए :

1.	स्कूल साइंस	सितम्बर 1981 और दिसम्बर 1981।
2.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	अप्रैल 1982, जुलाई 1982, अक्तूबर 1982 और जनवरी 1983।

3.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन	जनवरी 1982, मार्च 1982, मई 1882, जुलाई 1982 और सितम्बर 1982 ।
4.	प्राइमरी टीचर	अक्तूबर 1981, जनवरी 1982 और अप्रैल 1982 ।
5.	प्राइमरी शिक्षक	जनवरी 1982 ।

1982-83 में परिषद् के प्रकाशन

(वि० का अर्थ है विशेष सीरीज और पु० का पुनर्मुद्रण)

क्रम संख्या	पुस्तक	प्रकाशन का महीना	वर्ष
1	2	3	4
हिन्दी-अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें और अभ्यास पुस्तिकाएँ (कक्षा-क्रम से)			
	कक्षा I		
	पाठ्यपुस्तकें		
1.	बाल भारती भाग I (पु०)	अप्रैल	1982
2.	बाल भारती भाग I (पु०)	मार्च	1983
3.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक I (वि० पु०)	जून	1982
4.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक I (पु०)	अगस्त	1982
	अभ्यास-पुस्तिकाएँ		
5.	बाल भारती भाग I की अभ्यास पुस्तिका (पु०)	जुलाई	1982
6.	वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिश बुक I (वि० पु०)	जुलाई	1982
	कक्षा II		
	पाठ्यपुस्तकें		
7.	बाल भारती भाग II (पु०)	मई	1982
8.	बाल भारती भाग II (पु०)	मार्च	1983
9.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक II (पु०)	जून	1982

1	2	3	4
	अभ्यास पुस्तिकाएँ		
10.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग II (पु०)	फरवरी	1983
11.	वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिशबुक II (वि० पु०)	मार्च	1983
	कक्षा III		
	पाठ्यपुस्तकें		
12.	बाल भारती भाग III (पु०)	अप्रैल	1982
13.	बाल भारती भाग III (पु०)	मार्च	1983
14.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक III (वि० पु०)	मार्च	1983
15.	पर्यावरण अध्ययन भाग I (पु०)	मार्च	1983
	अभ्यास पुस्तिकाएँ		
16.	वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिश बुक III (वि० पु०)	मार्च	1983
17.	वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिश बुक III (वि० पु०)	मार्च	1983
	कक्षा IV		
	पाठ्यपुस्तकें		
18.	बाल भारती भाग IV (पु०)	अप्रैल	1982
19	बाल भारती भाग IV (पु०)	मार्च	1983
20.	इंग्लिश रीडर बुक I (वि० पु०)	मार्च	1983
21.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक IV (प्रथम संस्करण)	जून	1982
22.	पर्यावरण अध्ययन भाग I (पु०)	मई	1982
	स्वीकृत सहायक पुस्तक		
23.	रीड फॉर प्लेजर बुक I (पु०)	अप्रैल	1982
	कक्षा V		
	पाठ्यपुस्तकें		
24.	बाल भारती भाग V (पु०)	मार्च	1983
25.	स्वस्ति भाग I (पु०)	फरवरी	1983

1	2	3	4
26.	इनसाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक V (पु०)	अप्रैल	1982
27.	इण्डिया एण्ड दि वर्ल्ड (पु०)	मई	1982
28.	इण्डिया एण्ड दि वर्ल्ड (पु०)	मार्च	1983
29.	भारत और संसार (पु०)	अप्रैल	1982
30.	भारत और संसार (पु०)	मार्च	1983
31.	लर्निंग साइंस थ्रू एनवाइरनमेंट (पार्ट III) (पु०)	जून	1982
32.	लर्निंग साइंस थ्रू एनवाइरनमेंट पार्ट III (पु०)	फरवरी	1983
33.	पर्यावरण से विज्ञान सीखना भाग II (पु०)	फरवरी	1983
	स्वीकृत सहायक पुस्तक		
34.	रीड फॉर प्लेज़र बुक II (पु०)	फरवरी	1983
	कक्षा VI		
	पाठ्यपुस्तकें		
35.	स्वस्ति भाग II (पु०)	मार्च	1983
36.	मैथेमेटिक्स फ़ॉर मिडिल स्कूल बुक II पार्ट I (पु०)	जुलाई	1982
37.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट I (पु०)	जून	1982
38.	हिस्ट्री एंड सिविक्स पार्ट I (पु०)	सितम्बर	1982
	अभ्यास पुस्तिकाएँ		
39.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग II (प्रथम संस्करण)	फरवरी	1983
40.	वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर बुक III (वि० पु०)	जुलाई	1982
	स्वीकृत सहायक पुस्तक		
41.	रीड फॉर प्लेज़र बुक III (पु०)	मार्च	1983
	कक्षा VII		
	पाठ्यपुस्तकें		
42.	स्वस्ति भाग III (पु०)	अप्रैल	1982
43.	स्वस्ति भाग III (पु०)	मार्च	1983
44.	इंग्लिश रीडर बुक IV (वि० पु०)	मार्च	1983

1	2	3	4
45.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक II भाग II (पु०)	मार्च	1983
46.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक II पार्ट II (पु०)	मई	1982
47.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक II पार्ट II (पु०)	मार्च	1983
	अभ्यास पुस्तिका		
48.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति III (प्रथम संस्करण)	मार्च	1983
	स्वीकृत सहायक पुस्तकें		
49.	नया जीवन (पु०)	अप्रैल	1982
50.	संक्षिप्त महाभारत (पु०)	मई	1982
	कक्षा VIII		
	पाठ्यपुस्तकें		
51.	भारती भाग III (पु०)	अप्रैल	1982
52.	हिस्ट्री एंड सिविक्स पार्ट III (पु०)	अप्रैल	1982
53.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग III (पु०)	मार्च	1983
54.	लर्निंग साइंस पार्ट III (पु०)	अप्रैल	1982
	स्वीकृत सहायक पुस्तकें		
55.	त्रिविधा (पु०)	अप्रैल	1982
56.	जीवन और विज्ञान (पु०)	मई	1982
	कक्षा IX		
	पाठ्यपुस्तकें		
57.	मैथेमेटिक्स पार्ट I (पु०)	मई	1982
58.	गणित भाग I (पु०)	मई	1982
59.	दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन पार्ट I (पु०)	जून	1982
60.	सभ्यता की कहानी भाग I (पु०)	मई	1982
61.	साइंस पार्ट I (पु०)	मई	1982

1	2	3	4
62.	विज्ञान भाग I (पु०)	मई	1982
63.	हम और हमारा शासन (पु०)	अप्रैल	1982
	कक्षा X		
	पाठ्यपुस्तकें		
64.	मैथेमेटिक्स पार्ट II (पु०)	अप्रैल	1982
65.	इंडिया ऑन दि मूव (पु०)	अप्रैल	1982
66.	भारत विकास की ओर (पु०)	अप्रैल	1982
67.	साइंस पार्ट II (पु०)	मई	1982
68.	विज्ञान भाग II (पु०)	जून	1982
69.	स्टेप्स टु इंगलिश-5 इंग्लिश रीडर (प्रथम संस्करण)	अप्रैल	1982
	अभ्यास पुस्तिका		
70.	स्टेप्स टु इंग्लिश-5 वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर (प्रथम संस्करण)	मई	1982
	स्वीकृत सहायक पुस्तक		
71.	स्टेप्स टु इंग्लिश-5 सप्लीमेंटरी रीडर (प्रथम संस्करण)	मई	1982
	कक्षा XI		
	पाठ्यपुस्तकें		
72.	हिन्दी प्रतिनिधि कहानियाँ (पु०)	मई	1982
73.	मैथेमेटिक्स बुक I (पु०)	मई	1982
74.	गणित भाग I (पु०)	मई	1982
75.	मैथेमेटिक्स बुक II (पु०)	अप्रैल	1982
76.	गणित भाग II (पु०)	अप्रैल	1982
77.	इंग्लिश रीडर पार्ट I (पु०)	अप्रैल	1982
78.	केमिस्ट्री पार्ट I (पु०)	मई	1982
79.	बायोलोजी पार्ट I (पु०)	जून	1982
80.	एंशियंट इंडिया (पु०)	मई	1982

1	2	3	4
81.	प्राचीन भारत (पु०)	जून	1982
82.	मेडिवल इंडिया पार्ट I (पु०)	अप्रैल	1982
83.	मध्यकालीन भारत भाग I (पु०)	जुलाई	1982
84.	राजनीतिक व्यवस्था (पु०)	मार्च	1983
85.	एवोल्यूशन ऑफ इंडियन इकोनोमी (पु०)	जून	1982
86.	अंडरस्टैंडिंग सोसाइटी (पु०)	जून	1982
87.	अंडरस्टैंडिंग सोसाइटी (पु०)	मार्च	1983
88.	फिजिकल बेसिस ऑफ ज्योग्राफ़ी (पु०)	अप्रैल	1982
89.	फ़िजिकल बेसिस ऑफ ज्योग्राफी (पु०)	मार्च	1983
90.	फील्ड वर्क एंड लेबोरेटरी टेक्नीक्स इन ज्योग्राफी (पु०)	जून	1982
91.	ज्योग्राफी वर्कबुक (पु०)	अप्रैल	1982
92.	भूगोल अभ्यास पुस्तिका (पु०)	जून	1982
93.	पारिजात (पु०)	अप्रैल	1982
94.	चयनिका (पु०)	अप्रैल	1982
95.	फ़िजिक्स (पु०)	जून	1982
96.	इंग्लिश रीडर II (पु०)	अप्रैल	1982
	कक्षा XII		
97.	विविधा (पु०)	मार्च	1983
98.	हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास (पु०)	अप्रैल	1982
99.	साहित्य शास्त्र परिचय (पु०)	मार्च	1983
100.	इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर II (पु०)	मई	1982
101.	डियर टु ऑल दि म्यूसिस (पु०)	अप्रैल	1982
102.	ऑन टॉप ऑफ दि वर्ल्ड (पु०)	अप्रैल	1982
103.	संस्कृत काव्य तरंगिनी (पु०)	जुलाई	1982
104.	संस्कृत काव्य तरंगिनी (पु०)	मार्च	1983
105.	मैथेमेटिक्स बुक IV (पु०)	जुलाई	1982
106.	मैथेमेटिक्स बुक V (पु०)	मई	1982
107.	केमिस्ट्री पार्ट II (पु०)	मई	1982

1	2	3	4
108.	मध्यकालीन भारत भाग II (पु०)	जून	1982
109.	मॉडर्न इंडिया (पु०)	अप्रैल	1982
110.	आधुनिक भारत (पु०)	जून	1982
111.	भारत में लोकतंत्र (पु०)	मई	1982
112.	भारतीय लेखा पद्धति (पु०)	मार्च	1983
113.	आर्थिक सिद्धांत का परिचय	अप्रैल	1982
	उर्दू की पाठ्यपुस्तकें		
	कक्षा II		
114.	हिसाब बुक II	अक्तूबर	1982
	कक्षा III		
115.	हिसाब बुक III	दिसम्बर	1982
	कक्षा V		
116.	हिन्दुस्तान और दुनिया	मार्च	1983
	कक्षा VI		
117.	साइंस सीखना पार्ट I (पु०)	जुलाई	1982
	कक्षा VII		
118.	मुमालिक और उनके बाशिंदे पार्ट III (पु०)	जुलाई	1982
	कक्षा IX		
119.	आदमी और माहौल	जून	1982
120.	तहज़ीब की कहानी भाग I (पु०)	जुलाई	1982
	कक्षा IX-X		
121.	हम और हमारी हुकूमत (पु०)	जुलाई	1982
122.	कीमिया	जुलाई	1982
	कक्षा X		
123.	साइंस पार्ट II	सितम्बर	1982

1	2	3	4
	अन्य सरकारों व एजेंसियों के लिए पाठ्यपुस्तकें व अभ्यास पुस्तिकाएँ		
124.	चौथी किरण (पु०)	अप्रैल	1982
125.	अरुण भारती भाग I (पु०)	जुलाई	1982
126.	अरुण भारती भाग II	अगस्त	1982
127.	अरुण भारती भाग I की अभ्यास पुस्तिका (पु०)	जून	1982
128.	स्टोरीज एंड लीजेंड्स – सप्लीमेंटरी रीडर बुक I फॉर ओपेन स्कूल	नवम्बर	1982
129.	स्टोरीज़ एंड फेबुल्स—सप्लीमेंटरी रीडर बुक I फॉर ओपेन स्कूल	नवम्बर	1982
130.	इंग्लिश रीडर बुक I फॉर ओपेन स्कूल	दिसम्बर	1982
131.	गद्य भारती (पु०)	अप्रैल	1982
132.	काव्य भारती (पु०)	मई	1982
133.	मैथेमेटिक्स पार्ट I (कक्षा IX)	मई	1982
134.	साइंस पार्ट I	मई	1982
135.	विज्ञान भाग I	मई	1982
136.	स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन पार्ट I कक्षा IX	जून	1982
137.	सभ्यता की कहानी भाग I कक्षा IX	मई	1982
138	हम और हमारा शासन कक्षा IX-X	अप्रैल	1982
139.	साइंस पार्ट I (उर्दू)	जुलाई	1982
140.	वी एंड अवर गवर्नमेंट (उर्दू)	जुलाई	1982
141.	स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन पार्ट I (उर्दू)	अगस्त	1982
142.	मैन एंड एनवाइरनमेंट (उर्दू)	जून	1982
	शोध प्रबन्ध व अन्य प्रकाशन		
143.	सेलेक्टेड रीडिंग मटीरियल्स इन इंग्लिश पार्ट I	अप्रैल	1982
144.	आडिट रिपोर्ट 1980-81	अप्रैल	1982
145.	लेखा परीक्षा रिपोर्ट 1980-81	जुलाई	1982
146.	दि इफेक्ट ऑफ एनवाइरनमेंटल प्रोसेस वेरिएबल ऑन स्कूल एचीवमेंट (5½ टु 11 इयर्स)	मई	1982

1	2	3	4
147.	एस्० यू० पी० डब्लू० सोर्स बुक वोल्युम IV	मई	1982
148.	थर्ड ऑल-इंडिया एजुकेशनल सर्वे (इंस्टीट्यूशंस ऑफ फिजिकल एजुकेशन)	जुलाई	1982
149.	फील्ड स्टडीज इन दि सोशियोलोजी ऑफ एजुकेशन —ए रिपोर्ट ऑन गुजरात	जुलाई	1982
150.	फोर्थ ऑल-इंडिया एजुकेशनल सर्वे रिपोर्ट	अगस्त	1982
151.	सेम्पुल यूनिट टेस्ट इन हिस्ट्री	सितम्बर	1982
152.	नेशनल साइंस इक्जीवीशन फॉर चिल्ड्रेन 1982	नवम्बर	1982
153.	स्ट्रक्चर एंड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडेल्स 1982	नवम्बर	1982
154.	यू एंड योर फ्यूचर	दिसम्बर	1982
155.	एन० सी० ई० आर० टी० ऐनुअल रिपोर्ट 1981-82	दिसम्बर	1982
156.	रा० शै० अ० और प्र० प० वार्षिक रिपोर्ट 1981-82	दिसम्बर	1982
157.	ए हैंडबुक ऑफ स्टेट लेवेल आरगेनाइजर्स वाल्यूम I	दिसम्बर	1982
158.	कोर टीचिंग स्किल्स— ए माइक्रोटीचिंग एप्रोच	दिसम्बर	1982
159.	ऑबजेक्टिव्स बेस्ड टेस्ट आइटम्स इन मैथेमेटिक्स	दिसम्बर	1982
160.	स्टेटस ऑफ वीमेन थ्रू करिक्युलम	जनवरी	1983
161.	नो लिमिट्स टु डेवेलपमेन्ट	जनवरी	1983
162.	टीचर एजुकेशन करिक्युलम— ए फ्रेमवर्क	फरवरी	1983
163.	कैटेलॉग फॉर 1983-84	फरवरी	1983
164.	सोशली यूजफुल प्रोडक्टिव वर्क वाल्युम IV	फरवरी	1983
165.	रोल ऑफ सैम्पुल सर्वेज इन एजुकेशन	फरवरी	1983
166.	एजुकेशन इन एप्लाइड साइंस इन इंडिया	फरवरी	1983

18

प्रशासन, वित्त एवं कल्याण के कार्यकलाप

परिषद् के नियमों, अधिनियमों और कार्यप्रणाली के अनुसार रा० शै० अ० और प्र० प० का सचिवालय अपने गृह व्यवस्था के काम करता रहा। प्रभावकारी और निपुण तरीके से काम करने के लिए परिषद् के विभिन्न घटकों को इसने आवश्यक साधन जुटाए। कर्मचारियों के लिए कल्याण के कार्यकलाप के अंतर्गत, खेलकूद और सांस्कृतिक चहल पहल के निमित्त परिषद् का सचिवालय आवश्यक सुविधाएँ जुटाता रहा। दिसम्बर 1982 में, परिषद् का वार्षिक खेलकूद आयोजन मैसूर के क्षे० शि० म० में किया गया। वहाँ 13 से 16 दिसम्बर 1982 तक फुटबाल, वालीबाल और टेबुल टेनिस के मैच हुए। एन० सी०

ई० आर० टी० टूर्नामेंट में सभी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की टीमें मैदान में उतरीं। खेलों में सम्मिलित हुए कुल खिलाड़ियों की संख्या 125 थी। इन प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

फरवरी 1983 में सी० पी० डब्ल्यू० डी० ने 88 क्वार्टर बना कर परिषद् को सौंप दिए। टाइप I, II, III, IV और V के इन स्टाफ क्वार्टरों को कर्मचारियों के नाम अलाट कर दिया गया। टाइप IV के 16 और क्वार्टर जल्दी ही बन जाएँगे। हाथ में आने के बाद उन्हें भी कर्मचारियों को अलाट कर दिया जाएगा।

कर्मचारियों के ग्रुप बी, सी, और डी को लाभान्वित करने के लिए, 1 अप्रैल 1982 से परिषद् ने जीवन बीमा निगम की ग्रुप बीमा योजना को अपने यहाँ चला दिया है। परिषद् के ग्रुप ए के अधिकारियों को भी यह लाभ दिलाने के लिए कदम उठाए गए हैं।

हिमाचल प्रदेश के लिए एक नया क्षेत्र कार्यालय खोला गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक पद को 18 अगस्त 1982 को छोड़ कर डा० शिव कुमार मिश्र चले गए क्योंकि उनके अनुबंध की अवधि बीत गई थी। परिषद् के सचिव, श्री विनोद कुमार पंडित, आइ० ए० एस० को शिक्षा मंत्रालय में संयुक्त शिक्षा सलाहकार का पद 2 दिसम्बर 1982 को मिल गया। अपने नए पद भार के साथ साथ वे रा० शै० अ० और प्र० प० के सचिव का कार्य भी नए सचिव के आने तक सँभालते रहे।

मई 1982 से मार्च 1983 तक परिषद् ने आशु-लेखन एवं टंकण में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन विशेष रूप से अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के लिए किया। एक और प्रशिक्षण कोर्स का प्रबंध परिषद् ने खास तौर पर परिषद् मुख्यालय के चौकीदारों के लिए किया।

संस्थापन और व्यक्तिगत मामलों को त्वरित ढंग से निपटाया गया। यहाँ पर गृह-निर्माण अग्रिम, भविष्य निधि-भुगतान, साइकिल-स्कूटर-कार ऋणों आदि का उल्लेख किया जा सकता है। वर्ष के दौरान जिन कर्मचारियों ने अवकाश ग्रहण किया उनके अवकाश-लाभों का भुगतान लगभग अवकाश ग्रहण के साथ ही कर दिया गया। असमय ही स्वर्गवासी हुए परिषद् के कर्मचारियों के परिवारों को सहानुभूतिपूर्ण सहायता देने के लिए हर मामले में परिवार के किसी न किसी सदस्य को परिषद् में नौकरी दी गई जिससे उस परिवार को कुछ न कुछ मदद मिल सके।

हिन्दी-प्रयोग की दिशा में

सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिषद् के हिन्दी प्रकोष्ठ ने 1982-83 के दौरान आगे लिखे कार्य किए।

सामग्री का निर्माण : प्रकोष्ठ ने नीचे लिखी पुस्तकें प्राप्त कर उन्हें परिषद् के विभिन्न विभागों, एककों, प्रकोष्ठों और वर्गों में बँटवाया ताकि लोग अपने कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक इस्तेमाल कर सकें :

(i) केन्द्र की सरकारी भाषा; (ii) कार्यालय सहायिका; (iii) अंग्रेजी-हिन्दी कोश (सम्पादक फ़ादर कामिल बुल्के); (iv) सेवा पुस्तिका को भरना ।

रनिंग शील्ड : दफ्तर के कामों में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करने वाले विभाग को दी जाने वाली रनिंग शील्ड इस बार परिषद् सचिवालय के स्थापना IV को मिली है ।

अनुवाद : अंग्रेजी से हिन्दी में 88 पृष्ठों का अनुवाद किया गया । इनमें से 51 पृष्ठ लेखा शाखा की सामग्री के हैं ।

सर्कुलर : हिन्दी में बारह सर्कुलर जारी किए गए । इनमें से ग्यारह परिषद् में हिन्दी-प्रयोग से सम्बन्धित थे । बारहवाँ उस कार्यक्रम के बारे में था जो सरकारी कामकाज में हिन्दी प्रयोग का प्रावधान देने वाले हैं । मुख्य रूप से उसमें नीचे लिखी बातें थीं : (i) स्वीकृत उद्देश्यों के लिए हिन्दी का प्रयोग, (ii) विशिष्ट उद्देश्यों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग; (iii) अधीनस्थ सेवाओं और पदों की भर्ती के लिए परीक्षा के वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिन्दी का ऐच्छिक प्रयोग; (iv) विभागीय प्रशिक्षण केन्द्रों में शिक्षण के माध्यम के रूप में हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था; (v) विभागीय परीक्षाओं में हिन्दी का ऐच्छिक प्रयोग; (vi) द्विभाषी रूप में प्रपत्रों, नियमावलियों और गजट ज्ञापनों का मुद्रण; (vii) सामान्य आदेशों आदि को द्विभाषी रूप में निकालना; (viii) लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखना; (ix) रबर की मोहरें, नाम पट्टिकाएँ, साइन बोर्ड आदि को द्विभाषी रूप में रखना; (x) सेवा पुस्तिका में हिन्दी में दर्ज करना; (xi) हिन्दी में प्राप्त चिट्ठियों के जवाब हिन्दी में देना ।

सर्वेक्षण : दो सर्वेक्षण किए गए : एक तो राज भाषा कार्यान्वियन की संसदीय समिति के लिए, और दूसरा परिषद् के लिए कि रनिंग शील्ड किस विभाग या एकक या प्रकोष्ठ या शाखा को दी जाए । पहला सर्वेक्षण 19 पृष्ठों का था जिसमें 304 बिंदुओं पर आधार सामग्री संकलित की गई थी । दूसरा दो पृष्ठों का था जिसमें 22 बिंदुओं पर सर्वेक्षण किया गया था ।

सूचनाओं का विकीर्णन : नीचे लिखी जानकारी शिक्षा मंत्रालय और संसदीय समिति को भेजी गई : (i) परिषद् में हिन्दी कार्यों से जुड़े कितने पद हैं (1 जनवरी 1982 के अनुसार); (ii) हिन्दी अनुवादकों तथा हिन्दी अधिकारी के पदों के संबंध में जानकारी (जैसी स्थिति 1 अप्रैल 1982 को थी); (iii) वर्ष 1981-82 के लिए वार्षिक कार्यक्रम के कार्मान्वियन की जानकारी ।

प्रतियोगिताएँ : परिषद् ने नीचे लिखी अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने के लिए अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहन दिया : (i) हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता; और (ii) हिन्दी में टिप्पणी लेखन तथा प्रारूप-लेखन ।

परामर्श-सेवाएँ : हिन्दी प्रकोष्ठ ने परिषद् प्रशासन से जुड़े कर्मचारियों को, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद कार्य में सहायता दी और उनकी हिन्दी संबंधी समस्याएँ सुलझाईं । प्रकोष्ठ ने शैक्षणिक विभागों की सहायता भी उनके उपकरणों के निर्माण में की । अध्यापक-शिक्षा विभाग, स्त्री शिक्षा एकक, मापन एवं मूल्यांकन विभाग और केप वर्ग को हिन्दी सम्बन्धी परामर्श दिए गए ।

अन्य कार्य : हिन्दी टंकण, हिन्दी आशु-लेखन, हिन्दी टिप्पणी लेखन, हिन्दी प्रारूप लेखन और पत्राचार माध्यम से हिन्दी की परीक्षाओं की तैयारी में प्रकोष्ठ ने परिषद् के कर्मचारियों की सहायता की ।

टंकण कार्य : वर्ष के दौरान हिन्दी प्रकोष्ठ ने 786 पृष्ठ टाइप किए और 670 पृष्ठों के स्टेंसिल काटे । इसमें अन्य विभागों के लिए किया गया कार्य भी शामिल है ।

वर्ष 1982-83 के आय और भुगतान का समेकित लेखा

आय	रकम (रुपयों में)	भुगतान		रकम (रुपयों में)
1	2	3		4
अथ शेष	81,55,345.00	अधिकारियों के वेतन		1,01,13,813.00
		गैर योजना	98,46,305.00	
		योजना	2,67,508.00	
भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	9,46,57,563.00	स्थापना के वेतन		1,01,20,228.00
		गैर योजना	97,42,651.00	
		योजना	3,77,577.00	
विशिष्ट अनुदान से सम्बद्ध अनुदान और वापसी	1,31,84,249.00	भत्ते और मानदेय		2,04,10,873.00
		गैर योजना	1,95,67,262.00	
		योजना	8,43,611.00	
गैर योजना आय		यात्रा भत्ते		19,33,385,00
		गैर योजना	18,58,446.00	
		योजना	74,939.00	
परिषद् की इमारतों का भाड़ा	7,77,174.00	अन्य शुल्क		1,12,55,563.00
		गैर योजना	1,07,99,560.00	
		योजना	4,56,003.00	

1	2	3		4
कर्जों और अग्रिमों पर ब्याज	24,048.00	छात्रवृत्ति/शिक्षावृत्ति		9,69,417.00
		गैर योजना	6,66,389.00	
		योजना	3,03,028.00	
अधिशोधनों की वसूली (अप्रयुक्त निधियों की वापसी)	14,17,877.00	कार्यक्रम		4,33,34,876.00
		गैर योजना	3,56,05,008.00	
		योजना	77,29,868.00	
भविष्य निधि निवेश का ब्याज	14,22,649.00	साज सामान व फर्नीचर		95,00,519.00
		गैर योजना	2,22,092.00	
		योजना	92,78,427.00	
		भूमि व भवन		1,13,98,531.00
		गैर योजना	12,96,540.00	
		योजना	1,01,01,991.00	
पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री से	2,51,83,522.00	विविध भुगतान		12,764.00
विज्ञान किटों की बिक्री से	3,07,811.00	अवकाश वेतन व पेंशन अंशदान		57,054.00
प्रकाशकों से रायल्टी	5,826.00			
फीस और अन्य शुल्क	5,33,385.00	अं० भ० नि० में परिषद् का अंशदान व सा० भ० नि० का ब्याज		21,01,412.00
अवकाश वेतन व पेंशन अंशदान	87,443.00			

1	2	3	4
विविध आय	42,00,083.00	पेंशन व डी० सी० आर० जी०	11,32,627.00
केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	35,851.00	केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	3,88,836.00
		विज्ञापन	3,08,275.00
		लेखा परीक्षा शुल्क	1,66,590.00
		मकान भाड़ा	17,685,00
		विशिष्ट योजना पर खर्च	1,35,11,880.00
कर्मचारियों से अग्रिमों की वसूली			
मोटर कार/स्कूटर अग्रिम	1,67,367.00	मोटर/स्कूटर अग्रिम	1,27,075.00
अन्य सवारी का अग्रिम	42,240.00	अन्य सवारी का अग्रिम	49,600.00
पंखा अग्रिम	4,798.00	पंखा अग्रिम	1,500.00
त्यौहार अग्रिम	2,24,843.00	त्यौहार अग्रिम	1,81,820.00
घर निर्माण अग्रिम	11,88,572.00	घर निर्माण अग्रिम	31,91,576.00
बदली पर यात्रा भत्ते का अग्रिम	1,742,00	बदली पर यात्रा भत्ता अग्रिम	35,363.00
बदली पर वेतन का अग्रिम	18,905.00	बदली पर वेतन अग्रिम	5,105.00
बाढ़ अग्रिम	49,460.00	विविध अग्रिम	6,000.00
अन्य अग्रिम	31,104.00	स्थायी अग्रिम	10,000.00
स्थायी अग्रिम	8,000.00	अन्य अग्रिम	13,870.00
		खाद्यान्न अग्रिम	758.00
		गर्म कपड़े	250.00

1	2	3	4
निधियों व अ० ज० यो० का लेखा			
सामान्य भविष्य निधि	75,80,745.00	सा० भ० नि०	42,68,342.00
अंशदायी भविष्य निधि	23,12,429.00	अं० भ० नि०	12,91,262.00
अनिवार्य जमा योजना	1,658.00	अ० ज० यो०	2,681.00
जमा			
बयाना रकम/जमानत जमा	5,54,825.00	बयाना रकम/जमानत जमा	6,78,132.00
जमानती रुपया	1,18,268.00	जमानती रुपया	1,57,060.00
अन्य जमा	4,30,074.00	अन्य जमा	4,26,770.00
सा० भ० नि०/अं० भ० नि० निवेश	15,26,453.00	सा० भ० नि०/अं० भ० नि० निवेश	46,28,946.00
अल्पकालिक निवेश	1,52,00,000.00	अल्पकालिक निवेश	1,52,00,000.00
ग्रुप बीमा योजना	2,27,690.00	ग्रुप बीमा योजना	1,02,333.00
उचंत	(—) 22,13,110.00	उचंत	3,74,408.00
प्रेषित			
सा० भ० नि०/अं० भ० नि०	93,642.00	सा० भ० नि०/अं० भ० नि०	88,063.00
आय कर प्रेषित	3,28,535.00	आय कर	3,19,741.00
पी० एल० आइ०/एल० आइ० सी० विविध और अन्य प्रेषित	1,60,456.00	एल० आइ० सी०/पी० एल० आइ० विविध प्रेषित	1,65,033.00

1	2	3	4
एस० ओ० प्रेषित	16,05,005.00	एस० ओ० प्रेषित	15,57,352.00
सी० टी० सोसायटी	79,163.00	सी० टी० सोसायटी	72,059.00
डी० आर० एफ०	26,355.00	डी० आर० एफ०	22,264.00
		अंत शेष	1,00,50,354.00
		हाथ में और बैंक में नकद	
	17,97,62,045.00		17,97,62,045.00

परिशिष्ट

परिशिष्ट-क

व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को सहायता देने की योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षा और शैक्षिक नव परिवर्तनों के क्षेत्र में स्वयंसेवी प्रयासों के महत्व को सदैव मान्यता प्रदान की है। शैक्षिक संस्थानों एवं अध्यापकों/प्रशिक्षकों के साथ व्यावसायिक शैक्षिक संस्थाओं का घनिष्ठ सम्पर्क देश में शैक्षिक कायाकल्प लाने में अच्छे उत्प्रेरक का सा काम करता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को वित्तीय सहायता देने की एक योजना पिछले अनेक वर्षों से चलाती आई है।

योजना के मुख्य विवरण, जैसे कि वे वर्तमान में कार्यान्वित हो रहे हैं, नीचे दिए जा रहे हैं :

1. उद्देश्य

योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(i) *शिक्षा, विशेषकर स्कूली शिक्षा के सुधार के लिए स्वयंसेवी प्रयासों को बनाए रखना और बढ़ावा देना।*

(ii) व्यावसायिक प्रकृति की अच्छे स्तर वाली ऐसी पत्रिकाओं को प्रोत्साहन देना जो शैक्षिक नव परिवर्तनों को प्रचारित-प्रसारित करने में सहायक हों।

(iii) स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा में विस्तार-कार्यों को बढ़ावा देना।

2. पात्रता की शर्तें

(क) संगठन

(i) कोई व्यावसायिक शैक्षिक संगठन (व्या० शै० सं०) इस योजना के अंतर्गत रा० शै० अ० और प्र० प० का अनुदान पाने का पात्र तभी होगा यदि वह—

(क) संस्था पंजीकरण अधिनियम (1960 का XXI अधिनियम) के अंतर्गत एक पंजीकृत संस्था है, अथवा

(ख) आज के मान्यता प्राप्त कानून के अंतर्गत एक पंजीकृत सार्वजनिक न्यास है, अथवा

(ग) शैक्षिक गतिविधियों को चलाने और बढ़ावा देने के कार्य में संलग्न एक प्रतिष्ठित संस्थान है।

किसी राज्य सरकार, या स्थानीय निकाय द्वारा चलाए जा रहे अथवा राज्य विधान सभा के किसी अधिनियम अथवा राज्य सरकार के किसी प्रस्ताव के अंतर्गत स्थापित कोई संस्था इस योजना के अंतर्गत सहायता पाने की हकदार नहीं होगी।

(ii) उस संगठन को स्कूली शिक्षा के सुधार के लिए सामान्यतः राष्ट्रीय/क्षेत्रीय स्तर पर कार्य करना चाहिए। केवल अपवाद स्वरूप मामलों में, निधियाँ उपलब्ध होने पर, राज्य स्तर पर कार्यरत व्या० शै० सं० के आवेदनों पर विचार किया जाएगा।

(iii) यह योजना बिना किसी धर्म, जाति, बिरादरी, नस्ल, लिंग अथवा भाषा के भेदभाव के भारत के सभी नागरिकों के लिए खुली है।

(iv) राज्य सरकार से अनुदान पाने के लिए जहाँ मान्यता आवश्यक हो वहाँ उस संगठन को मान्यता-प्राप्त होना चाहिए।

(v) उस संगठन का समुचित गठित प्रबंध निकाय होना चाहिए जिसके अधिकारों, कर्त्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया हो तथा एक लिखित संविधान के रूप में रखा गया हो।

(vi) योजना के अंतर्गत सहायता-अनुदान के लिए आवेदन करने के पूर्व उसे कम से कम एक वर्ष तक सामान्यतः काम करता हुआ होना चाहिए।

(vii) आवेदन के दिन उसकी सदस्य-संख्या कम से कम पचास होनी चाहिए।

(viii) उसे किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के लिए लाभ अर्जित करने वाला नहीं होना चाहिए।

(ख) **कार्यकलाप**

(i) सामान्यतः निम्नलिखित प्रकार के कार्यकलापों को सहायता प्रदान की जाती है :

(क) वार्षिक सभाएँ बशर्ते कि उनकी एक निश्चित विषय वस्तु हो जो किसी राष्ट्रीय शैक्षिक समस्या से संबद्ध हो व जिससे राष्ट्रीय परिषद् को वास्ता हो और/या वह उसके कार्यों को पोषित करे और रा० शै० अनुसंधान और प्र० प० के उद्देश्यों की पूर्ति में उपयोगी हो।

(ख) शैक्षिक साहित्य का उत्पादन जिसमें व्यावसायिक पत्रिकाएँ शामिल हैं किन्तु पाठ्य सामग्री नहीं।

(ग) ऐसी शैक्षिक प्रदर्शनियाँ जो शैक्षिक नव परिवर्तनों या समसामयिक विषयों पर शैक्षिक विकासों से संबद्ध हों।

(ii) सामान्यतः नीचे लिखी बातों पर अनुदान नहीं दिए जाएँगे :

(क) ऐसी परिचर्चाएँ या कार्यगोष्ठियाँ जैसी रा० शै० अ० और प्र० प० प्रायः आयोजित कर सकती है या करती रहती है।

(ख) अनुसंधान परियोजनाएँ।

3. अनुदान की मात्रा

अनुदान पाने वाले संगठन पूरी तरह रा० शै० अ० और प्र० प० पर ही निर्भर न हो जाएँ, इस विचार से इस योजना के अंतर्गत जो सहायता दी जाएगी वह आंशिक ही होगी, जैसा कि नीचे स्पष्ट किया गया है :

(i) किसी वर्ष में किसी कार्यकलाप पर जो खर्च आता है उसके 60% से अधिक का सहायता अनुदान परिषद् सामान्यतः नहीं देगी।

(ii) बाकी बच रहे खर्च का 40% संगठन को दूसरे स्रोतों से जुटाना होगा जैसे कि किसी अन्य संगठन से अनुदान प्राप्त कर या पत्रिकाओं के मामले में बिक्री, वार्षिक चंदा या विज्ञापन शुल्क से जुटाकर। हाँ, यदि दूसरे स्रोतों से खर्च के 40% से अधिक आय हो जाए तो परिषद् अपने हिस्से का अनुदान उसी अनुपात से घटा देगी।

(iii) यदि किसी तरह एक वर्ष में वास्तविक खर्च के 60% से अधिक का भुगतान परिषद् की ओर से हो जाए, या अन्य स्रोत से वह कम हो—इनमें जो भी कम होगी, वह रकम अगले वर्ष के अनुदान से काट ली जाएगी अथवा समंजित कर ली जाएगी।

उदाहरण :

मान लीजिए किसी कार्यकलाप पर पूरा खर्च रु० 1700 आया और रा० शै० अ० और प्र० प० का अनुदान रु० 1500 है तथा अन्य स्रोत से हुई आय रु० 900 है।

(क) खर्च का 60%=रु० 1020

(ख) अन्य स्रोतों की आय काट कर (1700-900) रु० 800

काटी जाने वाली राशि

(क) और (ख) में जो कम हो उसे अनुदान की राशि में से घटाएँ यथा रु० 1500—800=700 रु०

4. आवेदन करने की विधि

(i) व्या० शै० सं० को छपे हुए फार्मों की दो प्रतिलिपियाँ पूरी तरह भर कर भेजनी होती हैं।

(ii) प्रत्येक कार्यकलाप अथवा गतिविधि के लिए अलग-अलग आवेदन करना होता है।

(iii) प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेज़ भेजना आवश्यक है :

(क) संगठन/संस्थान का प्रास्पेक्टस अथवा उसकी गतिविधियों तथा उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण।

(ख) संगठन का संविधान।

(ग) अंतिम वार्षिक रिपोर्ट की एक प्रति।

(घ) यदि आवेदन किसी पत्रिका/सामग्री के प्रकाशन अनुदान के लिए है, तो पहले की छपी पत्रिका के अंकों की प्रतियाँ/पहले के प्रकाशन।

(ङ) संगठन के पिछले वर्ष की लेखा परीक्षा का प्रतिवेदन और उसके साथ संगठन के अध्यक्ष/सचिव और लेखा परीक्षकों (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट) आदि द्वारा हस्ताक्षरित एक उपयोग प्रमाण पत्र।

जिन कार्यकलापों के लिए अनुदान पहले दिया जा चुका है उसके खर्च की बाबत अलग से उसी फार्म पर एक उपयोग प्रमाण पत्र और/अथवा खर्च का विवरण-पत्र भी भेजना चाहिए।

उपरोक्त दस्तावेजों के अभाव में कोई अनुदान मंजूर नहीं होगा।

5. सामान्य

(i) यदि अनुदान पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए हो तो व्या० शै० सं० के लिए परिषद् का एक विज्ञापन निःशुल्क छापना अनिवार्य होगा।

(ii) वार्षिक सभा/सम्मेलन के लिए अनुदान के मामले में संगठन को राष्ट्रीय परिषद् के प्रतिनिधियों को सम्मेलन से संबद्ध करना होगा।

(iii) संस्थान/संगठन को अनुदान से अर्जित पूर्ण अथवा आंशिक परिसंपत्तियों का एक लेखा-जोखा रखना होगा, इस तरह की परिसंपत्ति को रा० शै० अ० और प्र० प० की पूर्वानुमति के बिना बेचा नहीं जा सकता, न ही उसे जिस उद्देश्य के लिए अनुदान दिया गया था, उसके अलावा किसी और तरह से खर्च किया जा सकता है। ऐसा संस्थान/संगठन यदि किसी समय काम करना बन्द कर दे, तो उसकी वे परिसंपत्तियाँ रा० शै० अ० और प्र० प० के पास चली जाएँगी।

(iv) भारत के कन्ट्रोलर एंड ऑडीटर जनरल के जाँच परीक्षण के लिए संस्थान के लेखा पत्रों और अन्य दस्तावेजों को तैयार रखना होगा।

(v) यदि रा० शै० अ० और प्र० प० को कभी ऐसा लगे कि अनुमोदित राशि को उन कार्यों के लिए खर्च नहीं किया जा रहा है जिनके लिए उसे लिया गया था तो परिषद् को अधिकार होगा कि वह अनुदान देना बंद कर दे और दी गई राशि को वापस ले ले।

(vi) रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा वित्त पोषित कार्यक्रमों में संगठन को मितव्ययिता से चलना होगा।

(vii) अनुदान के लिए आवेदन रा० शै० अ० और प्र० प० के सचिव के पास भेजना चाहिए।

विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को सन् 1982-83 के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा पत्रिका-प्रकाशन के लिए दिए गए अनुदान

क्रम संख्या	संगठन का नाम-पता	पत्रिका का नाम	अनुदान राशि
1	2	3	3
1.	एस० आई० टी० यू० काउंसिल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च 169, रामकृष्ण मठ रोड राजा अन्नामलाई पुरम मद्रास-600028	एक्सपेरीमेंट्स इन एजुकेशन	3,000 रु०
2.	इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया, 169, रामकृष्ण मठ रोड, राजा अन्नामलाई पुरम मद्रास-600028	इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग	5,000 रु०
3.	एसोसिएशन फॉर इम्प्रूवमेंट ऑफ़ मैथेमेटिक्स टीचिंग 25 फर्न रोड कलकत्ता-29	इंडियन जर्नल ऑफ़ मैथेमेटिक्स टीचिंग	3,500 रु०
4.	एसोसिएशन फॉर दि प्रमोशन ऑफ साइंस एजुकेशन, नं० 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मंडावेली पक्कम, मद्रास-600028	जूनियर साइंटिस्ट	4,500 रु०
5.	इंडियन एसोसिएशन फॉर प्रि-स्कूल एजुकेशन, लेडी इर्विन कॉलेज, सिकन्दरा रोड नई दिल्ली	बालक	2,500 रु०

1	2	3	4
6.	इंडियन रीडिंग एसोसिएशन भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली	रीडिंग जर्नल	2760 रु०
7.	इंडियन फिज़िक्स एसोसिएशन द्वारा टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ़ फंडामेंटल रिसर्च होमी भाभा रोड बम्बई-400005	फिजिक्स न्यूज़	5,000 रु०
8.	आल इंडिया साइंस टीचर्स एसोसिएशन द्वारा अनौपचारिक शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान नई दिल्ली 110016	विज्ञान शिक्षक	3500 रु०

विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को सन् 1982-83 के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा सम्मेलन आदि आयोजित करने के लिए दिए गए अनुदान

क्रम संख्या	संगठन का नाम-पता	उद्देश्य	अनुदान राशि
1.	बाम्बे साइकोलोजिकल एसोसिएशन, कोकीना कैंपस, विद्या नगरी बम्बई-400098	नेशनल कांफ्रेंस ऑन एप्लाइड साइकोलोजी	5,000 रु०
2.	आल इंडिया साइंस टीचर्स एसोसिएशन द्वारा अनौपचारिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली-110016	एसोसिएशन के रजत जयंती समारोह पर सम्मेलन तथा रिपोर्ट की छपाई	6,000 रु०
3.	इंडियन एकेडेमी ऑफ सोशल साइंस, 555-ई, ममफोर्डगंज इलाहाबाद	सातवीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस	5,000 रु०
4.	इंडियन एसोसिएशन फॉर दि स्कूल एजुकेशन, लेडी इर्विन कालेज, सिकन्दरा रोड नई दिल्ली	18वाँ वार्षिक सम्मेलन	4,000 रु०
5.	इंडियन रीडिंग एसोसिएशन भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली-110001	राष्ट्रीय कंवेंशन	4,000 रु०
6.	इंटीग्रेटेड एजुकेशन, रिहैबिलिटेशन एंड रिसर्च सेन्टर फॉर हैन्डीकैप्ड, एस-601, स्कूल ब्लाक शकरपुर, दिल्ली-110092	वार्षिक सम्मेलन	3,500 रु०

परिशिष्ट-ख

राज्यों में परिषद् के क्षेत्र-सलाहकारों के पते

पते	राज्य/संघ क्षेत्र
1. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) जू रोड, गोहाटी-781024	असम अरुणाचल प्रदेश मणिपुर नागालैंड
2. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) एस० आई० ई० बिल्डिंग, पूजापुरा त्रिवेन्द्रम-695012	केरल लक्षद्वीप
3. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) 3-6-69/बी/7 अवंतीनगर, बशीरबाग़ हैदराबाद-500029	आंध्र प्रदेश
4. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) ए० 33, प्रभु मार्ग, तिलक नगर जयपुर-302004	राजस्थान

5. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) एम० आई० जी० 161, ब्लाक नं० 6 सरस्वती नगर, जवाहर चौक भोपाल-462017	मध्य प्रदेश
6. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) 555/ई, ममफोर्डगंज इलाहाबाद-211002	उत्तर प्रदेश
7. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) होमी भाभा होस्टल क्षे० शि० म० कैम्पस भुवनेश्वर-751007	उड़ीसा
8. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) 736, सहकारी मेन रोड III ब्लॉक राजाजी नगर बेंगलूर-560010	कर्नाटक
9. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) 1-बी, चन्द्रा कॉलोनी (समर्पण फ्लैटों के पास) (लॉ कॉलिज के पीछे) अहमदाबाद-380006	गुजरात दादरा व नगर हवेली
10. क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०) नं० 32, हिन्दी प्रचार सभा स्ट्रीट त्यागराज नगर मद्रास-600017	तमिलनाडु पांडिचेरी

11. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) 128/2, कोथरुड, कर्वे रोड (मारुति मंदिर बस स्टाप के पास) पुणे-411029	महाराष्ट्र गोआ, दमन व दिउ
12. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) कंकड़ बाग, पत्रकार नगर पटना-800016	बिहार
13. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) पी-23, सी० आई० टी० रोड स्कीम 55 कलकत्ता-700014	पश्चिमी बंगाल अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सिक्किम
14. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) मकान नं० 23, सैक्टर-8 (ए) चंडीगढ़-190008	पंजाब हिमाचल प्रदेश चंडीगढ़ हरियाणा
15. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) निजाम मंजिल शेरे कश्मीर कॉलोनी सैक्टर-2 क़मर बाड़ी श्रीनगर-190010	जम्मू और कश्मीर
16. क्षेत्र सलाहकार (रा० गौ० अ० और प्र० प०) बॉयसी रोड, डा० लैतुमखा शिलॉङ-795003	त्रिपुरा मिज़ोरम मेघालय

परिशिष्ट-ग

समितियों की संरचना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्यों की सूची

(सामान्य निकाय)

(i) मंत्री, शिक्षा मंत्रालय अध्यक्ष—(पदेन)	1. श्रीमती शीला कौल राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
(ii) अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग— (पदेन)	2. डा० (श्रीमती) माधुरी आर० शाह अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110001
(iii) सचिव, शिक्षा मंत्रालय— (पदेन)	3. श्रीमती अन्ना आर० मलहोत्रा सचिव, भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली-110001 श्रीमती सरला ग्रेवाल सचिव, भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001 (2-11-1982 से)

(iv) भारत सरकार द्वारा नामजद चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति, प्रत्येक क्षेत्र से एक	4. प्रो० एस० हमीद उपकुलपति अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़
	5. श्री आर० के० कनबरकर उपकुलपति शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर-416004
	6. प्रो० बी० एस० रामकृष्ण उपकुलपति हैदराबाद विश्वविद्यालय हैदराबाद-500001
	7. डा० बी० के० सुकुमारन नायर उपकुलपति केरल विश्वविद्यालय त्रिवेंद्रम-695001
(v) राज्य/विधानांगों वाले संघ-राज्य क्षेत्र के प्रतिनिधि जो वहाँ के शिक्षा-मंत्री (या उसके प्रतिनिधि) होंगे और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (अथवा उसके प्रतिनिधि) होंगे।	8. शिक्षामंत्री आंध्र प्रदेश हैदराबाद
	9. शिक्षामंत्री असम दिशपुर
	10. शिक्षामंत्री बिहार पटना
	11. शिक्षामंत्री गुजरात अहमदाबाद
	12. शिक्षामंत्री हरियाणा चंडीगढ़
	13. शिक्षामंत्री हिमाचल प्रदेश शिमला

14. शिक्षामंत्री
    जम्मू और कश्मीर
    श्रीनगर
15. शिक्षामंत्री
    केरल
    त्रिवेन्द्रम
16. शिक्षामंत्री
    मध्य प्रदेश
    भोपाल
17. शिक्षामंत्री
    महाराष्ट्र
    बम्बई
18. शिक्षामंत्री
    मणिपुर
    इम्फाल
19. शिक्षामंत्री
    मेघालय
    शिलॉङ
20. शिक्षामंत्री
    कर्नाटक
    बँगलूर
21. शिक्षामंत्री
    नागालैंड
    कोहिमा
22. शिक्षामंत्री
    उड़ीसा
    भुवनेश्वर
23. शिक्षामंत्री
    राजस्थान
    जयपुर
24. शिक्षामंत्री
    पंजाब
    चंडीगढ़
25. शिक्षामंत्री
    तमिलनाडु
    मद्रास

26. शिक्षामंत्री
त्रिपुरा सरकार
अगरतला

27. शिक्षामंत्री
सिक्किम
गङ्टोक

28. शिक्षामंत्री
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

29. शिक्षामंत्री
पश्चिमी बंगाल
कलकत्ता

30. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

31. शिक्षामंत्री
गोआ, दमन और दिउ की सरकार
पणजी (गोआ)

32. शिक्षामंत्री
मिजोरम
ऐजल

33. शिक्षामंत्री
पांडिचेरी सरकार
पांडिचेरी

(vi) कार्यकारी समिति के सभी सदस्य जो ऊपर शामिल नहीं हैं।

34. ....

35. श्री पी० के० थुंगन
उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली-110001

36. निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

37. प्रो० डा० एन० वेदमणि मैनुअल
प्रोफेसर और अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग
केरल विश्वविद्यालय
त्रिवेंद्रम

38. प्रो० वी० जी० कुलकर्णी
टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल
रिसर्च, होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस
एजुकेशन, होमी भाभा रोड
बम्बई-400005

39. बी० एस० कोशी
प्रिंसिपल
श्री एम० एम० प्यूपिल्स
ओन स्कूल और शारदा मंदिर,
स्वामी विवेकानन्द मार्ग, खार
बम्बई-400052

40. श्री एम० एस० दीक्षित
प्रिंसिपल, हीरालाल वी० एन० कालेज
छिबरामऊ
फर्रुखाबाद

41. डॉ० टी० एन० धर
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

42. प्रो० पी० एन० दवे
सेंट्रल कोआर्डिनेटर, यूनिसेफ
एसिस्टेड प्रोजेक्ट्स
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

43. डॉ० जे० एस० राजपूत
प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल-462013

44. डा० (श्रीमती) शकुंतला भट्टाचार्य
रीडर, विज्ञान एवं गणित
शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

45. श्री० एस० सत्यम्
संयुक्त सचिव (स्कूल शिक्षा)
शिक्षा मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001

46. श्री मनमोहन सिंह
वित्त सलाहकार
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षा
मन्त्रालय, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली-110001

(vii) (क) अध्यक्ष
सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ सेकंडरी
एजुकेशन, नई दिल्ली
(पदेन)

47. अध्यक्ष
सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी
एजुकेशन, 17-बी, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट
नई दिल्ली-110002

(ख) आयुक्त, के० वि० सं०
नई दिल्ली
(पदेन)

48. आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नेहरू हाउस
4, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110002

(ग) निदेशक
के० स्वा० शि० ब्यूरो
नई दिल्ली
(पदेन)

49. निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
निर्माण भवन, नई दिल्ली-110001

(घ) उप महानिदेशक
(कृषि शिक्षा)
भा० कृ० अ० प०,
कृषि मंत्रालय
नई दिल्ली (पदेन)

50. उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि मंत्रालय,
कृषि भवन, डा० राजेन्द्रप्रसाद रोड
नई दिल्ली-110001

(ङ) प्रशिक्षण निदेशक
प्र० रो० म०, श्रम मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन
नई दिल्ली-110001
(पदेन)

(च) प्रतिनिधि, शिक्षा विभाग
योजना आयोग, नई दिल्ली
(पदेन)

(viii) ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय समय पर नामजद करे। इनकी संख्या 6 से अधिक नहीं होगी और इनमें से कम-से-कम 4 स्कूल अध्यापक होंगे।

51. प्रशिक्षण निदेशक
प्रशिक्षण और रोजगार महानिदेशालय
श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन,
नई दिल्ली-110001

52. शिक्षा सलाहकार
योजना आयोग, योजना भवन
पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली-110001

53. श्री एम० रामास्वामी
हेडमास्टर, टी० वी० एस०
आयंगार हायर सेकंडरी स्कूल
मदुरै (तमिलनाडु)

54. श्री केदारनाथ सिंह
विज्ञान शिक्षक
के० के० विद्या मंदिर, धारवाड़
वैशाली (बिहार)

55. श्रीमती सलमा फिरदौस
प्रिंसिपल
हायर सेकंडरी स्कूल
कोताबी बाग
श्रीनगर

56. श्री वीरसिंह
डिवीजनल सुप्रिंटेंडेंट ऑफ़
एजुकेशन, जबलपुर डिवीजन
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

57. डा० एन० के० उपासनी
अवैतनिक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
एस० एन० डी० टी० यूनिवर्सिटी
बम्बई-400020

58. डा० (कुमारी) एम० डॉली शेनॉय
1-2-212/6/1, गगन महल रोड
दुमालगुडा,
हैदराबाद

(ix) विशेष आमन्त्रित

59. सेक्रेट्री
कौंसिल ऑफ इण्डियन स्कूल सर्टिफिकेट
इक्जामिनेशन, प्रगति भवन
तीसरी मंजिल
47, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली-110019

60. श्री विनोदकुमार पंडित
सचिव
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016 (सचिव)

कार्यकारी समिति

(i) परिषद् का अध्यक्ष जो कार्यकारी समिति का पदेन अध्यक्ष होगा।	1. श्रीमती शीला कौल राज्यमंत्री शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
(ii) (अ) शिक्षा मंत्रालय में राज्यमंत्री जो कार्यकारी समिति का पदेन उपाध्यक्ष होगा।	
(आ) शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री—रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत	2. श्री पी० के० थुंगन शिक्षा उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
(इ) परिषद् के निदेशक	3. निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-110016
(ई) सचिव, शिक्षा मंत्रालय—पदेन	4. श्रीमती अन्ना आर० मलहोत्रा सचिव, शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली-110001 श्रीमती सरला ग्रेवाल सचिव, शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली-110001 (2-11-1982 से)

(iii) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष (पदेन सदस्य)	5. श्रीमती माधुरी आर० शाह अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुर शाह जफर मार्ग नई दिल्ली-110001
(iv) रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षा-विद जो स्कूल शिक्षा में विशेष रुचि रखते हों, तथा जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे।	6. प्रो० वी० जी० कुलकर्णी प्रोजेक्ट डायरेक्टर टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन, भाभा रोड बम्बई-400005
	7. डा० एन० वेदमणि मैनुअल प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग केरल विश्वविद्यालय त्रिवेंद्रम
	8. श्री बी० एम० जोशी प्रिंसिपल, श्री एम० एम० प्यूपिल्स ओन स्कूल और शारदा मंदिर स्वामी विवेकानन्द रोड, खार बम्बई-400005
	9. श्री एम० एस० दीक्षित, प्रिंसिपल हीरालाल बी० एन० कालेज, छिबरामऊ, फर्रुखाबाद
(v) परिषद् के संयुक्त निदेशक	10. डा० टी० एन० धर संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली-110016
(vi) रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद परिषद् की संकाय के तीन सदस्य जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के स्तर के होंगे।	11. प्रो० पी० एन० दवे सेंट्रल कोआर्डीनेटर यूनिसेफ एसिस्टेड प्रोजेक्ट्स राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली-110016

12. डा० जे० एस० राजपूत
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल-462013

13. डा० (श्रीमती) शकुंतला भट्टाचार्य
रीडर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

(vii) शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधि

14. श्री एस० सत्यम
संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली-110001

(viii) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्त सलाहकार होगा ।

15. श्री मनमोहन सिंह
वित्त सलाहकार
रा० शै० अ० और प्र० प०,
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली-110001

16. श्री विनोद कुमार पंडित
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-110016

संस्थापन समिति

(i) निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प० (अध्यक्ष)	1. डा० शिवकुमार मित्र निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली-110016 (अध्यक्ष)
(ii) संयुक्त निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०	2. डा० टी० एन० धर संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली-110016
(iii) परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामजद शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	3. श्री एस० सत्यम संयुक्त सचिव शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन नई दिल्ली-110001
(iv) परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षाविद जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक होगा	4. प्रो० एम० आई० सभादत्ती भौतिकी विभाग कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़-580003
	5. प्रो० पी० एल० मल्होत्रा डीन ऑफ कालेजेज दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

6. डा० फांसिस एक्का
प्रोफेसर और उप निदेशक
केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान
मानस गंगोत्री
मैसूर-570006

7. प्रो० (कुमारी) ए० जे० दस्तूर
अध्यक्ष, नागरिक शास्त्र और
राजनीति शास्त्र विभाग
बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई

(v) परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामजद क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय का एक प्रतिनिधि

8. श्री पी० सी० जोजेफ
स्टोर कीपर, क्षे० शि० म०
मैसूर-570006

(vi) परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामजद राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली का एक प्रतिनिधि

9. कुमारी एस० के० राम
रीडर, सा० वि० एवं मा० शि० विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016

(vii) परिषद् के नियमित शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग में से एक-एक (कुल दो) प्रतिनिधि

10. श्री बालगोपाल वर्मा
लेक्चरर
क्षे० शि० म०, मैसूर

11. श्री प्रबोध कुमार
उच्च श्रेणी लिपिक
सा० वि० एवं मा० शि० वि०
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016

(viii) वित्त सलाहकार, रा० शै० अ० और प्र० प०

12. श्री मनमोहन सिंह
वित्त सलाहकार
रा० शै० अ० और प्र० प०
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ix) सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प० (सदस्य-संयोजक)

13. श्री विनोदकुमार पंडित
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य-संयोजक)

वित्त समिति

1. प्रो० शिवकुमार मित्र
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली
   (पदेन अध्यक्ष)

2. श्री एस० सत्यम
   संयुक्त सचिव
   शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली

3. श्री जे० वीर राघवन
   कार्यकारी निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन एवं
   प्रशासन संस्थान
   17 बी, श्री अरविंद मार्ग
   नई दिल्ली

4. प्रो० वी० जी० कुलकर्णी
   परियोजना निदेशक
   टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल
   रिसर्च
   होमी भाभा सेंटर फॉर
   साइंस एजुकेशन, होमी भाभा रोड
   बम्बई-400005

5. श्री मनमोहन सिंह
   वित्त सलाहकार
   रा० शै० अ० और प्र० प०
   शिक्षा मंत्रालय
   कमरा नं० 109 'सी', शास्त्री भवन
   नई दिल्ली (पदेन सदस्य)

6. श्री विनोद कुमार पंडित
   सचिव
   रा० शै० अ० और प्र० प०
   नई दिल्ली (संयोजक)

भवन तथा निर्माण समिति

(i) निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प० (पदेन अध्यक्ष)	1. प्रो० शिवकुमार मित्र निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प० नई दिल्ली (अध्यक्ष)
(ii) संयुक्त रिदेशक रा० शै० अ० और प्र० प० (पदेन उपाध्यक्ष)	2. डा० टी० एन० धर संयुक्त निदेशक, रा०शै०अ० और प्र०प० नई दिल्ली (उपाध्यक्ष)
(iii) मुख्य इंजीनियर, केन्द्रीय लो० नि० विभाग अथवा उसके द्वारा मनोनीत व्यक्ति	3. श्री एम० एल० कालरा सुपरिंटेंडिंग सर्वेयर ऑफ वर्क्स (फूड), सी० पी० डब्ल्यू० डी० इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली
(iv) वित्त मंत्रालय (वर्क्स) का एक प्रतिनिधि	4. श्री ए० के० सक्सेना सहायक वित्त सलाहकार वित्त मंत्रालय (वर्क्स) निर्माण भवन, (III मंजिल) नई दिल्ली
(v) परिषद् का परामर्शी वास्तुक	5. श्री के० एन० सक्सेना ज्येष्ठ वास्तुक एच० पी० टी०-2 के० लो० नि० विभाग, निर्माण भवन नई दिल्ली

(vi) परिषद् का वित्त सलाहकार अथवा उनके द्वारा मनोनीत व्यक्ति	6. श्री मनमोहन सिंह वित्त सलाहकार, रा० शैं० अ० और प्र० प०, कमरा नं० 109 'सी' शास्त्री भवन, नई दिल्ली
(vii) शिक्षा मंत्रालय द्वारा मनोनीत व्यक्ति	7. श्री एस० सत्यम संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
(viii) कोई प्रतिष्ठित सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	8. श्री आर० ए० खेमानी मुख्य इंजीनियर दिल्ली विकास प्राधिकरण विकास भवन एनेक्सी इन्द्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली
(ix) कोई प्रतिष्ठित बिजली इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	9. श्री टी० कृष्णमूर्ति सुप्रिंटेंडिंग इंजीनियर दिल्ली सेंट्रल इलेक्ट्रिक सर्किल-1 केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग इंद्रप्रस्थ भवन, इंद्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली
(x) समिति द्वारा मनोनीत कार्यकारी समिति का सदस्य	10. श्री एस० एच० खान रीडर, पी० सी० डी० सी० रा० शैं० अ० और प्र० प० नई दिल्ली
(xi) सचिव, रा० शैं० अ० और प्र० प० (सदस्य सचिव)	11. श्री विनोदकुमार पंडित सचिव, रा० शैं० अ० और प्र० प० नई दिल्ली (सदस्य सचिव)

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. प्रो० शिवकुमार मित्र
   निदेशक, रा० शै० अ०
   और प्र० प०
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)
2. डा० टी० एन० धर
   सह निदेशक, रा० शै० अ०
   और प्र० प०
   नई दिल्ली (उपाध्यक्ष)
3. प्रो० श्रीनिवास भट्टाचार्य
   शिक्षा के प्रोफेसर
   विश्व भारती
   शान्तिनिकेतन (प० बंगाल)
4. प्रो० बी० के० पासी
   अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
   इंदौर विश्वविद्यालय
   इंदौर
5. प्रो० के० कुमारस्वामी पिल्लै
   शिक्षा के प्रोफ़ेसर
   अन्नामलाई विश्वविद्यालय
   अन्नामलाई नगर
   (तमिलनाडु)
6. प्रो० बी० आर० कामले
   अध्यक्ष, इतिहास विभाग
   शिवाजी विश्वविद्यालय
   कोल्हापुर
   (महाराष्ट्र)
7. प्रो० के० पद्म उमापति
   गृह विज्ञान के प्रोफेसर
   मैसूर विश्वविद्यालय
   मैसूर
8. निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   सेक्टर 20-डी
   चंडीगढ़
9. प्रिंसिपल
   राज्य शिक्षा संस्थान
   त्रिवेंद्रम (केरल)
10. निदेशक
    राज्य शिक्षा संस्थान
    जोरहट-785001 (असम)
11. निदेशक
    राज्य शिक्षा संस्थान
    सदाशिव पेठ, कुमठेकर रोड, पुणे
12. निदेशक
    राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण विभाग
    श्री बी० पी० वाडिया रोड
    बासवंगुडी
    बँगलूर

13. अध्यक्ष
मापन और मूल्यांकन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

14. अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

15. अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग, रा० शै० अ०
और प्र० प०, नई दिल्ली

16. अध्यक्ष
अध्यापक-शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

17. अध्यक्ष
वर्कशॉप विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

18. अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

19. अध्यक्ष
प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम वर्ग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

20. अध्यक्ष
शिक्षण साधन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०, नई दिल्ली

21. अध्यक्ष
पाठ्यक्रम वर्ग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

22. अध्यक्ष
शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन
एकक, रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

23. अध्यक्ष
शिशु अध्ययन एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

24. अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान एकक
रा० शै० अ० और प्र० प्र०
नई दिल्ली

25. अध्यक्ष
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति
शिक्षा एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

26. अध्यक्ष
स्त्री शिक्षा एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

27. अध्यक्ष
जनसंख्या शिक्षा एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

28. अध्यक्ष
विस्तार एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

29. अध्यक्ष
योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

30. अध्यक्ष
शिक्षा का व्यावसायीकरण एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

31. अध्यक्ष
सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया
एकक, रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

32. अध्यक्ष
पुस्तकालय और प्रलेखन एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

33. अध्यक्ष
राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

34. अध्यक्ष
प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

35. अध्यक्ष
पत्रिका प्रकोष्ठ
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

36. प्रिंसिपल
शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

37. प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

38. प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

39. प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

40. प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

41. प्रोफेसर
अनौपचारिक शिक्षा वर्ग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

42. प्रो० ए० एन० माहेश्वरी
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

43. डा० बृजेशदत्त आत्रेय
रीडर
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

44. कुमारी एस० के० राम
रीडर
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

45. श्री तिलकराज
रीडर
शिक्षण साधन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

46. श्री प्रभाकर राव
सी० पी० ओ०
प्रकाशन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

47. डॉ० एम० वी० रामजी
रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

48. डॉ० जे० एस० ग्रेवाल
रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

49. डॉ० श्रीमती अमृतकौर
रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

50. डॉ० जगदीश सिंह
रीडर
शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

51. डीन (ए० एंड आर०)
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

52. डीन (सी०)
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

स्कूल-पाठ्यक्रम की सलाहकार-समिति

1. डॉ० शिवकुमार मित्र — अध्यक्ष
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   श्री अरविंद मार्ग
   नई दिल्ली

2. डॉ० टी० एन० धर — सदस्य
   संयुक्त निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   श्री अरविंद मार्ग
   नई दिल्ली

3. उपाध्यक्ष — सदस्य
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   बहादुरशाह जफर मार्ग
   नई दिल्ली

4. प्रो० आर० सी० पाल — सदस्य
   उपकुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय
   चंडीगढ़

5. प्रो० जी० आर० दामोदरन — सदस्य
   उपकुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय
   मद्रास

6. प्रो० रशीदुद्दीन खान — सदस्य
   अध्यक्ष, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र
   स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
   नई दिल्ली

7. डा० अमरीक सिंह — सदस्य
   सचिव, एसोसिएशन ऑफ इंडियन
   यूनिवर्सिटीज
   दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
   नई दिल्ली

8. डा० सुमा चिटणीस — सदस्य
   प्रोफेसर, टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल साइंसेज
   सायन-ट्राम्बे रोड, देवनार
   बम्बई

9. डा० राजम्मल पी० देवदास — सदस्य
   प्रिंसिपल, श्री अविनाशलिंगम
   होम साइंस कॉलेज फ़ॉर वीमेन
   कोयम्बतूर

10. प्रो० एस० एम० चटर्जी — सदस्य
    98/39, गोपाल लाल टैगोर रोड
    कलकत्ता

11. डा० गोपाल सिंह — सदस्य
    अध्यक्ष, वर्ल्ड सिख यूनिवर्सिटी प्रेस
    7, पूर्वी मार्ग, वसन्त विहार
    नई दिल्ली

12. श्री वी० जी० कुलकर्णी — सदस्य
    प्रोजेक्ट डाइरेक्टर
    टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च
    होमी भाभा सेंटर फ़ॉर साइंस
    एजुकेशन
    होमी भाभा रोड
    बम्बई-400005

13. डा० मुहम्मद अहमद — सदस्य
रीडर इन मेडिसिन
जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

14. श्री एम० एन० कपूर — सदस्य
निदेशक, गुरु शिखर स्कूल
माउंट आबू
राजस्थान

15. डा० एस० एन० मेहरोत्रा — सदस्य
उपकुलपति, आगरा विश्वविद्यालय
आगरा

16. प्रो० बी० के० रॉय बर्मन — सदस्य
कौंसिल फॉर सोशल डेवेलपमेंट
53, लोदी इस्टेट
नई दिल्ली-110003

17. श्रीमती अशिमा चौधरी — सदस्य
प्रिंसिपल, साउथ देहली पॉलिटेकनीक फॉर वीमेन
एन 9, रिंग रोड
साउथ एक्सटेंशन पार्ट I
नई दिल्ली-110049

18. डा० प्रेम कृपाल — सदस्य
63 एफ, सुजानसिंह पार्क
नई दिल्ली-110003

19. डा० पी० एल० मलहोत्रा — सदस्य
प्रिंसिपल, कालेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110001

20. निदेशक, ऑल इंडिया इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज — सदस्य
अन्सारी नगर
नई दिल्ली-110016

21. डा० नगेन्द्र — सदस्य
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
16, कैवेलरी लाइंस
दिल्ली-110007

22. डा० (श्रीमती) उषा के० लूथरा — सदस्य
सीनियर डिप्टी डायरेक्टर जनरल
इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च
अन्सारी नगर
नई दिल्ली-110016

23. श्री ए० के० धान — सदस्य
उपकुलपति
नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
शिलॉङ

24. डा० एच० एस० लारेंस — सदस्य
5, अरुलगम, वैंगडंवल रोड
नुंगंबक्कम
मद्रास

25. प्रो० जे० जे० नानावती — सदस्य
सेंट्रल बॉम्बे सर्विस-1 (आर)
11, नैपियर रोड
पुणे-411001

26. प्रो० एल० के० महापात्र — सदस्य
अध्यक्ष, नृशास्त्र विभाग
उत्कल विश्वविद्यालय
वाणी विहार
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

27. डा० के० आर० श्रीनिवास आयंगार — सदस्य
152, कचहरी रोड, मइलापुर
मद्रास-600004

28. प्रिंसिपल
नेतरहाट विद्यालय
नेतरहाट (बरास्ता राँची)
बिहार

पदेन सदस्य

29. आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

पदेन सदस्य

30. सहायक महानिदेशक (शिक्षा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि भवन, डा० राजेन्द्र प्रसाद रोड
नई दिल्ली

पदेन सदस्य

31. प्राथमिक शिक्षा निदेशक
प्राथमिक शिक्षा निदेशालय
पश्चिम बंगाल सरकार
नूतन सचिवालय भवन
कलकत्ता

पदेन सदस्य

32. अध्यक्ष
सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन
17 बी, रिंग रोड, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट
नई दिल्ली-110002

पदेन सदस्य

33. अध्यक्ष
कौंसिल ऑफ बोर्ड्स ऑफ सेकंडरी एजुकेशन इन इंडिया
17 बी, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली-110002

पदेन सदस्य

34. निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान, महाराष्ट्र
कुमठेकर मार्ग
पुणे (महाराष्ट्र)

पदेन सदस्य

35. सेक्रेट्री
कौंसिल फॉर दि इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट इक्जामिनेशंस
प्रगति हाउस, 47-48, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली

पदेन सदस्य

36. सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
इन्द्रप्रस्थ इस्टेट
नई दिल्ली-110002

37. निदेशक
नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान
मोतीबाग
पटियाला-147001

पदेन सदस्य

38. शिक्षा निदेशक
केरल सरकार
त्रिवेन्द्रम

पदेन सदस्य

39. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सभी
विभागों/एककों आदि के अध्यक्ष एवं
प्रोफेसर

स्थायी आमंत्रित

40. प्रिंसिपल एवं प्रोफेसर
शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र

स्थायी आमंत्रित

41. रीडर (कार्यक्रम)

स्थायी आमंत्रित

42. अध्यक्ष
पाठ्यक्रम वर्ग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016

(संयोजक)

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

1. डीन (अनुसंधान)
2. डीन (शैक्षणिक)
3. डीन (समन्वय)
4. रा० शै० अ० और प्र० प० के सभी विभागों के अध्यक्ष
5. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के प्रिंसिपल
6. रा० शै० अ० और प्र० प० के निदेशक द्वारा नामजद राज्य शिक्षा संस्थानों के दो व्यक्ति :

    (i) निदेशक
    राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
    6, डी० पी० आइ० कम्पाउंड
    मद्रास

    (ii) निदेशक
    राज्य शिक्षा संस्थान
    जहांगीराबाद
    भोपाल

7. रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद विश्वविद्यालयों/शोध संस्थानों के आठ व्यक्ति :

    (i) डा० एस० बी० अदावाल
    शिक्षा के प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
    3, बैंक रोड, इलाहाबाद-211002

(ii) डा० सी० एल० आनंद
शिक्षा के प्रोफेसर
उत्तर पूर्वी पहाड़ी विश्वविद्यालय, शिलॉङ

(iii) डा० रमेश मोहन
निदेशक
केन्द्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान
हैदराबाद

(iv) डा० बी० एन० मुखर्जी
निदेशक
सामाजिक विकास अनुसंधान परिषद्
53, लोदी इस्टेट
नई दिल्ली

(v) प्रो० ए० बी० कुलकर्णी
रसायन विज्ञान के प्रोफेसर
बम्बई विश्वविद्यालय
बम्बई

(vi) प्रो० (श्रीमती) अमिता वर्मा
शिशु विकास की प्रोफेसर
गृह विज्ञान विभाग
बड़ौदा विश्वविद्यालय
बड़ौदा

(vii) प्रो० पी० जी० के० पणिक्कर
निदेशक, विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर
त्रिवेन्द्रम-695001

(viii) डा० जे० एन० कपूर
गणित के वरिष्ठ प्रोफेसर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
कानपुर

पर्यावरणीय शिक्षा के लिए सलाहकार समिति

1. अध्यक्ष, अध्यापक-शिक्षा विभाग एवं प्रिंसिपल, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
2. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग तथा जनसंख्या शिक्षा एकक
3. अध्यक्ष, शिशु अध्ययन एकक
4. अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ
5. अध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम वर्ग
6. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण एकक एवं समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एकक
7. अध्यक्ष, योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक
8. अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शिक्षा एकक
9. अध्यक्ष, शिक्षण साधन विभाग
10. अध्यक्ष, पाठ्यक्रम वर्ग
11. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर या उनके प्रतिनिधि
12. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर या उनके प्रतिनिधि
13. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल या उनके प्रतिनिधि
14. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर या उनके प्रतिनिधि
15. डा० एम० एस० खापर्डे, रीडर (कार्यक्रम)
16. श्री गोपबंधु गुरु
    रीडर, शिक्षा व्यावसायीकरण एकक एवं समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एकक
17. डा० बृजेशदत्त आत्रेय
    रीडर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
18. डा० उत्पल मलिक
    परियोजना समन्वयक, यूनिसेफ परियोजना (स्वास्थ्य, पोषण और पर्यावरणीय स्वच्छता)
    विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
19. अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (संयोजक)

पुस्तकालय सलाहकार समिति

1. प्रो० ए० एन० बोस (अध्यक्ष)
   विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

2. प्रो० बी० एस० पारख (सदस्य)
   अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

3. प्रो० पी० एन० दवे (सदस्य)
   अध्यक्ष, केप वर्ग

4. प्रो० अनिल विद्यालंकार (सदस्य)
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

5. प्रो० चौधरी हेमकांत मिश्र (सदस्य)
   सदस्य-सचिव, एरिक

6. प्रो० (श्रीमती) स्नेहलता शुक्ल (सदस्य)
   शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र

7. डा० (कुमारी) सरोजिनी बिसारिया (सदस्य)
   अध्यक्ष, स्त्री शिक्षा एकक

8. डा० एम० एस० खापर्डे (सदस्य)
   रीडर (कार्यक्रम)

9. प्रोफेशनल सीनियर (सदस्य)
   लाइब्रेरी एंड डाक्यूमेंटेशन यूनिट

10. लाइब्रेरी एसोसिएशन का एक प्रतिनिधि (सदस्य)

11. अध्यक्ष, लाइब्रेरी एंड डाक्यूमेंटेशन यूनिट (संयोजक)

समन्वय-समितियाँ

1. पाठ्यक्रम-विकास के लिए समन्वय-समिति

(क) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

(ख) अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग

(ग) अध्यक्ष, स्त्री-शिक्षा एकक

(घ) अध्यक्ष, अध्यापक-शिक्षा विभाग

(ङ) अध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा : व्यापक उपागम वर्ग

(च) अध्यक्ष, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति शिक्षा एकक

(छ) अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ

(ज) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण एकक

(झ) प्रो० अनिल विद्यालंकार

(ञ) योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक का प्रतिनिधि

(ट) अध्यक्ष, पाठ्यक्रम वर्ग (संयोजक)

2. शैक्षिक प्रौद्योगिकी के लिए समन्वय-समिति

(क) अध्यक्ष, शिक्षण-साधन विभाग

(ख) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

(ग) अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग

(घ) अध्यक्ष, अध्यापक-शिक्षा विभाग

(ङ) अध्यक्ष, विस्तार एकक; राज्यों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रगति से संबद्ध क्षेत्र सलाहकार

(च) योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक का प्रतिनिधि
(छ) प्रिंसिपल, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र (संयोजक)

3. अनौपचारिक शिक्षा के लिए समन्वय क्रिया समिति

(क) अध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा : व्यापक उपागम वर्ग
(ख) अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ
(ग) अध्यक्ष, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति शिक्षा एकक
(घ) अध्यक्ष, स्त्री-शिक्षा एकक
(ङ) अध्यक्ष, विस्तार एकक
(च) अध्यक्ष, पाठ्यक्रम वर्ग
(छ) अध्यक्ष, मापन और मूल्यांकन विभाग
(ज) योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक का प्रतिनिधि
(झ) श्री ए० ए० सी० लाल
(ञ) प्रो० कृष्णगोपाल रस्तोगी (संयोजक)

4. मापन और मूल्यांकन के लिए समन्वय-समिति

(क) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
(ख) अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(ग) अध्यक्ष, अध्यापक-शिक्षा विभाग
(घ) अध्यक्ष, शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन एकक
(ङ) अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान एकक
(च) अध्यक्ष, पाठ्यक्रम वर्ग
(छ) अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ
(ज) अध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा : व्यापक उपागम वर्ग
(झ) अध्यक्ष, शिशु अध्ययन एकक
(ञ) प्रो० श्रीमती स्नेहलता शुक्ला, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
(ट) योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक का प्रतिनिधि
(ठ) अध्यक्ष, मापन और मूल्यांकन विभाग (संयोजक)

5. अध्यापक-शिक्षा और अन्य कार्यक्रमों के लिए समन्वय-समिति

(क) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

(ख) अध्यक्ष, शिक्षण-साधन विभाग

(ग) अध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा : व्यापक उपागम वर्ग

(घ) अध्यक्ष, शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन एकक

(ङ) अध्यक्ष, शिशु अध्ययन एकक

(च) प्रिंसिपल, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र

(छ) अध्यक्ष, मापन और मूल्यांकन विभाग

(ज) अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान एकक

(झ) अध्यक्ष, योजना, समन्वय और मूल्यांकन एकक

(ञ) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण एकक

(ट) रीडर (कार्यक्रम)

(ठ) अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग

(ड) अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ

(ढ) अध्यक्ष, अध्यापक-शिक्षा विभाग (संयोजक)

परिशिष्ट घ

सन् 1982-83 के दौरान समितियों द्वारा किए गए मुख्य निर्णय

कार्यकारी समिति

कार्यकारी समिति की 57वीं और 58वीं बैठकें क्रमशः 20 मई 1982 और 23 अक्तूबर 1982 को हुईं।

नैतिकता की शिक्षा पर जल्दी से जल्दी पाठ्यपुस्तकें निकालने की आवश्यकता पर बल दिया गया। कार्यकारी समिति का सुझाव था कि इस दिशा में शुभारम्भ के लिए प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकें बना देनी चाहिए।

कार्यकारी समिति विक्रम साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र को 1982-83 में सहायता अनुदान देने के लिए सहमत हो गई।

निर्णय किया गया कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति देने के लिए, दो-स्तरीय चयन विधि को मई 1984 से शुरू किया जाए।

भारतीय स्वाधीनता-संघर्ष पर एक फोलियो निकालने के प्रस्ताव को कार्यकारी समिति ने मंजूरी दे दी। फ़ोलियो का मूल्य ऐसे तरीके से तय किया जाएगा कि उत्पादन और वितरण का खर्च निकल आए। यह सुझाव भी दिया गया कि फोलियो के प्रकाशन के बाद उसे पुस्तक, टेपों, स्लाइडों और फिल्मों आदि के रूप में भी प्रस्तुत किया जाए।

कार्यकारी समिति ने सलाह दी कि जिन पुस्तकों का मूल्य दस रुपए से अधिक जाने लगे उनके मूल्य-ढाँचे को फिर से जाँचा जाना चाहिए।

कार्यकारी समिति ने कहा कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को प्रारम्भिक शिक्षा में नामांकन के प्रबोधन के लिए समुचित व्यवस्था बनानी चाहिए क्योंकि इस स्तर की शिक्षा के सार्वजनीकरण को अत्यंत प्राथमिकता वाली जरूरतों में, और बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम में स्थान मिला हुआ है।

यह निश्चय भी किया गया कि परिषद् को प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में कोई सीधी प्रत्यक्ष भूमिका नहीं लेनी चाहिए क्योंकि शिक्षा मंत्रालय ने इस काम के लिए अलग प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय बना रखा है।

वित्त समिति

वित्त समिति की 57वीं, 58वीं और 59वीं बैठकें क्रमशः 26 अप्रैल 1982, 26 मई 1982 और 29 नवम्बर 1982 को हुईं।

पाठ्यपुस्तकों में आपत्तिजनक सामग्री को पहचानने के कार्य के लिए पहले से स्वीकृत पारिश्रमिक की इन दरों को वित्त समिति ने देख लिया :

(क) कक्षा I से V तक की पाठ्यपुस्तकें : 50 रु० प्रति पुस्तक

(ख) कक्षा VI से VIII तक की पाठ्यपुस्तकें : 75 रु० प्रति पुस्तक

(ग) कक्षा IX से XII तक की पाठ्यपुस्तकें : 100 रु० प्रति पुस्तक

रा० शै० अ० और प्र० प० की पाठ्यपुस्तकों की मूल्यांकन रिपोर्टों को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित बैठकों के लिए विशेषज्ञ समितियों के सदस्यों को 50 रुपए प्रति सदस्य प्रतिदिन दिए जाने की संस्तुति वित्त समिति ने की।

परिषद् की चयन समितियों के सदस्यों को यात्रा व दैनिक भत्तों आदि के भुगतान के लिए संघ लोक सेवा आयोग के नियमों का अनुसरण रा० शै० अ० और प्र० प० करे, इस बात की संस्तुति वित्त समिति ने की।

यूनिसेफ़-पोषित परियोजना संख्या 1 और 4 के मामले में वित्त समिति ने संस्तुति की कि परिषद् के इस वर्ष के स्वीकृत योजना बजट की सीमा के भीतर ही 15 लाख रुपयों का एक रोलिंग फंड बनाया जाना चाहिए। इस रोलिंग फंड की कार्य-पद्धति की समीक्षा एक वर्ष बाद की जाएगी। उस समीक्षा के परिणाम ही यह तय करेंगे कि परियोजना 1 और 4 के लिए रोलिंग फंड को चलाया जाए या नहीं अथवा उसे अन्य यूनिसेफ़ परियोजनाओं के लिए बढ़ाया जाए या नहीं।

निम्नलिखित को कार्यकारी समिति की स्वीकृति के लिए वित्त समिति ने संस्तुत किया :

1. शिक्षा वृत्तियों को पहले दो वर्षों के लिए हर महीने 400 रुपयों से बढ़ा कर 600 रुपए कर दिया जाए। तत्पश्चात हर महीने 700 रुपए और 800 रुपए किए जाएँ। 800 रुपए की शिक्षावृत्ति के अनुदान के लिए यह आवश्यक होगा कि शिक्षार्थी (फेलो) ने उसी परियोजना मे कम से कम दो वर्षों तक काम किया हो और पी० एच० डी० के शोध-प्रबंध को जमा कर दिया हो। बढ़ी हुई 800 रुपयों की इस शिक्षावृत्ति के लिए शिक्षार्थी का हक़ उस दिन से माना जाएगा जिस दिन शोध-प्रबंध जमा किया जाता है। ऐसे शिक्षार्थी किसी आकस्मिक अनुदान के हक़दार न होंगे।

2. वर्तमान वरिष्ठ परियोजना शिक्षार्थी (सीनियर प्रोजेक्ट फेलो) का पदनाम बदल कर डाक्टरोत्तर परियोजना शिक्षार्थी (पोस्ट डॉक्टोरल प्रोजेक्ट फेलो) किया जाता है। उन्हें अब 900 रुपए प्रति माह की शिक्षावृत्ति बिना किसी आकस्मिक अनुदान के मिलेगी। शिक्षावृति का कार्यकाल परियोजना की समाप्ति तक बना रहेगा।

3. कनिष्ठ परियोजना शिक्षार्थी (जूनियर प्रोजेक्ट फेलो) और डाक्टरोत्तर परियोजना शिक्षार्थी का कुल कार्यकाल किसी भी दशा में साढ़े चार वर्षों से अधिक नहीं हो सकेगा।

वित्त समिति ने प्रशिक्षार्थियों की छह जगहों के सृजन की संस्तुति की। ये जगहें भारत में छह महीनों से अधिक के लिए न होंगी और प्रति प्रशिक्षार्थी/छात्र को प्रति माह 250 रुपयों का जेब खर्च दिए जाने का प्रावधान भी है।

जनसंख्या शिक्षा एकक में जो दफ्तरी नीचे लिखी मशीनें चलाता है, उसे प्रति माह 20 रुपए के मानदेय के अनुदान की संस्तुति वित्त समिति ने की :

(i) ओवरहेड प्रोजेक्टर, (ii) स्लाइड प्रोजेक्टर, (iii) स्कैनर (इलेक्ट्रिक स्टेंसिल कटर), (iv) प्लेन पेपर कॉपियर (फोटोस्टैट यूनिट) और (v) डुप्लीकेटर।

शिक्षण-साधन विभाग के प्रेक्षागृह (आडिटोरियम) को किराए पर देने के भाड़े की निम्नलिखित दरों के लिए वित्त समिति सहमत हो गई :

(i) फिल्में दिखाने के लिए--प्रति घंटा 150 रुपए। अतिरिक्त आधे घंटे का भाड़ा 75 रुपए। (ii) बैठकों के लिए—75 रुपए प्रति आधा घंटा।

नीचे लिखे पदों के नियमित सृजन प्रस्ताव को वित्त समिति मान गई :

(i) सम्पादक (हिन्दी) रु 1100-1600—एक।

(ii) सम्पादन सहायक (हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में निष्णात) रु० 550—900—एक।

शैक्षिक अनुसंधान में लगे हुए संगठनों और व्यक्तियों को राष्ट्रीय परिषद् की आधार सामग्री प्रक्रियन सेवाओं को लेने के लिए नीचे लिखे शुल्कों की दरों से वित्त समिति सहमत हो गई :

(i) कार्डों की पंचिंग और वेरीफिकेशन—160 रुपए प्रति हजार कार्ड ।

(ii) कार्डों का खर्च – 40 रुपए प्रति हजार कार्ड ।

(iii) मैग्नेटिक टेपों का भाड़ा—25 रुपए प्रति टेप प्रति माह ।

(iv) प्रोग्रामिंग शुल्क—2665 रुपए प्रति प्रोग्राम प्रति माह ।

काम करने के पहले ही अनुमानित खर्च का 75 प्रतिशत जमा कराने के लिए एजेंसियों और व्यक्तियों को कहा जा सकता है ।

संस्थापन समिति

संस्थापन समिति की बैठकें 31 जनवरी 1983 और 22 फरवरी 1983 को हुईं ।

संस्थापन समिति ने उस एक-सदस्यीय समिति की रिपोर्ट पर विचार किया, जिसे कैडर रिव्यू और पदोन्नति की नीतियों की समीक्षा का काम सौंपा गया था । निश्चय किया गया कि यह पता लगाने के लिए कि निष्क्रियता किस स्तर पर कितना अवरोध उत्पन्न कर रही है, संयुक्त सचिव, वित्तीय सलाहकार और राष्ट्रीय परिषद् के सचिव द्वारा एक तथ्यात्मक विश्लेषण किया जाना चाहिए । इस विश्लेषण पर आधारित, कर्मचारियों को राहत देने वाले समुचित प्रस्तावों को संस्थापन समिति के पास परिषद् को भेजना चाहिए ।

भवन और निर्माण समिति

इस वर्ष इस समिति की कोई बैठक नहीं हुई ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की सामान्य निकाय की वार्षिक बैठक

रा० शै० अ० और प्र० प० की सामान्य निकाय की वार्षिक बैठक शिक्षा राज्य मंत्री और परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती शीला कौल की अध्यक्षता में 23 दिसम्बर 1982 को हुई ।

अपने उद्घाटन भाषण में परिषद् की अध्यक्षा ने शैक्षिक विकास की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शैक्षिक दृष्टि से उन्नत होने के लिए परिषद् को राज्य सरकारों और इस क्षेत्र के अन्य सम्बद्ध व्यक्तियों के साथ मिलकर काम करना चाहिए । विशेषकर लड़कियों और सुविधा-वंचित वर्गों की शिक्षा की ओर हमें ज्यादा ध्यान देना चाहिए । शिक्षा को मूल्योन्मुखी बनाने, अध्यापक-शिक्षा की वर्तमान गतिविधियों को

आलोचनात्मक दृष्टि से परखने, सामान्य स्कूलों में अपंगों की शिक्षा की व्यवस्था करने, और राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करने की महत्ता की ओर उन्होंने सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में उपलब्ध विशेषज्ञताओं की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्होंने राज्य प्रतिनिधियों से कहा कि परिषद् की इन सुविधाओं का पूरा पूरा लाभ राज्यों को उठाना चाहिए। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों तथा राज्य शिक्षा संस्थानों की भूमिका को बताते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राज्य स्तर की इन संस्थाओं को अधिक व्यावहारिक और प्रभावी संस्थाओं के रूप में उभरना चाहिए, तभी राज्यों के शैक्षिक विकास के कार्यक्रम जड़ें जमा सकेंगे और अभिनव परिवर्तनों को ला सकेंगे।

कार्यकारी समिति द्वारा प्रस्तुत सन 1981-82 की परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट के मसौदे को सामान्य निकाय ने स्वीकृत कर दिया।

सामान्य निकाय ने परिषद् को सलाह दी कि लेखा परीक्षा रिपोर्ट के प्रस्तुतीकरण को बदला जाना चाहिए। इसे ऐसे टैबुलर रूप में होना चाहिए कि देखते ही उसकी विषय वस्तु स्पष्ट हो जाए। लेखा परीक्षा में उठाई गई आपत्तियों के समाधान के लिए क्या किया गया, इस बात का संकेत भी इसमें होना चाहिए।

विचार-विमर्श के दौरान सामान्य निकाय ने नीचे लिखे सुझाव दिए :

(क) स्कूलों में लड़कियों के नामांकन को बढ़ाने के लिए और भी ज्यादा काम किया जाना चाहिए। वे स्कूल जाना बन्द न करें, इसके लिए औपचारिक अथवा अनौपचारिक पद्धति से दृढ़ प्रयास करना चाहिए। इस दिशा में जहाँ भी जिस विधि से भी सफलता मिली है, वहाँ से ऐसी सच्ची घटनाओं को एकत्र कर लाना चाहिए और उन्हें राज्यों में प्रचारित-प्रसारित करवाना चाहिए।

(ख) नवाचार और अभिनव परिवर्तनों वाली परियोजनाओं की सूची बना कर परिषद् को उन्हें राज्यों में प्रसारित करना चाहिए ताकि राज्यों के शिक्षा विभाग उनसे लाभान्वित हो सकें।

(ग) शैक्षिक अनुसंधानों के सार तत्व को हर साल सम्पादित कर राज्यों को भेजा जाना चाहिए। वे राज्य उनका क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करा कर अपने संस्थानों को भेज सकेंगे।

(घ) परिषद् द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं के बारे में बीच बीच में पुस्तिकाएँ छपती रहनी चाहिए, ताकि राज्य स्तर की संस्थाएँ उनसे लाभ उठा सकें।

(ङ) स्कूलों में योग-शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ा है, यह जानने के लिए, एक अंतर-

तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कर्मचारी हों ।

(च) रा० शै० अ० और प्र० प० को अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रकार की विकासात्मक और शोधात्मक परियोजनाओं में लग जाना चाहिए । इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय परिषद् प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय का सहयोग ले सकती है ।

(छ) अपंग बच्चों की एकीकृत शिक्षा के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० को विशेष प्रयत्न करने चाहिए ।

सामान्य निकाय ने राष्ट्रीय परिषद् में एक अपंग शिक्षा प्रकोष्ठ के सृजन की सिफारिश की । इस प्रकोष्ठ का काम संसाधन सामग्री बनाना और अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना तथा इस क्षेत्र में अनुसंधान-अध्ययन करवाना होगा ।

जीवन मूल्यों की शिक्षा पर निकाय ने विशेष बल दिया ताकि बच्चों में अभीष्ट मूल्यों को अंकुरित करवाया जा सके । परिषद् को सलाह दी गई कि नैतिकता की शिक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकें, सहायक पुस्तकें और पाठ्यचर्याओं के निर्माण के कार्य में तेजी लाई जानी चाहिए ।